॥ ओ३म् ॥

आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार

(ऐतिहासिक विवेचना युक्त विवरण)

लेखक

डा० भवानीलाल भारतीय

संयुक्त मंत्री—परोपकारिणी सभा, अजमेर

अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द पीठ,

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

प्रकाशक

वैदिक पुस्तकालय

दयानन्द आश्रम, केसरगंज अजमेर (राज.)

आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार

(ऐतिहासिक विवेचना युक्त विवरण)

लेखक
डा० भवानीलाल भारतीय
एम. ए., पीएच. डी.
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
दयानन्द चेयर फॉर वैदिक स्टडीज
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

प्रकाशक
परोपकारिणी सभा, अजमेर

आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार

लेखक	डा० भवानीलाल भारतीय
प्रकाशक	परोपकारिणी सभा, अजमेर
प्रथमावृत्ति	मूल्य दस रुपये
मुद्रक	वैदिक यंत्रालय, अजमेर

ARYA SAMAJ KE PATRA AUR PATRAKAR

समर्पण

उन दिवंगत तथा वर्तमान

पत्रकारों को

जो दयानन्द सरस्वती

तथा

आर्यसमाज के यशोर्वद्धन के लिये

आजीवन कलम घिसते रहे हैं।

—लेखक

विषय सूची

प्राक्कथन

१. भारत में पत्रकारिता का उद्भव और विकास १
२. स्वामी दयानन्द और समकालीन पत्रकारिता ३
३. आर्यसमाज और पत्रकारिता ७
४. आर्यसमाज की पत्रकारिता : सामान्य प्रवृत्तियाँ १०
५. आर्य पत्रकारिता का प्रथम युग १९
६. द्वितीय युग—१९००—१९४७ ५८
७. तृतीय युग—१९४७—१९८० ९३

परिशिष्ट

१. भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पत्र ११५
२. आर्यसमाज के उर्दू पत्र १२३
३. आर्यसमाज के अंग्रेजी पत्र १३१
४. अज्ञात तिथि के पत्र १४१
५. विदेशों से प्रकाशित आर्यसमाजी पत्र-पत्रिकायें १४३
६. आर्यसमाजी विचारधारा से प्रभावित पत्र १४६

आर्यसमाज के पत्रकार १५१
सहायक ग्रन्थ सूची १८७
पत्र-पत्रिकाओं की वर्णानुक्रमणिका १८९
पत्र-पत्रिकाओं की संचिकायें १९५

प्राक्कथन

आर्यसमाज की पत्रकारिता अपनी आयु के १०२ वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। हिन्दी पत्रों और पत्रकारों ने स्वतंत्रता का शंखनाद करने तथा देश को स्वतंत्र बनाने हेतु जो प्रयत्न किये थे उनमें आर्यसमाज के शतशः पत्रों और पत्रकारों का भी योगदान रहा है। आर्यसमाजों की पत्रकारिता का आरम्भ विगत शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उस समय हुआ जब भारत में सार्वजनिक जीवन अपनी शैशवावस्था में ही था। आर्यसमाज के पत्रों ने नवजागरण की उस ऊषा बेला में विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय प्रश्नों की ओर देशवासियों का ध्यान केन्द्रित किया। हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में भारतेन्दु काल विशिष्ट महत्त्व रखता है जिसमें अनेक ध्येयनिष्ठ, तपस्वी तथा संकल्पशील पत्रकारों ने बिना किसी साधन संबल के, पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से जनता की आवाज को मुखरित किया था। कहना नहीं होगा कि आर्यसमाज की पत्रकारिता का स्वर्ण युग भी यही था जब कि आर्यदर्पण, भारत सुदशाप्रवर्त्तक, देशहितैषी, आर्यविनय, आर्यावर्त, आर्य सिद्धान्त, वेदप्रकाश तथा सद्धर्मप्रचारक जैसे पत्रों ने देश और समाज के बहुविध विकास का मार्ग प्रशस्त किया। मुन्शी बख्तावरसिंह, पं. गणेशप्रसाद शर्मा, पं. रुद्रदत्त शर्मा, पं. भीमसेन शर्मा, पं. तुलसीराम स्वामी तथा महात्मा मुन्शीराम जैसे समर्पित व्यक्तित्वधारी पत्रकारों ने अपनी मातृसंस्था की गौरव गरिमा को बढ़ाया। इस युग के आर्यसमाजी पत्र किसी संस्था या आन्दोलन विशेष के पत्र न रह कर सार्वजनिक पत्रों का सा चरित्र प्राप्त कर चुके थे।

इस शताब्दी के प्रारम्भ से लेकर देश के स्वाधीन होने तक की आर्यसमाजी पत्रकारिता एक दूसरे सोपान पर आरूढ़ हुई। लाल, बाल, पाल के त्रिगुट ने बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशक में देश की राजनीति में एक नया आयाम उपस्थित किया था। समझौतावादियों की नरम नीति के प्रति विद्रोह कर गरम दल के नेता लोकप्रियता अर्जित कर रहे थे। उस युग के आर्यसमाज के पत्रों ने भी अपने माध्यम से गरम दली नेताओं का अभिनन्दन किया तथा देश को पराधीनता के पाशों से मुक्त कराने का आह्वान किया। बाद में जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग, सविनय अवज्ञा तथा सत्याग्रह के अस्त्रों से विदेशी शक्ति को पराजित करने की बात सामने आई तो आर्यसमाज के पत्रों और पत्रकारों ने इस अहिंसक आन्दोलन को भी अपना भरपूर समर्थन एवं शक्ति प्रदान की। पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति, श्री सत्यदेव विद्यालंकार तथा पं. हरिशंकर शर्मा जैसे तेजस्वी, राष्ट्रीय भाव धारा में बहनेवाले पत्रकार

आर्यसमाज की ही देन हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् आर्यसमाज की पत्र पत्रिकाओं में संख्यात्मक दृष्टि से अभूतपूर्व वृद्धि हुई किन्तु गुणात्मक दृष्टि से पत्रकारिता के स्तर का ह्रास हुआ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में आर्यसमाज की सौ वर्षीय पत्रकारिता के इतिहास का विहगालोकन करने का प्रयास किया गया है। लगभग एक दशक पूर्व मैंने आर्यसमाज के पत्रों तथा पत्रकारों पर शोध करने का सुझाव अपने मित्र डा. मदनमोहन जावलिया को दिया था और यह हर्ष का प्रसंग है कि उन्होंने 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में आर्यसमाज की पत्रपत्रिकाओं का योग दान' शीर्षक से यह कार्य पूरा कर १९७५ में राजस्थान विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। उनका बृहत् तथा परिश्रमपूर्वक लिखा गया शोध प्रबंध अभी अप्रकाशित ही है। आर्यसमाज की पत्रकारिता का परिचयात्मक इतिहास लिखने का मेरा संकल्प बहुत पुराना था। इसी बीच मैं सामग्री संग्रह करता रहा। डा. रामरतन भटनागर का शोध प्रबंध Rise and Development of Hindi Journalism हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास लेखन का प्रथम प्रयास है, यद्यपि इसमें तिथियों एवं तथ्य विषयक अनेक भूलें तथा भ्रान्तियाँ हैं। कालान्तर में पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी का हिन्दी समाचारपत्रों का इतिहास प्रकाशित हुआ। डा. कृष्णबिहारी मिश्र ने बंगाल की हिन्दी पत्रकारिता पर अपना शोध पूर्ण ग्रन्थ प्रस्तुत किया और अन्ततः नवभारत टाइम्स के भूतपूर्व सम्पादक श्री अक्षयकुमार जैन की षष्ठि पूर्ति के अवसर पर हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम शीर्षक भारी भरकम ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। अपने ग्रन्थ की सामग्री संग्रह करने में मुझे इन सभी ग्रन्थों से प्रचुर सहायता मिली है।

सर्वांगीण बनाने की दृष्टि से मैंने आर्यसमाज के हिन्दी पत्रों के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पत्रों, अंग्रेजी पत्रों तथा विदेशों से प्रकाशित हुए आर्यसमाजी पत्रों का भी यथोपलब्ध विवरण दिया है। मेरा यह दावा तो नहीं है कि प्रस्तुत ग्रन्थ प्रत्येक दृष्टि से सर्वांगपूर्ण बन गया है, किन्तु यह इस दिशा में किया गया प्रथम किन्तु सफल प्रयास अवश्य माना जायगा। सामग्री को क्रम बद्ध तथा व्यवस्थित रूप देने में अनेक कठिनाइयों का आना स्वाभाविक ही था। शतशः पत्र पत्रिकायें तो ऐसी थीं जिनके कभी दर्शन भी नहीं हुए, मुझे ही क्या मेरे पूर्ववर्ती इतिहासकारों ने भी शायद ही उन सबको अपने चर्म चक्षुओं से देखा हो। ऐसी स्थिति में यत्र तत्र उपलब्ध विवरणों और जानकारियों के आधार पर ही आर्यसमाज की पत्रकारिता की यात्रा के विभिन्न पड़ावों को पार करना पड़ा। परन्तु संतोष का विषय यही है कि १८७८ में प्रकाशित हुए प्रथम आर्यसमाजी पत्र आर्यदर्पण से लेकर

१९८० तक की दीर्घ अवधि के भीतर प्रकाशित प्रायः अधिकांश पत्रों का परिचय मैंने दिया है। तिथियों को व्यवस्थित करने तथा उन्हें तथ्यानुरूप करने में भी प्रयास करना पड़ा है क्योंकि आधार भूत सामग्री के रूप में प्रयुक्त किये गये उपर्युक्त ग्रन्थों में दी गई तिथियों में भी अनेक स्थानों पर विषमता, असंगति तथा वदतोव्याघात सर्वत्र दिखाई पड़ा है। तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि वर्तमान प्रयास सर्वथा निर्दोष ही है। भूलों का ज्ञान कराने पर भविष्य के संस्करणों में सुधार करना सरल हो जायगा।

पाठकों को लगेगा कि अनेक प्राचीन पत्रों का ब्यौरा विस्तार से दिया गया है तथा उनके विभिन्न अंकों में प्रकाशित सामग्री का विस्तृत विश्लेषण भी किया गया है, जब कि अन्य पत्रों के बारे में दो चार पंक्तियां ही लिख दी गई हैं। इसके उत्तर में यह निवेदन करना आवश्यक है कि जिन पुराने पत्रों के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है, उसका एक कारण तो यह है कि अब ये पत्र सामान्यतया उपलब्ध नहीं है, इसलिये इनके कथ्य का यदि विस्तृत विवेचन कर दिया जाता है तो वह आने वाली पीढ़ियों के लिये सुरक्षित हो जायगा। यहाँ यह द्रष्टव्य है कि विस्तृत चर्चा उन्हीं पत्रों की की गई है जो इन पंक्तियों के लेखक को उपलब्ध हो सके। अनुपलब्ध पत्रों की विस्तृत समीक्षा करना सम्भव ही नहीं था। दूसरी बात जो ध्यान में रखने की है, वह है इस ग्रन्थ का परिचयात्मक रूप। फलतः शैली, भाषा तथा साहित्य के अन्य मानदण्डों की दृष्टि से इन पत्रों में प्रकाशित सामग्री की समीक्षा करने का कोई औचित्य नहीं था। यह कार्य बंधुवर डा. जावलिया अपने प्रबंधात्मक ग्रन्थ में कर चुके हैं, इसलिये पुनरावृत्ति करना भी मुझे अभीष्ट नहीं था।

मैंने इस बात का भी पूर्ण ध्यान रक्खा है कि इस इतिहास में विशुद्ध आर्यसमाजी पत्रों एवं पत्रकारों का ही विवरण उपनिबद्ध किया जाय। यों तो शतशः पत्र एवं पत्रकार थे और हैं जो येन केन प्रकारेण आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित हुए थे अथवा हैं, परन्तु उन्हें मैंने अपने विवेचन से पृथक् रक्खा है। इतना अवश्य है कि आर्यसमाज के अदम्य प्रभाव को अपने में परिलक्षित करने वाले, कुछ महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक पत्रों का भी परिचयात्मक विवरण परिशिष्ट में दे दिया है।

पुस्तक को इस रूप में प्रस्तुत करने में विभिन्न व्यक्तियों तथा संस्थाओं का अनुपम साहाय्य मुझे प्राप्त हुआ है। परोपकारिणी सभा के पुस्तकालय में उपलब्ध आर्यदर्पण, भारत सुदशा प्रवर्त्तक, वेदप्रकाश, आर्य विनय, आर्य सिद्धान्त आदि की विभिन्न संचिकाओं से पूर्ण लाभ उठाया गया है। इसी प्रकार अपनी प्रचारयात्राओं के समय विभिन्न आर्यसमाजों के पुस्तक संग्रहों को देखने तथा उनसे आवश्यक नोट्स लेने का भी कार्य किया गया। उर्दू पत्रों

का विवरण मेरे मित्र प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु ने दिया तथा गुजराती पत्रों के सम्बन्ध में कुछ विशिष्ट सूचनायें पं. आनन्दप्रियजी तथा श्री नरेन्द्र दवे से मिलीं। डा. मदनमोहन जावलिया के शोध ग्रन्थ को एक बार पुन: आद्योपान्त पढ़ कर उससे प्रस्तुत सामग्री का पूर्णरूपेण मिलान किया गया। इससे कुछ नई सामग्री को समाविष्ट करने अथवा तिथियों के संशोधन एवं परिवर्तन में सहायता मिली।

ग्रन्थ का अन्तिम भाग उन प्रमुख आर्य पत्रकारों का परिचय प्रस्तुत करता है जिन्होंने आजीवन ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज की यशोवृद्धि के लिये ही इस सारस्वत सत्र को निरन्तर जारी रक्खा। किसी भी प्रकार की ऐषणा के वशवर्ती न होकर उन्होंने केवल अपने आचार्य तथा मातृसंस्था के गौरव की वृद्धि को ही अपना लक्ष्य बनाया। ऐसे ही तप:पूत पत्रकारों की स्मृति में इस ग्रन्थ का समर्पण किया गया है। यदि मेरे इस प्रयास से आर्यसमाज की पत्रकारिता के इतिहास के कुछ अद्यतन अप्रकाशित पृष्ठ प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष आते हैं और उन्हें पढ़कर राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में आर्यसमाज की निर्विवाद भूमिका को भली प्रकार समझे जाने में सहायता मिलती है, तो लेखक के श्रम की सार्थकता है।

दयानन्द आश्रम, अजमेर।
गांधी जयन्ती (२ अक्टूबर १९८०) Bhavanilal Bhartiya

भारत में पत्रकारिता का उद्भव और विकास

भारत में पत्र-पत्रिकाओं का आविर्भाव और विकास यूरोपीय जातियों के इस देश में आगमन के पश्चात् हुआ। अंग्रेजी शासन की नींव सुस्थिर हो जाने के पश्चात् ही भारत में प्रथम समाचार-पत्र के प्रकाशन का अवसर आया। इस पत्र का नाम था 'बंगाल गजट' अथवा कलकत्ता जनरल एडवर्टाइजर' (Bengal Gazette or Calcutta General Advertiser) और इसे निकालने वाले अंग्रेज सज्जन का नाम था जेम्स आगस्ट हिकी। पत्र में विज्ञापनों और राजनीतिक टिप्पणियों का बाहुल्य रहता था। हिकी के इस पत्र का प्रथम प्रकाशन २९ फरवरी १७८० को कलकत्ता से हुआ।[१] इसके बाद तो अंग्रेजी में बहुत से पत्र निकलने लगे। कलकत्ता के पश्चात् बम्बई और मद्रास से भी बहुसंख्यक पत्र निकले।

भारतीय भाषा का प्रथम पत्र सीरामपुर (बंगाल) के बैपटिस्ट ईसाई मिशनरियों ने निकाला। बंगला भाषा का यह मासिक पत्र दिग्दर्शन १८१७ में निकला।[२] शीघ्र ही भारतवासी पत्र-पत्रिकाओं का महत्त्व अनुभव करने लगे, विशेषत: बंगाल के शिक्षित वर्ग ने पत्रों के विकास में अपना उल्लेखनीय योगदान देना आरम्भ किया। १८२० में ताराचन्द दत्त और भवानीचरण बनर्जी के संयुक्त सम्पादकत्व में साप्ताहिक 'संवाद कौमुदी' आरम्भ हुई।[३] सम्पादकद्वय भारतीय नव जागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय के मित्र थे, अतः इस पत्र को राजा महोदय का ही पत्र समझा जाता था। जब ईसाई मत प्रचारकों ने 'समाचार दर्पण' पत्र के द्वारा हिन्दू धर्म पर हमले आरम्भ किए तो राजा राममोहन राय को उनका प्रतिवाद करने के लिए निजी पत्र की आवश्यकता अनुभव हुई। फलत: उन्होंने ब्रह्मैनिकल मैगजीन (Brahmanical Magazine) निकाला[४] और ईसाइयों के द्वारा किये जाने वाले आक्षेपों का प्रत्युत्तर देने के लिए सन्नद्ध हुए। यह पत्र द्विभाषी था और

१. समाचार पत्रों का इतिहास ले. पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी पृ. २७
२. वही पृ. ३३
३. वही पृ. ३५
४. वही पृ. ३६

बंगला तथा अंग्रेजी में निकलता था। राय महाशय भाषाओं के सम्बन्ध में उदार दृष्टिकोण रखते थे। वे स्वयं विभिन्न भारतीय तथा विदेशी भाषाओं के ज्ञाता थे। मुसलमानी अमलदारी के समाप्त हो जाने पर भी फारसी का प्रभुत्व यथापूर्व विद्यमान था। उसे अखिल भारतीय भाषा के रूप में पहचाना जाता था और मुसलमानों के अतिरिक्त समय-समय पर मराठों, सिक्खों, राजपूतों यहाँ तक कि अंग्रेजों ने भी उसे राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। राम मोहन राय ने भी ब्रह्मसमाज की स्थापना के अनन्तर फारसी में 'मीरातुल अखबार' नामक पत्र निकाला।[1]

९ मई १८२९ को राजा राममोहन राय ने 'बंगदूत' नामक एक अन्य पत्र प्रकाशित किया जिसमें बंगला, हिन्दी और फारसी के लेख रहते थे।[2] इन तथ्यों से विदित होता है कि राजा राममोहन राय ने अपने प्रगतिशील धार्मिक एवं सामाजिक विचारों का जन सामान्य में प्रचार करने के लिए समाचार पत्रों को एक सशक्त माध्यम के रूप में स्वीकार किया तथा अंग्रेजी और फारसी जैसी राजमान्य भाषाओं के अतिरिक्त बंगला और हिन्दी जैसी लोकमान्य भाषाओं में भी पत्र निकाले। इस प्रकार विभिन्न भाषाओं के पत्रों को प्रकाशित कर तथा उनके माध्यम से अपने उदार, सुधारवादी विचारों को प्रचारित कर उन्होंने धर्म और समाज के सुधार सम्बन्धी आन्दोलनों में पत्र पत्रिकाओं की निर्विवाद भूमिका स्थापित की।

हिन्दी भाषा का प्रथम पत्र उदन्त मार्तण्ड ३० मई १८२६ को पं. युगल किशोर शुक्ल के सम्पादकत्व में कलकत्ते से प्रकाशित हुआ।[3] लगभग डेढ़ वर्ष तक निकलने के पश्चात् ११ दिसम्बर १८२७ को इसका अन्तिम अंक निकला। परन्तु अब हिन्दी पत्रों की परम्परा का प्रारम्भ हो चुका था जो निर्बाध गति से प्रवाहित होती रही। बंगाल के अतिरिक्त पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तरप्रदेश) मालवा, बम्बई आदि प्रदेशों से भी हिन्दी पत्र प्रकाशित होने लगे। इस संक्षिप्त विवरण से ज्ञात होता है कि भारत में पत्रकारिता के उद्भव को २०० वर्ष पूरे होने जा रहे हैं, जबकि हिन्दी पत्रकारिता भी अपने जीवन के १५० गौरवपूर्ण वर्ष पूरे कर चुकी है।

□□

---

१. समाचार पत्रों का इतिहास—पं. अम्बिका प्रसाद वाजपेयी पृ. ३६
२. वही पृ. ४०
३. वही पृ. ९३

स्वामी दयानन्द और समकालीन पत्रकारिता

हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। इसी शताब्दी में भारत के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के महान् और भव्य आन्दोलनों का भी सूत्रपात हुआ। आर्यसमाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती के जन्म (१८२४ ई.) के दो वर्ष पश्चात् ही हिन्दी का प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' निकला, यह हम देख चुके हैं। स्वामी दयानन्द के सार्वजनिक जीवन का आरम्भ १८६३ ई. से माना जा सकता है, जब वे मथुरा में गुरु विरजानन्द दण्डी की पाठशाला से शास्त्रों का अध्ययन समाप्त कर धर्मप्रचार में संलग्न हुए। कई वर्षों तक वे गंगा के तटवर्ती प्रदेश में एकाकी विचरण करते हुए धर्मोपदेश करते रहे, परन्तु धीरे धीरे उनकी सार्वजनिक प्रवृत्तियों का विस्तार होने लगा। किसी समाचार पत्र में स्वामी दयानन्द का प्रथम बार उल्लेख १८६९ में हुआ माना जायगा, जब कि कानपुर के 'शोलाएतूर' नामक पत्र ने उनके पं. हलधर ओझा से हुए शास्त्रार्थ का एकपक्षी विवरण प्रकाशित किया।[1] इसी वर्ष नवम्बर में उन्होंने काशी जाकर वहाँ की विद्वन्मण्डली से मूर्तिपूजा पर अपना प्रसिद्ध शास्त्रार्थ किया जिसकी चर्चा पश्चिमोत्तरप्रदेश, बंगाल तथा पंजाब तक के हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी पत्रों ने विस्तार पूर्वक की।[2]

ज्यों-ज्यों स्वामी जी देश के सार्वजनिक जीवन में अधिकाधिक प्रविष्ट होते गये, । समाचार पत्रों में उनकी चर्चा बढ़ती गई। कलकत्ता प्रवासकाल में वे देश की कतिपय उन विभूतियों के सम्पर्क में आये जो तत्कालीन धर्म, समाज और राजनीति को अपनी सुधारोन्मुख प्रवृत्तियों के कारण प्रभावित कर रही थीं। दयानन्द के विचार भी कम प्रगतिशील अथवा अन्यों से किसी भी प्रकार कम क्रान्तिकारी नहीं थे। अतः बंगाल के पत्रों में उनके विचारों की चर्चा और आलोचना पर्याप्त मात्रा में हुई। इस प्रकार हम देखते हैं कि समय समय पर देश के सभी प्रमुख पत्रों ने स्वामी दयानन्द के उपदेशों,

---

१. महर्षि दयानन्द का जीवन चरित भाग १ पं. घासीराम कृत, पृ. १८७

२. द्रष्टव्य—काशी शास्त्रार्थ के वैदिक यंत्रालय अजमेर से प्रकाशित १३वें संस्करण में डा. भवानीलाल भारतीय द्वारा संकलित परिशिष्ट सामग्री।

व्याख्यानों, शास्त्रार्थों तथा उनके विभिन्न धार्मिक आन्दोलनों को पर्याप्त (coverage) दिया। जिस-जिस प्रदेश में वे अपने धर्मप्रचार अभियान को लेकर गये, उस-उस प्रदेश के प्रमुख पत्रों ने उनकी गतिविधियों तथा प्रवृत्तियों का सहानुभूति एवं सदाशयता के साथ उल्लेख किया। पश्चिमोत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब तथा राजस्थान की पत्र पत्रिकाओं ने स्वामीजी की प्रचार यात्राओं तथा उससे प्राप्त होने वाली उपलब्धियों की विशद चर्चा की।[1] जिस समय बम्बई में सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना हुई और उसके नियम निर्धारित किये गये उस समय भी एक साप्ताहिक पत्र 'आर्य-प्रकाश' प्रकाशित किये जाने का संकल्प स्वामी दयानन्द ने किया था। बम्बई में स्वीकार किये गये नियम संख्या ५, १२ तथा २५ में इस 'आर्यप्रकाश' का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

नियम संख्या—५ प्रधान समाज में वेदोक्तानुकूल संस्कृत और आर्यभाषा में नाना प्रकार के सदुपदेश की पुस्तक होगी और एक 'आर्यप्रकाश' पत्र यथानुकूल आठ आठ दिन में निकलेगा। नियम सं. १२ पत्र की व्यवस्था के लिये आर्य सभासदों द्वारा उदारतापूर्वक धन दिये जाने तथा नियम सं. २५ में 'आर्यप्रकाश' पत्र की रक्षा एवं उन्नति के लिये आर्य सभासदों को प्रेरित किया गया है।

कालान्तर में स्वयं स्वामी दयानन्द को भी अपने विचारों, मान्यताओं तथा विभिन्न विषयों पर अपनी धारणाओं को प्रकाशित करने के लिए पत्रों में लेख, विज्ञप्ति तथा सूचना-विज्ञापन आदि छपाने की आवश्यकता अनुभव होने लगी। अतः वे भी हिन्दी के प्रमुख पत्रों को इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रयुक्त करने लगे। समय-समय पर उनके अनेक पत्र सम्पादकों के नाम प्रकाशित हुए। कलकत्ते के सुप्रसिद्ध हिन्दी साप्ताहिक भारतमित्र को २३ जुलाई १८८३ को लिखे गये अपने पत्र में उन्होंने श्री. ए. ओ. ह्यूम के वेदविषयक विचारों पर अपनी आलोचनात्मक प्रतिक्रिया प्रकाशनार्थ भेजी।[2] इसी पत्र को भेजे गये एक अन्य वक्तव्य में उन्होंने भारतमित्र के 'विविध समाचार' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस उल्लेख का खण्डन किया कि

---

१. परोपकारी में प्रकाशित डा० भवानीलाल भारतीय के एतद् विषयक लेख द्रष्टव्य हैं—(१) स्वामी दयानन्द—तत्कालीन समाचार पत्रों के संदर्भ में मार्च, अप्रेल १९७६ (२) गुजरात, महाराष्ट्र के पत्रों में स्वामी दयानन्द विषयक संदर्भ—मई १९७६

२. ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन पृ. ४३९

मुसलमानी मत का मूल अथर्ववेद में है तथा 'अल्लोपनिषद्' जैसी कोई प्राचीन संस्कृत पुस्तक है जो इस्लाम का प्रतिपादन करती है।[1] अजमेर से प्रकाशित होने वाले 'देशहितैषी' मासिक को भी स्वामीजी ने मुन्शी इन्द्रमणि के शिष्य लाला जगन्नाथदास की पुस्तक 'आर्य प्रश्नोत्तरी' की समीक्षा प्रकाशनार्थ भेजी। देशहितैषी ने इस समीक्षा को 'एक उचित वक्ता' के नाम से प्रकाशित किया।[2] आर्यसमाज के इतिहास के पाठकों को यह विदित है कि मुरादाबाद निवासी मुंशी इन्द्रमणि की इस्लाम की आलोचनाविषयक एक पुस्तक के प्रकाशित होने पर जब मुसलमानों ने उन पर अभियोग चलाया था तो स्वामी दयानन्द ने मुंशीजी के पक्ष की पैरवी के लिए फण्ड कायम करने की सार्वजनिक अपील करते हुए लोगों को इस कोष में मुक्तहस्त से धन देने की प्रेरणा की थी। कालान्तर में जब यह आशंका उत्पन्न हुई कि मुंशी इन्द्रमणि इस कोष का सार्वजनिक महत्त्व स्वीकार न करते हुए उसे निजी सम्पत्ति के रूप में व्यय करना चाहते हैं, तो स्वामीजी ने उनकी इस प्रवृत्ति को नापसन्द किया। सार्वजनिक धन के दुरुपयोग को सहन करना स्वामीजी के लिये सम्भव नहीं था। मुंशीजी भी अपने पक्ष का समर्थन करते हुए पत्रों में अपने कार्य के औचित्य को प्रकट करने लगे। तब स्वामीजी ने 'एक उचित वक्ता' के नाम से एक विस्तृत वक्तव्य समाचार पत्रों में प्रकाशित कराया और वस्तुस्थिति का स्पष्टीकरण किया।

आर्यसमाज फर्रूखाबाद के मुखपत्र भारत सुदशा प्रवर्त्तक में भी स्वामीजी के लेख तथा वक्तव्य प्रकाशित होते थे। पं. इन्द्रविद्यावाचस्पति के अनुसार तो स्वामीजी ने कुछ काल तक सुदशा प्रवर्त्तक का सम्पादन भी किया था।[3] नवीन शोध से यह भी ज्ञात हुआ है कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा सम्पादित 'कवि वचन सुधा' नामक पत्रिका के सम्पादक मण्डल में भी स्वामीजी का नाम अंकित रहता था।[4] इसी पत्र में स्वामीजीविषयक अनेक सूचनायें समय-समय पर छपीं। 'अद्वैत मत खण्डन' शीर्षक स्वामी दयानन्द रचित एक पुस्तिका को भी कविवचन सुधा ने अपने दो अंकों में प्रकाशित किया था।

यह बात नहीं कि देश के सभी पत्र पूर्वाग्रह मुक्त भाव से अथवा प्रशंसा

---

१. ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन पृ. ४४७
२. देशहितैषी
३. आर्यसमाज का इतिहास भाग १ पृ. ४५
४. धर्मयुग में प्रकाशित राय कृष्णदास के भारतेन्दु विषयक लेख।

पूर्ण दृष्टि से ही स्वामीजी की चर्चा करते थे। इसके विपरीत अनेक पत्र ऐसे भी थे जो अपने संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण उनके विरोध में प्रायः लिखते रहते थे। लाहौर का 'मित्रविलास' तो स्वामीजी का कट्टर विरोधी ही था,[1] कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले भारतमित्र, सारसुधानिधि आदि पत्र भी अपने सनातनी संस्कारों के वशवर्ती होकर दयानन्द की प्रगतिशील एवं उदार चविारधारा का यदा कदा विरोध कर बैठते थे।[2] स्वामी के निधन के समाचार को देश के प्रायः अनेक समाचार पत्रों ने प्रमुखता देकर प्रकाशित किया।[3] इस देशभक्त महापुरुष के असामयिक अवसान पर सभी भाषाओं के पत्रों ने शोक व्यक्त किया। वैचारिक दृष्टि से असहमति रखने वाले पत्रों ने भी स्वामीजी के देशभक्तिपूर्ण भावों और उनकी सदाशयता की उन्मुक्त भाव से प्रशंसा करते हुए दिवंगत नेता को भावभीनी श्रद्धाञ्जलियां अर्पित कीं तथा उनके निधन को देश तथा मानवता की अपूरणीय क्षति बताया।[4]

□□

---

१. मित्रविलास साप्ताहिक का प्रकाशन लाहौर से १८७७ में काश्मीरी पं. मुकुन्दराम द्वारा किया गया था। अपनी संकीर्ण विचारधारा के कारण यह पत्र आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द की प्रगतिशील नीतियों का सहज विरोधी बनगया।

२. द्रष्टव्य-समाचार पत्रों का इतिहास. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी पृ. १५५

३. द्रष्टव्य-आर्यप्रेमी का विशेषांक-महर्षि श्रद्धाञ्जलि अंक अक्टूबर १९६८

४. द्रष्टव्य-उपर्युक्त विशेषांक

आर्यसमाज और पत्रकारिता

वैदिक धर्म के पुनरुत्थान तथा आर्यसंस्कृति की पुनःस्थापना की दृष्टि से दयानन्द सरस्वती ने महानगरी बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना १० अप्रैल १८७५ (चैत्र शुक्ला पंचमी १९३२ वि.) के दिन की। इससे पूर्व १८७२-७३ में भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता में रह कर वे बंगाली सुधारकों, देशभक्तों तथा नवोदय के सूत्रधार महापुरुषों के सम्पर्क में आ चुके थे। बंगाली प्रेस ने स्वामीजी के कलकत्ता प्रवास को प्रमुखता से अभिव्यक्ति दी। इसी प्रकार बम्बई में रहते समय वे महाराष्ट्र के प्रमुख नेताओं, विद्वानों और समाज सुधारकों के सम्पर्क में आये। बम्बई के मराठी, गुजराती और अंग्रेजी पत्रों ने भी दयानन्द सरस्वती की गतिविधियों और कार्यक्रमों को सुर्खियां देकर प्रकाशित किया। १८७७ में उन्होंने पंजाब की यात्रा की जिसमें लुधियाने से प्रकाशित होने वाले नीति-प्रकाश के सम्पादक मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी तथा लाहौर से छपने वाले पत्र कोहेनूर के स्वामी मुंशी हरसुखराय की प्रेरणा ही प्रमुख कार्य कर रही थी। पंजाब के पत्रों ने भी स्वामीजी की गतिविधियों और प्रवृत्तियों तथा उनके उपदेशों एवं शास्त्रार्थों का विवरण छापने में कोई कोताही नहीं की। इस प्रकार दयानन्द और आर्यसमाज पत्रों के माध्यम से सार्वजनिक चर्चा और आलोचना के विषय बनते गये।

१८७७ में लाहौर आर्यसमाज की स्थापना के बाद देश में सर्वत्र आर्यसमाजों का जाल सा बिछने लगा। सुधार और नव जागरण की इस अभिनव प्रवृत्ति ने पठित जनमानस को सहज ही आकृष्ट किया और प्रेक्षकों ने अनुभव किया कि धार्मिक नवोदय के अन्य आन्दोलनों से भिन्न आर्यसमाज के सिद्धांतों में भारतवासियों के स्वाभिमान और अस्मिता को जगाने की एक अनोखी अपील है। फलतः प्रार्थनासमाज और ब्रह्मसमाज जैसे सुधारवादी आन्दोलन महाराष्ट्र, बंगाल तथा पंजाब के पठित नागरिक वर्ग तक ही अपना प्रभाव क्षेत्र बना सके, वहां आर्यसमाज ने उत्तरभारत के व्यापक हिन्दी क्षेत्र को प्रभावित किया। कहना नहीं होगा कि अपने समानधर्मा ब्रह्मसमाज आदि की ही भांति आर्यसमाज ने भी अपने वैचारिक क्षितिज का विस्तार करने के लिए पत्र पत्रिकाओं के माध्यम को ही अपनाया। आर्यसमाज की कार्य प्रवृत्तियाँ पत्रों के द्वारा पठित जनता तक पहुंचती रहीं। एक अन्य बात यह भी थी कि वह युग राजनीतिक चेतना की दृष्टि से अधिक प्रबुद्ध नहीं था।

धार्मिक और सामाजिक पुनरुत्थान और पुनर्निर्माण के कार्यों में ही राष्ट्रभक्ति के भावों को देखा जाता था। इसलिए भी आर्यसमाज शिक्षित और अशिक्षित भारतीय जनता का ध्यान अधिकाधिक आकृष्ट कर सका।

आर्यसमाज की पत्रकारिता का इतिहास आर्यसमाज के इतिहास जितना ही पुराना है। आर्यसमाज के पत्रों ने हिन्दी पत्र पत्रिकाओं के इतिहास में कुछ स्वर्णिम पृष्ठ जोड़े हैं। 'हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास' के लेखक बाबू राधाकृष्णदास ने आर्यसमाज द्वारा किए गये हिन्दीविषयक कार्यों का उल्लेख करते हुए लिखा—"संवत् १९३२ से आर्यसमाज की सृष्टि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारतवर्ष में की। इस समाज का यद्यपि धर्म से विशेष सम्बन्ध रहा और उसके द्वारा सारे देश में धर्मविषयक आन्दोलन मच गया तथापि हिन्दी भाषा का उपकार इस समाज से भी अवश्य हुआ है।" हिन्दी पत्रों में उद्भव और विकास का शोधपरक अध्ययन करने वाले डा. रामरतन भटनागर ने हिन्दी पत्रकारिता को आर्य-समाज की देन का विवेचन करते हुए लिखा है—"१८६७ ई. में हिन्दी प्रदेश में दो शक्तियों का प्रवेश हुआ। प्रथम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जिन्होंने कवि वचन सुधा (मासिक) का प्रकाशन किया तथा द्वितीय स्वामी दयानन्द जिन्होंने आर्यसमाजियों को आर्य सिद्धान्तों के प्रचारार्थ अपने पत्रों के संचालन के लिए समर्थन और प्रोत्साहन दिया। १९ वीं शताब्दी के अवशिष्ट वर्षों में इन दोनों शक्तियों ने अपने समक्ष आई सभी बाधाओं को ढहा दिया····स्वामी दयानन्द की पत्रकारिताविषयक प्रवृत्ति आर्यसमाज के हेतु प्रचारात्मक पद्धति की थी। यही दो शक्तियाँ थीं। जिन्होंने हिन्दी पत्रकारिता को वेग प्रदान किया और उसे महान बनाया।"[१]

उन्नीसवीं शताब्दी में उर्दू पत्रकारिता भी द्रुत गति से विकसित हो रही थी। हिन्दी की तुलना में उर्दू को अंग्रेजी शासन तथा उच्च वर्ग के पठित लोगों का अधिक संरक्षण प्राप्त था। तथापि उर्दू पत्रों की स्पर्धा में हिन्दी पत्रकारिता को सुदृढ़ बनाने का कार्य भी आर्यसमाज द्वारा ही सम्पन्न हुआ। डा. भटनागर ने इस विषय में लिखा है—"उर्दू के मध्य में हिन्दी पत्रकारिता को दृढता के साथ स्थापित करने वाली शक्ति आर्य-समाज ही थी। मासिक पत्रों और अन्य संवादपत्रों का प्रकाशन आर्यसमाज का एक प्रमुख उद्देश्य था। आर्यसमाज की मजबूत राष्ट्रीय और वैदिक विचारधारा ने इसे (आर्यसमाज को) हिन्दी का प्रभावशाली पक्षपोषक

१. The Rise and growth or Hindi Journalism. P. 615

बना दिया। इन उल्लेखों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि आर्यसमाज की पत्र पत्रिकाओं ने धार्मिक और सामाजिक पुनरुत्थान के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु राष्ट्रीयता और देशभक्ति के भावों के प्रसार में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है।

ईसाई प्रचारकों ने अपने प्रचार माध्यम के रूप में पत्रपत्रिकाओं का प्रयोग तो आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व ही करना आरम्भ कर दिया था। वे इन पत्रों में हिन्दू धर्म और समाज की नीति रीति पर नाना प्रकार के व्यंग्य, विद्रूप और आक्षेप करने से नहीं चूकते थे। अब आर्यसमाज ने भी अपने पत्रों के द्वारा ईसाई प्रचारकों के प्रहारों का सचोट उत्तर देना आरम्भ किया। आर्यसमाज के पत्र एक ओर भारत के पुरातन वैदिक धर्म की सार्वभौम सत्यता का प्रतिपादन करते तो साथ ही ईसाइयत की दुर्बल, विज्ञान एवं तर्क विरुद्ध मान्यताओं पर उग्र प्रहार करने में भी नहीं चूकते। परिणाम स्वरूप ईसाई प्रचारकों में उत्तेजना उत्पन्न हुई। यद्यपि वे इस (पत्रकारिता के) क्षेत्र में बहुत पहले ही अवतरित हो चुके थे, किन्तु उनका अस्तित्व संकट में पड़ गया। १८८० ई. के पश्चात् इस क्षेत्र में आर्यसमाजियों और ईसाईयों के मध्य शाब्दिक युद्ध की भरमार रही। अतः डा. भटनागर के इस कथन में कुछ भी अत्युक्ति नहीं है कि ईसाई प्रचारकों के इन प्रतिक्रियावादी तत्त्वों (उनके प्रचारात्मक पत्र) से बराबरी का संघर्ष हिन्दी पत्रकारिता के प्रगतिशील वर्गों ने किया, जिनमें आर्यसमाज की पत्रकारिता प्रमुख थी।[1]

परन्तु आर्यसमाज ने पत्रों का उपयोग केवल विरोधियों का उत्तर देने में ही किया हो, ऐसा नहीं है। आर्यसमाज ने पत्रों के माध्यम से वैदिक विचारधारा के प्रचार एवं प्रसार का सफल कार्य किया है। आर्यसमाज के पत्रों ने वैदिक धर्म, आर्य सभ्यता, भारतीय राष्ट्रवाद, हिन्दी भाषा, गोरक्षा, शुद्धि एवं संगठन जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण लोक हितकारी प्रसंगों को सार्वजनिक रूप में उपस्थित किया।

□□

१. The Rise and Growth of Hindi Journalism.

आर्यसमाज की पत्रकारिता
सामान्य प्रवृत्तियाँ

आर्यसमाज का प्रथम पत्र 'आर्यदर्पण' १८७८ में प्रकाशित हुआ था। इस प्रकार आर्यसमाज की पत्रकारिता ने अपने यशस्वी जीवन के १०० वर्ष पूरे कर लिए हैं। इस सुदीर्घ अवधि में आर्यसमाज के व्यक्तियों और संस्थाओं ने सैकड़ों पत्र प्रकाशित किए। निश्चय ही इनमें हिन्दी पत्रों की संख्या अधिक रही किन्तु उर्दू, अंग्रेजी तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं में भी पत्र-पत्रिकायें निकलती रहीं।

पत्रों का स्वामित्व—

जब पत्रों के स्वामित्व की दृष्टि से विचार करते है तो ज्ञात होता है कि अधिकांश पत्र संस्थाओं के द्वारा ही निकले। इन पत्रों को आर्य संस्थाओं का मुखपत्र (official organ) कहा जा सकता है। उन्नीसवीं शताब्दी के नवम दशक के अन्त में प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं का संगठन होने लगा था। इन प्रान्तीय सभाओं ने समय समय पर अपने पृथक्-पृथक् पत्र निकाले। पंजाब, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार-बंगाल आदि की प्रतिनिधि सभाओं द्वारा आर्य-मुसाफिर, आर्य-मित्र, आर्य-मार्त्तण्ड, आर्य-सेवक तथा आर्यावर्त जैसे मुखपत्र निकाले गये। परन्तु फर्रूखाबाद, बम्बई तथा अजमेर की आर्यसमाजों ने तो प्रतिनिधि सभाओं की स्थापना से पूर्व ही अपने पृथक् मुखपत्र निकाले थे। कालान्तर में जब आर्यसमाज में संस्था युग का बोलबाला हुआ और विभिन्न शिक्षण संस्थायें-गुरूकुल और कालेज, अनाथालय, विधवाश्रम, शुद्धिसभायें आदि संगठित हुईं तो तत् तत् संस्था ने अपनी प्रवृत्तियों और गतिविधियों के प्रकाशन के लिये अपने पृथक् पत्र प्रकाशित किए। गुरूकुल कांगड़ी और ज्वालापुर से 'वैदिक मैगजीन' और 'भारतोदय' जैसे हिन्दी एवं अंग्रजी के उत्कृष्ट पत्र निकले। अजमेर के श्री-मद्दयानन्द अनाथालय का मासिक पत्र 'अनाथरक्षक' लगभग चौथाई सदी तक प्रकाशित होता रहा। शुद्धि एवं संगठन विषयक पत्रों की भी भरमार रही।

सभाओं और संस्थाओं के अतिरिक्त व्यक्तिगत प्रयत्नों ने भी आर्यसमाज की पत्रकारिता को प्रभावित किया है तथा उसे प्रगति दी है। वैदिक यंत्रालय के प्रथम मैनेजर मुंशी बख्तावरसिंह का आर्यदर्पण, ऋषि दयानन्द के आद्य शिष्य पं. भीमसेन शर्मा का आर्य-सिद्धान्त तथा पं. तुलसीराम स्वामी के वेद-प्रकाश ने विगत शताब्दी में आर्यसमाज की पत्रकारिता को शैशव से हटाकर प्रौढ़त्व की ओर अग्रसर किया। स्वामी दर्शनानन्द ने अपने अनतिदीर्घ जीवन

काल में लगभग १ दर्जन हिन्दी-उर्दू पत्रों को जन्म दिया। ये सभी पत्रकार कोई बहुत अधिक साधन सम्पन्न नहीं थे, परन्तु पत्रों को निष्ठापूर्वक संचालित करने की भावना ही उनका सम्बल रही। पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर का वैदिक धर्म, स्वामी विद्यानन्द विदेह की सविता तथा पं. भारतेन्द्रनाथ का जन ज्ञान भी संस्था की अपेक्षा सम्पादकों और संचालकों के वैयक्तिक प्रयासों से ही उन्नति कर सके।

आर्य पत्रों की लोकप्रियता—

यद्यपि अपने पत्रों को प्रकाशित करने, उनका समुचित सम्पादन करने तथा उन्हें लोकप्रिय बनाने के लिये आर्यसमाज के लोगों ने भरसक प्रयास किए परन्तु उन्हें सीमित सफलता ही मिली। प्रायः यह देखा गया कि उनके ग्राहकों और पाठकों की संख्या कुछ सहस्र से कभी नहीं बढ़ी। आर्य-समाज का कोई पत्र सनातनी मासिक 'कल्याण' की भांति अपने ग्राहकों की संख्या लाखों तक नहीं बढ़ा सका। यदि हम इसके कारणों में जायें तो हमें ज्ञात होगा कि आर्यसमाज के पत्रों के विवेचनीय विषय प्रायः सीमित ही रहे। अधिकांश पत्रों में धार्मिक, दार्शनिक और शास्त्रीय प्रश्नों की मीमांसा रहती है। संस्थाओं के समाचारों, आर्यसमाजों के निर्वाचन, उत्सव आदि का ब्यौरा ही पत्र का अधिकांश घेर लेता है। सामान्य पाठकों की इन संस्थागत समाचारों तथा खण्डन प्रधान लेखों अथवा दार्शनिकता युक्त जटिल प्रश्नों के समाधान परक लेखों में कोई रुचि नहीं होती। दूसरी बात यह देखने में आई कि स्वयं आर्यसमाजी पाठकों की पत्र-पत्रिकाओं की पठन विषयक रुचि में भी परिवर्तन आया है। विगत शताब्दी के अन्तिम दशक तथा इस शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक के आर्यसमाजी प्रायः स्वाध्याय शील, अध्ययनप्रिय, तथा मत मतान्तरों के खण्डन मण्डन एवं इतर मतों के प्रवक्ताओं से होने वाले शास्त्रार्थों को पढ़ने और सुनने में रुचि रखने वाले होते थे। इसी का परिणाम था कि खण्डन मण्डन तथा विभिन्न शास्त्रीय प्रश्नों को लेकर लिखे जाने वाले लेखों को प्रधानता देने वाले आर्य सिद्धान्त एवं वेद-प्रकाश जैसे पत्रों की ग्राहक संख्या उस काल को देखते हुए पर्याप्त संतोषप्रद लगती है, जबकि आज इन्हीं विषयों को प्रधानता देने वाले आर्यसामाजिक पत्रों को स्वयं आर्यसमाज के अधिकारी और सदस्यगण उठाकर देखने का भी कष्ट नहीं करते।

पत्रों की लोकप्रियता तथा उसका व्यापक प्रचार सम्पादक के प्रयत्नों तथा उसकी तपस्या पर भी निर्भर करता है। उदाहरणार्थ, आर्यमित्र जैसे पुराने पत्र का उत्कर्ष काल उसी युग को माना जायगा, जब पं. हरिशंकर शर्मा जैसे पत्रकार-प्रवर उसका सम्पादन करते थे। यह कौन नहीं जानता कि शर्माजी के सम्पादन काल में आर्यमित्र की गणना हिन्दी के प्रमुखतम पत्रों

में होती थी। उसका पाठक समुदाय आर्यसमाज से इतर वर्ग के लोगों तक फैला हुआ था। शर्माजी हिन्दी के जाने माने लेखक और कवि थे। अतः वे अपने सम्पर्क और व्यक्तिगत मैत्री सम्बन्धों से आर्यमित्र में हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ लेखकों की रचनायें प्रकाशित करते थे। उनके द्वारा सम्पादित आर्य-मित्र में धार्मिक-सामाजिक विषयों से सम्बन्धित लेखों के अतिरिक्त कविता, कहानी, समालोचना, व्यंग्य-विनोद आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं को भी स्थान मिलता था।

एक अन्य बात भी थी। आर्यसमाज के कुछ पत्रों ने संस्था विशेष के मुख पत्र होने और विशिष्ट विचारधारा के प्रचारक होने पर भी अपने सार्वजनिक रूप को बनाये रक्खा। ऐसे पत्रों की लोकप्रियता निर्विवाद रही। उदाहरणार्थ, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुख पत्र आर्यमार्तण्ड, अपने प्रकाशन के प्रारम्भिक युग में अजमेर और समीपवर्ती देशी रियासतों की जनसमस्याओं, उनके अभाव अभियोगों को मुखर करने वाले सार्वजनिक, लोकप्रिय पत्र की भूमिका निभाता था। स्थानीय समाचारों के लिये तो उस पर निर्भर रहना ही पड़ता था, प्रान्त की राजनीतिक, सामाजिक तथा सार्वजनिक समस्याओं पर व्यक्त की जाने वाली उसकी सम्मति को आदर की दृष्टि से देखा जाता था। इसी प्रकार १९३८-३९ में अजमेर से ही प्रकाशित होने वाले 'विजय' ने भी आम पाठक की अभिरुचियों को महत्त्व दिया था। यद्यपि यह पत्र भी आर्यसमाज अजमेर का ही प्रवक्ता था, परन्तु इसमें नगर और प्रान्त से सम्बन्ध रखने वाले समाचारों, टिप्पणियों और लेखों की प्रधानता रहती थी। साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले पाठकों का मनस्तोष भी ऐसे पत्रों से होता था। साथ ही तत्कालीन रियासती गतिविधियों, राजनीतिक मसलों तथा राजस्थान के जनजीवन को प्रभावित करने वाली चर्चाओं को भी इनमें उचित स्थान दिया जाता था।

खेद है कि कालान्तर में आर्यसमाज के पत्रों का यह सार्वजनिक रूप धीरे-धीरे विलुप्त होता गया और उसी अनुपात में उनकी लोकप्रियता भी समाप्त होती गई। अब वे आर्यसमाजियों के एक सीमित दायरे में ही पढ़े जाते हैं। जिन पत्रों को सम्पादकों की व्यक्तिगत साधना का सम्बल विशेष रूप से उपलब्ध हुआ, वे अवश्य ही जनप्रियता के उच्च सोपानों पर चढ़ सके। सातवलेकर जी का वैदिक धर्म, विद्यानंद विदेह की सविता तथा पं. भारतेन्द्रनाथ द्वारा सम्पादित जनज्ञान को जो आपेक्षिक सफलता और लोकप्रियता मिली उसमें इन पत्रों के सम्पादकों का निष्ठापूर्ण परिश्रम ही दृष्टिगोचर होता है।

आर्यसमाज के पत्रों का अन्तरंग और बहिरंग—

प्रकाशन सामग्री की दृष्टि से आर्यसमाज के पत्रों ने प्राय: एक सा ही ढ़र्रा स्वीकार कर रक्खा है। पत्रों का कलेवर एकरसता उत्पन्न करने वाले लेखों से परिपूर्ण होता है। यथा, प्रारम्भ में किसी वेद मंत्र को उद्धृत कर उसकी व्याख्या दे दी जाती है। यथा सम्भव ऋषि दयानन्द कृत वेदार्थ को ही छापने का उद्योग रहता है, परन्तु कभी-कभी अन्य विद्वानों द्वारा किये गये मंत्रार्थ तथा मंत्रों की पद्यमयी व्याख्या भी स्थान प्राप्त करती है। पत्र के अवशिष्ट भाग में कतिपय लेख-जो प्राय: आर्यसमाज के सिद्धान्तों, मन्तव्यों और ऋषि दयानन्द की विचार धारा की पुष्टि में होते हैं, छापे जाते हैं। पत्र के अन्तिम भाग में आर्यसमाजों और संस्थाओं के समाचार रहते हैं। इतर मतावलम्बियों के सिद्धान्तों की आलोचना, अन्य मतवादियों द्वारा आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर किए जाने वाले कटाक्षों और आक्षेपों का उत्तर भी प्रमाण पुरस्सर छापा जाता है। यदा कदा कुछ कविताओं को छापने के लिये भी स्थान निकल आता है, परन्तु प्राय: ये कविताएं शुष्क, रस हीन तथा इतिवृत्तात्मक होती हैं। सामान्य तुकबंदियों को भी स्थान मिलने में कोई कठिनाई नहीं होती। कुछ पत्रों में बाल जगत्, नारी संसार, साहित्य समीक्षा, स्वास्थ्य चर्चा जैसे स्तम्भ भी रहते हैं जिन्हें येन केन प्रकारेण पूरा किया जाता है, परन्तु धारावाही उपन्यास, कहानी, एकांकी नाटक अथवा साहित्य की अन्य ललित विधाओं के लिये इन पत्रों में स्थान का अभाव ही रहता है। कहीं अपवाद रूप कोई कहानी, ललित निबंध आदि भी दिखाई दे जाते हैं।

आर्यसमाज के कई पत्र इस महान् आन्दोलन की आनुषंगिक प्रवृत्तियों को उभारने तथा उनकी ओर सामान्य जनता का ध्यान आकृष्ट करने की दृष्टि से भी निकाले गये। यथा गोरक्षा, नारी उत्थान, शुद्धिप्रचार जैसे कार्यक्रमों को शक्ति प्रदान करने के लिये समय समय पर पत्र निकले। यद्यपि कालान्तर में इन विषयों की महत्ता की ओर आर्यसमाजेतर लोगों का भी ध्यान गया और गोरक्षा, नारी सुधार तथा शुद्धि संगठन जैसे मसलों को हिन्दू जन समाज का सामान्य विषय स्वीकार कर लिया गया, परन्तु इस बात का श्रेय आर्यसमाज को ही मिलना चाहिए कि उसने हिन्दी पत्रकारिता में गोरक्षण, स्त्री सुधार, इतर धर्मावलम्बियों का हिन्दू धर्म में शुद्धिपूर्वक प्रवेश जैसे सामयिक विषयों को सार्वजनिक चर्चा का केन्द्र बनाने के लिये पृथक्शः पत्रों का प्रकाशन किया।

आर्य पत्रों की आर्थिक दशा—

आर्यसमाज के पत्रों की आर्थिक दशा कभी सुदृढ़ नहीं रही। जो पत्र सभाओं और संस्थाओं द्वारा निकाले गये उनका तो उद्देश्य ही इन संस्थाओं

के समाचारों, प्रवृत्तियों और कार्यक्रमों से आर्यजनता को अवगत कराना होता था। धनोपार्जन की दृष्टि से ये पत्र निकाले भी नहीं गये थे। अत: इन पत्रों के प्रकाशन में जो आर्थिक क्षति होती उसकी पूर्ति भी पत्रों की संचालिका सभा, संस्थाओं को ही करनी पड़ती है। व्यक्तिगत प्रयत्नों से निकाले गये पत्रों ने भी इनके स्वामियों को कभी आर्थिक लाभ दिया हो, ऐसा ज्ञात नहीं होता। इन पत्र संचालकों का सारा श्रम येन केन प्रकारेण पत्र हेतु धन जुटाने और घाटा पूरा करने में ही लग जाता है। परन्तु पत्रकारिता को एक पवित्र ध्येय (mission) समझ कर धर्मप्रचार की लगन वाले आर्यसमाजी पत्रों के संचालकों और सम्पादकों का एक मात्र पुरस्कार लष्टम पष्टम इन पत्रों को चलाना ही रह जाता है।

इतना सब कुछ होने पर भी आर्यसमाज ने हिन्दी पत्रकार जगत् को कुछ विभूतियाँ प्रदान की हैं। सम्पादकाचार्य रुद्रदत्त शर्मा, पं. पद्मसिंह शर्मा, पं. हरिशंकर शर्मा, पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति, पं. सत्यदेव विद्यालंकार जैसे सुगृहीत नामधेय पत्रकारों ने हिन्दी पत्रकारिता को अपने तप और साधना से प्रोज्ज्वल किया है। इसी प्रकार पंजाब के सार्वजनिक जीवन को आन्दोलित और प्रभावित करने वाले पत्रों में प्रताप और मिलाप तथा उनके सम्पादक महाशय कृष्ण तथा खुशहालचन्द खुर्सन्द जैसे आर्यसमाजी पत्रकारों का महत्त्व नगण्य नहीं है। गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों की एक बहुत बड़ी मण्डली ने तो पत्रकारिता को अपने व्यवसाय के रूप में ही अपना लिया था, परिणाम में हम देखते हैं कि हिन्दी पत्रकारिता को 'विद्यालंकार' और 'वेदालंकार' उपाधिकारी स्नातक पत्रकारों का प्रदाय निश्चय ही उल्लेखनीय है।

आर्य पत्रों के सम्पादक—

आर्य पत्रों के सम्पादक प्राय: वे ही लोग रहे जिन्होंने कर्त्तव्य भावना से अनुप्राणित होकर पत्र सम्पादक का कार्य निष्ठापूर्वक किया। वैतनिक सम्पादकों की संख्या नगण्य ही है। प्राय: किसी विचारशील लेखक तथा साहित्यकार के जिम्मे संस्थाओं के पत्रों का सम्पादन कार्य सुपुर्द कर दिया जाता है जिसे वह आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द के प्रति अपने एकान्त प्रेम तथा आस्थाभाव के कारण ही पूर्ण दायित्व के साथ करता है। परन्तु कुछ व्यक्तियों के लिये सम्पादन कार्य व्यवसाय तथा जीविकोपार्जन के साधन रूप में भी रहा। पं. रुद्रदत्त शर्मा, पं. हरिशंकर शर्मा तथा पं. भारतेन्द्रनाथ ने यदा कदा वैतनिक रूप में भी सम्पादन कार्य किया है।

सभा संस्थाओं द्वारा संचालित पत्रों के सम्पादन कार्य की स्थिति कुछ भिन्न रही है। यों इन पत्रों के सपादक के रूप में संचालिका सभाओं के मंत्री का ही नाम जाता है, वस्तुत: सम्पादन कार्य संस्थाओं के मुख्य लिपिकों अथवा किसी अन्य वैतनिक कार्यकर्त्ता के सुपुर्द कर दिया जाता है जो इस कार्य

को अपने मुख्य कार्य से पृथक् मान कर गौण भाव से, उपेक्षापूर्वक ही करता है। और वह करता भी क्या है? प्राय: पत्रों की डाक में लेख, समाचार, सूचनायें, उत्सवों के ब्यौरे आदि मिलते हैं जिन्हें ऐसे सम्पादक-लिपिक एक सिलसिला देकर मुद्रण हेतु भेज देते हैं और यहीं उसके सम्पादन कार्य की इतिश्री हो जाती है। किसी किसी पत्र में व्यक्ति विशेष से अनुरोध कर अथवा उसे स्वल्प पारिश्रमिक देकर साप्ताहिक का सम्पादकीय लिखने के लिये अनुबंधित कर लिया जाता है। ऐसा व्यक्ति प्राय: बिना नाम दिए अथवा कभी कभी स्वनाम सहित नियमित रूप से सम्पादकीय लिखता है। उसका यह लेख पत्र में प्रमुखता से छापा जाता है। सम्पादकीय पर लेखक का नाम न रहने से पाठकों को यह भ्रान्ति हो सकती है कि पत्र का सम्पादक (जो प्राय: सभा का मंत्री होता है) ही इस सम्पादकीय स्तम्भ को नियमित रूप से लिखता है, जबकि वस्तुस्थिति भिन्न होती है।

यह एक विडम्बना ही है। कि प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं तथा अन्य आर्य संस्थाओं के मुखपत्रों के सम्पादन का गुरुतर भार लिपिकों और वैतनिक कार्यकर्ताओं के भरोसे छोड़ दिया जाता है। प्राय: यह भी देखा गया है कि सभा-संस्थाओं के मंत्री पद पर भिन्न व्यक्ति के आ जाने से पूर्व मंत्री का सम्पादक रूप में छपने वाला नाम हटा दिया जाता है और अब नव निर्वाचित मंत्री सम्पादक बन जाते हैं। वस्तुस्थिति तो यह होती है कि न तो भूतपूर्व और न वर्तमान मंत्री का ही सम्पादन के वास्तविक कार्य से कोई सम्बन्ध होता है। इसे तो कार्यालय का स्थायी कर्मचारी ही करता है। बहुत कम सम्पादक ऐसे होते हैं जो प्रकाशनीय सामग्री का आद्यन्त अवलोकन कर उसका शोधन या परिमार्जन करते हैं, अन्यथा तो वह सामग्री जैसी लेखक से प्राप्त होती है, उसे वैसे ही छाप दिया जाता है। लिपिक-सम्पादक में संशोधन, परिमार्जन की क्षमता भी नहीं होती, जिसका परिणाम यह होता कि कभी-कभी आर्यसमाज के पत्रों में अनवधानतावश सिद्धान्त विरुद्ध, आर्यसमाज की नीति रीति से विरुद्ध लेख भी छप जाते है, जिनके लिये बाद में पाठकों द्वारा स्मरण कराये जाने 'क्षमा याचना' या 'स्पष्टीकरण' छाप दिया जाता है।

तो यह है आर्यसमाज के वर्तमान पत्रों की स्थिति जो कथमपि संतोषजनक नहीं है। निश्चय ही आर्यसमाज के पत्रों की दशा इन तीन चार दशकों में ही बिगड़ी है, अन्यथा प्रारम्भिक दशकों के पत्र पूर्ण परिश्रम, अध्यवसाय तथा तत्परता से सम्पादित एवं प्रकाशित किये जाते थे।

हमारे अध्ययन का उद्देश्य सौ वर्ष की दीर्घ अवधि में फैले आर्यसमाज के पत्रों का परिचयात्मक सर्वेक्षण करना ही है। यहाँ इतना स्थान नहीं है कि पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत की गई भाव एवं विचार सामग्री तथा उसके प्रस्तुतीकरण की शैली एवं कला के विषय में विस्तृत विवेचना की जाय, परन्तु प्रसंगोपात्त विभिन्न पत्रों के कथ्य तथा उनकी अभिव्यक्ति, पद्धति पर भी कुछ विचार करने के प्रसंग आयेंगे ही।

आर्य पत्रकारिता का प्रथम युग

अपने अध्ययन को सुकर बनाने के लिये हमने आर्यसमाजी पत्रकारिता को तीन पृथक् कालों में विभाजित किया है। १८७५ से १९०० तक का काल-उन्नीसवीं शताब्दी का अन्तिम चतुर्थांश आर्यसमाज के पत्रों के उद्भव और विकास का काल था। सामान्य हिन्दी पत्रकारिता का भी यह शैशव काल था। इस युग में आर्यसमाज के जो पत्र प्रकाशित हुए वे अधिकांश में वैयक्तिक प्रयासों के ही परिणाम थे; उसी भांति जिस प्रकार भारतेन्दु कालीन हिन्दी पत्र अपने अपने सम्पादकों के परिश्रम और अध्यसाय से ही निकल रहे थे। अभी तक आर्यसमाज के प्रान्तीय संगठन पूर्ण रूप में विकसित और सुदृढ़ नहीं बन पाये थे इसलिये उनके द्वारा संचालित पत्रों की संख्या भी नगण्य ही थी, जब कि व्यक्तिगत प्रयत्नों से निकाले गये आर्यदर्पण, आर्यसिद्धान्त, वेदप्रकाश आदि पत्र पाठकों को प्रचुर मात्रा में ठोस पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराते थे। आर्यसमाज का यह प्रारम्भिक काल आर्य जनों में श्रद्धा, विश्वास, उत्साह तथा कुछ कर गुजरने की भावना स्फूर्त कर रहा था। अत: आर्य पत्रों के पाठक भी इन पत्र-पत्रिकाओं से यथार्थ मार्गदर्शन, प्रेरणा तथा स्फूर्ति ग्रहण करने के लिये लालायित रहते थे।

विभिन्न आर्थिक कठिनाइयाँ होने पर भी इन पत्रों की ग्राहक संख्या आज की तुलना में, ज़बकि शिक्षित जनसमुदाय बढ़ा ही है, अधिक संतोषप्रद थी। इन पत्रों के ग्राहक अधिकांश में आर्यसमाजों के सभासद, तथा इस आन्दोलन से सद्भावना और सहानुभूति रखने वाले व्यक्ति होते थे, जबकि द्वितीय और तृतीय युग में हम देखते हैं कि आर्यसामाजिक पत्रों के ग्राहक प्राय: आर्यसमाजें तथा संस्थायें ही रह गईं। व्यक्तिगत रूप से पत्रों का मंगाना कम हो गया। आर्यसमाजी लोग तो प्राय: आर्यसंस्थाओं द्वारा संचालित पुस्तकालयों और वाचनालयों में जाकर ही इन पत्रों पर दृष्टिपात कर लेते हैं। अब तो स्थिति यह हो गई है कि आर्य पत्र-पत्रिकाओं को आर्यसमाज मंदिरों में बैठकर पढ़ने वालों की संख्या भी नगण्य होती है, जबकि इन पत्रों के आवरण पृष्ठ समाजों के चपरासियों द्वारा ही उतारे जाते हैं अथवा बिना रैपर उतारे ही उन्हें ज्यों का त्यों आलमारियों में रख दिया जाता है, या रद्दी में फेंक दिया जाता है। आज तो आर्यसमाज के पदाधिकारियों को भी इतना अवकाश नहीं रहा, अथवा सच पूछो तो रुचि ही नहीं रही कि वह इन पत्रों को आद्योपान्त पढ़ें तथा अन्य सदस्यों को भी पढ़ने की प्रेरणा दें। ऐसी स्थिति में यदि आर्यसमाज के विद्यमान पत्र क्षीण कलेवर अनाकर्षक तथा भरती की सामग्री से आपूरित होने के कारण पाठकों को आकृष्ट न करें, तो आश्चर्य ही क्या ?

द्वितीय युग

आर्यसमाज की पत्रकारिता का द्वितीय काल इस शताब्दी के प्रथम पांच दशक (१९०० से १९४७-५०) तक माना जा सकता है। आर्य-समाज के इतिहासकारों ने इसे 'संस्था युग' का नाम दिया है। इस युग में आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार के साथ साथ विभिन्न शिक्षण संस्थायें, संस्कृत पाठशालायें, नारी शालायें, अनाथालय, विधवाश्रम, दलितोद्धार सभायें, शुद्धि सभायें आदि चलती रहीं। सच्चे अर्थ में यह आर्यसमाज का 'कर्मयुग' था जब कि देश, समाज और व्यक्ति के सार्वत्रिक अभ्युत्थान के लिए उसने बहुत कुछ किया। इस युग में प्रकाशित होने वाले अधिकांश पत्र आर्यसमाज के इस संस्थावाद को मुखरित करते रहे। अजमेर के दयानन्द अनाथालय ने अपना पत्र 'अनाथरक्षक' लगभग चौथाई सदी तक सफलतापूर्वक प्रकाशित किया। शुद्धि सभाओं के अखबारों की भी धूम रही। प्रत्येक प्रान्तीय सभा ने अपने अपने पत्र निकाले जिनके माध्यम से इन संस्थाओं का कार्य और प्रवृत्तियाँ लोगों के समक्ष आईं।

तृतीय युग

आर्य पत्र-पत्रिकाओं का तृतीय युग देश के स्वाधीन होने के बाद से माना जा सकता है। भारत की राजनीतिक, सामाजिक तथा अन्य परिस्थितियों में वर्णनातीत परिवर्तन हो चुका था। ब्रिटिशसत्ता-काल में जहाँ अनेक आर्यसमाजों के उत्सव सम्राट् जार्ज के दीर्घायु होने की प्रार्थना के साथ समाप्त होते थे और अनेक आर्यसमाजी पत्र भी यदा कदा गौरांग लोगों के शासन को असीसते रहते थे, वहाँ स्वतन्त्र भारत में इन चाटुकारितापूर्ण कार्यवाहियों के लिये कोई स्थान नहीं था। आर्यसमाज को इस बात का संतोष था कि उसके द्वारा प्रस्तुत और प्रचारित हिन्दीप्रचार, दलितोत्थान, नारीजागरण आदि कार्यक्रम समय एवं परिस्थितियों के कारण शासन एवं जनता द्वारा स्वतः ही स्वीकार किए जा रहे हैं। कम से कम इन राष्ट्रीय और सामाजिक सुधार के कार्यों का विरोध और प्रतिरोध तो समाप्त हो चुका था।

इस युग में आर्यसमाजी पत्रों की संख्या में कल्पनातीत वृद्धि हुई परन्तु पत्रों का गुणात्मक दृष्टि से ह्रास ही हुआ। आर्यसमाज की छोटी बड़ी सभी संस्थाओं को पत्र प्रकाशित करने की धुन सवार हुई, बिना इस बात का विचार किए कि पत्रों के गुणात्मक स्तर को किस प्रकार कायम रक्खा जा सकता है? अधिकांश पत्र, जैसा कि हमारी उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है, संस्थाओं के अधिकारियों द्वारा निकाले जाकर कार्यालय के बाबुओं के सुपुर्द कर दिये गये। इन पत्रों में न तो उत्कृष्ट पाठ्य सामग्री के संग्रह और प्रस्तुतीकरण का ही प्रयत्न दृष्टिगोचर होता है और न इसके लिए पत्रकार कला में

प्रवीण किसी उपयुक्त व्यक्ति को ही सम्पादन का दायित्व सौंपने के लिये पत्रों की संचालिका सभायें उत्सुक दिखाई देती हैं। फलतः भर्ती की सामग्री छापने, अन्य पत्रों में प्रकाशित लेखों को साभार उद्धृत करने तथा सभा-संस्थाओं के अधिकारियों (जो पत्रों के संचालक भी होते हैं) की अनावश्यक स्तुति-प्रशस्ति करने अथवा उनके भाषणों और दौरों के व्यर्थ के विवरणों को प्रकाशित करने के अतिरिक्त इन पत्रों के सम्पादकों (जो वस्तुतः सभा के वैतनिक लिपिक ही होते हैं) के पास अन्य कुछ करणीय शेष नहीं रहता।

आज के इन आर्यसमाजी पत्रों की आर्थिक स्थिति इतनी दुर्बल होती है कि कागज और मुद्रण का व्यय निकालने के पश्चात् किसी लेखक को उसकी रचना के लिये पारिश्रमिक प्रदान करने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता। यह दूसरी बात है कि घाटा सहकर भी संस्थायें और उनके संचालक अपनी लोकैषणा के वशवर्ती होकर पत्रों को चलाने का दुर्वह भार ढोते ही रहते हैं। इस दृष्टि से यह सोचना कि कोई प्रतिष्ठित लेखक अपनी रचना इन पत्रों में प्रकाशनार्थ भेजेगा, दुराशा मात्र ही है। हाँ, आर्यसमाज में भी एक विशेष टाइप का लेखन प्रचलित है और जिन्हें इस आर्यसमाजी लेखन का चस्का है, वे अपनी छपास वृत्ति को शान्त करने के लिए एक ही रचना की अनेक कार्बन कापियाँ निकाल कर विभिन्न आर्य पत्रों में प्रकाशनार्थ भेजते रहते हैं और इन पत्रों में अपनी कृति को छपा देखकर एक विशेष प्रकार का मनस्तोष प्राप्त करते हैं।

फिर भी पत्र-पत्रिकाओं के इस तृतीय युग को सर्वथा निराशाप्रद नहीं कहा जा सकता। इस युग में कतिपय आर्यसमाजी पत्रकारों ने अपनी वैयक्तिक श्रम-साधना के बल पर आर्य पत्रों को उन्नति के सर्वोच्च सोपान पर प्रतिष्ठित किया है। श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट ने वेदवाणी के माध्यम से वर्षों तक वैदिक अध्ययन को नूतन दिशा प्रदान की। स्व. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के सम्पादन काल में वेदवाणी के विशेषांकों का स्तर पर्याप्त ऊंचा रहा। पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने भी वेदवाणी के माध्यम से सार्यसमाज में बढ़ती हुई स्वाध्याय के अभाव की प्रवृत्ति के प्रति चिंता प्रकट की तथा समय समय आर्ष ग्रन्थों के प्रचार प्रसार की अनेक योजनाओं को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। परोपकारिणी सभा के मुखपत्र परोपकारी ने ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज विषयक नूतन पुरातन सामग्री को शोधार्थियों के लिये उपलब्ध कराने में अद्भुत जागरूकता प्रदर्शित की है। इसी प्रकार तपोभूमि एवं जनज्ञान आदि पत्र भी लोकोपयोगी, रोचक तथा सुपाच्य पाठ्य सामग्री देने के लिये तत्पर रहे हैं। हाँ, सभा-संस्थाओं के मुखपत्रों का हाल अधिक संतोषजनक नहीं है। वे उसी पुरानी लीक का ही अनुसरण कर रहे हैं जो उन्हें परम्परा से मिली है। संस्थायें भी इन पत्रों से संतुष्ट ही हैं क्योंकि उनके कार्यों का येन केन प्रकारेण विज्ञापन तो इनसे हो ही जाता है।

इस प्रारम्भिक विवेचना के पश्चात् हम आर्यसमाजों के पत्रों का शत-वार्षिक विवरण प्रस्तुत करते हैं।

आर्य पत्रकारिता का प्रथम युग

(१८७५–१९०० ई.)

आर्यसमाज का प्रथम मासिक पत्र—आर्य दर्पण—शाहजहाँपुर

यद्यपि आर्यसमाज की स्थापना १८७५ में हो चुकी थी, परन्तु उसके विचारों का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रथम मासिक पत्र आर्यदर्पण संस्था के स्थापनाकाल से ३ वर्ष पश्चात् १८७८ ई. में ही निकला। आर्यदर्पण के प्रकाशनकाल को लेकर हिन्दी पत्रकारिता के इतिहासकारों ने परस्पर विरोधी मत व्यक्त किए हैं। पं. अम्बिकाप्रकाद वाजपेयी लिखते हैं—'आर्य-दर्पण मुंशी बख्तावरसिंह के सम्पादकत्व में हिन्दी में शाहजहाँपुर से निकला था। यह सम्भवत: मासिक पत्र था। उन दिनों पश्चिमोत्तर प्रदेश में आर्य-समाज का आन्दोलन जोरों पर था और उसी को बढ़ाने के लिए यह पत्र निकाला गया था।'[1] वाजपेयीजी ने इस पत्र का प्रकाशनकाल १८७० माना हैं। 'हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्यसमाज की देन' शीर्षक शोध प्रबन्ध के लेखक डॉ. लक्ष्मीनारायण गुप्त ने वाजपेयी जी द्वारा निर्दिष्ट मत को ही स्वीकार किया है।[2] इसके विपरीत बाबू राधाकृष्णदास ने आर्यदर्पण का जन्म १८७७ में माना है। डॉ. रामरतन भटनागर भी १८७७ को आर्य दर्पण का प्रकाशनकाल स्वीकार करते हैं।[3] वस्तुत: दोनों ही मत अशुद्ध हैं। १८७० को पत्र का प्रकाशन काल मानना तो नितान्त असंगत है क्योंकि उस समय तक तो स्वामी दयानन्द गंगा के तटवर्ती प्रदेशों का भ्रमण करते हुए वैयक्तिक रूप से ही धर्म प्रचार कर रहे थे। तब तक उन्होंने कोई विशिष्ट समाज संस्थापान का उद्देश्य भी स्थिर नहीं किया था और न जनता के समक्ष व्यवस्थित रीति से धर्मप्रचार तथा समाज संशोधन का कार्यक्रम ही ही रख पाये थे। शाहजहाँपुर में मुंशी बख्तावरसिंह से अभी तक उनका परिचय भी नहीं हुआ था।[4]

---

१. समाचार पत्रों का इतिहास पृ. १३५ २. पृ. १४५ ३. पृ. १०३

४. वस्तुत: आर्यसमाज शाहजहाँपुर की ओर से ही आर्यदर्पण का प्रकाशन हुआ था। स्वामी दयानन्द के ऋग्वेद और यजुर्वेद भाष्य के तीसरे अंक में स्वामीजी ने आर्यदर्पण की प्रशंसा में निम्न विज्ञप्ति प्रकाशित कराई—

"**आर्यदर्पण शाहजहाँपुर** : इस नाम का एक मासिक पत्र उर्दू भाषा में आर्यसमाज शाहजहाँपुर की ओर से प्रकाशित होता है, इसमें वेदादि सत्यशास्त्रानुकूल सनातनधर्मोपदेश के विषय के व्याख्यान और आर्यसमाजों के नियम उपनियम आदि प्रकाशित होते हैं, जो उसके देखने से मालूम होगा। जो इस को लेना चाहें वे अपना नाम पते सहित लिख

इन पंक्तियों के लेखक ने परोपकारिणी सभा अजमेर के पुस्तकालय में उपलब्ध आर्य दर्पण की पुरानी फाइलें देखी हैं, इसके आधार पर पत्र का प्रथम प्रकाशन जनवरी १८७८ सिद्ध होता है। आर्य दर्पण के मुख पृष्ठ पर निम्न इबारत छपती थी—

"**आर्यदर्पण मासिक** जिस में वेदादि सत्यशास्त्रानुकूल सनातन धर्मोपदेश विषय की वार्ता, श्रीमद्दयानन्द सरस्वती के व्याख्यान और उनके नवीन मत वालों से शास्त्रार्थ, आर्यसमाजों के वृत्तान्त और ऐडिटोरियल नोट्स इत्यादि प्रकाशित होते हैं।"

आर्यदर्पण द्विभाषी पत्र था। यह उर्दू और हिन्दी में छपता था। एक ही विषय के लेख दो पृथक् पृथक् कालमों में नागरी और फारसी लिपियों में प्रकाशित होते थे। १८८० वर्ष की पत्र की फाइल को देखने से ज्ञात होता है कि इस वर्ष के अंकों में स्वामी दयानन्द के धर्मप्रचार कार्यक्रम तथा भिन्न मतावलम्बियों से हुए उनके शास्त्रार्थों का विवरण भूरिशः प्रकाशित हुए थे। जनवरी १८८० के अंक में स्वामीजी के काशी आगमन तथा १८६९ (१९२६ वि.) में काशी की विद्वन्मण्डली से हुए उनके मूर्तिपूजाविषयक सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ का विवरण छपा है। प्रकाशित विवरण से ज्ञात होता है कि भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र द्वारा सम्पादित 'कवि वचन सुधा' में स्वामी जी का विरोध करते हुए कई लेख उन दिनों प्रकाशित हुए थे जिनका उत्तर काशी से ही प्रकाशित होने वाले किसी 'आर्यमित्र' नामक पत्र में प्रकाशित हुआ।[1] शास्त्रार्थ के समाप्त होने पर काशी के पण्डित वर्ग ने इस शास्त्रीय वाद में स्वामी दयानन्द को पराजित घोषित किया तथा 'दयानन्दपराभूति' नामक एक पुस्तक काशी नरेश के यंत्रालय में मुद्रित करा कर प्रकाशित की। 'काशी शास्त्रार्थ' सर्वप्रथम १९२६ वि में मुंशी हरिवंशलाल के लाइट प्रेस में छपा। सम्भवतः यह अपने मूल रूप में केवल संस्कृत में ही छपा था। शास्त्रार्थ का हिन्दी और उर्दू अनुवाद आर्यदर्पण के इसी अंक में छपा है। अनुमान होता है कि मूल संस्कृत लेख (जो निश्चय ही स्वामीजी का था) का हिन्दी और उर्दू अनुवाद आर्यदर्पण के सम्पादक द्वारा किया गया था।

कर मुंशी बख्तावरसिंह मैनेजर आर्यदर्पण शाहजहाँपुर के पास भेज दें, पूर्वोक्त पत्र का वार्षिक मूल्य डाक महसूल सहित तीन रुपये छ आने हैं। यह पत्र मेरी समझ में भी बहुत अच्छा है।"

ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन पृ. १०९

१. यह 'आर्यमित्र' आर्यसमाज के प्रसिद्ध साप्ताहिक 'आर्यमित्र से भिन्न पत्र था। काशी से इस पत्र के १८७८ ई. में निकलने का पता चलता है।

शास्त्रार्थ के विवरण के साथ सम्पादक की एक टिप्पणी भी छपी थी।[1]

अब तक स्वामी जी रचित वेद भाष्य बम्बई के निर्णयसागर प्रेस में छपता था, किन्तु इसी बीच काशी में वैदिक यंत्रालय की स्थापना हो जाने[2] के कारण इस अंक में यह सूचना छापी गई है कि आगे से स्वामी कृत भाष्य वैदिक यंत्रालय में ही छपा करेगा। मुंशी बख्तावरसिंह को ही यंत्रालय का प्रबंधक नियुक्त किया था। इस अंक के टाइटिल के तीसरे पृष्ठ पर स्वामीजी के वेद भाष्य का विज्ञापन 'प्रज्ञापन' शीर्षक से छपा है, जिसमें कहा गया है कि "इस भाष्य में एक एक मंत्र की सात सात प्रकार की व्याख्यायें होती हैं। एक-प्रत्येक मंत्र के पूर्व संस्कृत में भूमिका (मंत्र का विषय निर्देश) दूसरी-भाषा में भूमिका तीसरी-संस्कृत में प्रत्येक पद के प्रमाण सहित अलग अलग अर्थ चौथी-अन्वय, पांचवीं-भावार्थ, छठी-पदार्थ और अन्वय को मिलाकर भाषा में अर्थ और सातवीं-भाषा में भावार्थ। अर्थात् चार प्रकार की संस्कृत में और तीन प्रकार की भाषा में व्याख्या होती है।"

फरवरी १८८० के अंक में हुगली शास्त्रार्थ का विवरण प्रकाशित हुआ। यह शास्त्रार्थ प्रतिमापूजन विषय पर १९२९ वि. में स्वामी दयानन्द तथा भाटपाड़ा (भट्ट पल्ली) ग्राम निवासी पं. ताराचरण तर्करत्न के बीच हुआ था। इसी अंक में काशी शास्त्रार्थ के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति का सम्पादक के नाम पत्र प्रेरित पत्र स्तम्भ के अन्तर्गत छपा है। पत्रान्त में लेखक का नाम नहीं है। पत्र में जनवरी १८८० के अंक में प्रकाशित काशी शास्त्रार्थ के संदर्भ को प्रस्तुत करते हुए पं. सत्यव्रत सामश्रमी द्वारा सम्पादित प्रत्न कम्र नन्दिनी (The Hindu Commentator) के दिसम्बर १८६९ के अंक में प्रकाशित काशी शास्त्रार्थ के संस्कृत विवरण का कुछ अंश अपनी टिप्पणी के साथ प्रकाशित किया गया है।[3] प्रत्नकम्रनन्दिनी के इस उद्धरण पर आर्य-दर्पण के सम्पादक ने अपनी टिप्पणी 'एडिटोरियल नोट्स' शीर्षक से दी है जिसका भाव यह है कि यद्यपि स्वामी विशुद्धानन्द और बालशास्त्री आदि पण्डितों ने कई व्यक्तियों से एकान्त में कहा कि "जो कुछ स्वामी दयानन्द कहते हैं, सब सत्य है, परन्तु क्या करें? यदि हम भी ऐसा ही कहने लगें तो लोग हमको छोड़ दें, हमसे वैर भाव रखने लगें, फिर हम लोगों की जीविका कैसे चले।" आदि।

---

१. द्रष्टव्य-दयानन्दशास्त्रार्थ संग्रह (सं. डा. भवानीलाल भारतीय) में काशी शास्त्रार्थ विषयक सम्पादकीय टिप्पणी।
२. वैदिकयंत्रालय की स्थापना माघ शु. २ सं. १९३६ वि तदनुसार १२ फरवरी १८८० को हुई थी।
३. प्रत्नकम्रनन्दिनी में प्रकाशित शास्त्रार्थ के इस विवरण को हमने अपने ग्रन्थ 'दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह' के परिशिष्ट में उद्धृत किया है।

आर्य दर्पण के मार्च १८८० के अंक में 'सत्य धर्म प्रचार' शीर्षक से चांदापुर के मेले में हुए स्वामी दयानन्द के पादरियों और मौलवियों से शास्त्रार्थ का विवरण छपा है। अनुमान होता है कि शास्त्रार्थ का यह विवरण भी मुन्शी बखतावरलिंह ने ही तैयार किया था। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण के द्वादश समुल्लास में की गई जैन मत की आलोचना से असहमत होकर गुजरां वाला (पंजाब) निवासी एक ठाकुरदास जैन ने स्वामी जी से पर्याप्त लम्बा पत्र व्यवहार किया था। यह विवाद काफी लम्बा चला और उसकी समाप्ति तभी हुई जब स्वामीजी की ओर से उनके वकील ने ठाकुरदास जैन को कानूनी नोटिस दिया। आर्यसमाय गुजरांवाला के मन्त्री का एतद् विषयक एक पत्र इस अंक में छपा है। मुन्शी इन्द्रमणि द्वारा लिखित इस्लाम की समलोचना विषयक पुस्तकों पर मुसलमानों ने आपत्ति करते हुए उन पर अभियोग दायर किया था। इस प्रकरण के सम्बन्ध में तीन लेख इसी अंक प्रकाशित हुए थे।

मई १८८० के आर्यदर्पण में राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' की निवेदन शीर्षक पुस्तक के सम्बन्ध में एक सज्जन ने 'मिथ्या भाषण पक्षपात का कारण' शीर्षक एक लेख प्रकाशित कराया। स्मरणीय है कि राजा शिवप्रसाद ने स्वामी दयानन्द से ब्राह्मण ग्रन्थों के वेदत्व को लेकर पर्याप्त विचार विमर्श किया था। इसी प्रसंग में स्वामी जी ने भ्रमोच्छेदन पुस्तक लिख कर राजा साहब की इस धारणा का खण्डन किया कि ब्राह्मण ग्रन्थों की वेद संज्ञा है। भ्रमोच्छेदन की पक्षपातपूर्ण समालोचना कविवचन-सुधा और भारतबंधु नामक पत्रों में प्रकाशित हुई थी। आर्यदर्पण के इस अंक में इन्हीं समालोचनाओं का प्रत्युत्तर छपा। स्वामी दयानन्द लिखित 'संस्कृत वाक्य प्रबोध' के प्रथम संस्करण में कतिपय मुद्रण जन्य भूलों तथा प्रूफ शोधन की असावधानीवश रही त्रुटियों की कटु समालोचना पं. अम्बिकादत्त व्यास तथा रामकृष्ण वर्मा ने संयुक्त रूप से 'अबोधनिवारण' पुस्तक लिखकर की थी। मई १८८० के अंक में इस आलोचना का प्रत्युत्तर 'एक पण्डित' के नाम से दिया गया है। इसी अंक में आर्यसमाज और थियोसोफिकल सोसाइटी के सम्बन्ध विच्छेद की सूचना भी प्रकाशित हुई थी।

जून १८८० के अंक में स्वामी दयानन्द और पादरी ग्रे के बीच १८७८ में अजमेर में हुए शास्त्रार्थ का विवरण छपा है। शास्त्रार्थ विवरण का प्रेषक कौन था, यह ज्ञात नहीं होता परन्तु शास्त्रार्थ के लेख की पाद टिप्पणियों में स. द. यह संक्षिप्त नाम छपा है। काशी में वैदिक यंत्रालय की स्थापना के साथ ही मुंशी बख्तावरसिंह को यंत्रालय का प्रबन्धक नियुक्त किया गया था, किन्तु ऐसा विदित होता है कि यंत्रालय के हिसाब

में गोलमाल और अनियमितात्रों के कारण उन्हें प्रबंधक पद से मुक्त कर दिया गया। अब तक आर्यदर्पण भी वैदिक यंत्रालय से ही मुद्रित होता था किंतु अब इस प्रेस के व्यवस्थापक के पद से पृथक् हो जाने पर मुंशीजी ने अपने नगर शाहजहाँपुर में पृथक् आर्यदर्पण यंत्रालय स्थापित किया। पत्र भी अब इसी प्रेस में छपने लगा।

सितम्बर १८८० के अंक में स्वामी दयानन्द लिखित भ्रान्तिनिवारण पुस्तक की समालोचना प्रकाशित हुई। इस समालोचना से ज्ञात होता है कि दयानन्द कृत वेद भाष्य के खण्डन में पं. गोविन्दराम ने कोई पुस्तक लिखी थी तथा लाहौर के पं. शिवनारायण अग्निहोत्री के कई लेख 'बिरादरे हिन्द' नामक पत्र में छपे थे। नवम्बर १८८० के अंक में कलकत्ता में आयोजित 'आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा' का वृत्तान्त दिया गया है जो स्वामीजी के विरोध में पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के सेनेट हॉल में आमंत्रित की थी। न्यायरत्न के अतिरिक्त इसमें पं. जीवानन्द विद्यासागर आदि बंगाली पण्डितों तथा रामसुब्रह्मण्य शास्त्री नामक एक दक्षिणी विद्वान् ने भी भाग लिया था। कलकत्ता के अन्य प्रतिष्ठित पुरुप यथा महाराज जतीन्द्र मोहन ठाकुर, राजा सौरीन्द्र मोहन ठाकुर, राजा राजेन्द्र लाल मल्लिक, कृष्णदास पाल आदि व्यक्ति भी सभा में मौजूद थे। पं. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा सुप्रसिद्ध प्राच्यविद्याविद् राजेन्द्रलाल मित्र उपस्थित तो नहीं हुए, किन्तु उन्होंने अपनी लिखित सम्मति प्रेषित कर सभा में होने वाले निश्चयों का अनुमोदन किया था।

स्वामी दयानन्द के विरोध में आयोजित इस सभा के समक्ष पं महेशचन्द्र न्यायरत्न ने निम्न पांच प्रश्न सभा के विचारार्थ प्रस्तुत किए—

(१) क्या वेद के संहिता भाग के तुल्य ही ब्राह्मण भाग भी प्रामाणिक है या नहीं? मनुस्मृति की भांति अन्य स्मृतियाँ भी प्रामाणिक हैं या नहीं?

(२) क्या प्रतिमा पूजन, मृतक श्राद्ध तथा तीर्थ सेवन शास्त्र सम्मत हैं?

(३) 'अग्नि मीड़े पुरोहितम्' इत्यादि ऋग्वेद के मंत्र अग्नि (भौतिक आग) परक हैं या इनका परमात्मा परक अर्थ भी होता है?

(४) अग्निहोत्र का विधान जलवायु की शुद्धि के लिये है या स्वर्ग प्राप्ति के लिये?

(५) वेदगत ब्राह्मण भाग की निन्दा करने में दोष है या नहीं?

सभी प्रश्नों के उत्तर दक्षिणी पं. रामसुब्रह्मण्य शास्त्री ने ही दिये, जिनका भाव यह था कि इन प्रश्नों के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द के विचार और धारणायें शास्त्रों के प्रचलित मत के प्रतिकूल हैं। अन्त में उन्होंने स्वामी दयानन्द के विरोध में लिखी गई अपनी पुस्तक 'दयानन्द कण्टकोद्धार' पढ़कर सुनाई। सभा में हुए इस वृत्तान्त को उद्धृत कर आर्यदर्पण सम्पादक ने

स्वसम्मति भी प्रकाशित की है। इस टिप्पणी में यह स्पष्ट किया गया है कि उक्त सभा के आयोजकों की सम्पूर्ण कार्यवाही पक्षपातयुक्त तथा पूर्वाग्रह से भरी हुई थी, अन्यथा ३०० पण्डितों की सभा स्वल्प समय में ही ऐसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर कुछ निर्णय कर ले, यह असम्भव है।

आर्यदर्पण में प्रकाशित सामग्री के उपर्युक्त विवरण से यह ज्ञात होता है कि स्वामी दयानन्द के विभिन्न क्रियाकलापों तथा उनके शास्त्रीय वाद विवादों तथा अन्य प्रवृत्तियों की जानकारी के लिये इस पत्र की फाइलेंमूल्यवान स्रोत का कार्य देती हैं। काशी शास्त्रार्थ, हुगली शास्त्रार्थ, मेला चांदापुर की धर्मचर्चा जैसी पुस्तकों की प्रथम रूपरेखायें आर्यदर्पण के माध्यम से मुंशी बख्तावरसिंह ने ही प्रस्तुत की थीं, जिन्हें बाद में सम्पादित कर पुस्तक रूप प्रदान किया गया।

आर्यसमाज से सम्बन्ध विच्छेद कर लेने पर भी मुंशीजी आर्यदर्पण का प्रकाशन करते रहे, परन्तु अब उसमें आर्यसमाज के सिद्धान्तों के अनुकूल लेखों की अपेक्षा अन्य विषयों का समावेश होने लगा। १९०६ तक इस पत्र के प्रकाशित होने का अनुमान होता है।[1] निश्चय ही आर्यदर्पण आर्यसमाज का प्रथम सशक्त मासिक पत्र था, जो स्वामी दयानन्द और उनके आन्दोलन का सफल प्रचार माध्यम बना।

आर्यभूषण[2]

पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के अनुसार मुंशी बख्तावर सिंह ने शाहजहांपुर से ही आर्यभूषण नामक एक अन्य मासिक पत्र भी प्रकाशित किया था। यह पत्र दीर्घजीवी नहीं हो सका। वाजपेयी जी तथा डा. भटनागर के अनुसार आर्यभूषण का प्रकाशन काल १८७६ है। आर्यभूषण के अंक अनुपलब्ध हैं। वाजपेयी जी ने मुंशी बख्तावरसिंह के एक तीसरे पत्र 'अजाव' की भी चर्चा है।[3] इस पत्र के बारे में, यहाँ तक कि वास्तविक नाम के बारे में भी कुछ अधिक ज्ञात नहीं हो सका। इसका प्रकाशन काल १८७७ बताया गया है। सम्भवत: यह पत्र उर्दू हिन्दी का द्विभाषी पत्र था तथा इसका सही नाम 'अनजान' था।

आर्यसमाचार-मेरठ

मेरठ नगर स्वामी दयानन्द के जीवन काल में ही आर्यसमाज की गतिविधियों का केन्द्र बन चुका था। यहाँ से १८७८ ई. में आर्यसमाचार साप्ताहिक रूप में निकलना आरम्भ हुआ। पत्र का सम्पादन मुन्शी कल्याण राय करते थे। श्री क्षेमचन्द्र सुमन के अनुसार मेरठ जनपद से प्रकाशित होने वाला यह प्रथम

---

१. समाचार पत्रों का इतिहास पृ. १४८
२. वही पृ. १४८
३. वही पृ. १५०

हिन्दी पत्र था।[1] वाजपेयी जी ने इसका प्रकाशन काल १८८५ माना है, जो अशुद्ध है। आर्य समाचार विद्यादर्पण प्रेस मेरठ में छपता था।

भारत सुदशा प्रवर्त्तक—फर्रुखाबाद

भारत सुदशाप्रवर्त्तक ही वह प्रथम मासिक पत्र है जिसे किसी आर्य-समाज के मुखपत्र होने का सौभाग्य मिला।[2] स्वामी दयानन्द के फर्रुखाबाद के आर्य पुरुषों से बड़े घनिष्ठ एवं आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध थे। यहाँ आर्य-समाज की स्थापना भी श्रावण कृष्णा नवमी १९३६ वि. (१२ जुलाई १८७९ ई.) को हो चुकी थी। समाज स्थापना के साथ ही साथ पत्र का प्रकाशन भी जुलाई १८७९ में ही आरम्भ हुआ। पत्र का नाम पहले 'भारत दुर्दशा प्रमर्दक' रक्खा गया, किन्तु स्वामी दयानन्द ने इसे बदल कर 'भारत सुदशा प्रवर्त्तक' कर दिया।[3] प्रारम्भ के दस अंकों का सम्पादन पं. गोपाल हरि पुण्तांकर ने किया जो आर्यसमाज फर्रुखाबाद के मंत्री भी थे। पं. गणेशप्रसाद शर्मा सम्पादन कार्य में उनका सहयोग देते थे। बाद में शर्माजी ही सम्पादन बन गये और वर्षों तक इस दायित्व का निर्वाह करते रहे। प्रकाशक का दायित्व श्री रामस्वरूप ने लिया। पत्र का आकार १० × ६। था और यह दिलखुशा प्रेस फतहगढ़ में मुद्रित होता था। वार्षिक मूल्य २ रु. रक्खा गया।

सुदशा प्रवर्त्तक की पुरानी फाइलें देखने से ज्ञात होता है कि यद्यपि भाषा

---

१. मेरठ जनपद की साहित्यिक चेतना।

२. यों तो आर्यदर्पण का प्रकाशन भी आर्य शाहजहांपुर के द्वारा हुआ था, किन्तु कालान्तर में वह मुन्शी बख्तावरसिंह का निजी बन गया था।

३. "स्वामी महाराज ने कहा कि आरम्भ में जो पत्र का नाम भारत दुर्दशा-प्रमर्दक रक्खा है उसमें यह दोष है कि यदि कोई आधा नाम ले तो 'भारत दुर्दशा' इतना कथन कटूक्त होगा, इस कारण 'भारत सुदशा प्रवर्त्तक' कहना चाहिए। इसमें पूरा व आधा नाम लेने पर भौंडा न लगेगा इस निश्चय के अनुसार अक्टूबर मास १८७९ से संशोधित नाम छपने लगा, जिसका विज्ञापन अक्टूबर के मासिक पत्र में निम्न लेखानुसार था—

विज्ञापन—२

विदित हो कि स्वामीजी महाराज ने सभा के प्रबंध के साथ इस पुस्तक (पत्र) का नाम पलट कर भारत सुदशा प्रवर्त्तक रक्खा है और उस वक्त (सितम्बर) तक की किताबें जो तैयार हो चुकी थीं, वे सब स्वामी जी महाराज ने अक्षरशः देखीं और बहुत प्रसन्न हुए। श्रीमुख से कहा कि बहुत उत्तम व्याख्यान लिखे गये हैं। समाचार पत्रों की साक्षी जो रक्खी जाती है, यह भी उत्तम रीति है।

अंक ४-अक्टूबर १८७९ ई. फर्रुखाबाद का इतिहास पृ. २३०

सौन्दर्य और शैली सौष्ठव की दृष्टि से उस युग का लेखन अपरिमार्जित सा ही था, व्याकरण के नियमानुसार शब्दों के रूप भी स्थिर नहीं हो सके थे, किन्तु विषय सामग्री की दृष्टि से सम्पादक पत्र के प्रत्येक अंक को अधिकाधिक रोचक एवं सुपाठ्य बनाने के लिये सचेष्ट रहता था। भारत सुदशा प्रवर्त्तक के मुख पृष्ठ पर निम्न बातें अंकित रहती थीं—

ओ३म्

खम्ब्रह्म

न हि सत्यात्परो धर्मः न हि सत्यात्परं तपः।
न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्॥

भारत सुदशा प्रवर्त्तक अर्थात् नगर फरक्काबादीय आर्यसमाज सम्बन्धी मासिक पत्र, जिसमें वेदादि सत्य शास्त्रानुकूल सनातन धर्मोपदेश और वेदोन्नति कारक व्याख्यान तथा अन्यान्य पदार्थविद्या, नाटक, इतिहास, साहित्य आदि सरल भाषा में मुद्रित होते हैं।

पत्र का सिद्धान्त वाक्य (motto) निम्न पद्य था—

तेहि पठनपाठन विलोकि रचना रसिक मन आनन्द भरे।
हर तिमिर नाश दिनेश सम करि बुद्धि विमल प्रभा करे।
विकसें विचार सुप्रीति नीति कुरीति सब यातें मुरे।
भारत दशा सुदशा प्रवर्तक दिनहिं दिन दुदशा दुरे॥

मुखपृष्ठ पर ही ग्राहकों के लिए कुछ सूचनायें छपती थीं। टाइटिल के दूसरे पर 'विश्वानिदेव' मंत्र तथा—

सर्वात्मा सच्चिदानन्दोऽनन्तो योन्यायकृच्छुचिः।
भूयात्तमां सहायो नो दयालुः सर्वशक्तिमान्॥

इस श्लोक के अनन्तर 'भूमिका' शीर्षक से कुछ नियम प्रकाशित होते थे। तत्पश्चात् एक वेद मंत्र और उसकी व्याख्या रहती थी।

१८८१ व १८८२ वर्ष की फाइलें जो हमें उपलब्ध हुई, उनके आधार पर इस पत्र में प्रकाशित सामग्री का कुछ विवरण देना आवश्यक है। जुलाई १८८१ का अंक भारत सुदशा प्रवर्त्तक के तृतीय वर्ष का प्रवेशांक है। इसमें मैनपुरी, एटा, दातागंज, पेशावर और अजमेर में आर्यसमाजों के स्थापित होने की सूचना है। मुंशी इन्द्रमणि के मुकद्दमे की भी चर्चा हुई है। स्वामी जी के वेदभाष्य निर्माण तथा भिन्न भिन्न नगरों में धर्म प्रचारार्थ उनके भ्रमण कार्य का वृत्तान्त भी पत्र के विभिन्न अंकों में समय समय पर प्रकाशित होता रहता था। इसी भ्रमण वृत्त के आधार पर कालान्तर में स्वामीजी के जीवनी लेखकों ने उनके देशाटन वृत्तान्त को व्यवस्थित रूप प्रदान किया। अजमेर, उदयपुर, शाहपुरा, जोधपुर आदि राजस्थान के नगरों में स्वामीजी की प्रचारयात्राओं का विवरण जीवनी लेखकों के लिए आधारभूत सामग्री

प्रस्तुत करता है। वेदभाष्य प्रकाशनार्थ जो सहायता स्वामीजी को आर्य-समाजों तथा आर्यपुरुषों से प्राप्त होती थी, उस द्रव्यराशि की सूची भी प्रवर्तक में समय समय पर प्रकाशित होती थी।

अगस्त और अक्टूबर १८८१ के अंकों में हरप्रसाद नामक एक ईसाई और आर्यसमाज फर्रुखाबाद के बीच हुए एक शास्त्रार्थ का विवरण छपा है जो लिखित रूप में (पत्रों के आदान-प्रदान द्वारा) हुआ था। पत्र में समाज सुधार विषयक नाटक भी यदा कदा छपते थे जिनमें नाट्य तत्त्वों की अपेक्षा सुधार बहुल विचार ही अधिक रहते थे। परन्तु स्वामी दयानन्द आर्यसमाज के पत्र में 'नाटक' छापना नापसन्द करते थे, अतः उन्होंने १६ अक्टूबर १८८२ को लाला कालीचरण को एक पत्र लिखकर भविष्य में नाटक का विषय न छापने की ताकीद की। १ अक्टूबर १८८१ के अंक में ही मुन्शी इन्द्रमणि के शिष्य तथा मुरादाबाद आर्यसमाज के पुस्तकाध्यक्ष जगन्नाथदास का 'गोपुकार' शीर्षक लेख छपा है। गोरक्षा आन्दोलन के समर्थन में इस पत्र में यदा कदा अनेक लेख एवं समाचार छपते रहते थे। पत्र इस आन्दोलन का प्रबल समर्थक था

तत्कालीन पत्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अनेक कारणों और विशेषतः अंग्रेज शासकों के अंधभक्त होने के कारण राजा शिवप्रसाद के विरुद्ध जनरोष व्यापक रूप में उमड़ पड़ा था। लोग उन्हें परले दर्जे का चाटुकार और शासकों का 'चमचा' समझते थे। अक्टूबर १८८१ के अंक की एक सम्पादकीय टिप्पणी में काशीनरेश द्वारा राजा साहब को गोरक्षा के लिए ब्रिटिश संसद में आन्दोलन करने के लिये भेजे जाने के किसी व्यक्ति के प्रस्ताव का इस आधार पर विरोध किया गया है कि "सी. एस. आई. साहब इतनी हिम्मत कहाँ से लावेंगे कि जिनके दासानुदास बन कर बैठे हैं उनके समाज में जी खोल कर गोवध का विरोध करें।"

भारत सुदशा प्रवर्त्तक राष्ट्रभाषा हिन्दी का कट्टर समर्थक था। उस समय अदालती भाषा उर्दू थी और पठित वर्ग में हिन्दी को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था। परन्तु हिन्दी के पत्रकार एकनिष्ठ होकर राष्ट्रभारती की अर्चना में संलग्न थे। दिसम्बर १८८१ के अंक में 'सब भाषाओं में कौन उत्तम और प्राचीन है?' शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमें हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला गया है। इसी अंक में स्वामी दयानन्द के अजमेर आगमन और उनकी इस यात्रा में एक व्यक्ति द्वारा असफल बाधक बनने का रोचक वृत्तान्त भी छपा है।

जनवरी १८८२ के अंक में आर्यसमाज अजमेर के मंत्री श्री मुन्नालाल का एक पत्र छपा है। राजा शिवप्रसाद और स्वामी दयानन्द के बीच ब्राह्मण ग्रन्थों के वेदत्व को लेकर जो लिखित शास्त्रार्थ हुआ था, उसके सम्बन्ध में भी एक पत्र पं. हरिमिश्र का राजा साहब को सम्बोधित करते हुए प्रकाशित

हुआ है जिसमें राजा शिवप्रसाद की ब्राह्मण ग्रन्थों को वेद मानने वाली मान्यता पर अनेक शंकायें प्रस्तुत की गई हैं। फरवरी १८८२ के अंक में प्रेस एक्ट उठा लेने पर तत्कालीन वायसराय लार्ड रिपन का आभार व्यक्त किया गया है। अप्रेल '८२ के अंक में १६ मार्च १८८२ के भारत मित्र को उद्धृत करते हुए गुरदासपुर (पंजाब) में सम्पन्न हुए 'नियोग' की घटना का विवरण प्रकाशित किया गया है। इसी अंक में फर्रुखाबाद आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव का विवरण भी छपा।

स्वामी दयानन्द ने अपने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में अल्लोपनिषद् नामक संस्कृत अरबी मिश्रित एक ग्रन्थ की चर्चा की है। जून १८८२ के अंक में इस तथाकथित उपनिषद् के सम्बन्ध में एक मनोरञ्जक तथ्य उद्धृत किया गया है—कहते हैं कि मैसूर के नवाब हैदरअली के शासनकाल में पं. अहोबल शास्त्री नामक किसी विद्वान् ने यह संस्कृत फारसी मिश्रित वर्णसंकरी रचना लिखी थी। भारतीय छात्रों के विदेश जाकर विभिन्न कला कौशल सीखने के समर्थन में अनेक लेख और टिप्पणियाँ सुदशा प्रवर्त्तक में छपती थीं। स्वामी दयानन्द के जयपुर प्रवास का विवरण जून तथा उदयपुर प्रवास का विवरण दिसम्बर १८८२ के अङ्क में दिया गया है।

भारत सुदशा प्रवर्त्तक में आर्यसमाजेतर विषयों का भी समावेश रहता था। सामयिक राजनीति विषयक टिप्पणियाँ यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त हैं कि पत्र का दृष्टिकोण व्यापक था तथा वह देश की सार्वजनिक समस्याओं पर अपने विचार पूर्ण निर्भीकता के साथ व्यक्त करता था। अप्रेल १८८३ के अङ्क में इलबर्ट बिल के सम्बन्ध में टिप्पणी और 'अदालत का व्यय और दीन भारतवर्ष' शीर्षक 'सम्पादकीय नोट्स' पत्र का राष्ट्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। स्वामी दयानन्द के जीवनी-लेखक पं. गोपाल राव हरि लिखित 'दयानन्द दिग्विजयार्क' के खण्डन में लिखी गई पं. दामोदर शास्त्री की एक समालोचनात्मक पुस्तक के उत्तर में पं. लक्ष्मीदत्त का एक समीक्षात्मक लेख भी इसी अङ्क में है। महाराणा उदयपुर और शाहपुरा के राजाधिराज द्वारा स्वामी दयानन्द की सेवा में जो प्रशस्ति पत्र प्रस्तुत किए गए उन्हें मई और अगस्त १८८३ के अङ्कों में क्रमशः छापा गया है। राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश के रामगढ़ नामक ग्राम के निवासी तथा स्वामीजी के भक्त महात्मा कालूराम जी के विषय में एक संक्षिप्त टिप्पणी मई ८३ के अङ्क में प्रकाशित हुई है।

जून १८८३ के अङ्क में मधुसूदन गोस्वामी और आर्यसमाज के बीच हुए एक शास्त्रार्थ का विवरण छपा। इसी अङ्क में आर्यसमाज देहरादून द्वारा की गई उस प्रसिद्ध शुद्धि का भी उल्लेख हुआ है जिसके द्वारा मुहम्मद ऊमर नामक मुसलमान को शुद्ध कर आर्यसमाज का सदस्य बनाया गया था। पं. अम्बिकादत्त व्यास ने स्वसम्पादित वैष्णव पत्रिका के एक अङ्क में यह

लिखा था कि उदयपुर नरेश महाराणा सज्जनसिंह का स्वामी दयानन्द के श्रीचरणों में बैठकर मनुस्मृति और विदुरनीति आदि ग्रन्थों के पढ़ने का समाचार मिथ्या है। जुलाई ८३ के सुदशा प्रवर्त्तक ने वैष्णव पत्रिका के उक्त असत्य कथन की आलोचना की है।

उन दिनों कलकत्ता की एक अदालत में किसी मुकद्दमे के दौरान एक अंग्रेज न्यायाधीश ने बालकृष्ण की प्रतिमा को न्यायालय कक्ष में मंगवाया था। इस बात को लेकर कि भगवत् प्रतिमा का अदालत में लाया जाना हिन्दुओं के धार्मिक भावों को आघात पहुंचाना है, सामयिक पत्रों में इस घटना के पक्ष और विपक्ष में जोरदार चर्चा चली और बंगाल के प्रसिद्ध नेता बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने गोरे न्यायाधीश के इस कृत्य की कटु आलोचना की। फलस्वरूप अदालत के अपमान का अभियोग उन पर लगाया गया और उन्हें दो मास के लिए कारावास में रहना पड़ा। मूर्तिपूजा के प्रति अनास्था का भाव रखने वाले सुदशाप्रवर्त्तक ने मूर्ति को कचहरी में मंगवाने की आलोचना की। मूर्तिपूजा में आस्था रखने वाली पौराणिक मण्डली कितनी स्वाभिमान शून्य हो चुकी थी, यह इसी से प्रकट होता है कि विधर्मी न्यायाधीश के इस कृत्य को काशी की पण्डित मण्डली ने उचित ठहराया और उसी के पक्ष में अपनी व्यवस्था दी। ऐसा अनुमान है कि अंग्रेज न्यायाधीश को निर्दोष सिद्ध कराने में काशी नरेश और उनके कृपापात्र राजा शिवप्रसाद ने भरसक प्रयास किया था। "अदालत में मूर्ति काण्ड" सुदशा प्रवर्तक के जुलाई और सितम्बर १८८३ के अङ्कों में चर्चित और आलोचित हुआ है।

जुलाई ८३ के अङ्क में ही स्वामी दयानन्द का सम्पादक के नाम वह प्रसिद्ध पत्र छपा है जिसमें श्री ए. ओ. ह्यूम के वेदविषयक विचारों की आलोचना की गई है। ह्यूम ने एक स्थान पर लिखा था कि यदि स्वामी जी अपने वेदभाष्य को ईश्वर प्रेरित (Divine Revealed) घोषित कर दें तो उनके वेद-व्याख्यान को निर्भ्रान्त माना जा सकता है। इसके उत्तर में स्वामी जी ने लिखा—"मैं ईश्वर नहीं किन्तु ईश्वर का उपासक हूँ। वेद मनुष्यों के हितार्थ परमात्मा ने प्रकाशित किये हैं इसलिये यावत् मेरी बुद्धि और विद्या है तावत् निष्पक्षपात होकर वेदों का अर्थ प्रकाशित करता हूँ।" इसी अङ्क में स्वामी जी ने थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापकद्वय कर्नल आल्काट और मैडम ब्लैवेट्स्की के चमत्कारों का भी खण्डन किया है।

जिस वैष्णव पत्रिका की चर्चा ऊपर आई है, उसमें एक बार स्वामी दयानन्द की निंदा और स्तुति साथ साथ प्रकाशित हुई थी। विधवा विवाह का समर्थन करने, मूर्तिपूजा का निषेध करने, वेदों में नवीन वैज्ञानिक आविष्कारों को सिद्ध करने तथा शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकारी बताने के लिये स्वामी जी की आलोचना की गई, साथ ही उनकी सहनशीलता, जातीय एक्य

प्रसार हेतु उनके प्रयत्न, ब्रह्मचर्य पालन तथा वैदिक चर्चा के पुनरुद्धारक होने के कारण प्रशंसा भाव भी व्यक्त किये गये। सितम्बर १८८३ के अङ्क में वैष्णव पत्रिका के इस वक्तव्य को 'दोमुंहा' कहा गया है। अक्टूबर १८८३ के अङ्क में स्वामीजी की रुग्णावस्था तथा अन्ततः उनके निधन का समाचार प्रकाशित हुआ है। स्वामीजी की स्मृति के रूप में लाहौर में डी. ए. वी. कॉलेज स्थापित करने के प्रस्ताव को दिसम्बर १८८३ के अङ्क में स्थान मिला है।

सुदशा प्रवर्त्तक के अङ्कों में 'साहित्य समालोचना' का स्तम्भ भी रहता था। इसके अन्तर्गत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रायः सभी पुस्तकों की समालोचनायें छपीं। भारतेन्दु के मित्र तथा अनुयायी, गौडीय (मध्व) वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य, सुधारवादी उदार विचार धारा के अनुयायी राधाचरण गोस्वामी की दो पुस्तकें 'नापित स्तोत्र' तथा 'दामिनी दूतिका' की भी इस पत्र में समालोचना प्रकाशित हुई। पं. लेखराम आर्यमुसाफिर द्वारा सम्पादित उर्दू पत्र 'धर्मोपदेश' (पेशावर से प्रकाशित) का परिचयात्मक उल्लेख 'साहित्य समीक्षा' के अन्तर्गत हुआ। इसी प्रकार हिन्दी के उस युग के प्रमुख पत्रों-भारतेन्दु (सम्पादक-राधाचरणगोस्वामी), आनन्द कादम्बिनी (सम्पादक-बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन') तथा ब्राह्मण (सम्पादक-प्रतापनारायण मिश्र) का भी परिचय इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिया गया है।

भारतसुदशा प्रवर्त्तक की फाइलें आर्यसमाज के इतिहास की जानकारी की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। पत्र के ग्राहकों में हिन्दी प्रेमी अंग्रेज श्री फ्रैडरिक पिंकाट तथा श्रीमती अरुण्डेल थे। आर्यसमाज लन्दन को भी इसकी प्रतियाँ भेजी जाती थीं। जुलाई १९१२ में भारतसुदशा प्रवर्तक को साप्ताहिक का रूप दे दिया गया।[1] अप्रैल १९१५ तक साप्ताहिक रूप में निकलने के पश्चात् आर्यसमाज का यह गौरवशाली पत्र बन्द हो गया। इस प्रकार ३६ वर्ष तक निरन्तर प्रकाशित होकर भारतसुदशा प्रवर्त्तक का तिरोधान हुआ।

---

१. कार्तिक सं. १९७० (२८ अक्टूबर १९१३) में प्रकाशित भारतसुदशा प्रवर्त्तक का ऋषि अङ्क पं. गणेशप्रसाद शर्मा द्वारा सम्पादित है। विशेषांक में पं. नरदेवशास्त्री (वेद और विज्ञान), पं. विश्वनाथ मिश्र (वैदिक धर्म की श्रेष्ठता), श्री चांदकरण शारदा (उपकार वीर दयानन्द) आदि के लेख तथा कर्ण कवि, मांगीलाल गुप्त, जेठमल सोढ़ा आदि की कवितायें संगृहीत हैं। इस समय यह पत्र फतहगढ़ से प्रकाशित होता था। पत्र का मुद्रण बाबू काशीप्रसाद द्वारा शान्ति प्रेस में होता था।

देश हितैषी—अजमेर

स्वामी दयानन्द के जीवनकाल में ही आर्यसमाज अजमेर से एक मासिक पत्र 'देश हितैषी' निकलने लगा था। पत्र का प्रथम अङ्क वैशाख १९३९ वि. (१८८२) में प्रकाशित हुआ। इसके मुखपत्र पर लिखा होता था—

"देश हितैषी—अर्थात् एक मासिक पत्र जो प्रति मास की पहली तारीख को बाबू मुन्नालाल के प्रवन्ध से आर्यसमाज की आज्ञानुसार प्रकाशित होता है जिसमें वेदादि सत्य शास्त्रानुकूल सनातनधर्मोपदेश, देशोन्नतिकारक व्याख्यान और विविध समाचार तथा प्रेरित पत्रादि निष्पक्षतायुक्त सरल भाषा में मुद्रित होते हैं।"

पत्र का सिद्धान्त वाक्य था—

अप्रीति रीति कुरीति छोड़ो आर्यपन में चित धरो।
बहु दिवस सोये मत्त हो अब सत्यता में रुचि करो।
यह देश हितैषी है भली तुम देश हितैषी बन रहो।
यदि प्रीति उन्नति देश चाहो देश हितैषी कर गहो॥

वाजपेयीजी के अनुसार देशहितैषी मासिकपत्र अजमेर से मुन्शी मुन्नालाल शर्मा ने प्रकाशित किया था। यह धर्म सम्बन्धी पत्र लीथो पर छपता था। वार्षिक मूल्य २ रु. था। आकार रायल अष्ट-पत्री २२ पृष्ठ था।"[1] पत्र के प्रारम्भिक अङ्कों में छपी सामग्री का कुछ उपयोगी विवरण इस प्रकार है—पत्र के प्रथम अंक (वैशाख १९३९ वि.) के मुख पृष्ठ के दूसरी ओर पत्र के नियम दिये गये हैं। पुनः 'सहनाववतु' उपनिषद् के इस शान्तिपाठ की व्याख्या युक्त प्रार्थना दी गई है। पृष्ठ ४ पर प्रकाशित निवेदन से ज्ञात होता है कि इस पत्र का नाम 'शुभचिंतक' रखने का विचार था और तदनुसार ही शुभचिंतक के प्रकाशन का विज्ञापन भारत मित्र, भारत सुदशा प्रवर्त्तक तथा आर्य दर्पण आदि तत्कालीन पत्रों में प्रकाशित भी हुआ था परन्तु कतिपय हितैषी मित्रों के सुझाव के अनुसार पत्र का नाम देश हितैषी ही रक्खा गया। पृष्ठ ५ पर जो व्याख्यान शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है वह सम्पादक का आत्म निवेदन ही है और उसमें निम्न पंक्तियाँ स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित हैं—"परमात्मा को धन्यवाद है कि उसने हमारे देश को मूर्खता और अविद्या के अन्धकार से निकालकर सत्य विद्या तथा धर्मरूपी सूर्य से प्रकाश किया है और हम लोगों के जीवनकाल में विद्वज्जन मण्डली भूषण श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी सरीखे महात्मा सत्पुरुष को उत्पन्न किया।"

देश हितैषी के प्रथम वर्ष की फाइल का अध्ययन करने से इस बात की पुष्टि होती है कि स्वामी दयानन्द के समकालीन सभी आर्य सामाजिक पत्रों

१. समाचार पत्रों का इतिहास पृ. १८६

में आर्यसमाज की तत्कालीन गतिविधियों, प्रवृत्तियों और कार्यक्रमों के अतिरिक्त इस महान् धर्मान्दोलन के प्रवर्त्तक के सम्बन्ध में भी सूचनायें तथा समाचार आदि प्रकाशित होते थे। निश्चय ही कालान्तर में जब दयानन्द सरस्वती की जीवनी लेखन के कार्य का सूत्रपात हुआ तथा आर्यसमाज के इतिहास लेखन के प्रयत्न हुए तो इन पत्रों में प्रकाशित इस सामग्री को स्रोत एवं उपादान रूप में ग्रहण किया गया। देश हितैषी के प्रथमांक में आर्यसमाज बम्बई के उत्सव का समाचार प्रकाशित हुआ। यह उत्सव २० मार्च १८८२ को सम्पन्न हुआ था तथा स्वयं स्वामीजी इसमें उपस्थित थे। १५ जनवरी १८८२ को मथुरा नगर में आर्यसमाज की स्थापना का समाचार भी छपा है। इसी अंक के अन्तिम पृष्ठ पर आर्यसमाज पेशावर के मुखपत्र 'धर्मोपदेश' के प्रकाशन की सूचना छपी है। इस पत्र के उर्दू में छपने का खेद व्यक्त करते हुए भी इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की गई है कि पत्र की भाषा उर्दू होने पर भी उसमें आर्य भाषा के शब्दों का बाहुल्य है।

ज्येष्ठ १९३९ के अंक में मसूदा (राजस्थान) में स्वामी दयानन्द के के निवास तथा यहाँ जैन साधु सिद्धकरण से हुए उनके शास्त्रार्थ का विवरण विस्तारपूर्वक प्रकाशित किया गया है। इसके प्रेषक पं. वृद्धिचन्द्र मसूदा निवासी थे। स्वामी जी के शिष्य स्वामी आत्मानन्द सरस्वती के उद्योग से ११ मार्च १८८२ को बिलासपुर (मध्य प्रदेश) में आर्यसमाज के स्थापित होने का समाचार भी महत्त्वपूर्ण है। देश हितैषी के ये दोनों अंक अजमेर के एक लीथो प्रेस 'फ्रैण्ड ऑफ राजपुताना यंत्रालय' में मुद्रित हुए थे।

आषाढ़ १९३९ का अंक "महबै हुसैन कम्प फतहगढ़ मुहल्ले बजाजा में एहतमाम से खाकसार हुसैन बाश में छपा।" तत्कालीन वायसराय को प्रेस एक्ट वापस लेने पर धन्यवाद अर्पित करते हुए 'लार्डरिपन की जय' शीर्षक लेख में यह प्रार्थना की गई है कि गोबध बंद किया जाये। आर्य दर्पण के प्रसंग में हम देख चुके हैं कि शाहजहाँपुर निवास मुन्शी बख्तावरसिंह को वैदिक यंत्रालय के हिसाब किताब में गोलमाल करने के आरोप में स्वामीजी ने प्रबन्धक पद से मुक्त कर दिया था। धीरे धीरे मुन्शीजी आर्यसमाज से भी उपराम हो गये। जब आर्यसमाज और थियोसोफिकल सोसायटी के सम्बन्धों में तनाव आ गया तो मुन्शीजी थियोसोफी के प्रति विशेष अनुरक्त हो उठे। उन्होंने आर्य दर्पण में लिखा—"स्वामी दयानन्द सरस्वती जी कर्नल आल्काट (थियोसोफी के संस्थापक) को यह कहते थे कि ये सच्चे आर्य हैं, शोक! उन्हीं को आज जादूगर बताते हैं। कर्नल आल्काट स्वामी जी को कल अपना गुरु कहते थे आज वे ही कहते हैं कि स्वामीजी योग विद्या कुछ भी नहीं जानते।" देश हितैषी के सम्पादक ने मुन्शीजी के इस कथन पर टिप्पणी करते हुए लिखा कि 'इसे अपनी आंख का शहतीर न देख कर दूसरे

की आंख का तिनका ढूंढना कहते हैं।'

लाहौर से प्रकाशित मित्र विलास आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द का घोर विरोधी था। उसमें स्वामीजी से सम्बन्धित बातों को अतिरंजित तथा एकांगी रूप से आलोचना की दृष्टि से प्रकाशित किया जाता था। देश हितैषी के इस अंक में कलकत्ता में आयोजित आर्य सन्मार्गदर्शिनी सभा, गुजरांवाला के जैन ठाकुरदास का सत्यार्थप्रकाश के १२ वें समुल्लास में उल्लिखित जैन मत की आलोचना को लेकर स्वामीजी से हुए विवाद तथा आर्यसमाज और थियोसोफिकल सोसाइटी के पारस्परिक सम्बन्धों को लेकर मित्र विलास में छपे एकांगी समाचारों की समीक्षा 'एक स्वतंत्र जीव' के नाम से छपी है।

श्रावण १९३९ से पत्र सत्यप्रकाश यंत्रालय, आगरा में ज्वालाप्रसाद भार्गव के प्रबन्ध से छपने लगा। इस अंक में आर्यसमाज विषयक विविध समाचारों के अतिरिक्त आर्यसमाज अजमेर के सभासद जेठमल सोढ़ा की प्रार्थना शीर्षक दो लावनियाँ छपी हैं। खड़ी बोली में काव्य रचना का यह प्रारम्भिक युग था। इसी दृष्टि से इन पद्यों का अध्ययन अपेक्षित है क्योंकि कवि ने भी इस लावनी को 'चाल खड़ी' में लिखा है। पत्र में नव प्रकाशित पुस्तकों की समालोचना भी छपती थी।

भाद्रपद १९३९ के अंक से गवर्नमेंट कालेज, अजमेर के संस्कृत प्राध्यापक पं. शालिग्राम शास्त्री कृत न्याय दर्शन की हिन्दी टीका धारावाही प्रकाशित होने लगी। देश हितैषी मित्र विलास के आर्यसमाज के प्रति द्वेष पूर्ण रुख का कड़ा आलोचक था। 'एक स्वतंत्र जीव' ने उक्त पत्र की इसी दुराग्रही तथा मत्सरता पूर्ण नीति का विरोध करते हुए जो प्रेरित पत्र (सम्पादक के नाम) इस अंक में प्रकाशित कराया, उसकी प्रारम्भिक पंक्तियाँ पद्य में थीं—

कहा होत प्रचलित किए भये न मित्र विलास।
जा घर आवत पत्र यह देखत होय उदास।।
छापत वर्ण कुडौल सब जैसे घास जवास।
द्वेष ईर्ष्या से भरे लिखित शब्द बहु फांस।।
सुन बंदूक को शब्द डर काक मान जिमि त्रास।
उछल कूद कां कां करे कोउ न देत दिलास।।
अजहूं वचन कठोर तजि छापो पत्र विकास।
सरल स्वच्छता के वर्ण कर दो वेग प्रकाश।।

पत्रान्त में पुन: एक दोहा लिखकर मित्रविलास को कृकल (गिरगिट) नीति त्यागने का उपदेश दिया है—

कीजे धारण सभ्यता तजो रंग कृकलास।
मित्र विलास कहाय तब सुख सम्पति उर वास।।

इसी अंक में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समकालीन, हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक

पं. राधाचरण गोस्वामी का 'स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है। गोस्वामीजी गौड़ीय वैष्णव होने पर भी उदार सामाजिक विचारों वाले प्रगतिशील पुरुष थे। स्वामी दयानन्द के विभिन्न समाज सुधार विषयक कार्यक्रमों के प्रति उनकी हार्दिक सहानुभूति थी। इस लेख के साथ उन्होंने अपना नाम न देकर लेखक के स्थान पर 'एक निष्पक्ष जीव वृन्दावन' लिखा, शायद इस आशंका मिश्रित भय से कि कहीं उनके सम्प्रदायानुयायी उन्हें स्वामी दयानन्द जैसे 'मूर्तिपूजा विरोधी नास्तिक' का भक्त व प्रशंसक न समझ बैठें। परन्तु यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि इस लेख को राधाचरण गोस्वामी ने ही लिखा था क्योंकि उस समय वृन्दावन में गोस्वामीजी के अतिरिक्त कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो हिन्दी का समर्थ लेखक भी हो और स्वामीजी के प्रति प्रशंसा का भाव रखता हो। आश्विन १९३९ के अंक में भारतेन्दु काल के सुप्रसिद्ध कवि और लेखक पं. प्रताप मारायण मिश्र की दोहा चौपाई शैली में 'देशदशा' शीर्षक एक कविता प्रकाशित हुई।

यद्यपि मिश्र जी आर्यसमाजी नहीं थे परन्तु इस कविता में उनका जो सुधार वादी स्वर प्रकट हुआ है वह यह बताता है कि उन पर स्वामी दयानन्द के विचारों का व्यापक प्रभाव था। इस कविता में उन्होंने मूर्त्ति पूजा, मूर्ति में प्राणप्रतिष्ठा, अवतारवाद, कृष्ण चरित्र पर पौराणिकों द्वारा किये गये नाना विध दोषारोपण आदि का विवेचन किया है। इसी अंक में अजमेर निवासी श्री जेठमल सोढ़ा सिखित कतिपय चौपाई, सोरठा, सवैया, छप्पय आदि छंद भी प्रकाशित हुए हैं। इन पद्यों का शीर्षक है—सर्व जनार्थ की वृद्धि। उस समय कोई लेखक यदि अपनी रचना को किसी पत्र में प्रकाशनार्थ भेजता था तो सम्पादक उस रचना को लेखक के पत्र के साथ ही छाप देता था। यथा श्री सोढ़ा का उक्त काव्य इस प्रकार छपा है। "श्री युत देशहितैषी सम्पादकेषु महाशय नमस्ते। आपसे यह विनती है कि निम्न लिखित दोहे, चौपाई, छन्द सोरठा, छप्पय, सवैया जो मेरी अल्पमति अनुसार बने हैं अपने अमूल्य पत्र में स्थान देय कृतार्थ करिये। जेठमल सोढ़ा।" आश्विन १९३९ के ही अंक में लखनऊ निवासी किन्हीं सीताराम नामक सज्जन का सम्पादक के नाम पत्र प्रकाशित हुआ है जिसमें उन्होंने पाठकों को यह प्रेरणा दी है "जितनी वस्तु इस शरीर के रक्षा, पोषण व कार्य में आवश्यकीय होय, सब देश की ही बनी हुई होय यहाँ तक विचार रखिये कि अन्य देश का बना हुआ सूत तक वस्त्रों में न हो। द्वितीय, जितने पुत्र होय उन प्रत्येक को एक एक ही प्रकार की शिल्प विद्या में निपुण कराकर देशीय वा विलायतीय यंत्रालयों में निज निज विद्या की कारीगरी सिखलाइये।" पत्र लेखक की अपरिमार्जित भाषा का न देखकर हमें यह देखना होगा कि स्वदेशी वस्तुओं के प्रति उसका

आग्रह कितना तीव्र है। महात्मा गांधी के स्वदेशी आन्दोलन के वर्षों पूर्व आर्यसमाज ने स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग करने तथा देश में नाना प्रकार के कला कौशल स्थापित करने की बलवती प्रेरणा की थी।

देश हितैषी में स्वदेशी और विदेशी समाचारों का संग्रह भी रहता था। इसी अंक में जापान में बाल विवाह पर प्रतिबंध लगाने तथा इटली के प्रसिद्ध देश भक्त गैरीबाल्डी के मृत शरीर का दाह संस्कार करने पर हर्ष व्यक्त किया गया है। आर्यसमाज अजमेर के रविवासरीय सत्संग का उल्लेख करते हुए उसके प्रमुख-कार्यक्रम-ऋग्वेद पाठ तथा हवन आदि की चर्चा हुई है। उन दिनों राजकाज में हिन्दी के प्रयोग के लिए सरकार से स्वीकृति दिये जाने हेतु एक स्मरण पत्र (memorandum) आर्यसमाज की ओर से भेजा जाना निश्चत किया गया था। इस प्रार्थना पत्र पर अजमेर के लगभग १ सहस्र लोगों के हस्ताक्षर कराये गये थे।

कार्तिक १९३९ के अंक में 'यदङ्गदाशुषे' मन्त्र की व्याख्या, जेठमल सोढ़ा की गोपुकार आरत मलार' शीर्षक कविता तथा मुंशी इन्द्रमणि के शिष्य लाला जगन्नाथदास कीपुस्तक 'आर्य प्रश्नोत्तरी' की 'एक उचित वक्ता' कृत समीक्षा, प्रकाशित हुई। पं. प्रतापनारायण मिश्र की 'देशदशा' शीर्षक कविता का दूसरा भाग इस अंक में छपा जिसमें बाल विवाह खण्डन, नवग्रह पूजा खण्डन, जन्मगत वर्ण व्यवस्था खण्डन, भाग्यवाद खण्डन जैसे क्रान्तिकारी विचारों की अभिव्यक्ति हुई है। कसौली, शिमला और जयपुर आदि स्थानों में आर्यसमाज स्थापना का उल्लेख समाचारों के अन्तर्गत हुआ है। उन दिनों स्वामी दयानन्द के उदयपुर विराजने का समाचार इस प्रकार छपा है—"श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज उदयपुर (राज मेवाड़) ही में विराजमान हैं यवन और ईसाइयों का भली भाँति खण्डन कर रहे हैं, परन्तु कोई शास्त्रार्थ अभी तक नहीं हुआ। स्वामी आत्मानन्द जी भी वहां पर विराजमान हैं।" समालोचना स्तम्भ के अन्तर्गत विधवा विवाह व्यवस्था (उर्दू) (लेखक मगराम विद्यार्थी—प्रकाशक मुन्शी जीवनदास उपप्रधान, आर्यसमाज लाहौर) तथा राधाचरण गोस्वामी लिखित 'आर्यशब्द का उपपादन' की आलोचना छपी। एक अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तक की चर्चा भी इस स्तम्भ में हुई। पुस्तक का नाम है 'एक आर्य' तथा लेखक हैं लाहौर आर्यसमाज के सभासद लाला सांईदास वर्मा। इसमें कलकत्ता के विश्वविद्यालय के सेनेट हाल में स्वामी दयानन्द के विरोध में आयोजित पौराणिक पण्डितों की 'आर्य सन्मार्गदर्शिनी सभा' की कार्यवाही की आलोचना की गई है। यह पुस्तक ऐतिहासिक महत्व की है। सम्पादक ने इस पुस्तक के उर्दू में लिखे जाने पर खेद व्यक्त किया है और लिखा है कि यदि इसे आर्य भाषा में प्रकाशित किया जाता तो अधिकाधिक लोगों को लाभ पहुँचता।

मार्गशीर्ष १९३९ के अंक में 'उपत्वाग्ने दिवेदिवे' मन्त्र की व्याख्या के अतिरिक्त पं. प्रतापनारायण मिश्र की 'देशदशा' कविता का शेषांश, आर्य-समाज लखनऊ के बलभद्र मिश्र की कविता 'छन्द' शीर्षक से छपी है। इस अंक में एक देशी ईसाई रामचन्द्र बोस तथा जयपुर के एक आर्य धर्मोपदेशक के बीच हुए शास्त्रार्थ का रोचक विवरण छपा है। बोस महाशय ने महाराजा कालेज में १-२ सितम्बर १८८२ को दो व्याख्यान दिये। ३ सितम्बर को पादरी के बंगले पर 'आर्य इन्कार' शीर्षक एक व्याख्यान देकर स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों का नामोल्लेख पूर्वक खण्डन किया तथा ईसा में विश्वास लाने से मुक्ति, तथा मौज़िजों (चमत्कार) आदि ईसाई विश्वासों की पुष्टि की। रामचन्द्र बोस के व्याख्यान की समाप्ति पर श्रोतृ मण्डली में उपस्थित एक आर्य धर्मोपदेशक ने खड़े होकर उनकी बातों का प्रतिवाद किया। यह प्रश्नोत्तर रूपी शास्त्रार्थ भी इसी अंक में छपा है। समाचार संग्रह के अन्तर्गत ईसाइयों की मुक्ति फौज (Salvation Army) के भारत आगमन तथा अदालतों में हिन्दी को स्वीकार किये जाने हेतु हण्टर कमीशन को प्रेषित प्रार्थना पत्र की चर्चा हुई है। इस प्रार्थनापत्र पर अजमेर के १५५० नागरिकों ने हस्ताक्षर किये जिनमें २७ पारसी और ३५ मुसलमान थे। यह मेमोरेण्डम २० अक्टूबर १८८२ को भेजा गया।

पौष १९३९ का अंक 'राजन्तमध्वराणां' मन्त्र की व्याख्या से प्रारम्भ होता है। इसमें स्वामी दयानन्द के शिष्य स्वामी आत्मानन्द की प्रचार यात्राओं का विवरण छपा। पं. प्रतापनारायण मिश्र की धारावाही प्रकाशित होने वाली कविता 'देशदशा' की एक किस्त भी इसमें छपी। एक अन्य कविता 'गीत दश अवतार' (मिश्र जी रचित) भी इसी अंक में है जिसमें विचित्र ऊहा करते हुए स्वामी दयानन्द की तुलना पुराण कथित दशावतारों से की गई है। वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धक श्री मुन्शी समर्थदान का देशाटन शीर्षक एक रोचक यात्रा वृत्तान्त भी इस अंक में छपा।

देशहितैषी को प्रारम्भ में आर्यसमाज अजमेर के मन्त्री मुन्नालाल शर्मा ने स्वपरिश्रम से प्रकाशित किया था। सम्पादन के साथ-साथ अन्य व्यवस्था सम्बन्धी कार्य भी उन्हींके जिम्मे थे। कालान्तर में आर्यसमाज ने अपने निश्चय के अनुसार पत्र के सम्पादन तथा प्रकाशन की सम्पूर्ण व्यवस्था अपने हाथ में ले ली। अब मुन्नालाल शर्मा का पत्र से कोई सम्बन्ध नहीं रहा। इस घटनाचक्र का पता स्वामी दयानन्द के नाम लिखे गये मुन्नालाल शर्मा तथा कमलनयन शर्मा के पत्रों से चलता है।[1]

देशहितैषी को राजस्थान से प्रकाशित होने वाले आर्यसमाज के प्रथम पत्र

---

१. द्रष्टव्य—ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार प्रथम भाग—मुन्शीराम जिज्ञासु सम्पादित।

होने का गौरव प्राप्त है। इस पत्र की २ फाइलें परोपकारिणी सभा के पुस्तकालय में विद्यमान हैं।

वेद प्रकाश—कानपुर

श्री अम्बिका प्रसाद वाजपेयी जी के अनुसार आर्यसमाज कानपुर से १८८४ में 'वेद प्रकाश' शीर्षक एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित हुआ। इसके संचालक कोई श्री हीरालाल नामक व्यक्ति थे।[1] श्री क्षेमचन्द्र सुमन के अनुसार पत्र का सम्पादन श्री राधाकृष्ण गुप्त करते थे।[2] पत्र का अधिक विवरण नहीं मिला।

भारतोद्धारक—अजमेर

आर्यसमाज अजमेर के प्रथम मन्त्री मुन्नालाल शर्मा ने १८८५ में भारतोद्धारक मासिक निकाला। पत्र का वार्षिक मूल्य सवा रुपया था।

सत्य प्रकाश—फतह गढ़ (उत्तर प्रदेश)

इस पत्र का प्रकाशन १८८५ में हुआ। विशेष विवरण उपलब्ध नहीं है।

आर्य विनय—मुरादाबाद

आर्यसमाज मुरादाबाद के तत्त्वावधान में वैशाख प्रतिपदा १९४२ वि. तदनुसार दि. १ मई १९८५ को आर्य विनय नामक पाक्षिक पत्र का आरम्भ किया गया। इसे समाचार, राजकीय, सामाजिक और धर्मादि विषयों का पाक्षिक पत्र कहा गया है। वार्षिक मूल्य २ रुपये था किन्तु स्थानीय ग्राहकों से डेढ़ रुपया लिया जाता था। पत्र का सम्पादन प्रारम्भ में पं. रुद्रदत्त शर्मा ने किया। मुद्रण कार्य मुन्शी समर्थदान के प्रबंध से वैदिक यंत्रालय प्रयाग में होता था। मुख पृष्ठ पर निम्न दोहे सिद्धान्त वाक्य के रूप में छपते थे—

आर्य विनय छंद पद गहे गद् गद् गिरा उचार।
विनवत आर्य सुबंधु जन सुनिये दीन पुकार॥
आर्य अवनि गवनी विपद भव नीरधि मंझधार।
लव निमेख अवरेख चित करहु कछुक प्रतिकार॥

मुखपृष्ठ के दूसरी ओर आर्य समाज के दस नियम अंकित रहते थे। प्रारम्भ में एक वेद मंत्र व्याख्या सहित, तत्पश्चात् सम्पादकीय लेख छपता। सम्पादकीय के प्रारम्भ में छपी संस्कृत की सूक्ति 'शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि' सम्पादन कार्य की गुरुता एवं निष्पक्षता का संकेत करती है। आर्य विनय के प्रथम अंक में 'पत्र के अवतार लेने का प्रयोजन' शीर्षकलेख में सम्पादक ने स्पष्ट किया है कि रुहेलखण्ड के पाँच जिलों में कोई भाषा पत्र नहीं निकलता। इसी अभाव की पूर्ति के लिये यह पत्र प्रारम्भ किया गया

---

१. समाचार पत्रों का इतिहास पृ. १९०।
२. हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम पृ. ४२०।

है।" उन दिनों जो एकाध पत्र इस प्रदेश से निकलते थे वे हिन्दी और उर्दू के द्विभाषिक पत्र थे। उन्हें सम्पादक ने उपहास में 'राम खुदैया' कहा है। इसीलिये रुहेलखण्ड से मातृभाषा का पत्र निकालने की आवश्यकता समझी गई। सम्पादक के विचारानुसार देशोन्नति और अपनी भाषा के महत्त्व को समझना स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेशों का ही परिणाम है।

आर्यविनय में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा अन्य विषयों पर विविधतापूर्ण सामग्रीयुक्त लेख छपते थे। धार्मिक विषयों पर शंका समाधान भी छपता था। 'समस्त आर्यसमाजों पर किये हुए एक जैनी के प्रश्न के उत्तर' शीर्षक से जैन विद्वान् द्वारा प्रस्तुत प्रश्नों का समाधान किया गया है। श्री सुन्दरलाल ने ईश्वर, जीव, सृष्टि रचना, मुक्ति, आवागमन, कर्म व्यवस्था आदि विषयों पर ९ प्रश्न भेजे तथा उनके उत्तर मांगे। पं. भीमसेन शर्मा ने इन प्रश्नों के समाधान कारक उत्तर आर्य विनय के अनेक अंकों में धारावाही रूप में प्रकाशित कराये। आर्य विनय के इन अंकों में नवीन आर्यसमाजों की स्थापना, आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों तथा अन्य समारोहों के विवरण, उपदेशकों का भ्रमण वृत्तान्त, शास्त्रार्थ, वाद विवाद, शंका समाधान आदि के समाचार छपते थे। यह सारी सूचनायें आर्यसमाज के प्रारम्भिक इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। १८८५ वर्ष के अंकों में गंगोह (जिला सहारनपुर), सिकंदरा राऊ (जिला अलीगढ़) कुल्लू (जिला कांगड़ा) आर्य समाजों की स्थापना की सूचनायें छपीं।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती, स्वामी ईश्वरानन्द सरस्वती, पं रुद्रदत्त शर्मा, पं. ईश्वरदत्त, पं. दिनेशराम आदि व्यक्ति उस युग के उपदेशक थे। इनके प्रचार वृत्तान्त, उपदेश, शास्त्रार्थ आदि के विवरण आर्य विनय में निरन्तर छपते रहते थे। उस युग में शास्त्रार्थों की धूम होती थी। एक ऐसा ही शास्त्रार्थ दातागंज (बदायूं) में हुआ। इसका विस्तृत विवरण १ जुलाई १८८५ के अंक में छपा। शास्त्रार्थ के सम्बन्ध में एक दिलचस्प बात इसी अंक में प्रकाशित आर्यसमाज दातागंज के मंत्री माधोराम के पत्र से जानी जाती है, जो प्रकाशनार्थ भेजा गया था। इस पत्र में सनातनी विद्वानों द्वारा प्रकाशित एक संस्कृत विज्ञप्ति उद्धृत की गई है जिसमें यजुर्वेद के मंत्र 'न तस्य प्रतिमाऽस्ति' को मूर्तिपूजा का निषेध परक मंत्र न मान कर विधेयात्मक सिद्ध करने की चेष्टा की गई है। विज्ञप्ति का प्रासंगिक अंश इस प्रकार है—"अयुक्तमेतत् अनया प्रतिमा निषेधो न भवति। भवदुक्ताऽर्थासंगतत्वात्। णम प्रह्वत्वे शब्दे धातोक्त प्रत्ययान्तस्या यमर्थः नम्येतसौ नतः तस्य नतस्य नमस्कृतस्य भगवतः प्रतिमा अस्तीति।" आदि

आर्यसमाज विषयक समाचारों के अतिरिक्त पत्र में स्थानिक समाचार तथा विविध समाचार (देशीय तथा परदेशस्थ) भी रहते थे। उन दिनों आज

की भाँति समाचार सेवायें (News Agencies) नहीं थीं। साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों में दैनिक पत्रों से लेकर ही समाचार प्रकाशित कर दिये जाते थे। ब्रिटिश रूस युद्ध के रोमाञ्चक समाचारों से आर्य विनय के अनेक अंक भरे पड़े हैं। १८८५ तक भारत के विभिन्न प्रान्तों में आर्यसमाजों की संख्या तो निरन्तर बढ़ती रही, किन्तु उनका कोई प्रतिनिधि (शिरोमणि) संगठन स्थापित नहीं हो सका था। आर्यसमाज मेरठ ने सर्वप्रथम प्रान्तीय स्तर पर आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापित करने का प्रस्ताव किया। तदनुसार मुन्शी लक्ष्मणस्वरूप ने सभा के गठन हेतु १८ नियमों का एक प्रारूप बनाया और प्रान्त की समाजों के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत किया। १५ जुलाई १८८५ के अंक में उपर्युक्त १८ नियम छपे हैं। देश हितैषी की भांति आर्य विनय में भी लेख के साथसाथ सम्पादक के नाम भेजे लेखक के पत्र को भी यथावत् छाप दिया जाता था। यथा—"श्रीयुत सम्पादक आर्य विनय नमस्ते। निम्नलिखित मजमून स्वपत्र में मुद्रित करा कर उपकृत कीजिये।" आदि। हास्य रस के लेखों को भी पत्र में यदा कदा स्थान मिलता था।

आर्यावर्त—कलकत्ता

बंगाल और बिहार प्रान्तों की आर्यसामाजिक गतिविधियाँ जिस पत्र के माध्यम से प्रकाशित होती थीं उस 'आर्यावर्त्त' पत्र का इतिहास अतीव रोचक है। साप्ताहिक आर्यावर्त का प्रकाशन १ अप्रैल १८८७ (१९४४ वि.) को आर्यावर्त प्रेस ६२, शम्भुनाथ पण्डित स्ट्रीट भवानीपुर कलकत्ता से हुआ।[1] उस समय कलकत्ता भारत की राजधानी थी। हिन्दी पत्रकारिता का केन्द्र भी यही महानगर था। कलकत्ता में आर्यसमाज की स्थापना १८८५ में हुई। भागलपुर के जमींदार बाबू महावीर प्रसाद इस आर्यसमाज के प्रथम प्रधान निर्वाचित हुये। वही आर्यावर्त के संचालक भी थे। आर्यावर्त के प्रथम सम्पादक रुद्रदत्त शर्मा थे। उन्हें मुरादाबाद से कलकत्ता आमंत्रित कर पत्र का सम्पादकीय दायित्व सौंपा गया।[2] शर्माजी ने लगभग १० वर्षों तक आर्यावर्त का सम्पादन किया।

---

१. वाजपेयीजी के अनुसार "आर्यावर्त साप्ताहिक पत्र आर्यसमाजियों ने कलकत्ते से निकाला था। जब तक कलकत्ते में रहा, अच्छा चला। १८९१ में पं. क्षेत्रपाल शर्मा इसके सम्पादक थे। १८९७ में यह रांची चला गया और १८९८ में दानापुर से निकलने लगा। यहाँ इसकी अवस्था फिर कुछ अच्छी हो गई। इसके बाद भागलपुर से निकलने लगा। फिर बंद हो गया।" समाचार पत्रों का इतिहास पृ. १९७

२. कलकत्ता आने से पूर्व पं. रुद्रदत्त शर्मा ने आर्य विनय का कुछ काल तक सम्पादन किया था।

१८९७/९८ से इस पत्र का प्रकाशन दानापुर (पटना) से होने लगा। इस अवधि में पं. कृपाराम शर्मा (स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती) ने कुछ समय तक आर्यावर्त का सम्पादन, किया।[1] अब बाबू ब्रह्मानन्द[2] को सम्पादन कार्य प्रदान किया गया। कुछ काल तक भागलपुर जिला के मुख्याध्यापक, आरा निवासी पं. श्याम शर्मा भी सम्पादक रहे। क्रान्तिकारी आन्दोलन से सम्बन्ध रखने वाले एक पंजाबी युवक होतीलाल भी पत्र के सम्पादक मण्डल में रहे, जिन्हें बम बनाने के षड्यन्त्र में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

प्रारम्भ में बंगाल और बिहार की आर्य प्रतिनिधि सभा एक ही थी। आर्यसमाज रांची की अन्तरंग सभा ने ८ अक्टूबर १८९७ की बैठक में एक प्रस्ताव स्वीकार किया जिसमें कहा गया था कि "चूंकि बिहार बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा का अपना आर्गन (मुख पत्र) नहीं है और आर्गन रहने की बड़ी आवश्यकता है इसलिये आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रार्थना की जाये कि बाबू महावीरप्रसाद (आर्यावर्त के संस्थापक-संचालक) को प्रार्थना करे कि आर्यावर्त प्रेस प्रथा पत्र जिसका मूल्य प्रतिनिधि सभा किस्त करके बाबू साहब को दे देगी, प्रतिनिधि सभा को कृपया दे देवें।" तदनुसार ही कार्यवाही की गई और बाबू महावीर प्रसाद ने पत्र तथा प्रेस सभा को दान में दे देने का निश्चय किया। इस प्रकार ७ मार्च १८९८ को प्रतिनिधि सभा को पत्र का स्वामित्व प्राप्त हुआ और १ अप्रैल १८९८ से पत्र रांची से प्रकाशित होने लगा। अब इसके सम्पादक श्री बालकृष्णसहाय बने। श्री सहाय प्रतिनिधि सभा आर्यसमाज रांची के प्रधान थे। आर्यावर्त अब बंगाल बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र बन गया।

इस समय तक आर्यावर्त का निजी प्रेस नहीं था। पत्र का मुद्रण श्री सहाय के कमलेश्वर प्रेस में होता था। कालान्तर में प्रतिनिधि सभा के लिये प्रेस खरीदा गया और १९०१ से आर्यावर्त इसी प्रेस में छपने लगा। पत्र के अन्त में मुद्रक और प्रकाशक का नाम इस प्रकार अङ्कित रहता था—Printed and Published by M. Dwarka Nath, Manager, at the Pratinidhi Press Ranchi for the Arya Pratinidhi Sabha Bihar, Bengal. पत्र का वार्षिक शुल्क साढ़े तीन रुपया था। अनुमानतः १९०७ तक पत्र रांची से निकलता रहा, पुनः बन्द हो गया।

समाचार पत्रों के इतिहास के लेखक पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के अनुसार १९१० में श्री श्याम शर्मा के सम्पादकत्व में भागलपुर से आर्यावर्त

१. दर्शनानन्द दर्शन —ले० श्रीराम शर्मा

२. साप्ताहिक आर्यावर्त का संक्षिप्त इतिहास—आर्य मित्र २४ जुलाई १९६६ के अङ्क में प्रकाशित श्री दयाराम मंत्री आर्यसमाज रांची का लेख।

पुन: मासिक रूप में प्रकाशित होने लगा। अब इसका आकार १० × ६।। तथा वार्षिक मूल्य १ रु. था। १९१३ के वर्ष में पत्र के सहकारी सम्पादक के पद पर (स्वामी) भवानीदयाल संन्यासी ने कार्य किया। १९१७ तक पत्र भागलपुर से प्रकाशित हुआ।

२८ मार्च १९२६ को बिहार प्रान्त की पृथक् प्रतिनिधि सभा संगठित की गई। पुन: सभा के समक्ष अपना मुख पत्र साप्ताहिक रूप से निकालने का विचार उपस्थित हुआ। मुंगेर निवासी श्री कार्तिकप्रसाद देव ने पत्र के मुद्रण हेतु अपना प्रेस सभा को दान में दे दिया। इसी कार्तिक प्रेस में आर्यावर्त साप्ताहिक का मुद्रण होने लगा। सुप्रसिद्ध प्रवासी नेता बिहार निवासी स्वामी भवानीदयाल संन्यासी इसके सम्पादक नियुक्त हुए। स्वामीजी ने अपनी आत्मकथा में इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए लिखा है—"सन् १९३१ में पटना से आर्यावर्त पत्र निकला जो बिहार प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र था। इसके प्रधान सम्पादक पद पर मुझे बिठाया गया। मैंने अवैतनिक रूप से यह पद स्वीकार कर लिया था। मेरे सहकारी पं. महादेव शरण जी थे और वास्तव में वही इस पत्र के प्राण थे।"[1] मार्च १९३२ में स्वामी भवानीदयाल ने दक्षिण अफ्रीका के लिये प्रस्थान किया। उनके विदेश गमन के साथ ही यह पत्र बंद हो गया। बिहार बंगाल सभा के मुख पत्र के रूप में निकलने के समय आर्यावर्त के मुखपृष्ठ पर निम्न शीर्षक छपता था—

ओ३म्

आर्यावर्त

The Aryavarta

A weekly organ of the Arya Pratinidhi Sabha Bihar-Bengal

'निन्दन्तु नीति निपुणा:' भर्तृहरि का यह प्रसिद्ध श्लोक पत्र के सिद्धान्त वाक्य के रूप में मुख पृष्ठ पर स्थान प्राप्त करता था।

स्थानीय समाचारों के अतिरिक्त पत्र में रूस जापान युद्ध (१९०५) जैसे अन्तर्राष्ट्रीय समाचार भी छपते थे। आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं के समाचारों को प्रधानता से छापा जाता था। आर्यसमाज के आन्तरिक वाद विवादों की भी चर्चा रहती थी। उदाहरणार्थ— पं. कृपाराम शर्मा (स्वामी दर्शनानन्द) तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रतेश) के मध्य जो विवाद हुआ, उसका विवरण २२ दिसम्बर, १९०० के अंक में छपा था। आर्यावर्त ने महारानी विक्टोरिया, प्रो. मैक्समूलर, महादेव गोविन्द रानाडे तथा सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण के लेखन की प्रेरणा देने वाले राजा जयकृष्णदास के निधन के समाचारों को

---

१. प्रवासी की आत्मकथा पृ. ३९५

विस्तार से प्रकाशित किया। वैदिक सिद्धान्तों के मण्डन तथा आर्यसमाज के विरोध में प्रकाशित सामग्री का पुरजोर खण्डन करने की नीति को आर्यावर्त ने प्रमुखता दी थी। पं. भीमसेन शर्मा जब मत परिवर्तन कर सनातनी शिविर में चले गये तो आर्यसमाज के विरोध में 'ब्राह्मण सर्वस्व' में छपने वाले उनके लेखों का करारा उत्तर आर्यावर्त में छपता था। विभिन्न शास्त्रार्थों के रोचक विवरण भी इस पत्र में समय-समय पर छपते रहते थे। आर्यसमाज कड़ैल (जिला अजमेर) में पौराणिकों से हुए शास्त्रार्थ का विवरण ३१ दिसम्बर, १९०४ के अंक में तथा आर्यसमाज नगीना (जिला बिजनौर) द्वारा मुसलमानों से किए गये शास्त्रार्थ का ब्यौरा २५ जून, २ और ७ जुलाई, १९०७ के अंकों में छपा था।

आर्य सिद्धान्त—प्रयाग

स्वामी दयानन्द के प्रमुख शिष्य पं. भीमसेन शर्मा ने आर्य सिद्धान्त नामक मासिक पत्र प्रयाग से निकालना आरम्भ किया। इसका प्रथम अंक आषाढ़ सं. १९४४ वि. (१८८७) में प्रकाशित हुआ। आर्य सिद्धान्त के मुख पृष्ठ पर 'सनातन आर्य मत मण्डन, नवीन पाखण्ड मत खण्डन, सत्सिद्धान्त प्रवर्तक, असत् सिद्धान्त निवर्तक, प्राचीन शास्त्र परिचायक, आर्यसमाज सहायक' इन शब्दों के द्वारा पत्र का परिचय तथा उसका ध्येय अंकित रहता था। मुख पृष्ठ पर ही 'आब्रह्मन् ब्राह्मणो' यह यजुर्वेदीय मंत्र भी छपता था। पत्र के सम्पादक के रूप में पं. भीमसेन शर्मा के साथ स्वामीजी के एक अन्य शिष्य पं. ज्वालादत्त शर्मा का भी नाम प्रकाशित होता था। प्रथम वर्ष में यह पत्र वैदिक यन्त्रालय, प्रयाग में ही मुद्रित होता रहा। प्रथम दस अंकों पर यह पंक्ति छपती रही—"श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी के शिष्य भीमसेन शर्मा और ज्वालादत्त शर्मा द्वारा सम्पादित होकर आर्यसमाज प्रयाग के सम्मत्यनुसार प्रयाग वैदिक यन्त्रालय में मुद्रित हुआ।" परन्तु ११वें अंक से आर्यसमाज प्रयाग के स्थान पर 'आर्य धर्म सभा प्रयाग के सम्मत्यनुसार' छपने लगे।

आर्य सिद्धान्त में प्रमुख रूप से पं. भीमसेन शर्मा के ही लेख प्रकाशित होते थे। कालान्तर में अन्य विद्वानों के लेखों को भी स्थान मिलने लगा। पत्र में मुख्यतया तीन प्रकार के लेख छपते थे। (१) आर्य सिद्धान्तों की पुष्टि में लिखे गये लेख, (२) आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के खण्डन में लिखी गई पुस्तकों, लेखों आदि का उत्तर, (३) किसी प्राचीन शास्त्र ग्रन्थ की व्याख्या अथवा भाष्य। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज की तत्कालीन गतिविधियों और प्रवृत्तियों के समाचारों को भी पत्र में स्थान मिलता था।

पं. भीमसेन शर्मा शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान् तथा संस्कृत के प्रौढ़ पण्डित

थे। उनके अधिकांश लेख संस्कृत तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में होते थे और इसी रूप में छपते भी थे। यहाँ हम किञ्चित विस्तार में जाकर आर्य सिद्धान्त में प्रकाशित सामग्री का विवेचन प्रस्तुत करते हैं। आर्यसमाज के सिद्धान्तों तथा स्वामी दयानन्द की विचारधारा पर आक्षेप मूलक साहित्य के उत्तर में शर्माजी तथा उनके सहयोगी लेखकों के निम्न लेख पत्र में प्रकाशित हुए—

१. महामोह विद्रावण का उत्तर—काशी के पण्डितों ने स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेद संज्ञा प्रकरण का खण्डन संस्कृत भाषा में लिख कर 'महामोह विद्रावण' नाम से छपाया। यद्यपि यह खण्डन काशी के पण्डितों ने सम्मिलित रूप से लिखा था, किन्तु लेखकों में अपने नामों को प्रकट करने का साहस नहीं था, इसलिये उन्होंने 'पं रामामोहन शर्मा' के एक कल्पित नाम से इसे प्रकाशित किया। इस पुस्तक की भाषा अत्यन्त जटिल एवं शब्दाडम्बरपूर्ण थी तथा लेखकों ने स्वामीजी के प्रति अनेक कुत्सायुक्त शब्दों का भी प्रयोग किया था। लेखकों की गर्हित लेखन शैली का परिचय इसी बात से मिलता है कि उन्होंने अपने युग के महान् वैदिक विद्वान् तथा धर्मसुधारक दयानन्द सरस्वती के लिये 'धर्म ध्वज-शिरोमणि' तथा 'कपट भिक्षु' जैसे अपमान युक्त शब्दों का संकोच रहित होकर प्रयोग किया। पं. भीमसेन ने इस पुस्तक का खण्डन अपने पत्र के प्रथम अङ्क से ही धारावाही लिखना आरम्भ किया। संस्कृत और हिन्दी में लिखित महामोह विद्रावण की यह समीक्षा अत्यन्त प्रौढ़ है तथा लेखक की विवेचना शक्ति की परिचायक है।

२. 'आर्यसमाजीय रहस्य' पुस्तक का उत्तर—वृन्दावन निवासी किन्हीं तोताराम गोस्वामी के पुत्र आचार्य मधुसूदनदास गोस्वामी ने यह पुस्तक आर्यसमाज के खण्डन में लिखी थी। उसका उत्तर पं. बलदेव शर्मा ने लिखा जो पौष १९४४ के अंक से धारावाही छपता रहा।

३, फर्रूखाबाद की सनातनधर्म सभा ने अपने मुख पत्र में आर्य सिद्धान्तों की जो आलोचना छापी, उसका उत्तर ज्येष्ठ १९४५ वि. के अंक से पं. ज्वालादत्त शर्मा द्वारा दिया जाने लगा।

४. स्वामी जी के एक समय के सहयोगी तथा अपने जमाने के इस्लाम के प्रसिद्ध समालोचक मुन्शी इन्द्रमणि कुछ समय तक आर्यमाज के साथ रह कर, कतिपय कारणों से उसके कटु आलोचक बन गये थे। मुन्शी जी का आर्यसमाज विरोध किन्हीं सिद्धान्तों पर आधारित न होकर सर्वथा वैयक्तिक था। अब उन्होंने आर्यसमाज के १० नियमों की आलोचना लिखी। इसका उत्तर आर्यसमाज मुरादाबाद के उपदेशक पं. बदरीदत्त शर्मा ने लिखा जो आर्य सिद्धान्त के आषाढ़ १९४५ वि. के अंक से छपना आरम्भ हुआ।

५. पं. भीमसेन शर्मा प्रयाग में 'दयानन्द विश्वविद्यालय पाठशाला' नामक एक संस्कृत विद्यालय का संचालन करते थे, इस विद्यालय के एक छात्र क्षेत्रपाल शर्मा ने 'रामानुजीय मत समीक्षा' लिखी जो श्रावण १९४५ वि. के अंक से छपनी आरम्भ हुई।

६. पूना बुधवार पेठ से प्रकाशित होने वाली ब्राह्म पत्रिका के १८८९ के अंक में वेदों की प्रामाणिकता तथा आर्यसमाज द्वारा मान्य 'ईश्वर के स्वरूप' पर कुछ समालोचनात्मक बातें लिखी गई थीं। उसकी समीक्षा पं. भीमसेन शर्मा ने माघ १९४५ वि. के अंक से लिखनी आरम्भ की।

७. कार्तिक १९४५ वि. के अंक से पं. भीमसेन शर्मा ने मूर्तिपूजा विचार शीर्षक एक लेख आरम्भ किया। उसमें शास्त्रीय दृष्टि से मूर्तिपूजा की आलोचना की गई थी।

८. दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर एक आलोचनात्मक पुस्तक इन्द्रप्रस्थ निवासी पं. शिवचन्द्र ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकायां प्रश्न-मालिका आर्यसमाजस्थ महाशयानां प्रति' लिखी थी। इसका उत्तर आर्यसमाज परीक्षित गढ़ के उपदेशक पं. तुलसीराम शर्मा (स्वामी) ने फाल्गुन १९४५ के अंक में लिखना आरम्भ किया।

९. पं. रघुनन्दन भट्टाचार्य ने सत्यार्थ प्रकाश के खण्डन में 'सनातन धर्म सिद्धान्त' पुस्तक लिखी। इसका उत्तर चैत्र १९४६ के अंक से पं. भीमसेन शर्मा ने देना आरम्भ किया।

१०. जैनमतानुयायी पं. आत्माराम (आनन्द विजय) ने आर्यसमाजों के सिद्धान्तों के खण्डन में 'अज्ञान तिमिर भास्कर' नामक ग्रन्थ लिख कर जैन धर्म हितेच्छु सभा भाव नगर से छपाया था। उसका उत्तर पं. भीससेन शर्मा ने आश्विन १९४६ के अंक से लिखना आरम्भ किया।

११. हरि शंकर शास्त्री नामक एक सनातनी पण्डित ने 'सद्धर्मदूषणोद्धार' नामक एक पुस्तक संस्कृत में लिख कर आर्यसमाज का खण्डन किया। पं. रुद्रदत्त ने उसका उत्तर आश्विन १९४६ के अंक में लिखा। आगे के अंकों में इसकी समीक्षा लिखने का भार पं. भीमसेन शर्मा ने लिया।

१२. मुन्शी इन्द्रमणि के शिष्य जगन्नाथदास ने 'आर्य प्रश्नोत्तरी' नामक एक पुस्तक लिखी, जिसमें वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध अनेक बातें उल्लिखित थीं। स्वामी दयानन्द ने अपने किसी सहयोगी को इस पुस्तक का उत्तर देने का निर्देश दिया जो देशहितैषी के कार्तिक १९३९ के अंक में छपा। इसके प्रत्युत्तर में मुन्शी जी ने अनन्तत्वप्रकाश नामक पुस्तक लिखी। पं. भीमसेन ने मुन्शी जी की इस पुस्तक का खण्डन आर्य सिद्धान्त के वैशाख १९४७ के अंक से धारावाही लिखना आरम्भ किया।

१३. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की एक अन्य आलोचना 'पाखण्डमत खण्डन कुठार'

नाम से महन्त रघुवीरदास प्रेसीडेन्ट सत् धर्म प्रचारिणीसभा हाजीपुर (जिला होश्यारपुर) ने लिखी थी। इसका उत्तर शर्माजी ने आषाढ़ १९४७ के अंक से आरम्भ किया।

उपर्युक्त उदाहरण दिग्दर्शन मात्र ही हैं, परन्तु इनसे यह स्पष्ट है कि आर्य सिद्धान्त के माध्यम से स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज की मान्यताओं के विरोध में प्रस्तुत किये जाने वाले आरोपों, आक्षेपों और आलोचनाओं का सटीक उत्तर देने में पत्र के सम्पादक तथा उसके सहयोगी अन्य लेखक गण सदा तत्पर रहते थे। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में जिज्ञासु बुद्धि से की जाने वाली शंकाओं का समाधान भी इस पत्र में छपता था। आर्य सिद्धान्त में प्रकाशित होने वाली यह सामग्री स्थायी महत्त्व की होती थी। इसलिये स्वल्प समय पश्चात् इन लेखमालाओं को पुस्तकाकार छपा लिया जाता था। ऐसे ग्रन्थों में यम यमी सूक्त, गंगादि तीर्थत्व विचार, मांस भोजन विचार का उत्तर, स्थावर में जीव विचार, द्वैताद्वैत विचार आदि उल्लेखनीय हैं। पं. भीमसेन ने विभिन्न शास्त्र ग्रन्थों का जो भाष्य लेखन किया, वह भी धारावाही रूप से आर्य सिद्धान्त में छपता था।

आरम्भ से लेकर तृतीय वर्ष के प्रथम अंक तक आर्य सिद्धान्त वैदिक यन्त्रालय, प्रयाग से छपा। तृतीय वर्ष का दूसरा अंक (अक्टूबर १८९९) प्रयाग प्रेस, प्रयाग में छपा। तदनन्तर इसके मुद्रण की व्यवस्था देशोपकारक यंत्रालय प्रयाग में हुई। दिसम्बर १८९० तक यह पत्र इसी प्रेस में छपता रहा। जनवरी १८९१ से पत्र का प्रकाशन शर्माजी के निजी प्रेस सरस्वती यंत्रालय, प्रयाग से होने लगा। आर्य सिद्धान्त में यद्यपि समालोचना का स्थायी स्तम्भ नहीं रहता था, किन्तु कभी कभी सम्पादक स्वयं ही किसी पुस्तक की समालोचना प्रकाशित कर देते थे। पत्र के ग्राहकों की जो सूची टाइटिल के दूसरे पृष्ठ पर छपती थी, उससे ज्ञात होता है कि आर्य सिद्धान्त के लगभग १००० ग्राहक थे। उन्नीसवीं शताब्दी में जब आर्यसमाज की पत्रकारिता का अभी शैशव ही था, यह संख्या संतोष प्रद ही कही जायगी। वर्षों तक एकनिष्ठ भाव से पत्र का सम्पादन और संचालन पं. भीमसेन शर्मा के पुरुषार्थ का ही परिचायक है।

भारत भगिनी--प्रयाग

स्त्रियोपयोगी मासिक पत्रिका भारत भगिनी का प्रकाशन १८८८ ई. में बैरिस्टर रोशनलाल की धर्म पत्नी श्रीमती हर देवी ने प्रयाग से किया।[1] वे ही इसकी सम्पादिका थीं। पत्रिका का मुद्रण पं. भीमसेन शर्मा के सरस्वती प्रेस में होता था। कुछ काल बाद यह पत्रिका लाहौर से प्रकाशित होने

१. वाजपेयीजी इनका नाम महादेवी बताते हैं। पृ. १९९

लगी। यहाँ पंजाब ब्रह्मसमाज प्रेस में इसका मुद्रण होता था। कालान्तर में यह पाक्षिक हो गई। १९०६ तक भारत भगिनी के प्रकाशित होने का अनुमान है।

परोपकारी—अजमेर

स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा ने अपनी प्रवृत्तियों के प्रकाशन तथा आर्यसमाज के देशोन्नति विषयक कार्यों को जनसाधारण तक पहुंचाने की दृष्टि से अपना मुख पत्र प्रकाशित करने का निश्चय किया। सभा के द्वितीय अधिवेशन में उप मंत्री पं. मोहनलाल विष्णुलाल पण्डया ने एतद्विषयक प्रस्ताव उपस्थित किया, जिस पर निश्चय हुआ कि 'परोपकारी' नामक एक षाण्मासिक पुस्तक हिन्दी भाषा में सम्पादन होकर प्रकाश हुआ करे और उसमें ६ महीनों के व्यवहारों के समाचार मुद्रित हुआ करे। यह कार्य पं. मोहनलाल पण्डया के अधीन हो।"[1]

इसी निश्चय के अनुसार परोपकारी का प्रथम अंक कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा सं. १९४६ वि. (१८८९) को प्रकाशित हुआ। मुख पृष्ठ पर निम्न श्लोक अंकित था—

श्रीमद्दयानन्द निधान संपत् संसत्सु संस्थापित कार्यकारी।
परोपकारिण्यखिलार्थ सिद्धः सुबुद्धिदोयं हि परोपकारी॥

इसके साथ ही निम्न परिचयात्मक वाक्य भी छपता था—

श्रीमत् परमपद प्राप्त परम पूजनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य महर्षि श्री १०८ श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामीजी महाराज के स्थानापन्न श्रीमती परोपकारिणी सभा और उनके कायिक, वाचिक और मानसिक प्रयत्नों से स्थापन हुए समस्त आर्यसमाजों के प्रामाणिक कार्य निर्वाह के समाचारों का प्रकाशक।

पत्र के भीतरी मुख पृष्ठ पर निम्न श्लोक प्रकाशित हुए—

श्रीमद्वैदिकमार्गमूलभवनं यज्जैन बौद्धादिना-
मन्येषां यवनादिदुर्ग्रहदशापन्नं विपन्नं भुवि॥
मग्नं जीर्णमभून्निरङ्कमभितः काल प्रवाहेण तत्।
प्रोद्धर्त्तुं यतमान एष पुरुषः स्वामी दयानन्द जित्॥ १॥
येन स्वीय समस्त सौख्यनिचयं संत्यज्य सांसारिक-
स्वार्थं व्यर्थमिति प्रपद्य मनसा संयापितं जीवितम्।
पुण्यासूपकृतिस्वथश्रुतिमया वेशैर्विशेषेण यो,
गर्हां चापि गृहं विसृज्य सततं देशोपकारे स्थितः॥ २॥
न निर्दोषो जगत्यां वा पुरोभागि पुरः पुमान्।
तथापि धन्यो यतिराड् दयानन्द सरस्वती॥ ३॥

---

१. परोपकारिणी सभा का इतिहास—डॉ. भवानीलाल भारतीय पृ. ३३

यद्यपि तदीयकार्यमार्यवरेण प्रभूतमासाद्य ।
परलोके प्रस्थितमपि परोपकारि प्रबन्धमाबध्य ॥ ४ ॥
स्मृत्वा परमात्मानमात्मानं जानता नरेरणेमे ।
द्रष्टव्या उद्देश्याः कर्त्तव्या सत्कृतिः परोपकृतिः ॥ ५ ॥
प्रचारो वेदानां तदवयवजानां बहुविधा,
विधेया व्याख्यान्यैरपि पटनमध्यापनमनु ।
तदुक्तीनामेव श्रवणमनिशं श्रावणमथो,
विधातव्यं तन्मुद्रणमथ च मुद्रापणमिति ॥ ६ ॥
श्रुतिप्रोक्तो धर्मः सततमुपदेश्यः समुचितः
श्रुतीनां शिक्षायाः करणमथ तत्कारणमपि ॥
सदस्तद्वक्तृणां सपदि विनियम्याभिविषयम् ।
ग्रहीतव्यं सत्यं त्वरितमनृतत्याग इति च ॥ ७ ॥
अनाथदीन भारतीय रक्षणं सुशिक्षणम् ।
विधाय पोषणं च तद्विधाप्यतां परैरथ ॥ ८ ॥

अन्तिम तीन श्लोकों में परोपकारिणी सभा के उद्देश्यो को, जो स्वामी दयानन्द के स्वीकार पत्र में उल्लिखित हैं, पद्य बद्ध किया गया है ।

सभा के इस मुख पत्र को 'षाण्मासिक पुस्तक' कहा गया है । पत्र के नियमों में यह उल्लेख मिलता है कि वैदिक यंत्रालय का जो कार्याध्यक्ष होगा वही इस पत्र का सम्पादक होगा और जो यंत्रालय के सेवक पण्डित होंगे वे उप सम्पादक होंगे, परन्तु यह स्पष्ट कर दिया गया है कि सर्वोपरि नियंत्रण सभा के मंत्री का होगा । परोपकारी के इस अङ्क में वैदिक यंत्रालय का वार्षिक विवरण (दयानन्दी संवत् ५), परोपकारिणी सभा का विवरण संख्या ४ (सन् १८८८) तथा 'आर्यसामाजिक पुरातत्त्वं' के अन्तर्गत स्वामी दयानन्द के कुछ पत्र व्यवहार को प्रकाशित किया गया है । ये पत्र स्वामीजी तथा थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापकों एवं महाराष्ट्रीय विदुषी रमाबाई के बीच लिखे गये थे । पत्र का द्वितीय अङ्क भी प्रकाशित हुआ । इसके पश्चात् यह बंद हो गया ।

ब्रह्मावर्त—खीरी

आर्यसमाज खीरी (उत्तरप्रदेश) का यह मासिक पत्र १८९० में प्रकाशित हुआ । इसका मुद्रण आर्य भास्कर प्रेस में होता था ।

तिमिरनाशक—काशी

पं. कृपाराम शर्मा (स्वामी दर्शनानन्द) द्वारा सम्पादित पत्र तिमिरनाशक तिमिरनाशक प्रेस, काशी से ३० जून, १८९० को साप्ताहिक रूप में प्रकाशित होना आरम्भ हुआ । इसका वार्षिक मूल्य अढ़ाई रुपया था । पत्र के आदर्श-वाक्य के रूप में निम्न दोहा मुख पृष्ठ पर प्रकाशित होता था—

स्वारथ भारत में बस्यो, जीवन भयो अकाज ।
खोयो कुमति विलास ने, धर्म जीव अरु लाज ।।

ब्राह्मण हितकारी—काशी

पं. कृपाराम शर्मा (स्वामी दर्शनानन्द) के सम्पादन में ब्राह्मण हितकारी साप्ताहिक का प्रकाशन १८९२ में काशी से हुआ। वार्षिक मूल्य डेढ़ रुपया था।

बनिता हितैषी—रांची

१५ सितम्बर, १८९२ को स्त्रियोपयोगी मासिक पत्रिका बनिता हितैषी का प्रकाशन श्रीमती भाग्यवती देवी क्षत्रिया[1] के सम्पादन में हुआ। तासी ने इसका प्रकाशनकाल १८९४ बताया है जब कि बालमुकुन्द गुप्त के अनुसार यह १८९३ में प्रकाशित हुई। ये दोनों तिथियां गलत हैं। पत्रिका रांची के कमलेश्वर प्रेस में मुद्रित होती थी। गोस्वामी तुलसीदास की चौपाई "एकहि धरम एक व्रत नेमा। काय वचन मन पतिपद प्रेमा" इस पत्रिका का सिद्धान्त वाक्य था। पत्रिका में प्रार्थना, भजन, उपदेश, बालशिक्षा, शिशु-पालन, कुरीति शोधन आदि रचनायें रहती थीं। इसी नाम की एक अन्य मासिक पत्रिका सम्भवत: अलीगढ़ से भी प्रकाशित होती थी।

वेदाध्ययन प्रेरक—लाहौर

लाला रलाराम के सम्पादन में यह मासिक पत्र सितम्बर १८९३ में लाहौर से प्रकाशित हुआ।

भारत उद्धार—जगरावां

भारत उद्धार साप्ताहिक वेद प्रचारक प्रेस जगरावां (लुधियाना) से पं. कृपाराम शर्मा ने प्रकाशित किया।

दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज समाचार—लाहौर

यह मासिक पत्र जुलाई १८९३ में लाला लाजपतराय के सम्पादन में लाहौर से निकला।

वेदप्रचारक—जगरांव (लुधियाना)

वेद प्रचारक मासिक जनवरी १८९४ ई. पं. कृपाराम शर्मा (स्वामी (दर्शनानन्द) द्वारा सम्पादित होकर वेद प्रचारक प्रेस, जगरांव (जिला लुधियाना) से प्रकाशित हुआ। प्रथमांक के मुख पृष्ठ पर स्वामी दयानन्द का चित्र तथा—

"योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् ।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशुगच्छति सान्वयः ।।"

---

१. ये भारतेन्दु कालीन प्रसिद्ध हिन्दी लेखक ठाकुर गदाधर सिंह की भगिनी थीं।

यह मनु का श्लोक अंकित है। पत्र का उद्देश्य (मुख पृष्ठ के दूसरी ओर) वेदों का प्रचार, तथा जो अज्ञान से वेद की निंदा करते हैं, उनका उत्तर देकर वेदों को फैलाना बताया है। वेदप्रचारक में वेदमन्त्र की व्याख्या तथा पं. कृपाराम रचित लेख प्रकाशित होते थे। प्रथमांक में 'वेदों की आवश्यकता' शीर्षक लेख उन्हीं का है। एक अन्य लेख 'वर्तमान शिक्षा और भारत सन्तान' भी इसमें छपा।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के मंत्रों को सायरण तथा दयानन्द के भाष्य के साथ तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'खबरें' शीर्षक के अन्तर्गत जो समाचार प्रकाशित हुए हैं वे आज के संदर्भ में तो विचित्र ही लगेंगे। उदाहरणार्थ—"कलकत्ता निवासी प्रसिद्ध बैरिस्टर सुरेन्द्रनाथ जी (बनर्जी) की पुत्री सुशीला ने लंडन में लंडन युनीवरसिटी की एम. ए. प्रीक्षा पास की—स्त्री शिक्षा के विरोधियों और अपने डिगरी पाने के अभिमानियों को चिल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए।" एक तो हिन्दी गद्य का वह प्रारम्भ काल था और फिर पत्र के सम्पादक की मातृभाषा पंजाबी थी, अतः परीक्षा को 'प्रीक्षा' परोपकार को 'प्रोपकार' और यूनीवर्सिटी को 'युनीवरस्टी' के रूप में लिखना स्वाभाविक ही था।

आर्य भास्कर-खीरी

१८९६ ई. में प्रकाशित हुआ। यह आर्य भास्कर प्रेस में छपता था।

वेद प्रकाश—मेरठ

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं. तुलसीराम स्वामी ने २८ जनवरी १८९७ (१९५३ वि.) से वेद प्रकाश मासिक का सम्पादन एवं प्रकाशन मेरठ से प्रारम्भ किया। वेद प्रकाश का प्रथम अंक २९ जनवरी १८९७ को स्वामी यन्त्रालय, मेरठ से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ। पत्र के मुख पृष्ठ पर निम्न श्लोक छपता था—

वेदप्रकाशो वेदस्य गौरवं सुप्रकाशयेत्।
तद्वारकतमोराशिं समन्ताच्च विनाशयेत्॥

वेदप्रकाश का उद्देश्य 'वेदोक्त धर्म प्रतिपादन और तद्विरुद्ध मत निराकरण' था। डाक व्यय सहित वार्षिक मूल्य १ रु. मात्र रक्खा गया। प्रथम वर्ष में ही पं. तुलसीराम स्वामी के यज्ञ, पितृलोक और श्राद्ध, बिजनौर शास्त्रार्थ, ईश्वर और उसकी प्राप्ति आदि लेख प्रकाशित हुए। ईसाई पादरी खड्गसिंह ने सम्भवतः आर्य तत्त्वप्रकाश नामक एक पुस्तक लिखी थी। इसमें वेद का काल निरूपण करते हुए उसे पर्याप्त अर्वाचीन बताया गया था। पं. तुलसीराम के अनुज पं. छुट्टनलाल स्वामी ने आर्य तत्त्व प्रकाश भाग १ का उत्तर मार्च १८९७ के अंक में लिखना आरम्भ किया जो जुलाई १८९७ के अंक में समाप्त हुआ। पं. तुलसीराम ने श्वेताश्वरोपनिषद् का भाष्य लिखा

जो अगस्त १८९७ के अंक से आरम्भ होकर सितम्बर १८९८ तक धारावाही छपता रहा।

वेद प्रकाश के द्वितीय वर्ष में मुक्ति और पुनर्जन्म, नमस्ते, पुराण परीक्षा, गंगादि तीर्थ आदि लेख प्रकाशित हुए। मुरादाबाद निवासी पं. ज्वालाप्रसाद मिश्र लिखित सत्यार्थप्रकाश के खण्डनात्मक ग्रन्थ दयानन्द तिमिर भास्कर (प्रकाशक: क्षेमराज श्रीकृष्णदास बम्बई) का उत्तर पं. तुलसीराम ने 'भास्कर प्रकाश' नामक ग्रन्थ लिख कर दिया। इस ग्रन्थ का उत्तरार्द्ध (दयानन्द तिमिर भास्कर के एकादश समुल्लास का खण्डन) वेदप्रकाश के अक्टूबर १८९८ के अंक से धारावाही प्रकाशित होने लगा। श्री मदनमोहन सेठ के अनुसार "१८९७ से १९११ तक १५ वर्षों में वेदप्रकाश के १८० अंक निकले, जिनकी पृष्ठ संख्या ३८७७ है। अब तक वेदप्रकाश में यज्ञ, शास्त्रार्थ, ईश्वरभक्ति, ईश्वरप्राप्ति, मुक्ति, पुनर्जन्म, मूर्तिपूजा, नित्य यज्ञ, मृतक दाह, मृतक श्राद्ध, वेदार्थ, विधवाविवाह, विवाह, क्षमा, दया, प्रायश्चित खानपान, छुआछूत, कर्मकाण्ड, उपासना, दिधिषु शब्द पर विचार, भूत प्रेत और अथर्ववेद, पुराण, तंत्र, भागवत खण्डन आदि २०० विषयों पर लेख निकल चुके हैं। ये लेख आर्य सिद्धान्त सम्बन्धी ज्ञान प्रदान करने के लिये बड़े ही उपयोगी हैं। विरोधियों के प्रश्नों के उत्तर, सम्पादकीय टिप्पणियाँ, आर्यसमाजों के प्रति परामर्श देने आदि में पण्डित जी (पं. तुलसीराम जी) बड़ी भारी योग्यता का परिचय देते हैं।"

वेदप्रकाश का सम्पादन पं. तुलसीराम स्वामी ने जीवन पर्यन्त किया। उनके निधन (आषाढ़ शुक्ला ५, १९७२, १७ जुलाई १९१५ ई.) के पश्चात् पं. छुट्टनलाल स्वामी सम्पादक बने। स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेदभाष्य के आगे के मंत्रों का भाष्य पं. तुलसीराम स्वामी ने लिखना आरम्भ किया था। इस क्रम के २५ मंत्रों का भाष्य जुलाई १९१६ के वेदप्रकाश में छपा। वेदप्रकाश के इस काल के अंकों में राजभक्ति (ब्रिटिश शासन के प्रति अनुरक्ति) का स्वर प्रबल मात्रा में दृष्टि गोचर होता है। जनवरी १९१६ के अंक में सम्पादकीय लेखनी से 'राजभक्ति' शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ है। इसमें लेखक ने अंग्रेजी शासन के प्रति प्रशंसापूर्ण उद्‌गार प्रकट किये हैं। सम्भवत: उस समय आर्यसमाज में राजभक्ति (विदेशी सत्ता के प्रति वफादारी) तथा राष्ट्रीय विचार धारा दो पृथक् भावधारायें प्रवाहित थीं। वेदप्रकाश सम्पादक पं. छुट्टनलाल स्वामी प्रथम विचार धारा के पोषक थे। स्व. तुलसीराम स्वामी की स्मृति में पं. अखिलानन्द शर्मा ने संस्कृत में एक शोकगीतिका (elegy) 'शोक सम्मूर्छन काव्य' लिखी जो इसी अंक में छपी। पं. तुलसीराम जी का जीवन चरित तथा 'स्वामी दयानन्द का देशाटन' शीर्षक लेख भी १९१६ के अंकों में धारावाही छपे।

वर्णव्यवस्था के स्वरूप और व्याख्या को लेकर उन दिनों आर्यसमाज में एक विवाद खड़ा हो गया था। पं. अखिलानन्द शर्मा स्वमान्यता के अनुसार वर्ण व्यवस्था को गुण कर्मानुसार मानते हुए भी 'स्वभाव' शब्द की एक निराली व्याख्या करते थे। इस प्रकार 'स्वभाव' पर जोर देकर वे वर्ण व्यवस्था को प्रकारान्तर से 'जन्म' से जोड़ना चाहते थे। इस मत के विरोध में महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) तथा मुन्शी नारायणप्रसाद (नारायण स्वामी) आदि प्रमुख आर्य नेता थे। इस विवाद ने कालान्तर में ब्राह्मण बाबू विरोध' को जन्म दिया। कुछ काल पश्चात् पं. अखिलानन्द द्वारा वर्ण व्यवस्था शीर्षक प्रस्तक लिखने से यह विवाद अपने निर्णायक दौर में पहुंच गया जिसके फलस्वरूप अखिलानन्द शर्मा को आर्यसमाज से पृथक् होना पड़ा। अब वे सनातनी शिविर में चले गये। वेदप्रकाश के कई अंकों में इस विवाद का रोचक तथा यत्र तत्र पूर्वाग्रह युक्त (सम्पादक की सहानुभूति पं. अखिलानन्द के मत के प्रति दृष्टिगोचर होती है) विवरण मिलता है।

वेदप्रकाश में समालोचना का स्तम्भ भी रहता था। इसमें आर्यसमाज विषयक नव प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा छपती थी। पत्र में पं. कालूराम शर्मा, पं. भीमसेन शर्मा आदि सनातनी पण्डितों द्वारा आर्यसमाज के विरोध में लिखे गये आक्षेपपूर्ण लेखों, ग्रन्थों आदि के उत्तर भी नियमित रूप से छपते थे। यह कार्य स्वामी द्वय ही करते थे। विशेषत: भीमसेन शर्मा के ब्राह्मण सर्वस्व में प्रकाशित होने वाले आर्यसमाज के प्रति आक्षेपजनक लेखों का उत्तर वेदप्रकाश में 'शठे शाठ्यं' की नीति के अनुसार छपता था।

भारतोद्धारक—मेरठ

वैदिक पुस्तक प्रचारक फण्ड मेरठ का मासिक मुखपत्र भारतोद्धारक अगस्त १८९७ से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ।[1] पत्र का मुद्रण स्वामी प्रेस मेरठ से होता था। इसके मुख पृष्ठ पर 'दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्' यह यजुर्वेद का मंत्र अंकित रहता था। वार्षिक मूल्य १ रुपया था। टाइटिल के दूसरे पृष्ठ पर पत्र के उद्देश्य अंकित रहते थे। पत्र में प्रकाशित होने वाली सामग्री के सम्बन्ध में यह सूचित किया गया था कि 'इसमें वैदिक धर्म, नीति, शिक्षा, महात्माओं के जीवन चरित्र, उपन्यास, नाटक, समस्या, स्वर्गवासी धर्मवीर पं. लेखराम जी के उर्दू पुस्तकों का अनुवाद तथा पं. ज्वालाप्रसाद मुरादाबादी कृत दयानन्द तिमिर भास्कर का उत्तर 'भास्करप्रकाश' पं. तुलसीराम स्वामी सम्पादक वेदप्रकाश कृत छपा करेगा।''

प्रथम वर्ष के अंकों में पं. लेखराम कृत आर्य, हिन्दू और नमस्ते का

१. वाजपेयीजी ने इसका नाम भारतोपदेशक लिखा है (समाचार पत्रों का इतिहास पृ. २३३) जो गलत है।

अन्वेषण, पं. प्रभुदयालु लिखित एक संस्कृत दर्शन ग्रन्थ 'समीक्षाकर' तथा पं. तुलसीराम कृत भास्करप्रकाश ग्रन्थ धारावाही लेखमालाओं के रूप में छपे। अप्रैल १८९८ के अंक में शिवचरणलाल जैतली का लेख 'आर्य-सामाजिक नियमों का वेद मंत्रों से सम्मेलन' उल्लेखनीय है। इसमें प्रत्येक नियम में वर्णित विषय की पुष्टि उसी अभिप्राय को व्यक्त करने वाले वेद मंत्रों को उद्धृत कर की गई है। इसी अंक में पं. लेखराम लिखित 'मुर्दा जरूर जलाना चाहिए' निबंध कर्णवास निवासी शेरसिंह वर्मा द्वारा अनूदित होकर प्रकाशित हुआ। लिंगपुराण के नृसिंहबध प्रकरण (अध्याय ६९) को भी हिन्दी अर्थ सहित उद्धृत किया गया है। पत्र के प्रत्येक अंक में वैदिक पुस्तक प्रचारक फण्ड की पुस्तकों का विज्ञापन तथा इस संस्था का आय व्यय भी छपता था।

वैदिक धर्म—मुरादाबाद

पं. कृपाराम द्वारा प्रवर्तित उर्दू साप्ताहिक वैदिक धर्म अक्टूबर १८९७ से हिन्दी में भी निकलना आरम्भ हुआ।

पाञ्चाल पण्डिता—जालंधर

कन्या महाविद्यालय जालंधर की मासिक मुख पत्रिका पाञ्चालपण्डिता का प्रकाशन १५ नवम्बर १८९७ से प्रारम्भ हुआ।[1] महाविद्यालय के संस्थापक लाला देवराज पत्रिका के सम्पादक थे। लाला बद्रीदास (बाद में दीवान बहादुर) भी सम्पादन कार्य में उनके सहायक थे। पत्रिका का वार्षिक मूल्य डेढ़ रुपया था। नारी जागरण तथा स्त्री जाति में विद्याप्रचार पाञ्चाल पण्डिता का उद्देश्य था। चार पृष्ठ अंग्रेजी के भी रहते थे। १५ जनवरी १९०१ से पत्रिका पूर्ण रूप से हिन्दी सामग्री को ही स्थान देने लगी। अब सम्पादन कार्य लाला देवराज के ही पास रहा। १५ जुलाई १९०१ से पत्रिका के अन्तिम चार पृष्ठों में छोटी बालिकाओं के लिये विशिष्ट सामग्री 'सुकुमारी' शीर्षक से प्रकाशित होने लगी। जनवरी १९०३ में श्रीमती सावित्री देवी[2] का नाम उपसंपादिका के रूप में छपने लगा। १९०५ में पाञ्चाल पण्डिता को पंजाब राज्य के राजकीय विद्यालयों में खरीदे जाने की आज्ञा शिक्षा संचालक द्वारा प्रदान की गई। डा. लक्ष्मीनारायण गुप्त को पाञ्चाल पण्डिता

---

१. पत्रिका के सम्बन्ध में निम्न परिचयात्मक पंक्तियाँ अंग्रेजी में टाइटिल के दूसरे पृष्ठ पर छपती थीं—
The Panchal Pandita—A monthly Hindi magazine, solely devoted to the interests of Indian women and aims at serving as a handy Periodical for educated ladies and young students.

२. ये लाला देवराज की पुत्री थीं।

के अगस्त १९०८ तक के अंक देखने के लिये मिले, अत: वे यह निश्चित नहीं कर सके कि इसका प्रकाशन कब तक होता रहा। हमारी सूचना के अनुसार पाञ्चाल पण्डिता १९१५ तक प्रकाशित होती रही।

आर्यबंधु—मेरठ

डा. रामचन्द्र वर्मा ने मेरठ से १८९८ ई. में आर्यबंधु मासिक पत्र निकालना आरम्भ किया। २५ फरवरी १९०९ को वर्माजी के देहान्त के साथ ही इसका प्रकाशन बंद हो गया।

आर्यमित्र—लखनऊ

आर्य समाज के वर्तमान जीवित पत्रों में आर्यमित्र सर्वाधिक प्राचीन है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक के अन्त में प्रकाशित होने वाला आर्यमित्र अपने जीवन के ८२ वर्ष पूरे कर चुका है। हिन्दी पत्रों में इससे अधिक पुराना जीवित पत्र एक मात्र वेंकटेश्वर समाचार ही है। आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तरप्रदेश) की स्थापना १८८६ ई. में हुई थी। स्थापना के कुछ वर्ष पश्चात् यह अनुभव किया गया कि सभा का अपना मुख पत्र होना चाहिए जिसके माध्यम से प्रान्तीय आर्यसमाजों के समाचार सूचनायें आदि प्रसारित की जा सकें। फलत: १८९६ ई. में एक उर्दू साप्ताहिक पत्र मुहर्रिक (प्रस्तावक) नाम से निकालने का निश्चय किया गया। इस पत्र के सम्पादक प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन मंत्री मुन्शी नारायणप्रसाद (महात्मा नारायण स्वामी) नियुक्त किये गये। मुहर्रिक का प्रकाशन मुरादाबाद से हुआ, जहाँ सभा का मुख्यालय था।

लगभग १ वर्ष पश्चात् इसी मुहर्रिक ने आर्यमित्र नाम धारण कर लिया और अब वह हिन्दी साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित होने लगा। महात्मा नारायण स्वामीजी ने अपनी आत्मकथा में इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखा, "मुहर्रिक अखबार का नाम आर्यमित्र रक्खा गया। वह १८९८ तक उर्दू में निकलता रहा उसके बाद हिन्दी में निकलने लगा।"[1] फ्रेंच विद्वान् गार्सी द तासी के अनुसार आर्यमित्र १८९७ में मुरादाबाद के आर्यभास्कर प्रेस से प्रकाशित हुआ था। वस्तुत: आर्यमित्र के रूप में उर्दू मुहर्रिक का ही पुनर्जन्म १८९८ में हुआ था। लगभग ६ वर्षों तक मित्र का प्रकाशन मुरादाबाद से होता रहा। १९०४ में सभा के आदेशानुसार आर्यभास्कर प्रेस आगरा में स्थानान्तरित कर दिया गया।[2] फलत: आर्यमित्र भी आगरा आ गया, जहाँ से १९४० ई. तक वह अनवरत प्रकाशित होता रहा। पं. क्षेमचन्द्र सुमन के अनुसार आर्यसमाज मुरादाबाद का मासिक मुख पत्र 'आर्यविनय'

१. पृ.
२. इससे पूर्व यह प्रेस खीरी मे था।

ही परिवर्तित नाम से आर्यमित्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने इस नाम परिवर्तन का श्रेय पं. बद्रीदत्त जोशी को दिया है। परन्तु हमारी शोध के आधार पर यही सिद्ध होता है कि उर्दू मुहर्रिक ने ही आर्यमित्र के रूप में चोला बदला था। जोशीजी प्रारम्भिक काल में आर्यमित्र के सम्पादक अवश्यक रहे थे।

आर्यमित्र के सम्पादक—प्राप्त विवरणों के अनुसार निम्न महानुभावों ने समय-समय पर आर्यमित्र का सम्पादन किया था—

पं. सूर्य प्रसाद शर्मा
कुं. हुकमसिंह (अवैतनिक)

पं. रुद्रदत्त शर्मा-सम्पादकाचार्यजी ने इस पत्र का सम्पादन तीन भिन्न-भिन्न अवधियों में किया। यह अवधि लगभग ६ वर्ष की रही होगी। उनके सम्पादन काल में पत्र ने अपूर्व उन्नति की थी और मित्र की गणना हिन्दी के श्रेष्ठ पत्रों में होती थी।

पं. नंदकुमार देव शर्माजी ने मित्र का सम्पादन १९०६ से १९०८ (१९६४ वि. से १९६६ वि.) तक किया।

ठाकुर सूर्यकुमारसिंह
पं. भवदत्त शास्त्री
पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ

कुछ काल तक हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक एवं पत्रकार पं. लक्ष्मीधर वाजपेयी ने 'सर्वानन्द' नाम से १९१५ ई. में आर्यमित्र का सम्पादन किया। ये तीन वर्ष तक इस पद पर रहे। मेरठ के पं. घासीराम जी तथा श्री मदनमोहन सेठ के विशेष अनुरोध को स्वीकार कर लब्ध-प्रतिष्ठ कवि, लेखक एवं पत्रकार पं. हरिशंकर शर्मा ने मित्र का सम्पादन भार १८१५ ई. में स्वीकार किया। १९१९ तक वे इस कार्य को करते रहे। १९१९ में गुरुकुल वृन्दावन के प्रथम स्नातक पं. धर्मेन्द्रनाथ तर्कशिरोमणि को सम्पादक नियुक्त किया गया। कालान्तर में जब वे शिक्षा विभाग में चले गये तो सम्पादन कार्य पुनः पं. हरिशंकरजी को सौंपने का निश्चय किया गया। इस समय काशी के सुप्रसिद्ध देश भक्त सेठ शिवप्रसाद गुप्त ने विश्व भ्रमण की योजना बनाई थी और वे शर्माजी को अपने सचिव के रूप में साथ ले जाना चाहते थे। शर्माजी के लिये विश्व भ्रमण का यह सुलभ अवसर अनायास ही उपस्थित हुआ था। जब पं. घासीराम जी तथा सेठजी को इस बात का ज्ञान हुआ तो वे पं. हरिशंकर जी के पिता पं नाथूराम शर्मा शंकर के समीप पहुंचे और उनसे निवेदन किया कि वे हरिशंकर जी से अनुरोध करें कि वे गुप्त जी के सचिव बनने की अपेक्षा आर्यमित्र का सम्पादन भार अपने कंधों पर ले लें। त्याग एवं तपस्या की प्रतिमूर्ति शंकर जी ने अपने पुत्र को यही परामर्श दिया कि सेठ शिवप्रसाद गुप्त के सचिव बनकर पृथ्वी प्रदक्षिणा

में जाने की अपेक्षा उन्हें आर्यसमाज के पत्र की सेवा स्वीकार करनी चाहिए। फलतः शर्माजी ने विश्व यात्रा का तीव्र प्रलोभन अनायास ही त्याग दिया और आर्यसमाज के प्रमुख पत्र आर्यमित्र की सेवा का व्रत स्वीकार किया।

इस प्रकार पं. हरिशंकर शर्मा पुनः आर्यमित्र में आये और १९२३ से १९३५ तक निरन्तर १२ वर्ष तक पत्र का सम्पादन करते रहे। १९२५ में जब स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी मथुरा में मनाई गई, उस समय आर्य मित्र को कुछ समय के लिए दैनिक का रूप दिया गया था। शर्माजी के सम्पादन काल में आर्यमित्र ने आशातीत उन्नति और प्रगति की। उसका क्षेत्र आर्यसमाज तक ही सीमित न रहकर सम्पूर्ण हिन्दी जगत् हो गया। शर्माजी की प्रेरणा से राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरि औध', गयाप्रसाद शुक्ल सनेही, बालकृष्ण शर्मा नवीन, प्रेमचंद, गणेश शंकर विद्यार्थी, वासुदेवशरण अग्रवाल जैसे हिन्दी के मान्य कवि और लेखक 'मित्र' में अपनी रचनायें प्रकाशनार्थ भेजा करते थे। पीर मुहम्मद मूनिस तथा जहूर बख्श जैसे लब्धख्याति मुस्लिम हिन्दी लेखक भी आर्यमित्र में अपनी रचनाओं को प्रकाशित कराने में गौरव अनुभव करते थे। गम्भीर रचनाओं के अतिरिक्त आर्य मित्र में हास्य व्यंग्य की सामग्री प्रचुर मात्रा में रहती थी। पं. रुद्रदत्त शर्मा अपने सम्पादन काल में 'पञ्च प्रपञ्च' शीर्षक हास्य स्तम्भ स्वयं लिखते थे। उनकी 'कण्ठी जनेऊ का व्याह' तथा 'स्वर्ग में सब्जैक्ट कमेटी' शीर्षक हास्य रचनायें भी इसी पत्र में सर्व प्रथम छपी थीं। डा. हरिशंकर शर्मा 'विनोद बिंदु' शीर्षक स्तम्भ विनोदानन्द के नाम से लिखते थे। ऋषि दयानन्द की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में आर्यमित्र ने अपना विशेषांक प्रकाशित किया जिसमें महत्त्वपूर्ण सामग्री का संग्रह था।

१९३४ में आर्यमित्र के तत्कालीन अधिष्ठाता जी से मतभेद हो जाने के कारण शर्मा जी ने सम्पादक पद से त्यागपत्र दे दिया तथापि उनकी शुभ भावनायें और आशीर्वाद 'मित्र' के प्रति यथापूर्व बना रहा। आर्यमित्र के सम्पादकों में विख्यात पत्रकार पं. बनारसीदास चतुर्वेदी तथा डा. सत्येन्द्र जैसे साहित्यकार भी रह चुके हैं। पं. रामस्वरूप शास्त्री, श्री जगनलाल गुप्त, श्री मंगलदेव शर्मा, श्री रामचन्द्र श्रीवास्तव 'चन्द्र' तथा श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' आदि महानुभाव इस बीच मित्र के सहायक सम्पादक रहे। हरि-शंकर शर्मा के सम्पादक पद से पृथक् हो जाने पर सर्व श्री मधुसूदन चतुर्वेदी, प्रो. बाबूराम गुप्त तथा पं. ब्रह्मानन्द आयुर्वेदाचार्य ने सम्पादक रूप में कार्य किया। १९३८-३९ में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के अवसर पर 'मित्र' को अर्द्ध साप्ताहिक का रूप दिया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने अब आर्यभास्कर प्रेस और आर्यमित्र को आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर को ठेके पर दे दिया। मण्डल के अधिकारियों

की प्रार्थना पर हरिशंकर शर्मा स्वल्प काल के लिये पुनः सम्पादक बन कर आये, परन्तु वे अधिक समय तक इस कार्य को नहीं कर सके। पं. जयदेव शर्मा, विद्यालंकार ने तब सम्पादन कार्य किया। ठेके का प्रयोग समाप्त कर सभा ने यही उचित समझा कि प्रेस और पत्र को सभा के मुख्य कार्यालय ५ हिल्टन रोड़ (अब ५, मीराबाई मार्ग) लखनऊ में लाया जाय। तदनुसार १९४१ में यह पत्र लखनऊ से प्रकाशित होने लगा। यहाँ पं. ऋषिदेव विद्यालंकार, पं. आर्येन्द्र वेदशिरोमणि, प्रो. भगवान् प्रसाद, पं. नरेन्द्रनाथ शास्त्री तथा पं. कायेन्द्र शर्मा आदि ने सम्पादन किया। जनवरी १९४६ में पं. उमेशचन्द्र स्नातक सम्पादक नियुक्त हुए। स्नातक जी ने लम्बी अवधि तक सम्पादन कार्य किया। मित्र के शुभ चिन्तक आर्य नेताओं—श्री मदन मोहन सेठ तथा प्रिंसिपल महेन्द्रप्रताप शास्त्री के विशेष आग्रह पर एक बार पुनः हरिशंकर शर्मा ने मित्र का सम्पादन अवैतनिक रूप से स्वीकार किया। अब मित्र का सम्पादन कार्य आगरा से तथा प्रकाशन लखनऊ से होने लगा।

यह अनुभव किया गया कि मित्र की आर्थिक स्थिति को सुदृढ करने के लिये एक लिमिटेड कम्पनी का निर्माण कर पत्र का प्रकाशन कार्य उसी के सुपुर्द कर दिया जाय। फलतः १९५० में आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड की स्थापना हुई। इस समय पं. धर्मपाल विद्यालंकार ने अवैतनिक सम्पादक का कार्य किया। पं. गोपालदत्त जोशी भी लगभग ५ वर्ष तक सम्पादक रहे। कम्पनी के आग्रह पर हरिशंकर शर्मा ने एक बार पुनः आर्यमित्र का सम्पादक पद ग्रहण किया। उनकी सहायता के लिये पं. उमेशचन्द्र स्नातक तथा पं. यज्ञदत्त शर्मा ने सहकारी के रूप में कार्य किया। १९५३ में लिमिटेड कम्पनी का कार्य शिथिल हो गया। शर्माजी सम्पादकीय दायित्व से मुक्त हो गये और सम्पादक के पद पर पं. गोपालदत्त शास्त्री विद्या भास्कर को प्रतिष्ठित किया गया। आर्यमित्र का स्वामित्व और व्यवस्था कम्पनी से लेकर पुनः सभा को दे दी गई। श्री कालीचरण आर्य उस समय पत्र के अधिष्ठाता थे। उन्होंने आर्यजगत् के सुयोग्य पत्रकार श्री भारतेन्द्र नाथ साहित्यालंकार को सम्पादक नियुक्त किया। इन उत्साही सम्पादक महोदय ने आर्यमित्र को साप्ताहिक के साथ साथ दैनिक का रूप भी दिया। दस मास तक दैनिक का प्रयोग सफलतापूर्वक चलता रहा, परन्तु आर्थिक कठिनाइयों से न उबर पाने के कारण उसे बंद करना पड़ा। अब सभा के तत्कालीन मंत्री पं. शिवदयालु सम्पादक बने। १९५८ ई. में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अध्यक्षता पं. हरिशंकर शर्मा ने संभाली और उनके आग्रह वश पं. उमेशचन्द्र स्नातक तीसरी बार मित्र के सम्पादक बने। दिसम्बर १९५९ में महर्षि दयानन्द की दीक्षा शताब्दी मथुरा में आयोजित की गई, उसी अवसर पर आर्यमित्र की हीरक जयन्ती का भी आयोजन

किया गया। इसके उपलक्ष्य में मित्र का विशेषांक प्रकाशित हुआ जिसमें आर्यसमाज के इस लोकप्रिय पत्र का ६० वर्षीय इतिहास संकलित किया गया।

स्नातक जी के सम्पादन काल में पं. भगवत्शरण तथा श्री ईश्वर दयालु आर्य सहायक सम्पादक के रूप में रहे। १९६८ में पं. सच्चिदानन्द शास्त्री सभा के मंत्री निर्वाचित हुए, साथ ही उन्होंने सम्पादक पद को भी अभिषिक्त किया। पं. शिवदयालु, श्री रामचरण विद्यार्थी, पं. प्रेमचन्द शर्मा ने भी समय समय पर आर्य मित्र का सम्पादन किया। १९७७ में प्रो. कैलास नाथ सिंह प्रतिनिधि सभा के मंत्री निर्वाचित हुए। प्रथानुसार प्रो. सिंह मित्र के सम्पादक भी बने। पं. नारायण प्रिय गोस्वामी एक दीर्घ अवधि से मित्र के प्रबन्ध सम्पादक के रूप में कार्य करते रहे हैं। श्री आचार्य रमेशचन्द्र तथा श्री उमेशचन्द्र स्नातक भी नियमित रूप से आर्य मित्र के सम्पादन में सहयोग कर रहे हैं।

अपने प्रकाशन के ८१ वर्षों में आर्यमित्र ने विशेषांकों का एक उल्लेखनीय रेकार्ड बनाया है। प्रति वर्ष दीपावली, शिवरात्रि, तथा श्रावणी जैसे पर्वों पर विशिष्ट पठनीय सामग्री से युक्त विशेषांक निकलते रहे हैं। आर्यमित्र में वेद व्याख्या, सिद्धान्त चर्चा, स्वास्थ्य चर्चा, नारी संसार, आर्य जगत् आदि विभिन्न स्तम्भों के अन्तर्गत पाठकों के लिये सुरुचिपूर्ण लेखों का संग्रह रहता है।

आर्य मित्र के प्रकाशन के साथ ही आर्यसमाज के पत्रों का उन्नीसवीं शताब्दी का काल समाप्त होता है। इस युग में आर्यसमाज के भारत सुदशा-प्रवर्त्तक, देश हितैषी, आर्य विनय, आर्यावर्त, आर्यसिद्धान्त, वेदप्रकाश तथा आर्यमित्र जैसे प्रसिद्ध प्रकाशित हुए। आर्यसमाज का यह प्रारम्भिक युग आर्य पुरुषों के धर्म प्रेम, उत्साह, साहस तथा कर्मण्यता का आख्यान उपस्थित करता है। इन्हीं भावनाओं की अभिव्यक्ति उस युग के पत्रों में भी दृष्टिगोचर होती है।

□□

द्वितीय युग–१९००-१९४७

इस अवधि में निम्न पत्र प्रकाशित हुए—

आर्य वनिता

पजरांव (जिला जबलपुर) से आर्य वनिता मासिक पत्रिका १९०२ में प्रकाशित हुई। वाजपेयीजी ने इसे साप्ताहिक बताया है।

आर्य जीवन—लाहौर

आर्यभ्रातृ सभा लाहौर का यह मासिक मुख पत्र था। इसका प्रकाशन १९५८ वि. (नवम्बर १९०२ ई.) में प्रारम्भ हुआ। आर्यसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक पं. पूर्णानन्द इसके सम्पादक थे। पत्र लाहौर के पंजाब एकोनोमिकल प्रेस से दो कालम में मुद्रित होता था। आर्य भ्रातृसभा के मंत्री प्रो. रामदेव थे जो उन दिनों विक्टर हाई स्कूल जालंधर के मुख्याध्यापक थे। आर्य जीवन के पञ्चम अंक में ईश्वर प्रार्थना के पश्चात् आर्य भ्रातृसभा की आवश्यकता, शंकर स्वामी (जीवनी), स्त्रियों के कर्त्तव्य, विवाह, वर्ण-व्यवस्था आदि लेख छपे हैं। आर्य जीवन के प्रारम्भिक अंकों में मनुस्मृति का धारावाही भाष्य भी छपता रहा। सम्पादकीय, समालोचना, प्रेरित पत्र (पाठकों के पत्र) आदि स्थायी स्तम्भ भी रहते थे। पं. गुरुदेव उप सम्पादक थे।

आर्य सिद्धान्त—बदायूं

स्वामी दर्शनानन्द ने गुरुकुल बदायूं की स्थापना की थी। इसी गुरुकुल से आर्य सिद्धान्त मासिक पत्र १९०३ में संस्था के मुख पत्र के रूप में निकलना आरम्भ हुआ। इस पत्र के अगस्त १९०३ के अंक में देवरिया (उत्तर प्रदेश) में स्वमी दर्शनानन्द तथा ५० मौलवियों के बीच हुए उस प्रसिद्ध शास्त्रार्थ का विवरण प्रकाशित हुआ, जो 'ईश्वरीय ज्ञान वेद है या कुरान' विषय पर हुआ था। पत्र का मुद्रण वैदिक यंत्रालय अजमेर में होता था।

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश तथा विदर्भ का मासिक मुख पत्र।

आर्यमित्र के पश्चात् आर्य सेवक ही ऐसा पत्र है जो अपने प्रकाशन काल से अब तक नाना कठिनाइयों और बाधाओं को सहन करता हुआ निकल रहा है। मध्य प्रदेश तथा विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के इस मुख पत्र का प्रकाशन १५ जून १९०३ को हुआ।[1] इस प्रकार आर्य सेवक ने अपने जीवन के ७७

---

१. प्रारम्भ में यह नरसिंहपुर से निकला था। वाजपेयी जी ने जो इसका प्रकाशन काल १९०० बताया है, त्रुटिपूर्ण है।

वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। प्रारम्भ में आर्यसेवक मासिक था। जून १९०६ तक यह पत्र प्रति मास की १५ तारीख को निकलता रहा। बाद में प्रकाशन में अनियमितता आई और कई महीनों के अंक संयुक्त रूप से भी निकलते रहे। जनवरी १९१५ में इसे पाक्षिक का रूप दे दिया गया और प्रकाशन की तिथि प्रति मास की १५ तथा ३० निश्चित की गई। अब तक इसका मुद्रण एवं प्रकाशन सरस्वती विलास प्रेस नरसिंहपुर से होता था। जून १९२९ में आर्य सेवक साप्ताहिक हो गया और कर्मवीर प्रेस जबलपुर से छपने लगा। १९३५ में इसे पुनः मासिक रूप प्रदान किया गया और दाउदी प्रेस बुरहानरपुर में उसका मुद्रण होता था। कुछ काल पश्चात् यह फिर पाक्षिक हो गया। सितम्बर १९३७ में आर्य सेवक का कार्यालय नागपुर आ गया तथा १९४० तक यहाँ के विभिन्न प्रेसों से मुद्रित होकर प्रकाशित होता रहा। १९४१ में पत्र का कार्यालय गुरुकुल होशंगाबाद में लाया गया जहाँ से १९४७ तक निकलता रहा। १९४८ से आर्य सेवक नागपुर से मासिक रूप में निकल रहा है।

आर्य सेवक के सम्पादक :

डा. धर्मेन्द्र प्रसाद के अनुसार आर्य सेवक के पौन शताब्दी के इस जीवन-काल में १३ महानुभावों ने इसका सम्पादन किया, जिनका विवरण इस प्रकार है—

मुन्शी चरणदास खत्री

आर्य सेवक के प्रथम सम्पादक थे। जून १९०३ से मई १९०६ तक इस पद पर रहे। इस अवधि में आर्यसेवक में सामान्य शिक्षाप्रद लेखों के अतिरिक्त उपदेशकों की प्रचार यात्रायें, आर्यसमाजों के उत्सवों के विवरण आदि छपते रहे। जून-जुलाई १९०६ में सम्पादक का पद रिक्त रहा है। पत्र का कार्य संचालन श्री नन्हेलाल मुरलीधर करते रहे। पं. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा की सम्पादक पद पर नियुक्ति अगस्त १९०६ में हुई। वे इस पद पर कब तक रहे, यह ज्ञात नहीं है। तत्पश्चात् पं. गणेश प्रसाद शर्मा ने १९१४ से १९१९ तक सम्पादन कार्य किया। इससे पूर्व शर्मा जी आर्यसमाज के प्रसिद्ध पत्र भारत सुदशा प्रवर्त्तक का सम्पादन कर चुके थे। उनके कार्य काल में आर्य-सेवक ने अपूर्व उन्नति की। पत्र में वेद मन्त्रों की व्याख्या, विविध विषयों से सम्बन्धित लेख, विरोधियों के आक्षेपों के उत्तर आदि छपते थे।

१९२१ में सम्पादन कार्य पं. महेन्द्रदत्त मुरलीधर शर्मा ने अपने हाथों में लिया। महात्मा गांधी इस समय देश के सार्वजनिक जीवन पर छाये हुए थे। परिणामस्वरूप आर्य सेवक में भी राष्ट्रभावापन्न लेखों को स्थान मिलने लगा। इसी परम्परा को अगले सम्पादक ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान ने भी निभाया जो जनवरी १९२९ में सम्पादक के पद पर आये। ठाकुर लक्ष्मणसिंह

स्वयं भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अनुशासित सिपाही तथा हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान के पति थे। उनके कार्यकाल में राजनीति के साथ साथ स्वदेशी वस्तुओं के महत्त्व, क्रान्तिकारियों के बलिदान आदि विषयों पर भी लेख छपे। श्री चौहान के बाद श्री रामदत्त ज्ञानी १९३५ से १९३७ तक सम्पादक रहे। तदन्तर श्रीमती शकुन्तला गुप्त ने सितम्बर १९३७ से फरवरी १९४० तक सम्पादन किया। उसी अवधि में हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह आर्यसमाज द्वारा संचालित किया गया और आर्य सेवक में सत्याग्रह विषयक समाचार प्रधान रूप से छपे।

श्रीमती गुप्त के पश्चात् ठाकुर शेरसिंह साहित्यरत्न ने जून १९४१ से मार्च १९४३ तक सम्पादन किया। पुनः प्रो. इन्द्रदेव सिंह सम्पादक बने जो १९४३ से १९५६ के १३ वर्षों में तीन विभिन्न अवधियों में सम्पादक रहे। इसी बीच प्रो. शंकरलाल पाली (जनवरी १९५२ से मई १९५२) तथा पं. नरेन्द्र विद्यावाचस्पति (जून १९५३ से मई १९५४) भी सम्पादक रहे। स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने सितम्बर १९५६ से नवम्बर १९६८ तक सम्पादन कार्य किया। दिसम्बर १९६८ से 'वर्तमान' सम्पादक पं. विश्वम्भर प्रसाद शर्मा कार्य कर रहे हैं। शर्माजी पुराने एवं अनुभवी पत्रकार हैं। वे पत्रकारिता के क्षेत्र में विकास (सहारनपुर), आर्यकुमार (कलकत्ता), तथा माहेश्वरी आदि पत्रों का सफलतापूर्वक सम्पादन कर सुप्रतिष्ठित हो चुके हैं।

आर्यसेवक ने समय समय पर उत्कृष्ट विशेषांकों का प्रकाशन किया है। १९७१ की दीपावली के अवसर पर इस पत्र का आर्यसमाज परिचय विशेषांक निकला जिसमें मध्यप्रदेश की आर्यसमाजों तथा उनकी विभिन्न गतिविधियों का विस्तृत परिचय दिया गया था। आर्यमहासम्मेलन मारिशस के अवसर पर आर्यसेवक ने सितम्बर-अक्टूबर १९७३ में मारिशस आर्यसम्मेलांक प्रकाशित किया। आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के अवसर पर अप्रैल १९७५ में स्थापना शताब्दी अंक तथा जनवरी-फरवरी १९७६ का संयुक्तांक आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोहांक के रूप में प्रकाशित हुआ। सम्प्रति पं. काशीनाथ शास्त्री पत्र के प्रबंध सम्पादक हैं।

अनाथ रक्षक—अजमेर

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय, अजमेर की स्थापना आर्यसमाज अजमेर के द्वारा १८९५ ई. में हुई। इस संस्था के मासिक मुख पत्र के रूप में अनाथ-रक्षक का प्रकाशन नवम्बर १९०३ से प्रारम्भ हुआ।[1] पत्र का आदर्श वाक्य निम्न था—

लाखों तुम्हारे लाल जाती के लुटे अब जा रहे।
पर तुम नहीं कुछ सोचते हो गाढ़ निद्रा ले रहे॥

---

१. वाजपेयी जी के अनुसार, नवम्बर १९०२

द्रव्यवानो द्रव्य का अपयोग करना छोड़ दो ।
दीन, अबला और अनाथों का हृदय से साथ दो ।।

लगभग चौथाई शताब्दी तक प्रकाशित होने वाले अनाथ रक्षक का सम्पादन कार्य समय समय पर भिन्न भिन्न व्यक्तियों ने किया। उपलब्ध विवरण इस प्रकार है—प्राप्त सूचनाओं के अनुसार इसके प्रथम सम्पादक नीमच निवासी सेठ मांगीलाल गुप्त कवि किंकर थे। मई १९०८ में उनके त्यागपत्र देने पर प्रसिद्ध समालोचक पं. पद्मसिंह शर्मा को ४० रु. मासिक वेतन तथा ८ रुपये मासिक भत्ते पर सम्पादक नियुक्त किया गया। सन् १९०९ में शर्मा जी के चले जाने पर पं. जयदेव शर्मा सम्पादक बने। इनके १९११ तक सम्पादक पद पर रहने का प्रमाण मिलता है। शर्मा जी अनाथालय के अधिष्ठाता भी थे। पत्र का मुद्रण वैदिक यन्त्रालय में पं. हरिश्चन्द्र त्रिवेदी के प्रबन्ध में होता था। इन वर्षों में पत्र के मुख पृष्ठ पर पं. गिरिधर शर्मा झालरापाटन निवासी रचित निम्न संस्कृत पद्य आदर्श वाक्य के रूप में प्रकाशित होता था—

तातः को जननी च का हितरताः के बाऽधवा बांधवः ।
किं वासो भुवनञ्च किं किमशनं किं वारि वातश्चकः ।।
जानीमो न दयानिधे ! सुरपते त्वन्नाथ जानीमहे ।
हा हा नाथ अनाथ रक्षक, सदा नः पाहिपाहि प्रभो ।।

नवम्बर १९१२ के अंक पर सम्पादक का नाम अंकित नहीं है, परन्तु महाशय रामभरोसे को पत्र का प्रकाशक अंकित किया गया है। मई १९२१ में राधेलाल जायसवाल सम्पादक बने। एक वर्ष से कुछ कम समय तक कार्य करने का इन्हें अवसर मिला। पन्नालाल शर्मा मार्च १९२२ के अंक के सम्पादक थे। परन्तु इससे पूर्व पं. रामसहाय शर्मा ने जनवरी १९२२ में ही सम्पादक पद ग्रहण कर लिया था। शर्मा जी ने १९२३ तक इस पद पर काम किया। १९२४ में नाथूलाल शर्मा सम्पादक बने और उसी वर्ष अक्टूबर में ठाकुर सरदारसिंह के जिम्मे यह काम आया। ठाकुर साहब १९२६ तक सम्पादक रहे। मार्च १९२७ से पं. ताराचन्द सम्पादक बने। बहुत थोड़ी अवधि के बाद सम्पादकों के परिवर्तन का कारण यह प्रतीत होता है कि अनाथालय के अधिष्ठाता को ही सम्पादक बनाया जाता था, और अधिष्ठाता प्रायः बदलते रहते थे।

अनाथ रक्षक में निबन्ध, कहानी, कविता, समालोचना आदि विविध साहित्यिक विधाओं का समावेश रहता था। द्विवेदी युग के विख्यात कवियों की रचनायें अनाथ रक्षक में छपती थीं, जिसमें पं. नाथूराम शंकर शर्मा, पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय, पं. रामनरेश त्रिपाठी, मैथिलीशरण गुप्त आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। आलोच्य पत्र में प्रकाशित निबन्ध गांधी युग की

राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना से स्फूर्त थे। अधिकांश लेख देशदशा, समाज सुधार, धार्मिक रूढ़ियों की आलोचना से सम्बन्धित हैं। यदा कदा कहानियाँ तथा गद्य काव्य भी प्रकाशित होते थे। साहित्य परिचय स्तम्भ के अन्तर्गत नव प्रकाशित पुस्तकों तथा पत्रों की समीक्षा छपती थी। अनाथालय का पत्र होने के कारण पत्र के अन्त में संस्था समाचार तथा दानदाताओं की लम्बी सूचियों का छपना तो स्वाभाविक ही था।

सत्यवादी—हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक महात्मा मुन्शीराम जी ने १९०४ में 'सत्यवादी' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। इसके प्रथम सम्पादक पं. पद्मसिंह शर्मा थे। पं. रुद्रदत्त शर्मा ने १९०८-०९ में इसका सम्पादन किया।

भारत हितैषी—इटावा

श्री सत्यव्रत शर्मा द्विवेदी ने इस पत्र का प्रकाशन व सम्पादन १९०४ में इटावा से किया। यह वेद प्रकाश यन्त्रालय इटावा से छपता था।

परोपकारी का द्वितीय बार प्रकाशन—

यह हम देख चुके हैं कि परोपकारिणी सभा के मुखपत्र परोपकारी का प्रथम बार प्रकाशन १९४६ वि. (१८८९ ई.) में षट् मासिक पुस्तक के रूप में हुआ था। मात्र दो अंक निकलने के बाद यह प्रकाशन स्थगित हो गया। दिसम्बर १९०६ में जब परोपकारिणी सभा का वार्षिक अधिवेशन हुआ तो परोपकारी को मासिक रूप में निकालने का पुनः निश्चय किया गया। लाला मुन्शीराम ने इस सम्बन्ध में अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा कि 'सरस्वती के आकार का टाइटल पेज सहित ३६ पृष्ठों का एक मासिक पत्र निकाला जावे'।[1] पत्र का वार्षिक बजट १७०० रुपयों का स्वीकार हुआ। इसका वार्षिक मूल्य दो रुपये रक्खा गया।

उपर्युक्त प्रस्ताव के अनुसार मासिक परोपकारी का प्रथम अंक मार्च १९०७ में प्रकाशित हुआ। प्रकाशन के प्रथम वर्ष में पत्र का सम्पादन कार्य सभा के उपमन्त्री (वैतनिक) के जिम्मे रहा। पत्र का सिद्धान्त सूत्र निम्न दो संस्कृत पद्यों के रूप में पांचवें अंक से टाइटिल के दूसरे पृष्ठ पर छपने लगा—

दुःखातुराणां सततं नराणां स्त्रीणां शिशुनाञ्च हितं वितन्वन्।
निबोधयन् वैदिक धर्म तत्त्वं परोपकारी जयतात्सदायम्॥
सांसारिकं वै वृजिनं समस्तं परोपकारी पर चिन्तकोऽयम्।
कुर्याद्विनष्टं लघुनित्यसार्याः भवत्सहायत्वमपेक्षमाणः॥

१. परोपकारिणी सभा का इतिहास, डा. भवानीलाल भारतीय, पृ. ३५

परोपकारी का उद्देश्य वही था जो स्वामी दयानन्द ने अपने स्वीकार पत्र में परोपकारिणी सभा में तीन उद्देश्यों के रूप में वर्णित किया था। पत्र में नियमित रूप से वेदमंत्र तथा उसकी व्याख्या, विभिन्न लेख, कवितायें, आर्यजगत् के समाचार, पुस्तक समालोचना आदि छपते थे।

शीघ्र ही यह अनुभव किया गया कि परोपकारी के सम्पादक पद पर किसी योग्य व्यक्ति को प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए। तदनुसार हिन्दी के प्रखर विद्वान् और समालोचक पं. पद्मसिंह शर्मा सम्पादक नियुक्त किये गये। शर्मा जी ने वैशाख १९६५ वि. में सम्पादन कार्य आरम्भ किया। अब पत्र के मुख पृष्ठ पर निम्न दो श्लोक नियमित रूप से छपने लगे—

दयामयाऽऽनन्दरस प्रसारी सरस्वती स्वान्त विकासकारी।
भवेदवन्या कलुषापहारी परोपकारी जगतो हिताय॥
निगमः समुदेतु मुक्ति सेतुर्जगति क्लेशादवानलः शमेतु।
व्यथितेषु तथा परोपकारी निरवद्यां समवेदनां दधातु॥

पं पद्मसिंह शर्मा ने आर्यसमाज और हिन्दी जगत् के उच्चकोटि के लेखकों और कवियों का सहयोग प्राप्त कर परोपकारी को एक आदर्श पठनीय मासिक के रूप में विकसित किया। परिणाम स्वरूप इस पत्र में अच्छे अच्छे लेख एवं कविताएं प्रकाशित होने लगीं। इस अवधि में जिन लेखकों की रचनायें प्रकाशित हुई उनमें पं. भीमसेन शर्मा (आगरा वाले) सेठ मांगीलाल गुप्त कवि किंकर नीमच, पं. नरदेव शास्त्री, पं. शालिग्राम शास्त्री (गुरुकुल कांगड़ी), पं. गंगाप्रसाद एम. ए., लाला भवानीप्रसाद गुप्त, वैद्य कल्याणसिंह, पं. घनश्याम गोस्वामी मुलतान निवासी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। द्विवेदी युग के खड़ी बोली हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि पं. नाथूराम शंकर शर्मा की कवितायें परोपकारी में नियमित रूप से प्रकाशित होती थीं। शर्माजी के सम्पादन काल में मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली पानीपती की 'मुनाजाते बेवा' शीर्षक लम्बी कविता पं. भीमसेन शर्मा (आगरा) कृत संस्कृत काव्यानुवाद के साथ परोपकारी में प्रकाशित हुई। यह खेद की बात है कि शर्मा जी का सम्पादन काल बहुत लम्बा नहीं रहा। द्वितीय वर्ष के आठ अंकों (इनमें अंक संख्या ६, ७, व ८ तो सम्मिलित रूप से ही प्रकाशित हुए थे) का सम्पादन करके उन्होंने परोपकारी से विदा ले ली। इस प्रकार पं. पद्मसिंह शर्मा सम्पादक पद पर वैशाख १९६५ वि से मार्गशीर्ष १९६५ वि. तक रहे।

द्वितीय वर्ष का नवाँ अंक वैदिक यंत्रालय के प्रबंधकर्ता श्री भक्तराम के सम्पादन में निकला। श्री भक्तरास ने पौष १९६५ वि. से भाद्रपद १९६६ वि. तक सम्पादन कार्य किया। तत्पश्चात् वैदिक यंत्रालय के प्रबंधकतर्का श्री हरिश्चन्द्र त्रिवेदी सम्पादक बने। इसी वर्ष अजमेर में प्लेग की महामारी का

प्रकोप हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि परोपकारी का प्रकाशन भी १९६६ वि. में बंद हो गया।

सद्धर्म प्रचारक (हिन्दी)—गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

लाला मुन्शीराम ने सद्धर्म प्रचारक को पहले उर्दू में निकाला था। प्रचारक की उर्दू भी हिन्दी-संस्कृत प्रधान होती थी, परन्तु एक दिन एक सज्जन ने लाला मुन्शीराम को उर्दू में पत्र निकालने के लिये ताना मारते हुए कह दिया—दयानन्द के इतने कट्टर शिष्य बनते हो, पर महर्षि ने तो अपना सारा साहित्य ही हिन्दी में लिखा है, आप सद्धर्म प्रचारक उर्दू में क्यों निकालते हैं? बात लालाजी को लग गई। उन्होंने प्रचारक को हिन्दी में निकालने का निश्चय कर लिया और १ मार्च १९०७ से सद्धर्म प्रचारक गुरुकुल कांगड़ी से सद्धर्म प्रचारक प्रेस में मुद्रित होकर प्रकाशित होने लगा। प्रेस के व्यवस्थापक पं. अनन्तराम शर्मा थे। पत्र का सम्पादन बाबू ब्रह्मानन्द (डुमरांव निवासी) ने लगभग ५ वर्ष तक किया।

जब १९११ में भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली लाई गई और उस अवसर पर सम्राट् जार्ज पच्चम का राज्याभिषेक हुआ तो प्रचारक को दैनिक कर दिया गया। पत्र का मुद्रण तो हरिद्वार से ही होता था परन्तु वह दिल्ली से प्रकाशित होकर राजधानी की राजनीतिक गतिविधियों को प्रधानता देता रहा। इस समय मुन्शीराम जी के बड़े पुत्र पं. हरिश्चन्द्र विद्यालंकार प्रचारक के सम्पादक थे। १९१२ में हरिद्वारस्थ प्रचारक प्रेस में आग लग गई। फलतः मुद्रण कार्य दिल्ली में होने लगा और पत्र भी यहीं से निकलता रहा। ३० जनवरी १९०५ को प्रेस और पत्र पुनःगुरुकुल में चले गये। पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति भी प्रचारक के सम्पादक रहे थे। सद्धर्म प्रचारक आर्यसमाज की सार्वभौम नीतियों का नियामक था। महात्मा मुन्शीराम के भावों और विचारों का सम्पूर्ण प्रतिफलन उसमें होता था। उन दिनों आर्यसमाज के समक्ष उपस्थित कठिन प्रश्नों और समस्याओं, नाना भीतरी और बाहरी विवादों पर आर्यों को महात्माजी का मार्गदर्शन प्रचार से ही मिलता था। यह पत्र १९२१-२२ तक निकला, पुनः बंद हो गया।

ब्राह्मण समाचार—मेरठ

अप्रैल १९०७ में मेरठ से पं. छुट्टनलाल स्वामी के सम्पादन में यह पत्र निकला।

दयानन्द पत्रिका—मेरठ

स्वामी प्रेस मेरठ के स्वामी पं तुलसीराम स्वामी ने १९०७ में मासिक दयानन्द पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। पं. मुसद्दीराम शर्मा इसके सम्पादक थे। ३ वर्ष तक इसके निकलते रहने का उल्लेख मिलता है। जुलाई १९१० में बंद हो गई।

उपदेशक—सिकन्दराबाद

पं. श्यामलाल शर्मा के सम्पादन में यह मासिक पत्र जुलाई १९०७ में निकलना आरम्भ हुआ।

गुरुकुल समाचार—सिकन्दराबाद (उत्तर प्रदेश)

पं. श्यामलाल शर्मा के सम्पादकत्व में १ जून १९०८ से मासिक गुरुकुल समाचार निकलना आरम्भ हुआ।

गुरुकुल—नरसिंहपुर

गुरुकुल कमेटी नरसिंहपुर (मध्य प्रदेश) ने यह पत्र १९०८ में निकाला।

ऋषि दयानन्द—लाहौर

स्वामी दर्शनानन्द ने इस पत्र को १९०८ में उस समय निकाला जब वे लाहौर के हरिज्ञान मंदिर में निवास करते थे। यह प्रथम साप्ताहिक तथा बाद में मासिक रूप में निकला।

ऊषा—लाहौर

म.धर्मपाल बी. ए. (मुन्शी अब्दुल गफूर) ने स्व सम्पादन में ऊषा मासिक पत्रिका का प्रकाशन १९०९ में लाहौर से किया। पत्रिका स्वल्पकाल तक ही जीवित रही।

भारतोदय—ज्वालापुर

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के मासिक मुख पत्र भारतोदय का प्रकाशन ज्येष्ठ पूर्णिमा १९६६ वि. (जून १९०९ ई.) को हुआ। इसका प्रथमांक शंकरदत्त शर्मा के धर्मदिवाकर प्रेस मुरादाबाद में मुद्रित हुआ था। हिन्दी के प्रसिद्ध समालोचक तथा लेखक पं. पद्मसिंह शर्मा सम्पादक तथा पं. नरदेव शास्त्री सहायक सम्पादक थे। पं. भीमसेन शर्मा (आगरा वाले) प्रकाशक थे। पत्र का सिद्धान्त वाक्य पं. भीमसेन शर्मा रचित संस्कृत पद्य था जो इसके मुख पत्र पर छपता था—

निशम्यतां लेख ललाम सञ्चय-प्रकाशने येन कृतोऽतिनिश्चयः।
गृहीत सद्धर्म विशेष संश्रयश्चकास्ति सोऽयं भुवि भारतोदयः॥

भीतरी पृष्ठ पर निम्न दो पद भी छपते थे—

सकल सुजनहृद्विलास हेतु र्नव नव वृत्त विशेष शोभिताङ्गः।
निगम विहित वर्त्मजागरूकश्चिरमिह राजतु 'भारतोदय्यम्' ॥१॥
आर्य भारत ! भारतोदयोऽयम् भव विभवोद्भव भावनाभिलाषी।
भगवति भुवि भक्ति भाव भाजां तितनिषति प्रमदं प्रकामरम्यः॥

प्रारम्भ में वेदमंत्रार्थप्रकाशः शीर्षक से वेद मंत्रों की व्याख्या छपती थी, जिसे पं. नरदेव शास्त्री लिखते थे। पं. पद्मसिंह शर्मा हिन्दी के जाने माने लेखक थे अतः हिन्दी के तत्कालीन लेखकमण्डल से उनका घनिष्ट परिचय और सम्बन्ध था। शर्माजी के आग्रहवश अनेक प्रसिद्ध लेखकगण

यदा कदा अपनी रचनायें भारतोदय में प्रकाशनार्थ भेजा करते थे। सुप्रसिद्ध कवि पं. नाथूराम शंकर शर्मा की कवितायें भी पत्र में स्थान प्राप्त करती थीं। भारतोदय के प्रवेशांक में शंकरजी की 'भारतोदय' शीर्षक कविता प्रकाशित हुई जिसका प्रथम पद्य निम्न था—

ज्ञान जिसका ब्रह्म विद्या का महा विश्राम था।
ध्यान जिसका लोक लीला के लिये निष्काम था।
शुद्ध जीवनकाल जिसका सर्व सद्‌गुण धाम था।
श्री दयानन्दर्षि मंगल मूल जिसका नाम था।
बीज वैदिक धर्म का वह ब्रह्मचारी बो गया।
देखलो लोगों दुबारा 'भारतोदय' हो गया॥

अगहन-पौष १९६६ वि. के संयुक्तांक में शंकर जी की एडवर्ड स्तुति शीर्षक कविता राजभक्ति भाव प्रधान थी। द्विवेदी काल की ज़ड़ इतिवृत्तात्मकता इस कविता में पदे पदे दीख पड़ती है—

सप्तम एडवर्ड महाराज, रक्षा हम सबकी करते हैं।
श्री, बल, बोध, अखण्ड प्रताप, साहस, धर्म सुकर्म कलाप
ऐसे सद्‌गुण धारी आप मन में भूल नहीं भरते हैं॥

भारतोदय में विचार प्रधान निबंधों को भी प्रकाशित किया जाता था। मास्टर गंगाप्रसाद एम. ए. लिखित 'सुखवाद', पं. शिवशंकर काव्यतीर्थ लिखित 'शास्त्रीय वार्तालाप', वैद्यराज कल्याण सिंह रचित 'समाज', महात्मा पूरण (सरदार पूर्णसिंह) लिखित 'पवित्रता' आदि निबंध इसी कोटि के हैं। पं. भीमसेन शर्मा की संस्कृत कवितायें भी प्रायः छपती थीं। पत्र के प्रथम अंक में शर्माजी की 'प्रकृतिस्तवः' शीर्षक कविता तथा द्वितीय अंक में 'कृषक स्तुति' इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। कृषक स्तुति को पढ़ने से यह सहज ही ज्ञात होता है कि किसान वर्ग के प्रति सहानुभूति व्यक्त करने वाली प्रगतिशील कविताओं का संस्कृत भाषा में भी नितान्त अभाव नहीं है। कृषक प्रशंसा में लिखी गई कविता की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

केचिद्वदन्ति धनहीन-जनो जघन्यः।
केचिद्वदन्ति गुणहीनजनो जघन्यः॥
त्वद्रीतिनीतिकुशलो न हि यो मनुष्यः।
सैवास्ति मे मतिपथे नितरां जघन्यः॥
तथा—सेवा श्ववृत्तिरतिगर्ह्यतमा जनानां।
वाणिज्यकृत्यमपि मध्यममामनन्ति॥
सर्वोत्तमा कृषिरिति प्रथितः प्रवादो।
लोकेषु मूलरहितश्चलितो न चापि॥

महाविद्यालय ज्वालापुर का मुख पत्र होने के कारण भारतोदय में

महाविद्यालय की गतिविधियों, समारोहों तथा उत्सवों के समाचारों को स्थान मिलना तो स्वाभाविक ही था। प्रथमांक में महाविद्यालय समाचार के अन्तर्गत पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी (सम्पादक-सरस्वती तथा हिन्दी के ख्यातनामा आचार्य) के सपत्नीक महाविद्यालय में आने तथा लगभग एक मास तक ठहरने का वृत्त अंकित है। अपनी बिदाई के समय आचार्य द्विवेदी ने महाविद्यालय की प्रशंसा में निम्न संस्कृत पद्य सम्मति पुस्तक में अंकित किए—

विलोक्य विद्यालयमेतमद्य प्रसन्नता चाधिगता मया या।
तद्वर्णनार्थं विधिवद् यथार्थं जिह्वासहस्रं मम नेति कष्टम् ॥
आसन् गुरूणाञ्च पुरा कुलानि ग्रामेऽपि पुर्यामपि पत्तनेऽपि ॥
भातीव तेषामयमेक एव नवावतारस्तु गुणैर्गरीयान् ॥
छात्रालयो वा पठनालयो वा शिक्षाप्रकारा ऽऽर्यमतप्रचारः।
अदृष्टपूर्वञ्च विलक्षणञ्च विद्यालये ऽस्मिन् खलु सर्वमेव ॥
श्री माधवो वा गिरिजाधवो वा देवोऽथवा कोऽपि विभुर्वरिष्ठः ;
समुन्नतिं सर्वविधानपूर्णां विद्यालयस्यास्य करोतु कामम् ॥
महावीरप्रसादेन द्विवेदि-कुल-जन्मना।
इत्येवं प्रार्थ्यते नूनं हर्षोत्फुल्लान्तरात्मना ॥

पत्र में साहित्य समालोचना का स्तम्भ भी रहता था जिसमें नव प्रकाशित ग्रन्थों का परिचय दिया जाता था।

कालान्तर में यह पत्र पाक्षिक तथा साप्ताहिक रूप में (चैत्र शु. १५ सं. १९७१ वि.) भी निकला। डा. हरिदत्त शर्मा के अनुसार भारतोदय के आगामी वर्षों का विवरण इस प्रकार है—१९१२ से १९२० तक भारतोदय का प्रकाशन दुगड्डा (गढ़वाल) से हुआ। इस अवधि में पत्र के सम्पादक पं. भीमसेन शर्मा, पं. नरदेव शास्त्री तथा पं. रामस्वरूप काव्यतीर्थ (१९७६ वि.) रहे। १९२० से १९३२ तक यह मुरादाबाद से निकला।[1] पुनः १९३२ से १९४१ तक सहारनपुर से प्रकाशित हुआ। १९३२ से १९४१ तक सहारनपुर से निकला। १५ जुलाई १९३९ को पत्र ने अपना हैदराबाद सत्याग्रह विशेषांक विशेष सजधज से निकाला। १९४१ से पुनः ८ वर्षों तक मुरादाबाद से निकला। १९५३ से १९६० तक परिस्थितिवश भारतोदय का प्रकाशन बंद रहा। पश्चात् १९६१ से इसे संस्कृत-हिन्दी के द्विभाषी मासिक पत्र के रूप में डा. हरिशंकर शर्मा के सम्पादन में पुनः प्रकाशित किया गया। इस प्रकार १९०९ में प्रथम बार प्रकाशित होने वाले भारतोदय ने, बीच के ७ वर्षों की अवधि को छोड़कर यदि देखें, तो अपने जीवन के ६४ वर्ष पूरे किये हैं।

---

१. भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद का प्रथम हिन्दी लेख 'समाज संशोधन' शार्षक भारतोदय के सितम्बर १९२० के अंक में छपा था।

नव जीवन—काशी

आर्यसमाज के तेजस्वी नेता, विद्वान् और लेखक डा. केशवदेव शास्त्री ने चैत्र सं. १९६६ (१५ जून १९०९ ई.) से नवजीवन मासिक का सम्पादन और प्रकाशन काशी से प्रारम्भ किया। नवजीवन में उच्च कोटि के लेख, कवितायें तथा अन्य साहित्यिक रचनायें प्रकाशित होती थीं। आर्य समाजेतर लेखकों की कृतियों को भी सादर छापा जाता था। नवजीवन का निम्न सिद्धान्तसूचक पद्य प्रत्येक अंक के मुख पृष्ठ पर छपता था—

> उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे
> प्रचलति यदि मेरुः शीततां याति वह्निः।
> विकसति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायां
> न भवति पुनरुक्तं भाषिते सज्जनानाम्॥

नवजीवन की तृतीय वर्ष की फाइल हमारे संग्रह में विद्यमान है। इसके प्रथम अंक (चैत्र १९६८) में पं. रामनारायण मिश्र लिखित ऋषि टाल्सटाय (जीवन चरित), 'ब्यूटिफुल स्नो' शीर्षक एक अंग्रेजी कविता का मास्टर जगन्नाथदास बी. ए. कृत हिन्दी काव्यानुवाद 'सुन्दर हिम', सिद्धेश्वर बी. ए. लिखित ईश्वर भक्ति (निबंध) आदि रचनायें प्रकाशित हुईं। इसी वर्ष के द्वितीय अंक में काशी के अग्रवाल युवकों की विदेश यात्रा से उत्पन्न हुई हलचल का विवरण दिया गया है। समुद्र यात्रा का समर्थन आर्यसमाज ने सदा ही किया है, अतः नवजीवन सम्पादक ने काशी के उन युवकों को बधाई दी जो सामाजिक बाधाओं और विरोध की परवाह न कर विदेश यात्रा से लौटे थे। काशी के प्रगतिशील अग्रवाल बंधुओं ने इन विदेश से लौटे युवकों के साथ बैठ कर भोजन किया, जिससे रूढ़िवादी लोग बहुत चिढ़े। समुद्र यात्रा के समर्थकों में बाबू शिवप्रसाद गुप्त, डा. भगवानदास तथा उनके सुपुत्र श्री प्रकाश आदि प्रमुख थे। नवजीवन सामाजिक प्रगतिशील नीतियों का समर्थक था।

इसी अंक में पं रामनारायण मिश्र लिखित 'देवी फ्लोरेंस नाइटिंगेल' (जीवनी) प्रकाशित हुई जो धारावाही छापती रही। स्वामी विवेकानन्द के गुरु भाई स्वामी अभेदानन्द के अमेरिका में दिये गये एक व्याख्यान का हिन्दी अनुवाद 'हिन्दू धर्म में स्त्रियों का स्थान' शीर्षक प्रकाशित हुआ। इस अंक के अन्य उल्लेखनीय लेख हैं—भारतवर्ष में दान प्रणाली (चन्द्रशेखर), समय (निष्कामेश्वर मिश्र), विद्योपार्जन (सूर्यनारायण त्रिपाठी एम. ए.), स्त्री शिक्षा [राजकुमारी दासी एम. ए. के मूल बंगला लेख (सुलभ समाचार में प्रकाशित) का अनुवाद]। तृतीय वर्ष के प्रथम अंक में डा. केशवदेव शास्त्री का एक संस्कृत शोधपरक निबंध 'ब्राह्मणालोचनम्' शीर्षक से छापा था, जो गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर आयोजित सरस्वती सम्मेलन में पढ़ा गया था।

इसी लेख का हिन्दी अनुवाद द्वितीय अंक में प्रकाशित हुआ। ब्राह्मण ग्रन्थों पर लिखे गये इस आलोचनात्मक निबंध ने सम्भवतः उस समय आर्यसमाजी क्षेत्रों में नाना भ्रान्तियों और शंकाओं का जन्म दिया था, अतः लेख का भाषानुवाद सम्पादक के स्पष्टीकरण के साथ छापा गया।

नवजीवन का प्रत्येक अंक वेद मंत्र तथा उनकी हिन्दी व्याख्या से प्रारम्भ होता था। तृतीय वर्ष के तृतीय अंक के आरम्भ में 'समानीव आकूतिः', इस ऋग्वेदीय मंत्र की व्याख्या दी गई है। इस अंक में अन्यत्र 'कवि शिरोमणि कविराजकुल भूषण महामहोपाध्याय श्री द्वारकानाथ सेन 'कवि रत्न' का संक्षिप्त जीवन चरित्र' उनके विनीत शिष्य भिषगाचार्य कविराज केशवदेव शास्त्री लिखित' प्रकाशित हुआ है। आर्यकुमार सभा काशी के दो अधिवेशनों में पठित 'आर्यसमाज का भविष्यत्' शीर्षक पं. रामनारायण मिश्र लिखित निबंध भी इस अंक में प्रकाशित हुआ है। नवजीवन सम्पादक आर्यकुमार आन्दोलन के जन्मदाता थे, अतः आर्यकुमार सभा तथा उसकी प्रवृत्तियों में उनकी स्वाभाविक रुचि थी। इस अंक के अन्य उल्लेखनीय लेख हैं— मातृभाषा के प्रचार से लाभ (निष्कामेश्वर मिश्र), प्रार्थना क्यों करें? (सुधाकर बी. ए.), नौजवानों का महाशत्रु (महाशय सिद्धेश्वर एम. ए.)। नवजीवन में स्थानीय तथा राष्ट्रीय समाचार भी छपते थे।

इसी वर्ष के चतुर्थ अंक में सम्पादकीय टिप्पणियों के अतिरिक्त अग्रवाल युवकों की विलायत यात्रा को लेकर फैले सामाजिक असन्तोष पर श्री लक्ष्मीचंद एम. एस. सी. (कैंट), एफ. सी. एस. ए. एम. एस. टी. का लेख 'विलायत यात्रा' शीर्षक से छपा है। इस लेख का लेखक ही विदेश जाकर स्वजाति बंधुओं के कोप का पात्र बना था। इसी अंक में मास्टर आत्माराम अमृतसरी लिखित 'लोकमान्य पं. गुरुदत्त जी के जीवन पर एक दृष्टि' शीर्षक लेख उल्लेखनीय है। मास्टर जी पं. गुरुदत्त के समकालीन, भक्त एवं प्रशंसक थे अतः उनकी लेखनी से लिखा गया यह संस्मरणात्मक लेख अपना पृथक् महत्व रखता है। इस अंक में प्रकाशित अन्य लेखों में विवाहकाल निर्णय (डी. ए. लक्ष्मीपति के लेख का पं. ओंकारनाथ वाजपेयी कृत अनुवाद) विचार शक्ति (पं. ओंकारनाथ वाजपेयी) चूल्हे में धर्म (श्री नन्दकुमार देव शर्मा) परोपकार की आवश्यकता (चन्द्रशेखर विद्यार्थी) आदि उल्लेखनीय हैं।

पञ्चम अंक में हरिदास माणिक लिखित 'हल्दीघाटी' शीर्षक एक लम्बी कविता रोला एवं दोहा छंद में प्रकाशित हुई। नवजीवन के सम्पादक डा. केशवदेव शास्त्री का कलकत्ते के यूनीवर्सिटी इन्स्टीट्यूट भवन में दिये गये एक भाषण का आलेख भी इस अंक में प्रकाशित हुआ जिसका विषय था—'विवाह संस्कार की अधोगति कैसे हुई?' नवजीवन में समोलोचना का स्तम्भ भी रहता था। इसी अंक में मारवाड़ी (नागपुर), चित्रमय जगत् (पूना) भास्कर

(मेरठ) जैसे पत्रों की परिचयात्मक समीक्षा छपी। छठे अंक के प्रमुख लेखों में कलकत्ता यात्रा (माणिक्यचन्द्र), सृष्टि उत्पत्ति का काल (स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती), क्या विज्ञान और धर्म में विरोध है ? (चन्द्रशेखर विद्यार्थी), नौजवानों का मित्र (सिद्धेश्वर एम. ए.) अबलाओं पर अत्याचार (पं. रामगोपाल मिश्र) आदि गणनीय हैं।

सप्तम अंक में कुछ भिन्न प्रकार की रोचक सामग्री प्रस्तुत की गई है। सम्पादक ने अपने वक्तव्य में द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का विवरण प्रस्तुत किया है। हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पं. मन्नन द्विवेदी कृत कहानी 'केतकी', 'तपस्वी का लेख 'आर्यसमाज के हितैषियों से प्रार्थना', 'एक नवजीवन प्रिय' लिखित यूनानी दार्शनिक सुकरात की जीवनी, नवजीवन कार्यालय के सत्यदेव की लेखनी से लिखित 'लंदन हाइडपार्क में सायंकालिक दृश्य' तथा श्रीमती कुन्तीदेवी लिखित 'जाति सुधार का मुख्य उपाय' निबंध प्रकाशित सामग्री के वैविध्य का सूचक है। सर्वेंट्स ऑफ इण्डिया सोसाइटी पूना का प्रकाशित विवरण (सचित्र) इस बात का द्योतक है कि नवजीवन देश की राजनीतिक संस्थाओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण रखता था।

नवम्बर १९११ (तृतीय वर्ष का आठवाँ अंक) के अंक में 'देहली में राज्याभिषेक' शीर्षक सम्पादक द्वारा लिखा गया। १२ दिसम्बर १९११ को ब्रिटिश सम्राट् जार्ज पंचम के राज्याभिषेक का दिल्ली में आयोजन किया गया था। इस महत्वपूर्ण घटना के संदर्भ में सम्पादक ने इसी इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) नगर में लगभग पांच सहस्र वर्ष पूर्ण हुए महाराज युधिष्ठिर के राज्याभिषेक का स्मरण किया है तथा महाभारत वर्णित युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ का प्रसंग उपस्थित किया है। सामग्री की विविधता तथा रोचकता की दृष्टि से नवां अंक भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। इस अंक में पं. मन्नन द्विवेदी गजपुरी का लेख 'भारतवर्ष में सुधार', पं. रामनारायण मिश्र की रचना 'इंग्लैण्ड का एक धर्मवीर', जगन्नाथ बी. ए. द्वारा अंग्रेजी की एक कविता worth while का काव्यानुवाद तथा नारायण लिखित वैज्ञानिक निबंध 'परमाणुवाद' के अतिरिक्त आर्यमित्र सभा आगरा के २२वें वार्षिकोत्सव तथा द्वितीय आर्यकुमार सम्मेलन का विवरण भी छपा है। इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री अलखमुरारी वकील सहारनपुर ने की थी जिनके अध्यक्षीय भाषण को २२ पृष्ठों में छापा गया है। भाषण अंग्रेजी में दिया गया था और इसका अनुवाद पं. ओंकारनाथ वाजपेयी ने किया था।

१० वें अंक में पं. ओंकारनाथ वाजपेयी लिखित निबंध 'धैर्य' और 'नवजीवन वनाइये' सामान्य पाठकों की अभिरुचि के हैं, तो सुखदयालु लिखित 'आर्यसमाज के उद्देश्य' तथा सम्पादक की लेखनी से प्रसूत 'आर्यसमाज और वर्ण व्यवस्था' जैसे लेख आर्यसमाज की समस्याओं का विवेचन प्रस्तुत

करते हैं। ११ वें अंक में सम्पादकीय लेखनी से लिखी गई रचनाओं का बाहुल्य है। पं. रामनारायण मिश्र की जगन्नाथ यात्रा, तथा श्रीमती शिवदेवी लिखित 'हमारी कलकत्ता और पुरी यात्रा' यात्रा वृत्तान्त हैं। आर्यसमाज काशी के वार्षिकोत्सव तथा आर्यकुमार सभा काशी का विवरण भी इसी अंक में प्रकाशित हुआ है। मार्च १९१२ का अंक नवजीवन के तृतीय वर्ष का अन्तिम अंक था। इसमें पं. केशवदेव शास्त्री लिखित धर्म शिक्षा (मनु प्रोक्त धर्म के लक्षणों की व्याख्या), रामगोपाल मिश्र लिखित ताराबाई एवं श्रीमती शिवदेवी (पुत्री पं. रामनारायण मिश्र) लिखित सहनशीलता आदि पठनीय लेख हैं।

एक वर्ष की अवधि में प्रकाशित नवजीवन की सामग्री पर समग्रतः दृष्टिपात करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इस पत्र में जहाँ आर्यसमाज आन्दोलन से सम्बन्धित लेखों, समाचारों तथा टिप्पणियों को प्रमुख स्थान दिया जाता था वहां नैतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीति से सम्बन्धित विषयों पर भी भरपूर पठनीय सामग्री रहती थी। नवजीवन की गणना उस युग के सर्वोच्च हिन्दी पत्रों में होती थी। पत्र की नीति को स्पष्ट करते हुए उसके जन्माङ्क (प्रथम अंक) में डा. केशव देव शास्त्री ने लिखा था "वैदिक धर्म के आधार पर जिस सोसाइटी के आदर्श को आर्यसमाज पेश करता है उस आदर्श की ओर जाना नवजीवन का लक्ष्य होगा।" इसी उद्देश्य की पूर्ति करते हुए नवजीवन ने अपने जीवन के ६ वर्ष व्यतीत किये। इस बीच पत्र की आर्थिक कठिनाइयाँ बढ़ीं। प्रतिवर्ष का घाटा लगभग ६०० रु. होता था। पत्र कभी मासिक तो कभी साप्ताहिक रूप में भी निकलता रहा। इसी बीच पत्र के संचालक डा. केशवदेव शास्त्री एम. डी. की उपाधि प्राप्त करने हेतु अमेरिका चले गये। इस समय नवजीवन का सम्पादन कुछ काल तक पं. चन्द्रशेखर वाजपयी ने किया।

प्रायः यह निश्चित ही था कि शास्त्रीजी की अनुपस्थिति में पत्र का प्रकाशन बंद हो जायगा, इस बीच श्री द्वारका प्रसाद 'सेवक' ने सरस्वती सदन, इंदौर से नवजीवन को प्रकाशित कर वस्तुतः इसे नव जीवन प्रदान किया। सातवें वर्ष का प्रथम अंक चैत्र १९७२ वि. (मार्च १९१५) में प्रकाशित हुआ। इस अंक में पत्र के प्रवर्त्तक के रूप में भिषगाचार्य कविराज पं. केशवदेव जी शास्त्री अमेरिका का नाम मुख पृष्ठ पर अंकित था। सिद्धान्त वाक्य के रूप में महाकवि श्रीहर्ष की उक्ति 'उदयति यदि भानुः' पूर्ववत दी गई थी। 'नवजीवन का पुनरुज्जीवन' शीर्षक सम्पादकीय में सेवक जी ने पत्र के मार्ग में आई बाधाओं तथा भविष्य की कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए पाठकों से सहयोग और सहायता की कामना की है।

सेवक जी के सम्पादन में नवजीवन निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

होता रहा। सातवें वर्ष के प्रवेशांक में पं. मन्नन दिवेदी की कविता 'नवजीवन' राज्य रत्न मास्टर आत्माराम अमृतसरी का 'श्रीमन्त महाराजा साहेब श्री सयाजीराव गायकवाड़, बड़ौदा नरेश' शीर्षक जीवनीपरक लेख, पं. केशव देव शास्त्री के अमेरिका में दिये गये व्याख्यान "वैदिक धर्म और आधुनिक संसार पर उसके क्या क्या अधिकार हैं?" का पं. बनारसीदास चतुर्वेदी कृत अनुवाद, पं सत्यनारायण कविरत्न की विजय वंदना शीर्षक व्रजभाषा कविता, दहेज की वेदी पर स्नेहलता की बलि (पं. राम गोपाल मिश्र) श्री ब्रह्मी भूत स्वामी रामतीर्थ जी के उद्‌गार (अनुवादक-भास्कर शर्मा 'कविदास') गिरिधर शर्मा नवरत्न की कविता मंगल कामना, सुरेन्द्रनारायण के यात्रा विवरण-'संसार यात्रा' जैसी पठनीय सामग्री के अतिरिक्त सम्पादक द्वारा लिखित आर्यसमाज की वर्तमान गति तथा 'विविध प्रसंग' स्तम्भ के अन्तर्गत विभिन्न १५ विषयों की चर्चा, इस तथ्य की द्योतक है कि नवजीवन के प्रत्येक अंक में प्रचुर मात्रा में पाठ्य सामग्री रहती थी।

नवजीवन का प्रकाशन १९१९ तक होता रहा आर्यसमाज के पत्रों में शास्त्री जी के नवजीवन का गौरवपूर्ण स्थान है। इन्दौर से प्रकाशित नव जीवन मध्यभारत का प्रथम हिन्दी मासिक था। इसी नवजीवन के अनुकरण पर महात्मा गांधी ने अपने पत्र का भी नाम नवजीवन ही रखा। इस सम्बन्ध में महात्मा जी ने सेवक जी को पत्र भी लिखा था।[1]

सत्यसनातन धर्म—कलकत्ता

१९०९ में कलकत्ता से 'सनातन धर्म' नामक एक पत्र निकला। प्रारम्भ में इसके सम्पादक पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी तथा बाद में बाबू बालमुकुन्द गुप्त रहे। पत्र सनातनी विचारधारा का प्रवक्ता था, परन्तु पत्र के सम्पादक सनातनधर्मी होते हुए भी उदार विचारधारा के मानने वाले प्रबुद्ध व्यक्ति थे। शायद पत्र के संचालक गण सम्पादकों की सौम्य और उदार नीति को कम पसन्द करते थे तथा उनकी इच्छा रहती थी कि पत्र के माध्यम से आर्य समाज की कठोर आलोचना की जाये। जब इस पत्र की नीति आर्यसमाज के प्रति अधिक उग्र और आक्रामक हो गई तो इसका उत्तर देने के लिये आर्यसमाज की ओर से १९१० में सत्य सनातन धर्म साप्ताहिक का प्रकाशन किया गया। पत्र के सम्पादक प्रसिद्ध पत्रकार श्री राधामोहन गोकुल जी थे और यह १७ पगैया पट्टी, बड़ा बाजार कलकत्ता से निकलता था। इस पत्र ने 'शठे शाठ्यं समाचरेत' की नीति अपनाई और पौराणिक मत की कटु आलोचना की। १९१३ में यह बंद हो गया।

धर्म वृत्तान्त—अजमेर

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा की गतिविधियों को सूचित

---

१. हिन्दी पत्रकारिता: विविध आयाम

करने वाला यह मासिक पत्र जनवरी १९१० से निकलना आरम्भ हुआ। डा. जावलिया के अनुसार इसके सम्पादक गणेश स्वरूप वर्मा (सभा के तत्कालीन मंत्री) तथा मुद्रक अनन्तराम शर्मा प्रबंधक, सद्धर्म प्रचारक यंत्रालय, गुरुकुल कांगड़ी थे।

देशोपकारक—लाहौर

अमृतधारा के अविष्कारक पं. ठाकुरदत्त शर्मा ने १९१० ई. में लाहौर से देशोपकारक नामक पाक्षिक पत्र प्रकाशित किया। इसमें मुख्यत: आयुर्वेद विषयक लेख रहते थे।

महिला संसार—नौगवां (फर्रुखाबाद)

नौगवां के आर्य पुरुष श्री बनवारीलाल की धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती देवी के सम्पादन में यह स्त्रियोपयोगी साप्ताहिक पत्र १९११ ई. में निकलना आरम्भ हुआ, परन्तु सम्पादिका के प्राय: रुग्ण रहने के कारण शीघ्र ही बंद हो गया।

भास्कर—मेरठ

'आर्यसमाज के पत्रों में सबसे सस्ता पत्र' मासिक भास्कर मेरठ से प्रकाशित होता था। इसके सम्पादक थे रघुवीर शरण दुबलिस जो स्वयं पत्र के मुद्रक भी थे। भास्कर का प्रकाशन ज्येष्ठ १९६८ वि. जून १९११ से प्रारम्भ हुआ। इस समय सम्पादक श्री दुबलिस २४ वर्ष की आयु के नवयुवक ही थे। पत्र का प्रत्येक अंक विभिन्न प्रकार की पठनीय सामग्री से परिपूर्ण रहता था। वेदोपदेश (वेद मंत्र की व्याख्या) के अतिरिक्त आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर विवेचनात्मक लेख, मत मतान्तरों के खण्डनात्मक लेख, आर्यजगत् की प्रवृत्तियों के समाचार, विविध विषय तथा साहित्य समालोचना के स्थायी स्तम्भ रहते थे। पं. भूमित्र शर्मा, रघुनन्दनशरण दुबलिस, महाशय लालचंद लाहौर, ब्रह्मचारी देवराज सिद्धान्तालंकार, स्वामी वेदानन्द, पं. घासीराम, महाशय भवानीदयालु (स्वामी भवानीदयाल संन्यासी) आदि लेखक इस पत्र में नियमित रूप से लिखते थे। यदा कदा हास्यरस पूरित रचनायें भी नारद मुनि के नाम से प्रकाशित होती थीं। दीपावली पर पत्र का ऋष्यंक निकलता था जिसमें महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व पर अनुशीलनात्मक लेखों की प्रधानता रहती थी। भास्कर का वार्षिक मूल्य १ रुपया मात्र था, किन्तु विदेशों के ग्राहकों से डेढ़ रुपया लिया जाता था। पं. क्षेमचन्द्र सुमन के अनुसार भास्कर को हिन्दी के प्रख्यात लेखक महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का सबसे प्रथम लेख छापने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यह बात उन दिनों की है जब कि वे १९१५ में आगरा के मुसाफिर विद्यालय में पढ़ते थे और केदारनाथ विद्यार्थी के नाम से जाने जाते थे। १८ अक्टूबर १९१८ को पत्र के सम्पादक श्री रघुवीर शरण दुबलिस का ३१ वर्ष की अल्पायु में ही निधन हो गया। दुबलिसजी के निधन पर १९१९ के अंक में पं. सूर्यदेव शर्मा विद्यार्थी हाई

स्कूल एटा का एक लेख 'हा भास्कर सम्पादक' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात् दुबलिस जी के अनुज रघुनन्दनशरण सम्पादक बने।

भारत महिला—मेरठ

भास्कर सम्पादक रघुवीरशरण दुबलिश ने १९१३ में स्त्रियोपयोगी पत्रिका भारत महिला मासिक का प्रकाशन किया। डा. जावलिया के अनुसार श्री दुबलिस ने १९१३ में जालंधर से भारत महिला मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया तथा सुनीतिदेवी ब्रह्मचारिणी (लाहौर निवासिनी) को उसका सम्पादक बनाया।

सुधारक—कलकत्ता

श्री राधामोहन गोकुलजी ने कलकत्ता से मारवाड़ियों में आर्यसमाज के प्रचारार्थ १९१३ में सुधारक नामक पत्र प्रकाशित किया।

आर्यप्रभा—लाहौर

वाजपेयीजी के अनुसार १९१४ ई. में लाहौर से पं. सन्तराम बी. ए. के सम्पादकत्व में आर्यप्रभा मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। डा. जावलिया के अनुसार इसका प्रथम प्रकाशन १९०९ में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधिसभा की मासिक पत्रिका के रूप में हुआ था। पत्रिका के सहायक सम्पादक पं. महानन्द थे। १९१८ में यह साप्ताहिक रूप में निकलने लगी।

ऊषा-लाहौर

पं. सन्तराम बी. ए. ने १९१४ में ऊषा मासिक पत्रिका निकाली। २ वर्ष पश्चात् जमानत न दे सकने के कारण पत्रिका बंद हो गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रमुख पत्र—आर्य-आर्योदय-आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुखपत्र आर्य मासिक रूप में १९१४ में लाहौर से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। इसके आदि सम्पादक पं. चमूपति थे, जिन्होंने १९१५ के नवम्बर तक सम्पादन किया। डा. लक्ष्मीनारायण गुप्त के अनुसार पत्र का आकार १०″ × ६″ तथा वार्षिक मूल्य दो रुपये था। प्रारम्भ में यह हिन्दी उर्दू दोनों भाषाओं में छपता था।[१] पं. अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार ने छः वर्षों तक सम्पादन किया। पत्र का कार्यालय गुरुदत्त भवन (जो सभा का प्रधान कार्यालय था) लाहौर में था। प्रकाशन के १४वें वर्ष में (१९३२-१९३८) पं. प्रियव्रत वेदवाचस्पति आर्य के सम्पादक थे। आर्य जगत् के अनेक उच्चकोटि के विद्वान् आर्य में अपने लेख प्रकाशनार्थ भेजते थे। गुरुकुल कांगड़ी के विद्वान् स्नातकों का भी पत्र को सहयोग प्राप्त था। ऐसे लेखकों में यशःपाल सिद्धान्तालकार, बुद्धदेव विद्यालंकार, देव शर्मा 'अभय' विद्यालंकार, देवराज विद्यावाचस्पति, विश्वनाथ विद्यालंकार, धर्मदेव विद्यावाचस्पति, ईश्वरदत्त मेधार्थी विद्यालंकार, धर्मेन्द्र वेदालंकार, हरिशरण विद्यालंकार, शंकरदेव विद्यालंकार, आत्मानन्द विद्यालंकार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

१. १९२५-२६ में पं. भीमसेन विद्यालंकार सम्पादक रहे।

स्नातकों से भिन्न स्वामी स्वतंत्रानन्द, पं. चमूपति, पं. मनसाराम, पं. ठाकुरदत्त शर्मा, महात्मा नारायाण स्वामी आदि आर्य विद्वान् भी नियमित रूप से आर्य के लेखक थे। पं. बुद्धदेव विद्यालंकार की शास्त्रीय संगीत की राग रागिनियों पर आधारित कवितायें तथा स्वर्ग, शतपथ ब्राह्मण भाष्य आदि ग्रन्थ भी धारावाही रूप से आर्य में छपे।

देश विभाजन के पश्चात् आर्य का प्रकाशन कुछ काल तक अम्बाला छावनी से हुआ। इस समय इसके सम्पादक पं. भीमसेन विद्यालंकार थे। जब जालंधर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्यालय स्थापित हुआ तो गुरुदत्त भवन जालंधर से यशःपाल सिद्धान्तालंकार के सम्पादन में आर्य प्रकाशित होने लगा। अब यह साप्ताहिक बन गया था। सभा के महामंत्री जगदेव सिंह शास्त्री, सिद्धान्ती १९५८ में पत्र के सम्पादक थे। उन्हीं दिनों में पंजाब सभा घोर अन्तर्कलह की शिकार हुई। फलस्वरूप पत्र का सम्पादन एवं प्रकाशनाधिकार वैद्य सत्यव्रत के पास रह गया और सभा को १९५९ में 'आर्योदय' नाम से अपना पत्र नये रूप में प्रकाशित करना पड़ा।

आर्योदय-

आर्योदय नाम से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक के सम्पादक सिद्धान्तीजी तथा सहसम्पादक पं. शान्तिप्रकाश थे। १९६३ में सभा मंत्री डा. हरिप्रकाश आयुर्वेदालंकार सम्पादक थे तथा पत्र का प्रकाशन पूर्ववत् जालंधर से ही होता था, किन्तु अप्रैल १९६३ में सभा का कार्यालय १५, हनुमान रोड़ नई दिल्ली में आ गया, फलतः पत्र का प्रकाशन भी दिल्ली से ही होने लगा। उस समय पत्र को सहसम्पादक के रूप में पं. भारतेन्द्रनाथ जैसे व्यक्ति का योगदान मिला जो आर्य पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान बना चुके थे। पं. भारतेन्द्रनाथ के सम्पादन में (वस्तुतः वे ही सम्पादक थे, सभा मंत्री का नाम तो सम्पादक के स्थान पर औपचारिकता वश ही छपता था) आर्योदय की बाह्य साजसज्जा तथा प्रकाशित होने वाली सामग्री दोनों में परिवर्तन आया। अनेक विशेषांक भी छपे, जिनमें महाशय कृष्ण स्मृति अंक (अप्रैल १९६३) तथा स्वाध्याय अंक (अगस्त १९६३) उल्लेखनीय हैं।

१९६४ ई. में पत्र के सम्पादक पद पर सभा मन्त्री पं. रघुवीरसिंह शास्त्री प्रतिष्ठित हुए, सह सम्पादक पं. भारतेन्द्रनाथ ही थे। इस अवधि में आर्योदय ने उच्च कोटि के विशेषांक प्रकाशित किये। १९६४ के वर्ष में आर्यसमाज अंक (अप्रैल १९६४) तथा स्वाध्याय अंक (श्रावणी १९६४) छपे। १९६५ में ईश्वर प्रत्यक्ष अंक (लेखक—मदनमोहन विद्यासागर, अगस्त १९६५) राष्ट्र रक्षा अंक (नवम्बर १९६५) प्रकाशित हुए। श्रावणी के अवसर पर वेदांक प्रकाशित करने की परिपाटी भी डाली गई। १९६८ तक आर्योदय नियमित रूप से छपता रहा।

१९६८ के अन्त में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उभरे आन्तरिक विवादों के कारण सभा के मुख पत्र को एक बार और अपना नाम परिवर्तित करना पड़ा। इस झगड़े के परिणाम स्वरूप पं. भारतेन्द्रनाथ को सह सम्पादक पद से मुक्त कर दिया गया और सभा का पत्र 'आर्य मर्यादा' के नवीन नाम से नवम्बर १९६८ में आरम्भ हुआ। सभा मन्त्री रघुवीरसिंह शास्त्री सम्पादक तथा पं. जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती सह सम्पादक नियुक्त हुए। वस्तुतः सम्पादन कार्य सिद्धान्ती जी द्वारा ही पूर्ण दायित्व एवं निष्ठा के साथ किया जा रहा था। शीघ्र ही सिद्धान्ती जी का ही नाम सम्पादक स्थान पर छपने लगा। इनके कार्य काल में आर्य मर्यादा ने आर्यसमाज की पत्रकारिता के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। अनेक विशेषांक भी समय समय पर निकले जिनमें स्वामी दयानन्द रचित स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश एवं आर्योद्देश्य रत्नमाला विशेषांक (फरवरी १९६९) वेदाविर्भाव विशेषांक (अगस्त १९६९) वेद में पुनरुक्ति दोष नहीं है—विशेषांक (श्रावणी २०२७ वि.) मूर्तिपूजा निषेधांक (१३ फरवरी १९७१) व्यवहारभानु विशेषांक (अगस्त १९७१) स्वामी स्वतन्त्रानन्द संस्मरणांक (मार्च १९७३) आदि प्रमुख हैं।

सिद्धान्ती जी का सम्पादन काल आर्य मर्यादा का स्वर्णिम युग था। सम्पादक को विभिन्न लेखकों का सहयोग मिला। अनेक धारावाही लेखमालायें छपीं। स्वयं सिद्धान्ती जी ने ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य पर आधारित उनके राजनीति एवं प्रशासन सम्बन्धी विचारों को लेख बद्ध किया। श्री सुरेन्द्रसिंह कादियाण ने जमीयत इस्लामी की विचारधारा का विश्लेषण एक लेखमाला के रूप मे किया। पं. दीनबन्धु वेदशास्त्री द्वारा प्रस्तुत तथा स्वामी सच्चिदानन्द योगी द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द की तथाकथित अज्ञात जीवनी की अप्रमाणिकता सिद्ध करते हुए एक विस्तृत लेखमाला में इन पंक्तियों के लेखक ने इस सामग्री की अविश्वसनीयता सिद्ध की।

कालान्तर में जब पंजाब सभा का कार्यालय पुनः पंजाब चला गया और हरयाणा की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा पृथकशः गठित हो गई तो आर्यमर्यादा के सम्पादक पद से सिद्धान्ती जी ने त्यागपत्र दे दिया। अब आर्यमर्यादा जालंधर से पुनः प्रकाशित होने लगी और श्री वीरेन्द्र उसके सम्पादक बने। मर्यादा के सहकारी सम्पादक के रूप में पं. ओमप्रकाश आर्य ने प्रशंसनीय कार्य किया तथा आर्यसमाज के इतिहास से सम्बन्धित अनेक खोज पूर्ण लेख लिखे। वर्तमान में डा. यज्ञमित्र आर्य मर्यादा के सह सम्पादक हैं।

प्रह्लाद—दिल्ली

गुरुकुल कांगड़ी के एक समय के अध्यापक पं. गोवर्धन बी. ए. ने मई १९१५ में दिल्ली से प्रह्लाद नामक मासिक[1] पत्र निकाला। एक वर्ष तक

---

१. डा. जावलिया के अनुसार साप्ताहिक

चल कर १९१६ में यह बन्द हो गया।

आर्य समाचार—मेरठ

१८७८ में मेरठ से आर्य समाचार साप्ताहिक उर्दू में निकलने लगा था। कालान्तर में इसका प्रकाशन कानपुर से होने लगा। १९१७ में आर्यसमाज मेरठ द्वारा यह हिन्दी मासिक के रूप में पं. घासीराम के सम्पादन में निकला। हिन्दी के साथ उर्दू के लेख भी रहते थे।

ब्रह्मर्षि—मेरठ

पं. छुट्टनलाल स्वामी ने स्वामी प्रेस, मेरठ से साप्ताहिक ब्रह्मर्षि का प्रकाशन जून १९१८ में किया। इसका वार्षिक मूल्य डेढ़ रुपया था।

आर्य महिला—काशी

आर्य महिला हितकारिणी महापरिषद् (कार्यालय) जगत् गंज वाराणसी छावनी की मुखपत्रिका आर्य महिला मासिक १९१८ में प्रकाशित हुई।

आर्यकुमार—लखनऊ, फतहपुर, दिल्ली, कलकत्ता, कानपुर

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की प्रवृत्तियों को लोकप्रिय बनाने तथा कुमारों में वैदिक सिद्धान्तों के प्रति प्रेम उत्पन्न करने की दृष्टि से आर्य कुमार पत्र का जन्म १९१९ में लखनऊ से द्वि मासिक के रूप में हुआ। दो तीन ही अंक निकले होंगे कि परिस्थितिवश पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया। इसके पश्चात् श्री मथुरा प्रसाद शिवहरे ने १९१९ में ही इसे फतहपुर (उत्तर प्रदेश) से साप्ताहिक रूप में निकाला। कई मास तक सफतापूर्वक निकलने के पश्चात् आर्थिक कठिनाइयों के कारण पत्र का प्रकाशन पुनः बन्द हो गया।

१९८० वि. (१९२३ ई.) में भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् के मासिक मुख पत्र के रूप में दिल्ली से इसे पुनरुज्जीवित किया गया। परिषद् के संस्थापक और प्रमुख कार्यकर्ता डा. केशवदेव शास्त्री इसके सम्पादक थे। माघ १९८० (फरवरी १९१४) में आर्य कुमार का ऋषि बोध विशेषांक प्रकाशित हुआ जिसमें उच्चकोटि की कविताओं तथा लेखों का संग्रह किया गया। पं. नारायण प्रसाद बेताब, पं. सूर्यदेव शर्मा, डा. युद्धवीरसिंह, पं. मुन्शीराम शर्मा आदि इसमें नियमित रूप से लिखते थे। पत्र का कार्यालय चाँदनी चौक में था। दिल्ली से यह पत्र कलकत्ता चला गया। यहाँ से पं. विश्वम्भर प्रसाद शर्मा ने लगभग डेढ़ वर्ष तक इसे प्रकाशित किया। पुनः बन्द हो गया। स्वल्प काल के पश्चात् इसे पुनः दिल्ली से ही प्रकाशित किया गया। इस समय इसके सम्पादक परिषद् के कार्यकर्ता डा. युद्धवीरसिंह थे। कुछ काल बाद आर्य कुमार कानपुर से निकलने लगा। अन्ततः बन्द हो गया।[१]

---

१. डा. युद्धवीरसिंह लिखित उन्नति की ओर, पृ. १३८ (भारतवर्षीय आर्य-परिषद् की रजत जयन्ती स्मारक पुस्तिका)

वैदिक मार्तण्ड—कोल्हापुर

मास्टर आत्माराम अमृतसरी द्वारा सम्पादित वैदिकमार्तण्ड द्वि मासिक पत्र कोल्हापुर से २४ अक्टूबर १९१९ को प्रकाशित हुआ। पत्र का वार्षिक मूल्य सवा दो रुपये था। इसमें मराठी तथा हिन्दी के लेख रहते थे।

वैदिक धर्म—औंध (जिला सतारा)

वेदों के उत्कृष्ट विद्वान् पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने वैदिक धर्म मासिक का सम्पादन तथा प्रकाशन औंध से १९१९ में किया। इसमें वेद विषयक उच्च कोटि के लेख रहते थे। यद्यपि सातवलेकर जी की वेद विषयक मान्यतायें आर्यसमाज से अनेक अंशों में भिन्न थीं, तथापि वैदिक वाङ्मय के अगाध अध्ययन तथ ऋषि दयानन्द के प्रति अनन्य श्रद्धा के कारण वे आजीवन आर्यसमाजी क्षेत्रों में आदर के पात्र रहे। देश विभाजन के पश्चात् सातवलेकर जी ने अपना कार्य क्षेत्र बलसाढ़ (गुजरात) के अन्तर्गत पारड़ी ग्राम को बनाया जहाँ वे स्वाध्याय मण्डल के माध्यम से वैदिक साहित्य विषयक लेखन कार्य करते रहे। सातवलेकर जी के वेद भाष्य वैदिक धर्म में धारावाही छपे। सातवलेकर जी के निधन के पश्चात् उनके पुत्र श्री वसन्त श्रीपाद सातवलेकर कुछ काल तक पत्र का सम्पादन करते रहे, किन्तु दिसम्बर १९७५ में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी विशेषांक प्रकाशित करने के पश्चात् पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया। प्रकाशन के अन्तिम वर्ष में श्री नवीनचन्द्र ज. पाल इसके सम्पादक रहे।

ज्योति—लाहौर

यह मासिक पत्रिका विद्यावती सेठ के सम्पादन में मई १९२० से निकलनी प्रारम्भ हुई। कन्या गुरुकुल देहरादून की यह मुख पत्रिका थी।

भारती—जालंधर

कन्या महाविद्यालय जालंधर से पं. सन्तराम बी. ए. के सम्पादकत्व में भारती पत्रिका १९२० में प्रकाशित हुई। पत्रिका के संचालक लाला देवराज थे। पत्रिका दो वर्ष चली और फिर बंद हो गई।

आर्यादर्श—हरिपुर (जिला बस्ती)

आर्यादर्श मासिक का प्रकाशन श्री शिवकुमार शास्त्री ने १९२० में हरिपुर (जिला बस्ती) से किया।

श्रद्धा—गुरुकुल कांगड़ी

स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पादन में श्रद्धा नाम्नी साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन १९२० में गुरुकुल कांगड़ी से हुआ। हिन्दी विषयक अनेक महत्वपूर्ण लेख इसमें प्रकाशित हुए। सहायक सम्पादक पं. दीनानाथ सिद्धांन्तालंकार थे। दो वर्ष चलकर यह पत्र बंद हो गया।

वैदिक सन्देश—गुरुकुल कांगड़ी

पं. विश्वनाथ विद्यालंकार, तथा पं. देवराज सिद्धान्तालंकार के संयुक्त सम्पादन में वैदिक संदेश मासिक १९२१ में गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित हुआ।

संन्यासी—हरदुआगंज

श्री वीरेन्द्र के सम्पादन में विरजानन्द साधु आश्रम हरदुआगंज से यह पत्र १९२२ में निकला।

बलिदान—लाहौर

यह मासिक पत्र १९२२ में लाहौर से निकला। अधिक विवरण उपलब्ध नहीं है।

ऋषि दयानन्द—आगरा

इस नाम का एक मासिक पत्र श्री ज्वालाप्रसाद वर्मा ने आगरा से १९२२ में निकाला।

जलविद सखा—(जालंधर विद्यालय सखा) जालंधर

कन्या महाविद्यालय जालंधर की यह मासिक मुखपत्रिका १९२२ में प्रकाशित हुई। पत्रिका में स्त्रियोपयोगी लेख तथा कवितायें प्रकाशित होती थीं। कुछ पृष्ठ अंग्रेजी के भी रहते थे। १९३२ में कु. सत्यवती स्नातिका सम्पादिका थीं। पत्रिका के अन्य सम्पादकों में पं. चेतराम शर्मा तथा कु. शकुन्तला देवी स्नातिका के नाम भी उल्लिखित हुए हैं।

मातृभूमि—मेरठ

प्रसिद्ध पत्रकार और कार्यकर्ता श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी ने मातृभूमि साप्ताहिक का प्रकाशन मेरठ से १९२३ में किया।

सत्यवादी—दिल्ली

जनवरी १९२३ में पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति ने दिल्ली से सत्यवादी साप्ताहिक का सम्पादन व प्रकाशन प्रारम्भ किया। पत्र का वार्षिक मूल्य साढ़े तीन रुपये थे। १९२५ में इसका सम्पादन पं. भीमसेन विद्यालंकार कर रहे थे।

आर्य मार्तण्ड—अजमेर

यद्यपि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की स्थापना १८८८ में हो चुकी थी, किन्तु उसके मुखपत्र आर्यमार्तण्ड का प्रकाशन लगभग ३५ वर्ष पश्चात् आरम्भ हुआ। साप्ताहिक आर्यमार्तण्ड का प्रथम अंक १३ फरवरी, १९२३ को अजमेर से निकला। उस समय आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का कार्य-क्षेत्र भूतपूर्व राजपूताना प्रदेश के अतिरिक्त मालवा (मध्यप्रदेश की देशी रियासतें) तक विस्तृत था। अतः आर्यमार्तण्ड इस विशाल भू भाग में फैली आर्यसमाज की धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक गतिविधियों का ध्वजवाहक बना।

मार्तण्ड के प्रथम सम्पादक तथा प्रकाशक सभा के महोपदेशक पं. रामसहाय शर्मा थे। पत्र के प्रथम अधिष्ठाता मिट्ठनलाल भार्गव नियुक्त हुए। ५७ वर्ष की दीर्घकालीन अवधि में आर्यमार्तण्ड ने अनेक उतार चढ़ाव देखे हैं। प्राय: चौथाई शताब्दी तक मार्तण्ड का प्रकाशन निर्विघ्न रूप में होता रहा। इस अवधि में सम्पादक का कार्य पं रामसहाय शर्मा ही संभालते रहे। पं. रामदयालु वाजपेयी भी कुछ काल तक सम्पादक रहे थे। १९८६ वि. की दीपावली पर मार्तण्ड का जो भव्य और आकर्षक ऋष्यंक निकला था, उसका सम्पादन प्रो. सुधाकर एम. ए. ने किया था।

मई १९५० में आर्य प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन अजमेर में सम्पन्न हुआ। इसके निश्चयानुसार मार्तण्ड के सम्पादक सभा के तत्कालीन प्रधान कुं. चांदकरण शारदा तथा मंत्री पं. भगवानस्वरूप न्यायभूषण को बनाया गया। शारदा जी और न्यायभूषण जी के संयुक्त सम्पादकत्व में मार्तण्ड नूतन सज धज के साथ प्रकाशित होने लगा। उसकी वाह्य सज्जा तथा भीतरी कलेवर में महत्वपूर्ण परिवर्तन दीख पड़ा। ६ मार्च १९५१ को मार्तण्ड ने शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि बोधांक प्रकाशित कर विशेषांकों की परम्परा में एक नवीन अध्याय जोड़ा। इसी वर्ष सभा के वार्षिक निर्वाचन में पं. जियालाल जी प्रधान पद पर निर्वाचित हुए। फलत: मार्तण्ड की प्रकाशन व्यवस्था में भी परिवर्तन आया। किसी कारण से मार्तण्ड का प्रकाशन आर्य साहित्य मण्डल अजमेर को सौंप दिया गया तब मण्डल ने पत्र का सम्पादन भार पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार तथा डा. सूर्यदेव शर्मा के सुपुर्द किया गया।

आर्यमार्तण्ड-जयपुर से

१९५३ के वार्षिक निर्वाचन में सभा के अधिकारी बदल गये। परिणाम-स्वरूप मार्तण्ड की व्यवस्था में पुन: फेर बदल हुआ। सभा का कार्यालय अजमेर से जयपुर चला गया था, अत: मार्तण्ड भी राजस्थान की राजधानी जयपुर से प्रकाशित होने लगा। पत्र के सम्पादन का कार्य सभा के तत्कालीन मंत्री श्री भगवतीप्रसाद सिद्धान्तभास्कर करने लगे। आर्थिक कठिनाइयों के कारण जब पत्र को साप्ताहिक रूप में चलाना सम्भव प्रतीत नहीं हुआ तो उसे मासिक का रूप दे दिया गया। १९५७ में आर्यसमाज के तत्वावधान में पंजाब में हिन्दी रक्षा आन्दोलन चलाया गया। हिन्दी सत्याग्रह में राजस्थान के आर्यसमाजों के योगदान को उजागर करते हुए मार्तण्ड ने अप्रैल १९५८ में सत्याग्रह विशेषांक निकला। श्री रणजीतसिंह इस अवधि में पत्र के सह सम्पादक थे। सम्पादन का कार्य पूर्ववत् श्री भगवतीप्रसाद ही कर रहे थे।

आर्यमार्तण्ड पुनः अजमेर से

कुछ वर्षों तक जयपुर से निकलने के अनन्तर आर्यमार्तण्ड के प्रकाशन में पुनः व्यवधान उत्पन्न हो गया। स्वल्प काल तक पत्र का प्रकाशन स्थगित भी रहा। जब सभा का कार्यालय पुनः अजमेर आ गया तो मार्तण्ड भी यहाँ से प्रकाशित होने लगा। पत्र के आदि सम्पादक पं. रामसहाय शर्मा (स्वामी ओमभक्त वानप्रस्थ) ने एक बार फिर सम्पादन का कार्य संभाला। इस बार इसे पाक्षिक का रूप दे दिया गया। पत्र का सिद्धान्त वाक्य निम्न दोहा था—

दयानन्द आदित्य से पाकर ज्योति प्रचण्ड।
ध्वंस दम्भ पाखण्ड का करे आर्यमार्तण्ड॥

पं. रविदत्त वैद्य, डा. रामप्यारी शास्त्री, प्रा. भवानीलाल भारतीय, श्रीकरण शारदा समय समय पर पत्र के अधिष्ठाता पद पर रहे।

नवम्बर १९७० में शारीरिक अस्वस्थता के कारण स्वामी ओम्भक्त ने सम्पादन कार्य से त्याग पत्र दे दिया। फलतः तत्कालीन सभामंत्री डा. भवानीलाल भारतीय मार्तण्ड के सम्पादक बने। डा. भारतीय ने तीन वर्षों तक पत्र का संपादन किया। इस बीच मार्तण्ड के अनेक महत्वपूर्ण विशेषांक प्रकाशित हुए। नवम्बर १९७० में मार्तण्ड का अभिनन्दन विशेषांक निकला जिसमें प्रान्त के वयोवृद्ध उपदेशक पं. ओम्भक्त जी तथा सभा के तत्कालीन प्रधान पं. भगवानस्वरूप जी न्यायभूषण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में प्रशस्ति परक सामग्री प्रस्तुत की गई थी। फरवरी १९७१ में आधुनिक धर्मसुधारक और मूर्तिपूजा शीर्षक विशेषांक ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर प्रकाशित हुआ। उसमें राजा राममोहनराय, स्वामी दयानन्द, केशवचन्द्र सेन तथा स्वामी विवेकानन्द के मूर्तिपूजा विषयक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया था। १५ जुलाई १९७१ को पं. गणपति शर्मा विशेषांक प्रकाशित हुआ। यह अंक आर्यसमाज के उद्भट विद्वान्, प्रख्यात वाग्मी तथा शास्त्रार्थकर्ता पं. गणपति शर्मा की ५९ वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में प्रकाशित किया गया था। विशेषांक में स्वर्गीय विद्वान् के सम्बन्ध लिखी गई महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की गई। पं. नारायण प्रसाद बेताब द्वारा लिखे गये महर्षि दयानन्द विषयक चार मुसद्दसों को कवि के जीवन वृत्त के साथ एक अन्य विशेषांक में प्रकाशित किया गया जो १ मार्च १९७२ को निकला। इस प्रकार डा. भारतीय के सम्पादन काल में आर्यमार्तण्ड आर्यसमाज के प्रमुख पत्रों में परिगणित होने लगा। पत्र में पुस्तकों की समीक्षायें भी नियमित रूप से निकलती थी।

आर्यमार्तण्ड अलवर से

सभा के अधिकारियों में परिवर्तन के साथ साथ मार्तण्ड का प्रकाशन भी कभी अजमेर तो कभी जयपुर से होता रहा। अब १९७३ के अन्त में सभा के

मंत्री श्री हेतराम शर्मा ने आर्य मार्तण्ड को अलवर से प्रकाशित किया। लगभग १ वर्ष तक अलवर से निकलने के पश्चात् १९७४ में इसे पुन: अजमेर ले आया गया। सम्पादन का भार डा. सूर्यदेव शर्मा को सौंपा गया जो आर्यसमाज के जाने माने साहित्यकार हैं। परन्तु मार्तण्ड के स्तर में विशेष सुधार या परिष्कार के दर्शन नहीं हुए। क्षीण कलेवर लेकर यह पत्र आर्थिक कठिनाइयों से जूझता रहा। प्रकाशन में भी अनियमितता रही।

एक बार पुन: जयपुर से

१९७६ से आर्यमार्तण्ड को पुन: जयपुर ले जाया गया। सभा के तत्कालीन मंत्री श्री जेठमल आर्य सम्पादक थे तथा सहायक का कार्य श्री भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर ही करते थे। श्री भगवती प्रसाद को पत्र सम्पादन एवं संचालन का अच्छा अनुभव है अत: वे पत्र को सुचारू रूप से निकाल रहे हैं। सम्प्रति वे ही पत्र के सम्पादक हैं।

भारतीय आदर्श—इन्दौर

श्री द्वारकाप्रसाद सेवक ने १९२३ में साप्ताहिक पत्र भारतीय आदर्श को जन्म दिया। अर्थाभाव के कारण नौ अंक निकालने के पश्चात् इसे बंद करना पड़ा।

आर्यजगत्—लाहौर, जालंधर, दिल्ली

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, सिंध और बिलोचिस्तान का मुख पत्र आर्यजगत् लाला खुशहालचन्द खुर्सन्द के सम्पादन में १९२४ में लाहौर से मासिक रूप में प्रकाशित हुआ। अक्टूबर १९४० में इसे साप्ताहिक कर दिया गया। इस समय पत्र के सम्पादक प्रो. दीवानचन्द शर्मा एम. ए. थे। १९४३ में सम्पादक पद पर श्री परमानन्द शर्मा का उल्लेख मिलता है। देश विभाजन के पश्चात् प्रो. रामचन्द्र शर्मा के सम्पादन में आर्यजगत् आर्यसमाज किला मुहल्ला जालंधर से प्रकाशित होने लगा। पं. रामकृष्ण शास्त्री उप-सम्पादक थे। १९५७ में सम्पादन भार श्री अजितसिंह सत्यार्थी को मिला। तत्पश्चात् १९५९ में पं. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री सम्पादक बने। १९७१-७२ में सभा का कार्यालय जालंधर से नई दिल्ली आ गया तो आर्यजगत् भी आर्य-समाज मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित होने लगा। १९७८ में महात्मा अमर स्वामीजी आर्यजगत् के सम्पादक बने। श्री गिरीशचन्द्र खोसला प्रबंध सम्पादक थे। इसी वर्ष प्रिंसिपल कृष्णचन्द्र ने पत्र के सहायक सम्पादक का कार्य किया। १९७९ में श्री क्षितीश वेदालंकार के हिन्दुस्तान दैनिक के सम्पादकीय विभाग से अवकाश ले लेने पर आर्यजगत् के सम्पादक पद पर नियुक्त किया गया।

कालेज विभाग का पत्र होने के कारण डी. ए. वी. संस्थाओं में आर्य-जगत् का निर्बाध प्रवेश है। पत्र के विशेषाँकों की शानदार परम्परा रही है।

महात्मा हंसराज के जन्मदिन पर आर्य जगत् का विशेषांक प्रतिवर्ष प्रकाशित होता है। इसी प्रकार ऋषिबोध दिवस, आर्य समाज स्थापना दिवस, श्रावणी, ऋषि निर्वाण दिवस आदि विशिष्ट पर्वों के उपलक्ष्य में भी आर्य जगत् के विशेषांक प्रकाशित होते हैं।

आर्य जीवन—कलकत्ता

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार बंगाल का मुखपत्र आर्य जीवन १९२४ में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार सम्पादक थे।

योगप्रचारक—काशी

योग प्रचारक मण्डल, काशी से योग प्रचारक मासिक का प्रकाशन १९२४ में प्रारम्भ हुआ। पत्र के सम्पादक स्वामी अभयानन्द सरस्वती थे। वे ही मण्डल के संचालक भी थे।

अलंकार तथा गुरुकुल समाचार—हरिद्वार

स्नातक मण्डल गुरुकुल कांगड़ी के मासिक मुख पत्र के रूप में अलंकार का प्रकाशन १ जून १९२४ (१९८० वि.) में हुआ। पं. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार सम्पादक थे। पत्र में गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों तथा छात्रों की रचनायें ही मुख्य रूप से स्थान प्राप्त करती थीं। सम्पादकीय विचारों के अतिरिक्त गुरुकुल समाचार तथा साहित्य वाटिका (समीक्षा) के स्थायी स्तम्भ रहते थे। सम्पादक मण्डल में पं. सत्यकेतु विद्यालंकार, पं. चन्द्रमणि विद्यालंकार तथा पं. वागीश्वर विद्यालंकार भी रहे थे। महात्मा गांधी ने अपने पत्र यंग इण्डिया के २९ मई, १९२४ के अंक में आर्यसमाज तथा उसके संस्थापक के विरुद्ध कुछ आपेक्षजनक बातें लिखी थीं। इसका युक्ति युक्त उत्तर अलंकार में पं. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने दिया।

वीर संदेश—लाहौर

आर्य स्वराज्य सभा लाहौर का मासिक विचार पत्र वीर संदेश मार्गशीर्ष १९८१ वि. (दिसम्बर १९२४) से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। इसके सम्पादक पं अजितसिंह सत्यार्थी थे। आर्य स्वराज्य सभा की स्थापना आर्यसमाज के अन्तर्गत प्राचीन आर्य सभ्यतानुसार भारत पर भारतवासियों का स्वराज्य स्थापित करने, आर्य जाति पर सरकार के अथवा दूसरी कौमों के अत्याचारों के निवारणार्थ हिन्दू जाति के परस्पर विरोध के नाश तथा परस्पर के प्रेम बढ़ाने, पतितों की उन्नति, दलितों का उद्धार, तथा छूत का नाश करने, हिन्दू मात्र की सामाजिक, राजनैतिक, शारीरिक अवस्था को उन्नत करने तथा विदेशी तथा भारत में रहने वाली दूसरी जातियों से मानपूर्वक हिन्दुओं का एक्य बनाने के लिये की गई थी। वीर संदेश का उद्देश्य इसी सभा के ध्येय का प्रचार करना था।

पत्र के प्रकाशित होने पर स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, महात्मा

हंसराज, गणेश दामोदर सावरकर (वीर सावरकर के भाई) आदि नेताओं ने अपनी शुभकामनायें भेजीं। वीर संदेश में स्वराज्य, हिन्दू संगठन, असहयोग आदि विषयों पर लेख रहते थे। प्रवेशांक में आर्यस्वराज्य सभा क्या है? (ले. डा. सत्यपाल), वैदिक स्वराज्य (ले. लाला रामप्रसाद), हिन्दू संगठन और कांग्रेस (ले. महात्मा हंसराज), स्वराज्य प्राप्ति का एक उपाय—असहयोग (ले. भाई परमानन्द) आदि लेख उल्लेखनीय थे। इसी अंक में अनेक ओजस्विनी कवितायें भी प्रकाशित हुईं। यमुनादास बी. ए. वकील हाईकोर्ट लाहौर ने 'वीर संदेश का सिंहनाद' शीर्षक तोटक छंद लिखकर पत्र का इस प्रकार स्वागत किया था—

तुमको करते हम स्वागत हैं। तुम हो सबके हित चाहन को।
गुणहीन हुई अति दीन हुई यह आरज जाति उभारन को।
जग में अब आरज राज बढ़े इस कारण कष्ट सहारन को।
जय हो, गरजो तुम सिंह यति अब वीर सन्देश सुनावन को॥

कविराज जयगोपाल ने वीर सत्याग्रही के तेज का वर्णन इस प्रकार किया—

सुनो सुनो हे आर्य बन्धु यदि आर्य कहाओ
पराधीन भारत माता को मुक्त कराओ।
शिव प्रताप जयमल चौहान की आन बचा के
सत्य मार्ग पर प्राण जायें तो प्राण गंवाओ।
यही वीर सन्देश देत वीरों को घर घर।
थर थर कांपे तीन भुवन जब कोप भुवन में आर्य नर॥

कौमी महाविद्यालय लाहौर के प्राध्यापक तथा हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक एवं नाटककार पं. उदयशंकर भट्ट ने वीर सन्देश का स्वागत इस प्रकार किया—

आ आ स्वागत समुचित तेरा, कर फिर भारतीय गर्जन।
अत्याचारी क्रूर कुटिल उच्छृङ्खल दल को दे तर्जन।
रह रह जीवन फूंक हिन्दुओं के बिखरे अंगों को कर दे एक।
भर दे आत्म गौरव नवजीवन के उनमें सविवेक।
खण्ड खण्ड कर उद्दण्डों को देकर दण्ड भेद उपदेश।
उत्साहित कर मार्ग दिखा दे सुना सुना वीर सन्देश॥

वीर सन्देश ने ऋग्वेद की इस उक्ति को अपना सिद्धान्त वाक्य बनाया था—

ओ३म् प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु।
आगे बढ़ो, जीतो, परमात्मा तुम्हारा कल्याण करेगा।

अनुपम—सिकदराबाद

पं. मुरारी लाल शर्मा के सम्पादन में यह मासिक पत्र १९२५ में गुरुकुल सिकन्दराबाद से निकला।

शुद्धि समाचार—दिल्ली

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुख पत्र शुद्धि समाचार जनवरी १९२५ ई. में निकलना आरम्भ हुआ। पत्र के सम्पादक सभा के मंत्री स्वामी चिदानन्द संन्यासी थे। पत्र के मुख पृष्ठ पर 'दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै' यह वेद मंत्रांश लिखा रहता था तथा भीतरी पृष्ठ पर रामचरित मानस का निम्न दोहा अंकित रहता था—

श्वपच शबर खल यवन जड़ पामर कोल किरात।
राम कहत पावन परम होत भुवन विख्यात॥

शुद्धि समाचार में वेद मंत्र की व्याख्या के अतिरिक्त शुद्धि एवं संगठन विषयक लेख छपते थे। स्वामी श्रद्धानन्द लिखित हिन्दू संगठन, शिव शर्मा लिखित खून के आँसू, लाला हरदयाल लिखित अंग्रेजी शिक्षा का भारतीय सभ्यता पर प्रभाव आदि लेख इस पत्र में धारावाही रूप से छपे। विभिन्न शुद्धि सभाओं का विवरण भी प्रकाशित होता था। १९२९ में जब स्वामी चिदानन्द सरस्वती को किसी अभियोग के कारण चार मास के लिये कारावास दण्ड मिला तो स्वामी आनन्द भिक्षु सरस्वती ने पत्र का सम्पादन किया। पत्र में यदा कदा नव प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा भी छपती थी। इस पत्र की ग्राहक संख्या उस समय १४ हजार के लगभग थी।

प्रभात—लाहौर

यज्ञदत्त विद्यालंकार ने इस साप्ताहिक पत्र को १९२५ में प्रकाशित किया।

प्रकाश—लाहौर

महाशय कृष्ण द्वारा प्रवर्तित और सम्पादित उर्दू साप्ताहिक का हिन्दी संस्करण १९२५ में प्रकाशित हुआ। ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी १९२५ ऋषि निर्वाण अर्द्ध शताब्दी (१९३३) तथा हैदराबाद सत्याग्रह (१९३८) जैसे आन्दोलनों को इस पत्र ने प्रमुखता से प्रचारित किया।

आर्ष ज्योति—काशी

पं. प्रियरत्न आर्य (स्वामी ब्रह्म मुनि) ने आर्ष विद्या भवन, काशी से १९२५ में आर्ष ज्योति मासिक का सम्पादन व प्रकाशन किया।

वैदिक ज्योति—वृन्दावन

ब्रह्मचारी विश्वेश्वर (बाद में आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि) ने १९२५ में गुरुकुल वृन्दावन से 'वैदिक ज्योति' मासिक का सम्पादन व प्रकाशन किया।

विधवाबंधु—लाहौर

विधवा विवाह सहायक सभा लाहौर (सर गंगाराम ट्रस्ट सोसाइटी द्वारा संरक्षित) का यह मासिक पत्र १९२६ में प्रकाशित हुआ। पत्र के प्रथम सम्पादक पं. दीनानाथ सिद्धान्तालंकार थे। १९३० में सम्पादन भार महता शान्तिस्वरूप विद्यालंकार के पास था। पत्र के मुख पृष्ठ पर मनुस्मृति का का निम्न श्लोक अंकित रहता था—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः॥

पत्र में नारी समस्याओं, विशेषतः विधवा विवाह के समर्थन में लिखे गये लेखों, कहानियों तथा कविताओं की प्रधानता रहती थी। अगस्त १९३० के अंक में मोहन लाल मुहियाल की काव्य कृति 'फरियादे बेवा' उर्दू के मुसद्दस छन्द में लिखी गई एक मार्मिक रचना है—

अजब दुख दर्द सहती हूँ गमों में नीमजां होकर।
टपकते खून के आंसू इन आंखों से रवां होकर॥
सिधारे प्राणपत डेरा जमाया पास हसरत ने।
बिसारी सुध गुलिस्तां की उन्होंने बागबां होकर॥

इसी अंक में विधवा विवाह के प्रचलित न होने से हानियाँ, मद्रास प्रान्त में विधवा विवाह समस्या (दीनानाथ सिद्धान्तालंकार) आदि लेख पत्र के उद्देश्य के अनुकूल ही हैं। पत्र में विवाह योग्य विधवाओं का विवरण तथा देश के विभिन्न नगरों में स्थापित विधवाश्रमों का विवरण भी नियमित रूप से प्रकाशित होता था।

सार्वदेशिक—दिल्ली

पृथ्वी की समस्त आर्यसमाजों के सार्वभौम संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख पत्र सार्वदेशिक मार्च १९२७ में दिल्ली से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। इसके प्रथम सम्पादक डा. केशवदेव शास्त्री थे। समय समय पर इसका सम्पादन भार भिन्न भिन्न लोगों के जिम्मे रहा। १९४१ में सुधाकर एम. ए. सम्पादक तथा रघुनाथप्रसाद पाठक सह सम्पादक थे। कुछ वर्षों के पश्चात् पं. धर्मदेव विद्यावाचस्पति सम्पादक बने। पं. धर्मदेव जी अपने युग के महान् विद्वान्, विचारशील चिंतक, तथा प्रौढ़ लेखक थे। उन्होंने अपने सम्पादन काल में सार्वदेशिक को आर्यसमाज के सर्वोच्च पत्रों में स्थान दिलाया। तुलनात्मक दृष्टि से विभिन्न धर्मों का अध्ययन, वैदिक सिद्धान्तों की विवेचना और व्याख्या, प्रकाशित ग्रन्थों की समीक्षा, सामाजिक, राजनीतिक तथा अन्य ज्वलन्त सामयिक समस्याओं पर निर्भीक तथा विचारोत्तेजक टिप्पणियां सार्वदेशिक में नियमित रूप से प्रकाशित होती थीं।

पं. धर्मदेव विद्यावाचस्पति के सम्पादक पद से त्यागपत्र देने के पश्चात् प्रायः सार्वदेशिक सभा के मंत्री गण ही समय समय पर पत्र के सम्पादक पद को अलंकृत करते रहे। इस प्रकार कविराज हरनामदास, स्वामी अखिलानन्द (कालीचरण आर्य), राम गोपाल शालवाले, ओम्प्रकाश त्यागी तथा सच्चिदानन्द शास्त्री आदि महानुभाव सार्वदेशिक के सम्पादक रहे हैं। परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से सम्पादन का दायित्व सभा के भूतपूर्व कार्यालयाध्यक्ष पं. रघुनाथ प्रसाद पाठक पर ही रहा है।

दीर्घकाल तक मासिक रूप में प्रकाशित होने के पश्चात् १९६५ में सार्वदेशिक को साप्ताहिक का रूप दिया गया। तब से अब तक सार्वदेशिक इसी रूप में प्रकाशित हो रहा है। समय समय पर सार्वदेशिक के अनेक उपयोगी विशेषांक भी प्रकाशित हुए हैं। विशेषांकों में स्वामी श्रद्धानन्द की आत्मकथा (कल्याण मार्ग का पथिक) विशेषांक (२४ दिसम्बर १९६५) लाला लाजपतराय लिखित स्वामी दयानन्द का जीवन वृत्तान्त (२० अगस्त १९६७) महर्षि दयानन्द का पत्र व्यवहार (९ नवम्बर १९६९) आदि उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार आर्य समाज के प्रमुख लेखकों की कृतियों को भी विशेषांकों के रूप में निकाला गया (यथा—महात्मा नारायण स्वामी लिखित गृहस्थ धर्म विशेषांक (श्रावण पूर्णिमा २०३६ वि.) तथा आर्यसमाज क्या है? (चैत्र शु. प्रतिपदा २०२९ वि.) गंगा प्रसाद उपाध्याय लिखित—हम क्या खावें घास या मांस? पं. मुन्शीराम रचित धर्मवीर पं. लेखराम आदि।

आर्य ज्ञानोदय तथा हिन्दू रक्षक—पचरांव (मिर्जापुर)

पचरांव (चुनार) जिला मिर्जापुर से आर्य ज्ञानोदय (हिन्दू रक्षक) मासिक पत्र का प्रकाशन १९८६ वि. (१९३०) में हुआ। पत्र के सम्पादक पं. सूर्य दत्त त्रिपाठी थे। इस पत्र ने १९३० की आर्य यंत्री (Directory) विशेषांक के रूप में प्रकाशित की जिसमें आर्यसमाजिक संस्थाओं विषयक महत्त्वपूर्ण जानकारी संगृहीत की गई थी।

वेदोदय—प्रयाग

आर्यसमाज के विख्यात दार्शनिक विद्वान् और लेखक पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय ने कला प्रेस, प्रयाग से वेदोदय मासिक का प्रकाशन १९३० में किया। सम्पादक का कार्य स्वयं उपाध्यायजी करते थे जिसमें उनके पुत्र श्री विश्वप्रकाश का भी सहयोग रहता था। पत्र में आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर विद्वत्तापूर्ण लेख रहते थे। यह पत्र १९३४ तक चलता रहा पुनः आर्थिक कठिनाइयों के कारण बन्द हो गया।

सद्धर्म प्रचारक—बनारस

आर्यसमाज काशी का पाक्षिक पत्र सद्धर्म प्रचारन १९३० में अवैतनिक सम्पादक पं. जे. पी. चौधरी काव्यतीर्थ के सम्पादन में निकला। इसका

सिद्धान्त वाक्य था –कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। पत्र में आर्यसमाज के प्रतिद्वन्द्वी सनातन धर्मी पण्डित—कालूराम शास्त्री, अखिलानन्द शर्मा आदि द्वारा किये गये आक्षेपों का मुंहतोड़ जवाब दिया जाता था। अवतारवाद, मूर्तिपूजा, विधवाविवाह निषेध जैसे विषयों पर सद्धर्म प्रचारक में तीव्र समालोचनात्मक लेख रहते थे। शास्त्रार्थों के विवरण भी छपते थे तथा सनातन धर्मी पत्रों में प्रकाशित होने वाले आर्यसमाज की आलोचना सम्बन्धी लेखों का प्रत्युत्तर दिया जाता था। देशविदेश के समाचार तथा भारत के स्वाधीनता आन्दोलन विषयक गति विधियों को भी स्थान मिलता था। पत्र का वार्षिक मूल्य प्रारम्भ में मात्र एक रुपया था जो बाद में बढ़ा कर डेढ़ रुपया कर दिया गया।

श्रद्धानन्द—दिल्ली

अक्टूबर १९३२ में स्वामी चिदानन्द सरस्वती के सम्पादन में यह मासिक पत्र निकला। सहायक सम्पादक डा. विद्या व्रत एच. एम. डी. थे। यह पत्र स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति में निकाला गया था, इसलिये इसमें शुद्धि एवं संगठन विषयक लेखों की प्रधानता रहती थी। अखिल भारतीय श्रद्धानन्द शुद्धि सभा का यह मुख पत्र था। पत्र मई १९४८ तक निकलता रहा।

तपोभूमि—मेरठ

श्री विश्वम्भरसहाय प्रेमी ने १९३३ में स्वसम्पादन में मेरठ से तपोभूमि मासिक का प्रकाशन किया।

वैदिक विज्ञान—अजमेर

आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर के संस्थापक श्री मथुरा प्रसाद शिवहरे ने १९३२ में मण्डल के ही तत्त्वावधान में वैदिक विज्ञान मासिक का प्रकाशन किया। प्रो. विश्वनाथ विद्यालंकार सम्पादक थे। दो वर्ष चलकर घाटे के कारण बंद हो गया।

बलिदान—लाहौर

फरवरी १९३५ में इसके प्रकाशित होने का उल्लेख हुआ है।

दिवाकर—आगरा

जुलाई १९३५ में आगरा से दिवाकर साप्ताहिक निकला। इसके प्रथम सम्पादक मधुसूदन चतुर्वेदी थे। १९३८ में इसका सम्पादन क्रमशः श्रीशचन्द्र शुल्क, विष्णुदत्त कपूर तथा हरिदत्त शास्त्री ने किया। यह पत्र आर्यसमाज आगरा का मुख पत्र था। इसके वेदांक तथा शिक्षांक नामक विशेषांकों ने प्रसिद्धि प्राप्त की

पाखण्ड खण्डिनी पताका—काशी

काशी के पं. जे. पी. चौधरी काव्यतीर्थ ने १९३५ में इस नाम की खण्डन मण्डन प्रधान पत्रिका सम्पादित एवं प्रकाशित की।

गुरुकुल—गुरुकुल कांगड़ी

१० अप्रैल १९३६ को गुरुकुल कांगड़ी से साप्ताहिक गुरुकुल का प्रकाशन हुआ। गुरुकुलीय शिक्षा का प्रचार तथा गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों की सेवा पत्र का उद्देश्य था। इसके सम्पादक सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार थे। एक अन्य विवरण के अनुसार गुरुकुल पत्र मासिक था जिसके सम्पादक भारतभूषण वेदालंकार थे।

विज्ञापक—बड़ौदा

मासिक विज्ञापक १९३६ में पं. आनन्दप्रिय के सम्पादन में निकला। मास्टर आत्माराम अमृतसरी, देशभक्त कुं. चांदकरण शारदा आदि के उत्तम लेख इसमें प्रकाशित होते थे।

आर्य—सहारनपुर

आर्य नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन १९३७ में सहारनपुर से हुआ। इसके संचालक और आदि सम्पादक श्री शीतलप्रसाद विद्यार्थी थे। श्री क्षेमचन्द्र सुमन ने भी इस पत्र का स्वल्प काल तक सम्पादन किया था।

अजय—अजमेर

नवम्बर १९३६ में अजय मासिक अजमेर से निकला। श्री दत्तोत्रय वाब्ले इसके सम्पादक तथा दुर्गाप्रसाद शास्त्री एवं सूर्यदेव शर्मा सहायक सम्पादक थे। एव वर्ष चलकर यह विजय के नाम से साप्ताहिक रूप में निकलने लगा।

विजय—अजमेर

अजमेर से विजय नामक साप्ताहिक का प्रकाशन २ नवम्बर १९३७ दीपावली के दिन हुआ। प्रथम वर्ष के सम्पादक थे श्री दत्तात्रेय वाब्ले। पत्र का सिद्धान्त वाक्य निम्न था—

देश जाति में जागृति करने धर्म ध्वजा फहराने को।
विजय विश्व में प्रकट हुआ है जीवन ज्योति जलाने को॥

विजय में आर्यसमाज विषयक लेखों और समाचारों की प्रधानता तो रहती थी, वह राजस्थान की देशी रिसायतों की जनता का भी प्रवक्ता था। रिसायतों में होने वाली हलचलों तथा गतिविधियों का इसमें नियमित प्रकाशन होता था। पत्र में प्रकाशित होने वाली सामग्री साहित्यिक तथा उच्च कोटि की होती थी। निबंध, काव्य, गद्यकाव्य तथा समालोचना सभी विधाओं को पत्र में स्थान प्राप्त था।

प्रकाशन के दूसरे वर्ष में पत्र का सम्पादन अजमेर के तपस्वी पत्रकार जगदीशप्रसाद माथुर 'दीपक' ने संभाला। दीपक जी के सम्पादन में पत्र ने आशातीत उन्नति की। विजय में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी प्रकार के लेख रहते थे। १९३८ में जब धार्मिक अधिकारों की रक्षा हेतु हैदराबाद दक्षिण में आर्यसमाज ने सत्याग्रह प्रारम्भ किया तो विजय के अग्रलेखों, टिप्पणियों तथा समाचारों ने आन्दोलन के अनुकूल वातावरण

बनाने में पर्याप्त सहायता की। इस वर्ष श्री दत्तात्रेय वाब्ले पत्र के निर्देशक थे। द्वितीय वर्ष के ३६ अंकों का सम्पादन करने के पश्चात् श्री दीनदयाल दिनेश, सम्पादक बने तथा ओंकारनाथ दिनकर प्रबंध सम्पादक थे। पत्र के अनेक विशेषांक भी निकले जिनमें हैदराबाद आर्यसत्याग्रह अंक उल्लेखनीय है। विजय मुख्यत: आर्यसमाज अजमेर की प्रवृत्तियों का प्रवक्ता था।

वैदिक संदेश—शोलापुर

आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद राज्य की ओर से १९३७ ई. में शोलापुर से वैदिक संदेश नामक साप्ताहिक प्रकाशित किया गया। पत्र के सम्पादक क्रमश: त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, डा. उमरावसिंह तथा रामदेव शास्त्री रहे। पत्र का सिद्धान्त वाक्य निम्न पद्य के रूप में छपता था—

उठ बांध कमर क्यों डरता है।
फिर देख प्रभु क्या करता है॥

पत्र लगभग डेढ़ वर्ष तक चला। पश्चात् यही पत्र हैदराबाद से आर्यभानु के नाम से प्रकाशित होने लगा।

आर्यवीर—जालंधर

पं. मेहरचंद शर्मा ने वैदिक धर्म और संस्कृति के प्रसारक इस पत्र का प्रकाशन १९३७ में अड्डा होशियारपुर जालंधर से किया। शर्माजी के व्यक्तिगत श्रम और पुरुषार्थ के बल पर यह पत्र चौथाई शताब्दी से अधिक समय तक सफलतापूर्वक निकलता रहा। पं. मेहर चंद शर्मा पत्र के सम्पादक तथा उनके पुत्र श्री ओमप्रकाश शर्मा व्यवस्थापक थे। आर्यवीर में आर्यसमाज की समस्याओं के अतिरिक्त मत मतान्तरों के खण्डनात्मक तथा उच्च कोटि के सैद्धान्तिक लेखों को स्थान मिलता था।

दयानन्द संदेश—दिल्ली

दयानन्द वेद विद्यालय, दिल्ली का मासिक मुख पत्र विद्यालय के संस्थापक तथा आचार्य पं. राजेन्द्रनाथ शास्त्री के सम्पादन में अगस्त १९३८ से निकलना आरम्भ हुआ। इसके विशेषांकों की धूम रही। मार्च १९४१ के अंक में पत्र के सहायक सम्पादक के रूप में श्रीमती लीलावती गर्ग का तथा मई १९४८ के अंक में श्री सत्यकाम सिद्धान्तशास्त्री का नामोल्लेख है।

वेद विद्या प्रकाश—लाहौर

१९३९ में इसके प्रकाशित होने का उल्लेख मिलता है।

आर्य संदेश—आगरा

पं. हरिशंकर शर्मा के सम्पादन में साप्ताहिक आर्य संदेश का प्रकाशन आगरा से १ जनवरी १९३९ को हुआ। पत्र के संरक्षक तथा संचाकल स्वामी परमानन्द थे। श्री क्षेमचन्द्र सुमन सहकारी सम्पादक थे। पत्र का जीवन-

काल मात्र ६-७ मास ही रहा।

दैनिक दिग्विजय—हैदराबाद, शोलापुर

आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद का दैनिक पत्र दिग्विजय १९३९ में प्रकाशित हुआ। उन दिनों निजाम राज्य में आर्यसमाज अपने धार्मिक अधिकारों के लिये सत्याग्रह कर रहा था। पत्र में सत्याग्रह के समाचारों को प्रधानता मिलती थी। पं. कृष्णदत्त इसके सम्पादक थे। पं. हरिशंकर शर्मा, प्रो. रामदेव तथा श्रीकृष्ण विद्यार्थी द्वारा भी इसके सम्पादन होने का उल्लेख मिलता है।[1]

मनस्वी—अमेठी

उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर मण्डलान्तर्गत अमेठी राज्य का आर्यसमाज से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। अमेठी के राजा रणवीरसिंह तथा उनके अनुज राजा रणञ्जयसिंह आर्यसमाज के कट्टर अनुयायी रहे हैं। इसी राजपरिवार ने मनस्वी नामक पत्र १९३९ में प्रकाशित की। १९३९ में श्री क्षेमचन्द्र सुमन ने लगभग ८ मास तक इस पत्र का सम्पादन किया।

प्रजा बंधु—दिल्ली

शुद्धि सभा के मंत्री स्वामी चिदानन्द सरस्वती के सम्पादन में प्रजा बंधु मासिक जनवरी १९४१ में निकलने लगा। पत्र का आदर्श वाक्य निम्न दोहे के रूप में स्वीकार किया गया—

बल पौरुष विकसित करे, हरे प्रजा का शोक।
जन मन मुद्रित रत रहे, प्रजा बंधु इह लोक॥

आर्यावर्त—इन्दौर, ग्वालियर

दयानन्द वैदिक मिशन इन्दौर के साप्ताहिक मुख पत्र के रूप में आर्यावर्त का प्रकाशन १६ मार्च १९४५ से आरम्भ हुआ। प्रारम्भ में इसके सम्पादक श्री शिवराजसिंह तथा पं. लक्ष्मीनारायण शास्त्री रहे। कालान्तर में यही पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत का मुख पत्र बन कर लश्कर ग्वालियर से मासिक रूप में प्रकाशित होने लगा। अगस्त १९४७ में इसके सम्पादक उमेशचन्द्र स्नातक रहे। डा. अशोक कुमार आयुर्वेदालंकार तथा श्री लाडली प्रसाद एडवोकेट इसके सम्पादक थे। पत्र के अनेक विशेषांक परिश्रमपूर्वक निकाले गये।

आर्य भानु—हैदराबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद राज्य का साप्ताहिक मुख पत्र १९४६ में निकला। विनायकराव विद्यालंकार सम्पादक तथा पं. कृष्णदत्त सहायक सम्पादक थे। बाद में भी ऋभुदेव शर्मा तथा श्री विनयकुमार ने सहायक

---

१. डा. मदन मोहन जावलिया का शोध प्रबंध पृ. १९१ (टंकित प्रति)

सम्पादक के रूप में कार्य किया। पत्र का वार्षिक मूल्य ९ रु. था। इसके शोलापुर से निकलने का भी उल्लेख मिलता है।

सम्राट्—दिल्ली

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं. जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती ने पहाड़ी धीरज दिल्ली से १८ मई १९४७ के दिन सम्राट् साप्ताहिक का प्रारम्भ किया। पत्र का सम्पादन श्री रघुवीरसिंह शास्त्री करते थे। पत्र पर्याप्त लोकप्रिय रहा। आर्थिक कठिनाइयों के कारण १ नवम्बर १९५५ से इसका प्रकाशन बंद हो गया।

तरणि—मासिक

पं. ज्ञानेन्द्र सिद्धान्तभूषण के सम्पादन में यह मासिक पत्र अगस्त १९४७ में निकला।

□□

तृतीय युग १९४७-१९८०

आलोक—दिल्ली

आर्य समाज के प्रसिद्ध लेखक, वक्ता तथा विचारक पं. जगत्कुमार शास्त्री ने दीवान हाल दिल्ली से जनवरी १९४८ से मासिक आलोक का प्रकाशन आरम्भ किया। इसमें प्रतिमास कोई पुस्तक प्रकाशित की जाती थी। पत्र का प्रथम अंक आर्य सत्संग गुटका के रूप में तथा अंक ३-४ स्वामी वेदानन्द तीर्थ कृत ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के मंत्रों की व्याख्या के रूप में प्रकाशित हुआ।

राष्ट्रवाणी—दिल्ली

स्वामी चिदानन्द सरस्वती ने इस साप्ताहिक पत्र को १७ अप्रैल १९४८ को प्रकाशित किया।

वेदवाणी—काशी, बहालगढ़

संस्कृत विद्या के केन्द्र काशी से वेदवाणी नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन नवम्बर १९४८ में आदर्श साहित्य मण्डल, जंगमवाड़ी काशी के तत्त्वावधान में हुआ। प्रारम्भिक काल के सम्पादकों में पं. भानुचरण आर्षेय, पं. महेशप्रसाद मौलवी तथा पं. वीरेन्द्र शास्त्री थे। प्रधान सम्पादक पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु थे। इसी काल में पं. वीरेन्द्र शास्त्री कृत सामवेद का आर्य भाषानुवाद वेदवाणी के विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ। कुछ समय पश्चात् पत्रिका का संचालन आर्ष ग्रन्थों के प्रसिद्ध प्रकाशक श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट अमृतसर ने अपने हाथों में ले लिया और वेदवाणी ट्रस्ट के मुख पत्र के रूप में प्रकाशित होने लगी। अब ट्रस्ट के प्रधान स्व. पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु वेद वाणी के सम्पादक बने। वेद वाणी का कार्यालय अजमतगढ़ पैलेस मोतीझील बनारस में आ गया।

वेद वाणी में वेद विषयक उच्च कोटि के लेखों को स्थान मिलता था। डॉ. मंगलदेव शास्त्री, डा. वासुदेवशरण अग्रवाल, डा. फतहसिंह, प्रा. विष्णुदयाल मारिशस, पं. रामशंकर भट्टाचार्य आदि विख्यात वैदिक विद्वान् वेद वाणी के नियमित लेखक थे। इनके अतिरिक्त आर्य समाज के अधिकांश उच्च कोटि के लेखकों और विद्वानों की रचनायें भी वेद वाणी में स्थान प्राप्त करती थीं। नव वर्ष के प्रारम्भ में वेद वाणी का बृहत् वेदांक प्रकाशित होता था, जिसमें वैदिक विषयों की विवेचनायुक्त गम्भीर तथा गवेषणा पूर्ण लेख छपते थे। आठवें वर्ष का विशेषांक 'पाश्चत्य मत परीक्षणांक' नाम से प्रकाशित हुआ। इसमें पाश्चात्य विद्वानों के वेद विषयक मतों की सतर्क परीक्षा की गई थी।

दिसम्बर १९६४ में जिज्ञासु जी का निधन हो जाने के कारण वेदवाणी का सम्पादन भार उन्हीं के सुयोग्य शिष्य पं. युधिष्ठिर मीमांसक पर आ गया। १९६५ से अब तक मीमांसक जी वेदवाणी के गुरुतर सम्पादन कार्य को अपने दुर्बल स्वास्थ्य के बावजूद खूबी के साथ किये जा रहे हैं। इस बीच वेदवाणी का कार्यालय सोनीपत के निकट बहालगढ़ में आ गया है और पत्रिका ट्रस्ट के निजी प्रेस में छपती है। मीमांसक जी के सम्पादन काल में वेदवाणी की विशेषांकों वाली परम्परा अक्षुण्ण रही। सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर उत्कृष्ट सामग्री विशेषांकों के माध्यम से दी गई तथा दयानन्दशास्त्रार्थसंग्रह, आर्यसमाज के वेद सेवक विद्वान् तथा आर्य-मुनिकृत आर्य मन्तव्य प्रकाश आदि ग्रन्थ विशेषांकों के रूप में पाठकों को दिये गये। पं. अखिलानन्द सम्पादित वाल्मीकीय रामायण, युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा सम्पादित विदुरनीति, हंस गीता तथा पं. तुलसीराम स्वामी की भगवद्‌गीता की व्याख्या को भी वेदवाणी के परिशिष्ट रूप में धारावाही छापा गया।

वेदवाणी में सम्पादकीय, साहित्य समीक्षा, समाचार संग्रह आदि स्थायी स्तम्भ भी रहते हैं। ट्रस्ट की भावी प्रकाशन योजनाओं को सविस्तार प्रकाशित किया जाता है। आजकल पं. महेन्द्र शास्त्री वेदवाणी के सहायक सम्पादक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

सविता—अजमेर

अजमेर निवासी श्री विद्यानन्द विदेह ने वानप्रस्थ ग्रहण करने के साथ-साथ वेद संस्थान की स्थापना की और संस्थान के मुखपत्र के रूप में मासिक पत्र सविता का प्रकाशन माघ पूर्णिमा २००४ फरवरी १९४८ से किया। सविता में विदेह कृत वेद व्याख्यायें, गीता, योगदर्शन तथा अन्यान्य ग्रन्थों के टीका, भाष्य आदि प्रकाशित हुए हैं। प्रारम्भ में पत्र का सम्पादन श्री विश्वदेव शर्मा ने किया। बाद में डा. अभयदेव शर्मा तथा डा. बद्रीप्रसाद पंचोली भी सम्पादक रहे। पुनः विश्वदेव शर्मा सम्पादक बने। सुपर्ण अंक जैसा अनुसंधान परक विशेषांक प्रकाशित कर सविता ने वैदिक विवेचन का एक नवीन अध्याय लिखा है। विदेह जी के निधन के पश्चात् उन्हीं की वेदार्थ शैली में डा. अभयदेव शर्मा तथा डा. बद्रीप्रसाद पंचोली सविता में वेद व्याख्यायें लिखते हैं। तीस वर्ष से भी अधिक समय तक नियमित तथा बिना किसी व्यवधान के सविता का प्रकाशन सर्वथा प्रशंसनीय है। १९८० में इसे 'वेद-सविता' का नया नाम दिया गया।

गुरुकुल पत्रिका—गुरुकुल काँगड़ी

गुरुकुल विश्व विद्यालय काँगड़ी की मासिक मुखपत्रिका गुरुकुल पत्रिका का प्रकाशन भाद्रपद २००५ वि, सितम्बर (१९४८ ई.) में प्रारम्भ हुआ। गुरुकुल शिक्षा का प्रचार तथा देववाणी संस्कृत एवं आर्य संस्कृति को

लोकव्यापी बनाने की दृष्टि से ही इस पत्र का प्रकाशन हुआ था। पत्रिका के प्रारम्भिक सम्पादक पं. रामेश वेदी आयुर्वेदालंकार तथा पं. सुखदेव विद्या वाचस्पति थे। कालान्तर में पं. धर्मदेव विद्या मार्तण्ड इसके सम्पादक बने। विद्या मार्तण्ड जी के सम्पादन काल में गुरुकुल पत्रिका संस्कृत प्रधान रही जिसमें कुछ हिन्दी के लेख भी रहते थे। आर्यसमाज के संस्कृतज्ञ विद्वानों तथा लेखकों का पत्रिका को पूर्ण सहयोग मिलता रहा। डा. मंगलदेव शास्त्री, पं. जगन्नाथ विद्यालंकार, आचार्य मेधाव्रत, पं. विद्यानिधि शास्त्री, पं. वैद्यनाथ शास्त्री, प्रा. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, डा. सूर्यकान्त आदि संस्कृत के उद्भट विद्वान् पत्रिका में नियमित रूप से लिखते थे। आर्यसमाजेतर संस्कृत विद्वानों की रचनायें भी ससम्मान छापी जाती थीं। गद्य के अतिरिक्त संस्कृत कविता के लिये भी पत्रिका में स्थान रहता था। सम्दादकीय टिप्पण्य: के अन्तर्गत सामयिक समस्याओं पर विचार व्यक्त किये जाते थे तथा साहित्य समीक्षा के अन्तर्गत नव प्रकाशित ग्रन्थों की समालोचना छपती थी। पत्रिका के हिन्दी भाग में लेखों के अतिरिक्त 'गुरुकुल समाचार' का स्तम्भ रहता था।

पत्रिका के प्रकाशन के सत्रहवें वर्ष में सम्पादक पद पर पं. भगवद्दत्त वेदालंकार प्रतिष्ठित हुए। इस वर्ष का प्रथम अंक 'विष्णु अंक' के रूप में प्रकाशित हुआ जिसमें वैदिक विष्णु देवता के विवेचन परक अनेक संस्कृत तथा हिन्दी लेख छपे। वेदालंकार जी ने वर्ष के प्रथम अंक को विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने की जो प्रणाली आरम्भ की उसके अन्तर्गत १८ वें वर्ष का प्रथम अंक वेदांक के रूप में छपा। इसमें विभिन्न लेखों के अतिरिक्त पं. भगवद्दत्त वेदालंकार प्रणीत ऋषिरहस्य पुस्तक को भी सम्मिलित किया गया। इसी प्रकार १९ वें वर्ष में वेद विमर्शांक, २० वें वर्ष में वेदांक, २१ वें वर्ष में वेद दर्शनांक, २२ वें वर्ष में संस्कृत भाषांक, २३ वें वर्ष में पुन: वेदांक प्रकाशित हुए। प्रो. ब्रह्मदेव एम. ए. पत्रिका के सहायक सम्पादक पद पर रहे। नवम्बर १९७४ तक पत्रिका नियमित रूप से छपती रही, किन्तु इसके बाद कतिपय कारणों से प्रकाशन में अनियमितता आ गई। २८ वें वर्ष का प्रथम अंक नेहरू अंक और द्वितीय श्रद्धानन्द अंक के रूप में छपा। १९७५ के अन्त तक निकल कर गुरुकुल पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो गया।

वेदपथ—ज्वालापुर

सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासी वानप्रस्थ मण्डल हरिद्वार के मासिक मुख-पत्र के रूप में आर्यसमाज के विद्वान् संन्यासी स्वामी वेदानन्द तीर्थ ने स्व सम्पादन में वेदपथ का प्रकाशन १९४९ (२००५ वि.) में किया। वेदपथ में उच्चकोटि के दार्शनिक, आध्यात्मिक, धार्मिक तथा शास्त्रीय विषयों से सम्बन्धित लेख प्रकाशित होते थे। स्वामी आत्मानन्द सरस्वती, पं. भगवदत्त,

शान्त स्वामी अनुभवानन्द, पं. वैद्यनाथ शास्त्री, पं. उदयवीर शास्त्री आदि लेखकों की रचनाओं को पत्र में स्थान मिलता था। पत्र आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर से प्रकाशित होता था। स्वल्प काल तक प्रकाशित होकर वेदपथ का बन्द हो जाना आर्यसमाज के पत्र जगत् की एक दुखद घटना थी। विरजानन्द वैदिक संस्थान गाजियाबाद के अध्यक्ष स्वामी विज्ञानानन्द ने नवम्बर १९६५ से इस पत्र को पुनः प्रकाशित किया। अब यह संस्थान का मासिक मुख पत्र था। ठाकुर अमरसिंह सम्पादक थे। पत्र का सिद्धान्त वाक्य था—

धर्म धारण कर अमर पद पाइये।
वेद पढ़िये वेद पथ अपनाइये॥

१९६७ में सम्पादक पद पर अमरसिंह आर्य पथिक के साथ पं. रामस्वरूप शास्त्रीय काव्यतीर्थ का नाम भी छपने लगा। वेद पथ में उच्चकोटि के लेख रहते थे। परन्तु पत्र दीर्घजीवी नहीं हो सका।

आर्यपरिवार—अजमेर

पं. गंगाप्रसाद जज की अध्यक्षता में जाति भेद निवारक आर्य परिवार संघ की स्थापना १९४५ ई. में हुई थी। इस पत्र की त्रैमासिक मुख पत्रिका अन्तर्जातीय विवाह पत्रिका नाम से प्रकाशित होने लगी। कालान्तर में इसका नाम बदल कर आर्य परिवार कर दिया गया और जून १९५० से आचार्य भद्रसेन के सम्पादन में इसका प्रकाशन होने लगा। अपने उद्देश्य के अनुरूप लेखों के अतिरिक्त पत्रिका में जातिभेद तोड़ कर विवाह के इच्छुक युवक युवतियों का परिचय दिया जाता था।

आर्यवीर

राजस्थान आर्यवीर दल का मासिक मुखपत्र आर्यवीर पं. रविदत्त वैद्य के सम्पादन में २००७ वि. में प्रकाशित हुआ।

पुण्यभूमि—दिल्ली

सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड दिल्ली द्वारा पुण्यभूमि साप्ताहिक १९५० में श्री ब्रह्मदत्त स्नातक के सम्पादन में प्रकाशित हुआ। १९५१ में पत्र बन्द हो गया।

साहित्य प्रचारक, पुस्तक विक्रेता अथवा बुकसेलर—बड़ौदा

पुस्तक विक्रेता अपर नाम बुकसेलर हिन्दी अंग्रेजी में प्रकाशित होने वाला द्विभाषी पत्र था जो १९५१ में कारेली बाग बड़ौदा से निकला। श्री विनोद शान्तिप्रिय पण्डित इसके सम्पादक तथा प्रकाशक थे। पत्र में नव प्रकाशित पुस्तकों का परिचय तथा समीक्षायें छपती थीं। कुछ अंग्रेजी लेख भी रहते थे।

वेद प्रकाश—दिल्ली

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध साहित्य प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द नई

सड़क दिल्ली ने श्रावणी २००९ (१९५१ ई.) से मासिक वेद प्रकाश का प्रकाशन आरम्भ किया। पत्र का सम्पादन कार्य प्रसिद्ध लेखक तथा उपदेशक पं. जगत् कुमार शास्त्री को सौंपा गया। वर्ष की समाप्ति पर शास्त्रीजी के द्वारा सम्पादित 'दयानन्द ग्रन्थ संग्रह' विशेषांक (श्रावणी २०१० ई.) वेद-प्रकाश पाठकों को उपहार रूप में प्रदान किया गया। कुछ समय पश्चात् जगत् कुमार शास्त्री सम्पादक पद से पृथक् हो गये। अब पत्र के प्रकाशक श्री गोविन्दराम स्वयं ही सम्पादन का कार्य करने लगे। उनके निधन पर श्री विजय कुमार (श्री गोविन्दराम के पुत्र) सम्पादक बने। ब्रह्मचारी जगदीश विद्यार्थी (स्वामी जगदीश्वरानन्द) पत्र के आदरी सम्पादक रूप में कई वर्षों से वेद प्रकाश का कार्य देख रहे हैं। इनकी अधिकांश कृतियाँ वेद प्रकाश के विशेषांकों के रूप में प्रकाशित हुई हैं।

मानव पथ—दिल्ली

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के साप्ताहिक मुखपत्र के रूप में मानव पथ का प्रकाशन १ जनवरी १९५२ से प्रारम्भ हुआ। ब्रह्मचारी उपबुध सम्पादक थे। पत्र में आर्यवीरों को उद्बोधन देने वाले लेखों का प्राधान्य रहता था। पत्र का कार्यालय दीवनहाल दिल्ली था।

शक्ति संदेश—कनखल (हरिद्वार)

आर्यसमाज में क्षात्र राजनीति को संचरित करने की दृष्टि से कविराज योगेन्द्रपाल शास्त्री के सम्पादन में शक्तिसन्देश साप्ताहिक जून १९५२ से निकलना प्रारम्भ हुआ।

आर्य शक्ति—बम्बई

यह पत्रिका आर्य समाज फोर्ट बम्बई से जून १९५४ ई. (२०११ वि.) में मासिक रूप में प्रकाशित हुई। पं. रुद्रमित्र विद्यावारिधि सम्पादक तथा सुश्री विद्यावती शर्मा उप सम्पादिका थीं।

तपोवन पत्रिका—देहरादून

महाशय सत्यव्रत वैश्वानर के सम्पादन में तपोवन देहरादून की यह पत्रिका १९५३ ई. में प्रकाशित हुई।

सुधारक—गुरुकुल झज्जर

गुरुकुल झज्जर का मासिक पत्र सुधारक १० सितम्बर १९५३ से प्रकाशित होने लगा। 'सुनीतिभिर्नयसि त्रायसे जनम्' इस सूक्ति को अपने सिद्धान्त-वाक्य के रूप में स्वीकार करने वाले सुधारक ने अपने सुदीर्घ प्रकाशन में श्रेष्ठ पठनीय सामग्री तथा बीसियों विशेषांक पाठकों को समर्पित किये हैं। आचार्य मेधाव्रत, पं. वेदव्रत शास्त्री, आचार्य भगवानदेव (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) आदि के अनेक ग्रन्थ सुधारक के विशेषांकों के रूप में प्रकाशित हुए हैं। पत्र के सम्पादक स्वामी ओमानन्द सरस्वती इतिहास के प्रकाण्ड विद्वान्

हैं। उन्होंने हरियाणा प्रदेश के इतिहास तथा पुरातत्त्व पर विशेष श्रम किया है। फलत: उनके इतिहास विषयक अन्वेषणात्मक लेख भी सुधारक में स्थान पाते रहे हैं। स्वामी ओमानन्दजी की विदेश यात्राओं के विवरण, स्वामी आत्मानन्द सरस्वती की पत्रावली तथा पं. बस्तीराम के भजन संग्रह भी सुधारक के विशेषांकों के माध्यम से उपलब्ध हुए। सुधारक के गुरुकुल विशेषांक, आयुर्वेद विषयक विशेषांक, फाजिलका-अबोहर विशेषांक इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं कि इनके द्वारा आर्यसमाज के गुरुकुलों का विवरण तथा फाजिलका तहसील का भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है। पत्र के प्रधान सम्पादक स्वामी ओमानन्द जी तथा सम्पादक स्वामी वेदानन्द वेदवागीश हैं। प्रारम्भ में पं. वेदव्रत शास्त्री भी सम्पादक रहे। वर्तमान में सह सम्पादक के स्थान पर 'दयानन्द का सैनिक' का नाम प्रकाशित हो रहा है।

आर्य प्रेमी—अजमेर

आर्य न फार्मेसी, अजमेर के संचालक प्रसिद्ध हकीम वीरूमल आर्य प्रेमी ने आर्य प्रेमी मासिक का प्रकाशन जनवरी १९५३ में प्रारम्भ किया। हकीमजी के निधन के पश्चात् उनके पुत्र हकीम मोहनलाल आर्य प्रेमी का सम्पादन व प्रकाशन अपने पिता के पद चिन्हों पर चलते हुए करते रहे। आर्य प्रेमी के अनेक विशेषांक भी निकले। अजमेर के आर्य विद्वानों के लेख प्राय: आर्य प्रेमी में छपते थे, यथा—पं. युधिष्ठिर मीमांसक, डा. सूर्यदेव शर्मा, पं. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, पं. रामचन्द्र आर्यमुसाफिर तथा डा. भवानीलाल भारतीय आदि की रचनायें। हकीम मोहनलाल के निधन के पश्चात् पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया।

तपोभूमि—मथुरा

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मथुरा के मासिक मुखपत्र के रूप में तपोभूमि का प्रकाशन फरवरी १९५३ में आरम्भ हुआ। प्रारम्भ से ही इसके सम्पादक श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम हैं, जो अब वानप्रस्थ ग्रहण करने के पश्चात् प्रेमभिक्षु के नाम से जाने जाते हैं। तपोभूमि को शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया गया था। कालान्तर में इसका स्वामित्व सत्य प्रकाशन, मथुरा के पास आ गया।

तपोभूमि के विगत २५ वर्षीय प्रकाशनकाल में अनेक उल्लेखनीय विशेषांक प्रकाशित हुए हैं, यथा शुद्ध रामायण, शुद्ध महाभारत, शुद्ध गीता, शुद्ध मनुस्मृति आदि। १९७८ में तपोभूमि के प्रकाशन की रजत जयन्ती मनाई गई और इस उपलक्ष्य में एक बृहत् विशेषांक भी प्रकाशित हुआ।

वैदिक अनुसंधान—दिल्ली

नवम्बर १९५६ में सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान में

उच्चस्तरीय शोध का त्रैमासिक पत्र वैदिक अनुसंधान पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति तथा पं. विश्वनाथ विद्यालंकार के सम्पादन में निकला। पत्र का स्तर उच्चकोटि का था। कुछ ही अंक निकल सके।

वीरसंदेश—बहजोई

आर्यवीर दल उत्तरप्रदेश का मासिक मुखपत्र वीरसंदेश मार्च १९५८ से निकलने लगा। श्री दरबारीलाल तथा श्री चन्द्रभानु गुप्त इसके सम्पादक थे। 'अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु' को अपना आदर्श वाक्य घोषित करने वाला वीरसंदेश युवा वर्ग को आर्यसमाज के आदर्शों की प्रेरणा देता था।

आर्यसमाज—कलकत्ता

आर्यप्रतिनिधि सभा बंगाल का मासिक मुखपत्र आर्यसमाज सभा के कार्यालय ६, शंकर घोष लेन कलकत्ता से १९५८ में प्रकाशित हुआ। पं. अवधविहारीलाल इसके सम्पादक थे। कुछ वर्ष निकलकर यह बन्द हो गया। मार्च १९७२ में पं. शिवाकान्त उपाध्याय के सम्पादन में इसे पुनरुज्जीवित किया गया।

आर्यसमाज—दिल्ली

१९५८ में आर्यसमाज के तेजस्वी नेता पं. प्रकाशवीर शास्त्री ने स्वसम्पादन में यह साप्ताहिक पत्र दिल्ली से निकाला। पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन को पत्र ने प्रमुखता से जनता के समक्ष प्रस्तुत किया। श्री मुरारीलाल जिंदल पत्र के सहायक सम्पादक थे। पत्र अल्पजीवी रहा।

आर्य संसार—कलकत्ता

आर्यसमाज कलकत्ता (१९, विधानसरणी) का मासिक मुखपत्र आर्य संसार जनवरी १९५९ से आरम्भ हुआ। प्रारम्भ से ही इसका सम्पादन पं. उमाकान्त उपाध्याय करते रहे हैं। वर्ष के अन्त में आर्य संसार एक विशेषांक प्रस्तुत करता है जिसमें किसी प्रमुख आर्य विद्वान् की कृति को प्रकाशित किया जाता है। स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा नारायण स्वामी आदि मूर्धन्य लेखकों की कृतियाँ पत्र के विशेषांकों के रूप में आ चुकी हैं। पं. अयोध्याप्रसाद वैदिक मिश्नरी, तथा पं. रमाकान्त उपाध्याय के निधन पर पत्र के शोकाञ्जलि रूपी विशेषांक भी छपे।

आर्षपथ—जोधपुर

जोधपुर के कतिपय विचारशील आर्य पुरुषों ने आर्य समाज में नवीन एवं प्रगतिशील विचारधारा को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से सहकारी आधार पर आर्षपथ मासिक का प्रकाशन मार्च १९५९ (चैत्र २०१५ वि.) में किया। सम्पादक का पद श्री चांदमल आर्य को दिया गया तथा परामर्श मण्डल में पं. धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड, पं. भवानीलाल भारतीय तथा पं. शिवपूजन सिंह कुशवाह जैसे आर्य जगत् के जाने माने विद्वान् थे। पत्र का सम्पादकीय

भवानीलाल भारतीय लिखते थे। 'हमारी विचारधारा' स्तम्भ के अन्तर्गत आर्यसमाज से सम्बन्धित किसी ज्वलन्त समस्या पर गम्भीर विचार प्रस्तुत किये जाते थे। सैद्धान्तिक लेख तथा नव प्रकाशित ग्रन्थों की समस्यायें भी छपती थीं। दुर्भाग्य से मुद्रण कार्य सुचारु रूप से नहीं होता था अतः पत्र के प्रकाशन में अनियमितता आ गई। आर्थिक कठिनाइयों का समाधान भी नहीं हो सका। अतः चार अंक प्रकाशित करने के पश्चात् पत्र का प्रकाशन बन्द करना पड़ा। भर्तृहरि का श्लोक 'निन्दन्तु नीति निपुणाः' पत्र का ध्येय वाक्य था, तथा 'आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द मार्ग जोधपुर में पत्र का कार्यालय था।

अर्द्ध शताब्दी के बाद परोपकारी का पुनर्जन्म

परोपकारिणी सभा का मुखपत्र परोपकारी इस शताब्दी के प्रथम दशक में प्रकाशित हुआ था। लगभग आधी शताब्दी के बाद इस पत्र का पुनर्जन्म हुआ। नवम्बर १९५९ (कार्तिक २०१६ वि.) में नवीन सजधज के साथ परोपकारी का पुनः प्रकाशन हुआ। सभा के मंत्री डा. मानकरण शारदा तथा संयुक्तमंत्री श्रीकरण शारदा पत्र के सम्पादक थे। प्रबन्ध सम्पादक का पद वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धक भगवानस्वरूप न्यायभूषण को प्रदान किया गया। अजमेर के विगत आर्यसामाजिक इतिहास के जानकार श्री ब्रह्मदत्त सोढ़ा सम्पादन कार्य में अनौपचारिक रूप से सहयोग देते थे। उनकी रचनायें 'आर्य विद्यार्थी' नाम से प्रकाशित होती थीं। परोपकारी में प्रकाशित रचनाओं का स्तर प्रारम्भ से ही उच्चकोटि का रहा। आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वानों और लेखकों के लेख उसमें स्थान प्राप्त करते थे। प्रकाशन के प्रथम वर्ष में परोपकारी ने स्वामी नित्यानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर विशेषांक प्रकाशित किया। सामग्री संकलन में ब्रह्मदत्त सोढ़ा ने पर्याप्त श्रम किया था।

द्वितीय वर्ष का प्रथम अंक ऋषिमेला विवरणांक के रूप में प्रकाशित हुआ। इसी वर्ष के तृतीय अंक से आदरी सम्पादक मण्डल में श्री भवानीलाल भारतीय, डा. सूर्यदेव शर्मा तथा वैद्यराज कल्याणसिंह के नाम छपने लगे। चतुर्थ अंक में आदरी सम्पादकों में शिवपूजनसिंह कुशवाहा का नाम जोड़ दिया गया। परन्तु धीरे धीरे यह आदरी सम्पादक मण्डल कुशवाहा जी तक ही सीमित रह गया। वैद्यराज कल्याणसिंह का निधन हो गया, डा. सूर्यदेव जी शर्मा ने सम्पादक मण्डल से अपना नाम पृथक् करा लिया। डा. भवानीलाल भारतीय, पं. भगवानस्वरूप न्यायभूषण के निधन पर प्रबन्ध सम्पादक बन गये।

परोपकारी के तृतीय वर्ष का प्रथम अंक स्वामी सर्वदानन्द विशेषांक रूप में छपा। इस अंक के सम्पादक थे पं. भद्रसेन आचार्य। डा. भवानीलाल भारतीय

द्वारा परोपकारी का सम्पादन ग्रहण कर लेने पर उनके द्वारा लिखित अनेक ग्रन्थ विशेषांक रूप में प्रकाशित हुए। दयानन्द उवाच (अप्रैल १९७४) परोपकारिणी सभा का इतिहास (अप्रैल १९७५) तथा महर्षि दयानन्द की आत्मकथा विशेषांक विशेष परिश्रम के साथ तैयार किए गये। इसी प्रकार पद्मसिंह शर्मा जन्म शताब्दी पर शर्मा जी की स्मृति में विशेषांक निकाला गया तथा सत्यार्थप्रकाश विशेषांक में महर्षि के इस विश्वविख्यात ग्रन्थ पर महत्त्वपूर्ण सामग्री दी गई। परोपकारी आर्यसमाज के मासिक पत्रों में सर्वोच्च स्थान रखता है। इसकी निर्भीक सम्पादकीय टिप्पणियों, शोधपूर्ण लेखों, स्वाध्याय का पृष्ठ, साहित्य समीक्षा आदि स्तम्भों को पाठक गण रुचि पूर्वक पढ़ते हैं। निश्चय ही आर्यसमाज की पत्रकारिता के इतिहास में परोपकारी मील का पत्थर सिद्ध हुआ है।

समाज सन्देश—भैंसवाल

गुरुकुल भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां से संयुक्त रूप से प्रकाशित होने वाले मासिक मुखपत्र समाजसंदेश का आरम्भ १९५९ में हुआ। इसके सम्पादक आचार्य हरिश्चन्द्र तथा सहायक सम्पादिका आचार्या सुभाषिणी हैं। यदा कदा अनेक विशेषांक भी प्रकाशित हुए हैं। यथा जुलाई अगस्त १९७१ में भर्तृहरि विशेषांक प्रकाशित हुआ जिसमें महाकवि भर्तृहरि के कतिपय पद्यों को अर्थ सहित प्रकाशित किया गया था। आचार्य विष्णुमित्र लिखित सरल संस्कृत में निबद्ध कतिपय चरितात्मक कृतियाँ भी समाज संदेश के विशेषांकों के रूप में प्रकाशित हुईं। उदाहरणार्थ—इन्दिरा चरितम् (फरवरी मार्च १९७२), मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रस्य चरितम् (अप्रैल-मई जून १९७२), श्री योगिराज श्रीकृष्णस्य चरितम् (जनवरी फरवरी मार्च १९७५) इसी प्रकार 'नेहरोः चरितम्' तथा 'कांग्रेसस्यैतिहासम्' भी विशेषांकों के रूप में छपे।

टंकारा पत्रिका—बड़ौदा

महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान टंकारा (जिला राजकोट) में दानवीर सेठ नानजी भाई कालिदास मेहता तथा भारत के सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश-न्यायमूर्ति मेहरचन्द महाजन के पुरुषार्थ से महर्षि स्मारक ट्रस्ट की स्थापना हुई। ट्रस्ट के प्रथम प्रधान न्यायमूर्ति महाजन ही थे तथा मंत्री पद पर पं. आनन्दप्रियजी को निर्वाचित किया गया। ट्रस्ट की मासिक मुख पत्रिका के रूप में टंकारा पत्रिका प्रकाशित करने का निश्चय हुआ। फलस्वरूप पत्रिका का प्रथम अंक कार्तिक २०१६ (नवम्बर १९५९) में निकला। प्रारम्भिक सम्पादक मण्डल में पं. देवप्रकाश पातञ्जल शास्त्री, पं. युधिष्ठिर मीमांसक तथा पं. देवेन्द्रनाथ कर्णिक थे। पत्रिका का उद्देश्य शोध तथा अनुसंधान पूर्ण लेखों को प्रकाशित करना निर्धारित किया गया।

तदनुरूप ही वैदिक गवेषणा विषयक लेखों को पत्रिका में प्राथमिकता दी जाती थी। साथ ही ट्रस्ट की गतिविधियों और प्रवृत्तियों का विवरण भी छपता था।

प्रथम वर्ष के नवें अंक में सम्पादक मण्डल में कर्णिक जी का नाम सम्मिलित नहीं किया गया तथा पातञ्जल जी एवं मीमांसकजी ही पत्रिका के सम्पादक रह गये। प्रकाशन के चतुर्थ वर्ष के १० वें अंक में सम्पादक मण्डल में पं. दिलीपकुमार वेदालंकार का नाम जुड़ गया। वेदालंकारजी का नाम छठे वर्ष के दूसरे अंक तक छपता रहा। तृतीय अंक में मीमांसक जी के साथ पं. धर्मदेव निरुक्ताचार्य का नाम भी सम्पादक रूप में छपने लगा। प्रकाशन के सातवें वर्ष में पञ्चम अंक छपने के बाद टंकारा पत्रिका का प्रकाशन स्थगित कर दिया गया और इस पत्रिका को परोपकारिणी सभा के मुख पत्र परोपकारी में सम्मिलित कर दिया गया। तब से ट्रस्ट के समाचारों को परोपकारी में ही छापा जाने लगा। यद्यपि टंकारा पत्रिका साढ़े सात वर्षों की अनति दीर्घ अवधि तक ही प्रकाशित हुई, परन्तु इस स्वल्प काल में ही प्रौढ़ एवं गवेषणापूर्ण लेखों तथा महत्त्वपूर्ण सामग्री के कारण उसने आर्यसमाज की पत्रकारिता में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया।

परिव्राट्—सिकन्दराबाद

२५ फरवरी १९६० शिवरात्रि के पर्व पर श्री वेंकटश्वेर शास्त्री के सम्पादन में परिव्राट् साप्ताहिक निकला। इसका कार्यालय आर्यसमाज राष्ट्रपति मार्ग सिकन्दराबाद (आंध्र प्रदेश) में था।

आर्य ज्योति—जालन्धर

आर्यसमाज के मूर्धन्य पत्रकार महाशय कृष्ण के सुपुत्र श्री वीरेन्द्र ने आर्यज्योति साप्ताहिक का प्रारम्भ २४ मार्च १९६० से किया। इस पत्र को 'आर्यसमाज में नवजागरण तथा नव क्रान्ति का अग्रदूत' कहा गया था। पत्र के सम्पादक श्री वीरेन्द्र तथा सह सम्पादक श्री रामचन्द्र जावेद थे। पत्र में विभिन्न प्रकार की उपयोगी सामग्री का संग्रह रहता था यद्यपि उसकी प्रमुख नीति आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन विवाद में पत्र के संचालकों की नीति का समर्थन करना ही होता था। पत्र में आर्यसमाज की उपलब्धियों और सफलताओं की विवेचना के साथ साथ अनेक विशिष्ट स्तम्भ भी रहते थे। इस पत्र में एक रोचक लेखमाला आरम्भ की गई थी—मैं आर्यसमाजी कैसे बना ? इसी पत्र में लाला लाजपतराय लिखित स्वामी दयानन्द के जीवन-चरित को धारावाही रूप से छापा गया तथा पंजाबी भाषा में लिखित स्वामी दयानन्द के स्वामी स्वतन्त्रानन्द प्रणीत जीवन चरित को भी कई अंकों में प्रकाशित किया गया। इन पंक्तियों के लेखक की एक लेखमाला 'कुछ ज्वलन्त प्रश्न' शीर्षक से छपती रही जिसमें आर्यसमाज के सम्मुख उपस्थित कतिपय

जटिल किन्तु समाधान योग्य प्रश्नों की विवेचना की जाती थी। खेद है कि आर्य ज्योति दीर्घकाल तक जीवित नहीं रह सकी।

आर्यज्योति का पुनरुज्जीवन एक बार तब हुआ जब आर्य प्रतिनिधि सभा की दलबंदी के परिणामस्वरूप 'आर्य मर्यादा' पंजाब सभा के उन अधिकारियों के हाथों में रहा जो आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली के कार्यालय से सभा का संचालन करते थे तथा श्री वीरेन्द्र का उनसे विरोध था। परन्तु सार्वदेशिक सभा ने पंजाब की प्रान्तीय सभा के उस संगठन को मान्यता प्रदान की थी जिसके अधिकारी दीवान रामशरणदास (प्रधान) तथा श्री वीरेन्द्र (मंत्री) आदि थे। इस सभा का कार्यालय आर्यसमाज ऋषि कुंज पक्का बाग, जालंधर में था। अब श्री वीरेन्द्र के नेतृत्व वाली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने साप्ताहिक मुखपत्र के रूप में पुनः आर्यज्योति का प्रकाशन १९७० में किया। इसका सम्पादन डा. हरिप्रकाश करने लगे जो इस सभा के मंत्री थे। नवीन आर्यज्योति के प्रकाशन के चतुर्थ वर्ष में श्री वीरेन्द्र इस पत्रिका के सम्पादक बन गये क्योंकि अब वे उक्त सभा के मंत्री थे, और प्रचलित परिपाटी के अनुसार सभा मंत्री ही सभा के मुखपत्र का सम्पादक होता है।

वेद विज्ञान—भड़ौच

वेदमित्र ठाकुर के सम्पादन में यह मासिक पत्र १९६०-६१ में प्रकाशित हुआ।

आर्य आत्मा—जालंधर

इस मासिक पत्र का प्रकाशन जालंधर से १९६३ में हुआ। श्री इकबाल कृष्ण 'भूदेव' तथा ऊष्मा शास्त्री इसके सम्पादक थे।

वैदिक युग—दिल्ली

आर्यसमाज के जाने माने विद्वान् तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों तथा आर्ष ग्रन्थों के प्रति अनन्य आस्था रखने वाले आचार्य विश्वश्रवा ने वैदिक युग मासिक का प्रकाशन २०२० वि. (१९६३ ई.) में किया। पत्र का सम्पादन भार एक विद्वन्मण्डल को सौंपा गया जिसमें पं. वैद्यनाथ शास्त्री तथा पं. रामानन्द शास्त्री के नाम थे। प्रधान सम्पादक के रूप में पं. विश्वश्रवा के पुत्र श्री वेदश्रवा विद्यार्थी का नाम छपता था। पत्र की व्यवस्थापिका आचार्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती देवी शास्त्री थीं।

वैदिकयुग में सैद्धान्तिक लेख तो छपते ही थे, आर्यसमाज की वर्तमान दुर्दशा, उसके नेताओं की आपाधापी, विद्वानों का अपमान, आर्यसमाज में विद्यमान संस्थावाद जैसे विषयों पर व्यंग्यात्मक लेख, प्रहसन, कार्टून आदि भी छपते थे। वैदिक युग इन विशेषताओं के कारण अपना वैशिष्ट्य रखता था। खेद है कि पत्र का सम्पूर्ण भार आचार्य विश्वश्रवा ही वहन करते थे और

एक उपदेशक के लिये यह सम्भव नहीं है कि वह पत्र का सारा व्यवस्था-भार स्वयं ही वहन कर सके। अतः दो तीन अंकों के पश्चात् ही वैदिकयुग का अन्त हो गया। पत्र का कार्यालय ११९, गौतमनगर नई दिल्ली में था।

आर्य प्राण—मुंगेर

मुंगेर से श्री बद्रीनारायण शर्मा ने १९६४ में यह पत्र निकाला। विशेष विवरण उपलब्ध नहीं है।

वैश्वानर मासिक

अगस्त १९६४ से पं. बुद्धदेव विद्यालंकार ने इस मासिक पत्र का प्रकाशन किया। सह-सम्पादिका श्रीमती प्रभात शोभा पंडित थीं।

यज्ञयोग ज्योति—रोहतक

महात्मा प्रभु आश्रित जी द्वारा स्थापित वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक की मासिक मुखपत्रिका यज्ञयोगज्योति १९६४ से प्रकाशित हो रही है। महात्मा जी के शिष्य तथा आश्रम के अधिष्ठाता स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती पत्र के मुख्य सम्पादक हैं।[1] इसमें मुख्य रूप से प्रभुआश्रित जी के उपदेश, जीवन चरित तथा संस्मरणों का प्रकाशन होता है। इनके अतिरिक्त महात्मा जी द्वारा प्रचारित यज्ञ पद्धति तथा साधना शिविरों का विवरण भी प्रकाशित होता है।

आर्य राष्ट्र—पीलीभीत

अखिल भारतीय आर्यसभा के मासिक मुखपत्र के रूप में आर्यराष्ट्र का प्रकाशन पीलीभीत (उ. प्र.) से २०२२ वि. में हुआ। इसके सम्पादक श्री रणजीत वानप्रस्थी थे। आर्यसभा के मंत्री श्री इन्द्रदेव इसमें नियमित रूप से लिखते हैं। 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः' यह वैदिक सूक्ति पत्र का उद्देश्य सूचक वाक्य है।

वेद प्रचारक—दिल्ली

वेद प्रचारक मण्डल, देवनगर नई दिल्ली का मासिक मुखपत्र वेद प्रचारक अगस्त १९६५ में प्रारम्भ हुआ। इसके सम्पादक श्री रमेशचन्द्र तथा सहयोगी श्री धनीराम गुप्त थे। पत्र में कुछ साधारण स्तर के लेख, कवितादि तथा पुस्तकों के विज्ञापन होते थे।

राष्ट्र पुरुष—अलीगढ़

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद् अलीगढ़ के साप्ताहिक मुखपत्र के रूप में राष्ट्र पुरुष का प्रकाशन १९६६ में प्रारंभ हुआ। इसकी सम्पादिका श्रीमती विजयलक्ष्मी एम. ए. (धर्मपत्नी आचार्य मित्रसेन) थीं। विभिन्न लेखकों की लघु रचनाओं को विशेषांकों के रूप में भी प्रकाशित किया जाता था।

---

१. स्वामी जी का निधन दि. २५-९-८० को हो गया।

मधुरलोक—दिल्ली

मधुर प्रकाशन दिल्ली के संचालक श्री राजपालसिंह शास्त्री के सम्पादन में मधुरलोक मासिक का प्रकाशन नवम्बर १९६५ में आरम्भ हुआ। मधुरलोक में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित लेख, कविता आदि छपते हैं। समय-समय पर पं. जगत्कुमार शास्त्री, डा. भवानीलाल भारतीय आदि आर्यसमाजी लेखकों की रचनाओं को विशेषांकों के रूप में छापा जाता रहा है। आर्य महासम्मेलन के मॉरिशस अधिवेशन के अवसर पर मधुरलोक ने मारिशस विशेषांक प्रकाशित किया, जिसमें इस द्वीप के जीवन, संस्कृति, प्राकृतिक छटा तथा वहाँ आर्यसमाज के प्रचार कार्य विषयक पठनीय लेखों का सुन्दर संग्रह किया गया था। इसी प्रकार आर्य महासम्मेलन के नैरोबी अधिवेशन के अवसर पर भी विशेषांक निकाला गया।

पुण्यलोक—बिजनौर

वैदिक संस्थान बालावाली (बिजनौर) के संस्थापक स्वामी वेदमुनि परिव्राजक ने सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना के वाहक पुण्यलोक मासिक का प्रकाशन १९६५ में किया। इस मासिक पत्र का सिद्धान्त वाक्य यजुर्वेद का यह मंत्र था—

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥

दिसम्बर १९६५ में पत्र ने अपना राष्ट्रभाषा विशेषांक प्रकाशित किया, जिसमें आर्यसमाज के भाषा विषयक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया गया था। स्वामी वेदमुनि ही पत्र के सम्पादक तथा प्रकाशक थे।

जीवापुर ज्योति (बुलेटिन)

मार्च १९६६ में मेधारथी स्वामी की प्रेरणा से यह मासिक पत्र श्री कन्हैयालाल आर्य तथा जालिमसिंह जाड़ेजा वेदवित् के संयुक्त सम्पादन में निकला।

बनवासी संदेश—वेदव्यास

उड़ीसा में आर्यसमाज का प्रचार न्यून ही है। स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने वेदव्यास (राउर केला) में गुरुकुल वैदिक आश्रम की स्थापना कर वर्षों से उसे धर्म प्रचार का केन्द्र बना रक्खा है। बनवासी संदेश इसी संस्था का मासिक मुख पत्र है। पत्र के सम्पादक पं. आत्मानन्द शास्त्री तथा सहसम्पादक पं. देशबंधु विद्यावाचस्पति हैं। पत्र का प्रकाशन १९६७ के जनवरी मास से आरम्भ हुआ। बनवासी संदेश का सिद्धान्त वाक्य संस्कृत के निम्न श्लोक के रूप में प्रकाशित होता है—

उत्कल-जनता-संस्कृति-रक्षा-बद्धकटिस्तमःस्तोम-हृति-वेशः।
गुरुकुल-सुपानपोषादुदियर्ति बनवासि-संदेशः॥

यो भ्रष्टख्रीष्टमतदीक्षितमज्ञलोकम् संस्कृत्य दूरयति तद्धृदयान्धकारम् ।
श्री वेदव्याससुगुरोः कुलसन्निवेशः सम्पूर्वादिरुदयते वनवासि-संदेशः ।।

इस पत्र में फुटकर लेखों के अतिरिक्त उड़ीसा में आर्यसामाजिक गतिविधियों का विवरण भी प्रकाशित होता है ।

संस्कार पथ—बम्बई

इसे मानवतावादी वैदिक भावनाओं, राष्ट्रीयता, संस्कृति तथा अध्यात्म से सम्बन्धित पत्र कहा गया है । संस्कारपथ का प्रकाशन १९६७ में हुआ । आचार्य विभुदेव शास्त्री पत्र के सम्पादक हैं तथा ६६ खेरवाड़ी बान्द्रा (पूर्व) बम्बई से इसका प्रकाशन होता है । पत्र में हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत के लेख भी छपते हैं ।

दयानन्द संदेश—दिल्ली

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली का मासिक मुख पत्र दयानन्द संदेश सितम्बर १९६७ से प्रारम्भ हुआ । प्रारम्भ में इसके सम्पादक पं. राजेन्द्रनाथ शास्त्री तथा सह सम्पादक पं. सुदर्शनदेव आचार्य थे । परन्तु पत्र कुछ काल तक निकल कर बंद हो गया । पत्र का पुनः प्रकाशन नवम्बर १९७३ में पं. राजवीर शास्त्री के सम्पादन में हुआ । ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित हुए यजुर्वेद-भाष्य-भास्कर आदि ग्रन्थ दयानन्द संदेश में धारावाही प्रकाशित हुए । समय-समय पर पत्र के अनेक विशेषांक भी छपे, जिनमें सृष्टि संवत् विशेषांक (अप्रैल मई १९७४) काल-अकाल मृत्यु विशेषांक (१ जुलाई-अगस्त १९७५) वेदार्थ समीक्षा विशेषांक (नवम्बर-दिसम्बर १९७६) आदि उल्लेखनीय हैं ।

राजधर्म—दिल्ली, रोहतक, चण्डीगढ़

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महत्त्वाकांक्षी नेताओं ने अपने उग्र विचारों को अभिव्यक्ति देने हेतु राजधर्म पाक्षिक पत्र निकाला । प्रो. श्यामराव (अब स्वामी अग्निवेश) के सम्पादन में राजधर्म का प्रकाशन १९६८ में आर्य समाज मन्दिरमार्ग नई दिल्ली से हुआ । कायाकल्प (स्वामी समर्पणानन्द) अमरशहीद रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा, जीवनसंग्राम (इन्द्र विद्यावाचस्पति), तथा वैदिक समाजवाद (स्वामी अग्निवेश) आदि कृतियाँ राजधर्म के विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुईं । कालान्तर में राजधर्म का प्रकाशन रोहतक से होने लगा । बीच-बीच में अनेक व्यवधान भी आये और प्रकाशन स्थगित करने की नौबत आई । स्वामी अग्निवेश ने १९७७ के चुनावों के पश्चात् इस पत्र को चण्डीगढ़ से निकाला ।

जन ज्ञान—नई दिल्ली

'आर्यजनता का अपना प्रतिनिधि प्रकाशन' जनज्ञान मासिक का प्रथम अङ्क १५ मई १९६८ को नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ । महर्षि दयानन्द योगाश्रम टंकारा (गुजरात) के संचालक पं. भगवानदेव शर्मा इसके सम्पादक

थे। पत्र का प्रारम्भ पं. भारतेन्द्रनाथ के संरक्षण-निर्देशन में हुआ। जब भारतेन्द्रनाथ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुखपत्र आर्योदय के सम्पादक पद से निवृत्त हुए तो उन्होंने अपनी कार्य कुशलता का समन्वित परिचय जनज्ञान को आर्यसमाज का लोकप्रिय मासिक बनाने में दिया। कुछ काल के पश्चात् जनज्ञान को नव गठित दयानन्द संस्थान का मुखपत्र बना दिया गया और श्रीमती राकेश रानी पत्र की सम्पादिका बनीं। जनज्ञान ने समय-समय पर अनेक उत्कृष्ट विशेषांक प्रकाशित कर लोकप्रियता अर्जित की है। इनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं—शक्तिरहस्य अर्थात् मांस भोजन मीमांसा ले. पं. यशःपाल सिद्धान्तालंकार (मई १९७५), कर्णवास में महर्षि दयानन्द के संस्मरण—डा. भवानीलाल भारतीय (दिसम्बर १९७५), आर्यसमाज स्थापना शताब्दी अङ्क (अप्रैल १९७५), उपनिषद् संग्रह—नारायण स्वामी (अक्टूबर १९७६), मेरे पिता—इन्द्र विद्यावाचस्पति (दिसम्बर १९७६), पाखण्ड मत विवेचन (सत्यार्थ-प्रकाश के ११वें समुल्लास की व्याख्या) डा. भवानीलाल भारतीय (मार्च १९७७), ब्रह्मपुराण दिग्दर्शन-शिवपूजनसिंह कुशवाहा—(अप्रैल १९७७), ईश्वर—संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की दृष्टि में—क्षितीश वेदालंकार (मार्च १९७८), महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित समाज व्यवस्था—प्रशान्तकुमार वेदालंकार (मई १९७८), लिंगपुराण की आलोचना—भीमसेन विद्यालंकार (जुलाई १९७८) महर्षि दयानन्द के जीवनी परक हिन्दी के महाकाव्य—ज्योत्स्ना एम. ए. (अक्टूबर १९७८)

वेद स्वाध्याय—नई दिल्ली

वेद स्वाध्याय का प्रकाशन देवनगर स्वाध्याय मण्डल (पंजीकृत) करौल बाग नई दिल्ली से २०२६ वि. (१९६९) में हुआ। पत्र के सम्पादक मण्डल में डा. वेदमित्र, पं. रामगोपाल शास्त्री तथा कु. स्वर्णकान्ता के नाम छपते थे। पत्र में कृषि जगत्, संसारचक्र, बालजगत् आदि स्तम्भ रहते थे।

त्रैतवाद—कांकिनाडा (पश्चिमी बंगाल)

वैदिक आचार-विचार प्रसारक त्रैतवाद मासिक कांकिनाडा (जिला चौबीस परगना पश्चिमी बंगाल) से १९६९ में प्रकाशित हुआ। पत्र के प्रधान सम्पादक स्वामी नित्यानन्द आयुर्वेद शास्त्री थे। यह दीर्घजीवी नहीं हुआ।

आर्यजीवन—हैदराबाद (आंध्रप्रदेश)

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण का मासिक मुखपत्र 'आर्यजीवन' हैदराबाद से पं. नरेन्द्रजी के सम्पादन में फरवरी १९६९ में निकलने लगा। इसमें उच्चस्तरीय लेख छपते थे। कालान्तर में विजयवीर विद्यालंकार सह-सम्पादक के रूप में नियुक्त हुए। अपने चार वर्षों के लघु जीवनकाल में आर्य-जीवन के अनेक विशेषांक प्रकाशित हुए जिनमें गणतन्त्र अंक (१९७०) बंगलादेश विशेषांक (अगस्त १९७१) तथा शिक्षा विशेषांक (नवम्बर, दिसम्बर

१९७१) उल्लेखनीय हैं। विशेषांकों के प्रकाशन में श्री गुरुचरणदास सक्सेना पत्रकार का सहयोग प्राप्त होता था। अगस्त-सितम्बर १९७२ के संयुक्तांक के बाद पत्र का प्रकाशन बंद हो गया।

संस्कृति संदेश—शुक्रताल (उत्तर प्रदेश)

वैदिक योगाश्रम (गुरुकुल शुक्रताल) मुजफ्फरनगर के मासिक मुख पत्र के रूप में संस्कृति संदेश का प्रकाशन जनवरी १९७० में हुआ। पत्र के सम्पादक स्वामी आनन्दवेश (पूर्वनाम बलदेव नैष्ठिक) तथा सह सम्पादक श्री रवीन्द्रकुमार एम. ए. हैं। पत्र के अनेक विशेषांक उसकी विशिष्ट उपलब्धि हैं। विशेषांकों के रूप में सम्पादक स्वामी आनन्दवेश के ही अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं।

राष्ट्र जागरण—बड़ौदा

प्रो. रामनारायण शास्त्री के सम्पादन में राष्ट्रजागरण मासिक का प्रकाशन १९७० (२०२७ वि.) में बड़ौदा से हुआ। पत्र के सह सम्पादकों में पं. रामचन्द्र स्नातक, मोतीलाल मिश्र तथा सभाजित मिश्र का नाम छपता था। पत्र को शिक्षा, संस्कृति, चरित्र एवं राष्ट्रवाद का प्रचारक पत्र कहा गया था। 'भारतीय संस्कृति बचाओ' तथा 'विदेशी पादरियों भारत छोड़ो' शीर्षक विशेषांकों में उपयोगी, पठनीय सामग्री का संग्रह किया गया।

आर्य विजय—बम्बई

आर्यसमाज फोर्ट बम्बई का मासिक मुख पत्र आर्यविजय १९७० में प्रकाशित हुआ। पत्र की सम्पादिका श्रीमती सुमित्रा अमीन एम. ए. हैं। आर्य-विजय में श्री मेवालाल गुप्त लिखित एक धारावाही लेखमाला छपी जिसमें आर्यसमाज से सम्बन्धित क्रान्तिकारियों के चरित्र को प्रस्तुत किया गया था। सम्प्रति पं. रुद्रदेव शास्त्री सहसम्पादक हैं।

आर्यवीर—बम्बई

आर्यवीर दल बम्बई के मासिक मुखपत्र के रूप में आर्यवीर का जन्म जनवरी १९७१ में हुआ। सम्पादक थे श्री चन्द्रगुप्त आर्य तथा परामर्श-मण्डल में श्री सत्यकाम विद्यालंकार, पं. महेशचन्द्र शास्त्री तथा पं. वेदव्रत शास्त्री के नाम प्रकाशित होते थे। पत्र में आर्यवीरदल की प्रादेशिक गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य सामग्री भी रहती थी। पत्र का कार्यालय ३०३ भिमानी स्ट्रीट माटुंगा बम्बई था।

आर्यों का त्रैतवाद—ज्वालापुर

इसे त्रैतवादीय आर्यपीठ हरद्वार द्वारा संचालित मासिक पत्र कहा गया है। पत्र के सम्पादक डा. रामेश्वरदयाल गुप्त हैं। पत्र का प्रकाशन १९७१ में हुआ। इसमें मुख्यतः गुप्त जी की ही रचनायें प्रकाशित होती हैं। त्रैतवाद की साधारण प्रतिज्ञा, ब्रह्मयज्ञ की व्याख्या, देवयज्ञ और उसकी

वैज्ञानिकता, निराकार की ही स्तुति, निराकार की स्तुति में गेय भजनों की अनुक्रमणिका, शिव और विष्णु का इतिहास आदि सम्पादक द्वारा लिखित रचनायें विशेषांकों के रूप में छपीं।

आत्मशुद्धि पथ—बहादुरगढ़

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुर गढ़ (रोहतक-हरयाणा) का मासिक मुखपत्र २०२८ वि. (१९७१ ई.) में प्रारंभ हुआ। इसके सम्पादक ब्रह्मचारी धर्मवीर संतोषी थे। कालान्तर में वे संन्यास आश्रम में दीक्षित हुए और धर्ममुनि परिव्राजक के नाम से सम्पादन करते रहे। स्वस्थ जीवन रहस्य अंक (मार्च १९७७) तथा वेद व्यावहारिक हैं (नवम्बर १९७७) आदि विशेषांक छपे हैं।

धर्म-बोध—बम्बई

आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई के भूतपूर्व मंत्री श्री परशुराम रामजी दुधात ने धर्मबोध मासिक का सम्पादन एवं प्रकाशन अप्रैल १९७१ से प्रारंभ किया। इसमें हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी तथा गुजराती के लेख भी रहते थे। श्री दुधात ने स्वामी दयानन्द का गुजराती भाषा में जो जीवन चरित लिखा था उसके कुछ अंश धारावाही रूप में धर्मबोध में छपे। पत्र का प्रकाशन-स्थल विले पार्ले (पश्चिम) बंबई था।

समिधा—दिल्ली

आर्य समाज लोदी रोड (महाशय कृष्ण हॉल) जोरबाग नई दिल्ली से मासिक समिधा का प्रकाशन अगस्त १९७२ में हुआ। पत्र का सम्पादन पं. सत्यपाल शर्मा तथा आशानन्द वर्मा करते थे। इसे आर्ष भारती अनुसंधान पत्रिका कहा गया है। पत्र में वेद व्याख्या के अतिरिक्त रामायण रहस्य, गीतावगाहन आदि स्तंभ भी रहते थे।

वैदिक सेवा आश्रम—बाजेगांव नांदेड़

वैदिक सेवा आश्रम बाजेगांव (नांदेड़) का पाक्षिक मुखपत्र संस्कृत, हिन्दी तथा मराठी भाषाओं में प्रकाशित हुआ। पत्र का प्रकाशन काल १९७२ है। संभवत: तीन भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाला आर्य-समाज का यह एक मात्र पत्र था। इसकी सम्पादिका सौ. कमल सुभाष कंधारकर तथा सहसम्पादक प्रा. कुशलदेव शास्त्री थे। कार्यकारी सम्पादक पं. मनोहर शास्त्री थे।

वैदिक विजय—कालवा (हरयाणा)

महाविद्यालय गुरुकुल कालवा (जिला जींद हरयाणा) के मासिक मुखपत्र के रूप में वैदिक विजय का प्रकाशन १५ सितम्बर १९७२ को हुआ। पत्र का सम्पादन पं. बलदेव आचार्य तथा विजयकुमार 'विवेकी' ने किया। समय-समय पर अनेक विशेषांक भी निकले जिनमें स्वास्थ्य-विनाशक तम्बाकू

(जुलाई १९७३) आर्य राष्ट्र का निर्माण क्यों और कैसे (अप्रैल १९७३) तथा संध्या के दो मंत्रों की व्याख्या आदि उल्लेखनीय हैं।

सेवाश्रम—नई दिल्ली

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ का मासिक मुख पत्र सेवाश्रम श्री ओमप्रकाश त्यागी के सम्पादन में मार्च १९७२ में प्रकाशित हुआ। पत्र में सेवाश्रम की गतिविधियों तथा भारत के पूर्वांचल में किये जाने वाले सेवा कार्यों का विवरण प्रकाशित होता था।

आर्य व्यवहार—दिल्ली

सार्वदेशिक प्रकाशन, दिल्ली के संचालक श्री चतुरसेन गुप्त ने आर्य-व्यवहार नामक मासिक का प्रकाशन नवम्बर १९७३ में प्रारंभ किया।

आर्य गजट—दिल्ली

पंजाब के पुराने पत्र आर्यगजट को वर्षों के अन्तराल के पश्चात् श्री दुर्गादास शर्मा ने मासिक रूप में दीवान हाल दिल्ली से दिसम्बर १९७३ में पुनः प्रकाशित किया। पत्र के आदरी सम्पादक महात्मा आर्य भिक्षु हैं परन्तु सम्पादन कार्य स्वयं शर्माजी करते हैं। प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रो. रामविचार, पं. जगत् कुमार शास्त्री तथा डा. भवानीलाल भारतीय आदि आर्यसमाज के प्रमुख लेखक आर्यगजट में नियमित रूप से लिखते हैं। आर्यगजट ने इस अवधि में अनेक विशेषांक भी छापे हैं। यथा आर्य समाजस्थापना शताब्दी विशेषांक (दिसम्बर १९७३), ऋषिबोध विशेषांक (फरवरी १९७४) ब्र. अखिलानन्द स्मृति अंक (अगस्त १९७४) दीपावली विशेषांक नवम्बर (१९७४) आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह अंक (अप्रैल १९७५) आदि।

सर्वहितकारी—रोहतक

साप्ताहिक सर्वहितकारी का प्रकाशन पं. वेदव्रत शास्त्री के सम्पादन में १९७४ में हुआ। कालान्तर में हरयाणा में पृथक् आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हो जाने पर इस पत्र को सभा के मुखपत्र के रूप में स्वीकार कर लिया गया। अब यह पत्र दयानन्दमठ रोहतक से प्रकाशित होता है। इसमें वैदिक सिद्धान्तों से सम्बन्धित लेखों के अतिरिक्त सभा की सूचनायें तथा समाजों के समाचार भी छपते हैं। श्रावणी, ऋषिबोधोत्सव, दीपावली आदि पर्वों पर विशेषांक भी प्रकाशित होते हैं।

आर्य भूमि—आमसेना (उड़ीसा)

गुरुकुल आमसेना (कालाहांडी-उड़ीसा) के मासिक मुखपत्र के रूप में आर्य भूमि का प्रकाशन नवम्बर १९७४ (कार्तिक २०३२ वि.) में हुआ। पत्र का सम्पादन आचार्य धर्मदेव स्नातक (प्रधान सम्पादक) तथा ब्र. अग्निमित्र (सम्पादक) करते हैं। ब्र. योगेन्द्र कुमार सहसम्पादक हैं। 'अहं भूमि अददाम आर्याय' इस वैदिक सूक्ति को पत्र ने अपने सिद्धांत वाक्य के रूप में स्वीकार

किया है। पत्र अत्यन्त क्षीण कलेवर का है तथा पाठ्य सामग्री भी अत्यन्त सामान्य कोटि की होती है।

कुल भूमि—ग्राम सेना (उड़ीसा)

गुरुकुल ग्रामसेना (उत्कल) का मुखपत्र आर्य भूमि ही कुलभूमि के नाम से अपने प्रथम वर्ष के १२वें अंक के रूप में प्रकाशित हुआ। अब इसे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्कल प्रदेश के मासिक मुखपत्र की संज्ञा प्राप्त है। सम्पादक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (पूर्व नाम धर्मदेव स्नातक) है। पत्र के कलेवर तथा सामग्री में कुछ खास परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं हुआ, यद्यपि कुलभूमि एक प्रान्तीय सभा के मुखपत्र के रूप में चल रहा है।

आर्यधन—नई दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उत्पन्न हुए विवाद के कारण स्वामी इन्द्रवेश तथा स्वामी अग्निवेश ने अपने पक्ष का प्रतिपादन करने के लिये नई दिल्ली से १९७५ में आर्यधन साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारंभ किया। पत्र अपने आपको आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रवक्ता कहता था। वस्तुतः वह उसी गुट का प्रवक्ता था जिसके नेता वेशद्वय थे। पत्र में विवादास्पद तथा आक्षेपपूर्ण लेखों की प्रधानता रहती थी। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी के उपलक्ष्य में पत्र ने अपना एक विशेषांक भी प्रकाशित किया।

क्रान्तिधर्मी—जयपुर

आर्यसमाज में रहते हुए साम्यवादी विचारधारा को भी अंगीकार करने वाले एक उत्साही युवक श्री जयदेव अनल ने आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार जयपुर से क्रान्तिधर्मी साप्ताहिक का प्रकाशन १९७५ में किया। पत्र के सम्पादक व प्रकाशक स्वयं अनल ही थे। पत्र में क्रान्तिकारी विचारधारा से युक्त लेख छपते थे तथा आर्यसमाज से सम्बन्ध रखने वाले आतंकवादियों, क्रान्तिकारियों और शहीदों के चरित्रों को प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया जाता था।

समिधाभा—नई दिल्ली

आर्ष भारती प्रतिष्ठान, नई दिल्ली ने समिधाभा का प्रकाशन १९७५ में किया। इसके प्रधान सम्पादक श्री एस. एल. वर्मा थे तथा सम्पादक मण्डल में श्री एम. पी. अरोड़ा, श्री ओमप्रकाश वर्मा तथा पं. दीनानाथ सिद्धान्तालंकार के नाम छपते थे। विभिन्न प्रकार की रोचक सामग्री देकर पत्र को लोकप्रिय बनाने की चेष्टा की गई। वेद मंत्रों की व्याख्या, गीता व्याख्या आदि नियमित रूप से छपते थे।

योग मन्दिर—नई दिल्ली

महर्षि दयानन्द योगाश्रम सोसाइटी (पंजीकृत) के मासिक पत्र के रूप में 'योगमंदिर' महात्मा आनन्द स्वामीजी की सहमति तथा आशीर्वाद से १९७६

में प्रकाशित हुआ। पत्र के सम्पादक श्री भगवानदेव शर्मा तथा सहायक श्री राजीवलोचन हैं। पत्र का कार्यालय २ पार्क एवेन्यू महारानी बाग नई दिल्ली में है। पत्र में योगविद्या विषयक सामग्री की प्रधानता रहती है। महात्मा आनन्द स्वामी तथा पं० प्रकाशवीर शास्त्री की स्मृति में योग मन्दिर ने सचित्र सामग्री से भरपूर उपयोगी विशेषांक प्रकाशित किये।

वैदिकरवि—इन्दौर

मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुखपत्र के रूप में वैदिक रवि का प्रथम बार उदय २०३४ वि. में हुआ। पत्र के अधिष्ठाता पं० राजगुरु शर्मा, प्रधान सम्पादक श्री इन्द्रप्रकाश गांधी तथा सम्पादक श्री जगदीशप्रसाद वैदिक हैं। पत्र का कार्यालय आर्यसमाज संयोगितागंज, इन्दौर में रक्खा गया। पत्र में सामान्य लेखों के अतिरिक्त सभा की सूचनायें तथा आर्यसमाजों के समाचार आदि रहते हैं।

आर्य सैनिक—जयपुर

पंजाब की ही भांति राजस्थान में भी आर्यप्रतिनिधि सभा के चुनावों को लेकर जब वाद-विवाद उत्पन्न हुआ तो स्वामी शक्तिवेश ने अपने कुछ साथियों के सहयोग से समानान्तर आर्यप्रतिनिधि सभा बनाई। इसका कार्यालय तिलक नगर जयपुर में रक्खा गया और आर्यसैनिक का पाक्षिक प्रकाशन १६ जनवरी १९७६ (माघ २०३३ वि.) से होने लगा। प्रधान-सम्पादक स्वामी शक्तिवेश, सम्पादक श्री दिलीपसिंह तथा सह सम्पादक श्री यशपाल 'यश' बने। कुछ अंकों के पश्चात् पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया।

वैदिक आदर्श—हैदराबाद

पं० विजयवीर विद्यालंकार के सम्पादन में वैदिक आदर्श मासिक का प्रकाशन जनवरी १९७७ में हैदराबाद से होने लगा। पत्र ने स्वामी श्रद्धानन्द की बलिदान अर्द्ध शताब्दी पर एक सुन्दर विशेषांक प्रकाशित किया।

आर्यसमाज—कलकत्ता

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के मासिक मुखपत्र के रूप में आर्यसमाज नामक मासिक पत्र लगभग २०–२२ वर्ष पूर्व पं० अवधबिहारीलाल एम. ए. बी. एल. के सम्पादन में प्रकाशित होता था। कालान्तर में यह बंद हो गया। इसका पुनः प्रकाशन अगस्त १९७७ (श्रावण २०३३ वि.) में किया गया। सम्पादक सभा के मन्त्री श्री सोमदेव गुप्त हैं तथा कार्यालय शंकर घोषलेन कलकत्ता।

वेद ज्योति—लखनऊ

वेद ज्योति का सम्पादन और प्रकाशन कई वर्ष पूर्व आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने रायबरेली से किया था। कालान्तर में यह पत्र बन्द हो गया। विश्ववेद परिषद् की पत्रिका के रूप में मासिक वेदज्योति का पुनः प्रकाशन

१९७७ से होने लगा। पं० वीरेन्द्र शास्त्री (अब वानप्रस्थी वीरेन्द्र मुनि शास्त्री) पत्र के सम्पादक हैं तथा सी. ८१७ महानगर लखनऊ पत्र का कार्यालय है। इसमें मुख्यतया शास्त्रीजी के ही लेख रहते हैं। अनेक शास्त्रीय विषयों से सम्बधित लेखों के साथ-साथ वेदज्योति ने कुछ विशेषांक भी प्रकाशित किये हैं जिनमें सामवेद तथा उसका संगीत (ज्येष्ठ २०३६ वि.) तथा संस्कृतवाक्यप्रबोध (विशिष्ट सम्पादित संस्करण) आदि उल्लेखनीय हैं। वेद के जिज्ञासुओं के लिये वेदज्योति में पर्याप्त पठनीय सामग्री रहती है।

आर्य संदेश—नई दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का साप्ताहिक मुखपत्र आर्य संदेश का प्रकाशन अक्टूबर १९६७ से आरम्भ हुआ। सभा के मन्त्री श्री सरदारीलाल वर्मा का नाम सम्पादक के रूप में प्रकाशित होता है। प्रकाशन के प्रारम्भिक दिनों में पं० सत्यानन्द शास्त्री ने सहसम्पादक का कार्य किया। कुछ समय पश्चात् श्री ओमप्रकाश वर्मा तथा सारस्वतमोहन मनीषी सहसम्पादक रहे और अब श्री विद्यासागर विद्यालंकार पत्र के सम्पादक हैं। लेख, कविता आदि के साथ दिल्ली नगर की आर्यसमाजों के समाचार और सूचनायें प्रकाशित होती हैं। पत्र का कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली में है।

आर्य विश्व—नई दिल्ली

प्रवासी भारतीयों के लिये मासिक बुलेटिन के रूप में आर्यविश्व का प्रकाशन हुआ। इसका एक ही अंक हमारे देखने में आया है जो दिसम्बर १९७७ में प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक डा० ओमप्रकाश शर्मा एम.ए.डी. फिल. हैं। शायद यह पत्र दीर्घजीवी नहीं हो सका क्योंकि कोई अन्य अंक अभी तक दृष्टि-पथ में नहीं आया है। पत्र का कार्यालय १५ इन्स्टीट्यूशनल एरिया लोधी रोड नई दिल्ली में था।

वेदमार्ग—अजमेर

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थल स्मारक न्यास अजमेर का मासिक मुख-पत्र वेदमार्ग जनवरी १९७८ से प्रकाशित होने लगा। प्रारम्भ में सम्पादक मण्डल में न्यास के तीन ट्रस्टियों के नाम प्रकाशित होते थे—श्री भूदेव शास्त्री, दीपचन्द बेलानी तथा रामस्वरूप रक्षक। कुछ मास पश्चात् न्यास के भूतपूर्व मन्त्री श्री चंचलदास आर्य सेवक का नाम सम्पादक के स्थान पर प्रकाशित होने लगा। जून १९७९ से न्यास के वर्तमान मन्त्री श्री दयालदास आर्य सम्पादक पद पर कार्य कर रहे हैं। पत्र में न्यास की गतिविधियों और प्रवृत्तियों के अतिरिक्त अन्य पठनीय सामग्री भी रहती है।

वैदिक धर्म—जालंधर छावनी

प्राचार्य रामचन्द्र जावेद ने पंजाब के सर्वप्रिय, धार्मिक, सामाजिक एवं

पारिवारिक पाक्षिक पत्र के रूप में वैदिक धर्म का सम्पादन व प्रकाशन जालंधर छावनी से २१ सितम्बर १९७८ से आरम्भ किया। तब से पत्र निरन्तर प्रकाशित हो रहा है। वैदिक धर्म में सम्पादकीय तथा अन्य लेखों के अतिरिक्त महिला संसार, बाल सभा, सामाजिक जगत् आदि स्तम्भ भी रहते हैं। पत्र के सहसम्पादक अशोककुमार एम. ए. हैं।

महर्षि संदेश—गाजियाबाद

आर्य समाज, भारत नगर गाजियाबाद का मासिक मुख पत्र महर्षि संदेश नवम्बर १९७८ से प्रकाशित हो रहा है। इसके सम्पादक श्री वेदभानु आर्य तथा प्रबन्ध सम्पादक श्री विश्वनाथ विद्यालंकार हैं।

संस्कार युग—दिल्ली

जनवरी १९७९ से प्रकाशित होने वाले इस मासिक पत्र को 'अन्तरराष्ट्रीय स्तर के हिन्दी मासिक' की संज्ञा दी गई है, परन्तु अब तक प्रकाशित २-३ अंकों को देखने से पत्र में कोई विशिष्ट अन्तरराष्ट्रीयता दृष्टिगोचर नहीं हुई। पत्र के सम्पादक रामसुभग सी. आचार्य तथा प्रबन्ध सम्पादक श्री वेदमूर्ति हैं। जो वैदिक संस्कार ब्यूरो के अध्यक्ष भी हैं पत्र इसी ब्यूरो का मुखपत्र है तथा माडल टाउन दिल्ली से प्रकाशित होता है। भरती की सामग्री से पत्र के कलेवर को पूरित किया जाता है।

आर्य पथ—नई दिल्ली

अगस्त १९८० से श्री विद्याप्रकाश सेठी के सम्पादन में मासिक आर्य-पथ प्रकाशित हुआ। पत्र को सामाजिक चरित्र-निर्माण तथा आध्यात्मिक समन्वय हेतु मार्गदर्शक कहा है। पत्र का कार्यालय विजय चौक, कृष्णा-नगर दिल्ली ५१ है।

□□

परिशिष्ट—१

भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पत्र

हिन्दी से भिन्न भारतीय भाषाओं में भी आर्यसमाज ने अपनी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया है। यदि संख्या की दृष्टि से देखा जाय तो हिन्दी में प्रकाशित होने वाले पत्र सर्वाधिक हैं। तत्पश्चात् उर्दू एवं अंग्रेजी में प्रकाशित पत्र आयेंगे। इसके पश्चात् ही आधुनिक भारतीय भाषाओं में छपने वाले पत्रों की गणना हो सकेगी। भाषा वैज्ञानिकों ने भारत के भाषा समूह को आर्यभाषा वर्ग तथा द्रविड़भाषा वर्ग के रूप में विभाजित किया है। आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित पत्रों में आर्यभाषा वर्ग की भाषाओं के पत्रों की संख्या द्रविड़भाषा वर्ग की भाषाओं के पत्रों से अधिक रही है। इसका कारण भी स्पष्ट है। आर्यसमाज आन्दोलन का प्रमुखता से प्रचार उत्तर भारत में और मुख्यत: हिन्दी भाषी प्रान्तों में ही हुआ। दक्षिण भारत में (केवल आंध्र के कुछ क्षेत्र को छोड़कर) उसकी स्थिति दुर्बल ही रही है।

पूर्ण जानकारी के अभाव में हिन्दी से भिन्न भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पत्रों का सम्पूर्ण विवरण एकत्र करना कठिन है, तथापि जो कुछ विवरण हम प्राप्त कर सके हैं उसे देने का यहाँ प्रयास किया गया है। आर्य-भाषा वर्ग में गुजराती में प्रकाशित होने वाले पत्रों की संख्या अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक रही। इसके पश्चात् बंगला और मराठी का नम्बर आता है। तेलुगु और मलयालम, कन्नड़ तथा तमिल में प्रकाशित होने वाले पत्रों की संख्या नगण्य है।

संस्कृत पत्र-पत्रिकायें

आर्यसमाज का संस्कृत के प्रति अनुराग स्वाभाविक है। यदा-कदा संस्कृत में भी पत्र निकाले गये, जिनका उपलब्ध विवरण इस प्रकार है—

ऊषा—गुरुकुल कांगड़ी

गुरुकुल कांगड़ी के प्रथम स्नातक श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार (स्वामी श्रद्धानन्द के बड़े पुत्र) के सम्पादन में संस्कृत मासिक पत्रिका ऊषा का प्रकाशन १९१३ में हुआ। १९१६ में पत्रिका बंद हो गई, पुन: १९१८ में चालू हुई और १९२० तक निकलती रही। इस काल में इसके सम्पादक पं. शशिभूषण विद्यालंकार रहे। ४८ पृष्ठों के कलेवर की इस पत्रिका में काव्य, गीत, समीक्षा, निबन्ध, शास्त्रीय चर्चा आदि विषय छपते थे। गुरुकुल के अध्यापकों तथा

छात्रों की संस्कृत रचनायें पत्रिका में प्रमुख स्थान प्राप्त करती थीं। प्रयाग से प्रकाशित होने वाली संस्कृत मासिक पत्रिका 'शारदा' ने ऊषा की प्रशस्ति में लिखा था—"इमामुषामवलोक्य सञ्जातः कोऽपि मधुरो हृदि मनोरथाङ्कुरः"

देववाणी—(हस्तलिखित) गुरुकुल कांगड़ी

गुरुकुल कांगड़ी के संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में 'संस्कृतोत्साहिनी' नाम की सभा १९१८ में स्थापित हुई थी। इस सभा की मासिक मुखपत्रिका देववाणी हस्तलिखित रूप में १९१८ में ही निकलने लगी। संस्कृत की सरस रचनायें इसमें स्थान प्राप्त करती थीं। द्रव्याभाव के कारण पत्रिका मुद्रित होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सकी। देवभिक्षु उपाधि धारण करने वाले श्री भीमसेन इसके सम्पादक थे।

गुरुकुल पत्रिका—गुरुकुल कांगड़ी

गुरुकुल कांगड़ी की मासिक मुखपत्रिका गुरुकुल पत्रिका यों तो १९४८ में ही निकलने लगी थी, किन्तु १९६० में इसे पूर्णतया संस्कृत पत्रिका के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। उस समय इसके सम्पादक पं. धर्मदेव विद्या-मार्तण्ड थे। १९६३ में इसे पुनः संस्कृत हिन्दी की समन्वित पत्रिका का रूप दे दिया गया तथा सम्पादन कार्य पं. भगवद्दत्त वेदालंकार को दिया गया। पत्रिका में वेद, दर्शन, धर्म, अध्यात्म आदि विविध विषयों पर रोचक एवं ज्ञान-वर्धक सामग्री संस्कृत के माध्यम से प्रस्तुत की जाती थी। गुरुकुल के छात्रों को भी अपनी लेखन प्रतिभा को प्रकाशित करने का असवर दिया जाता था। निबन्ध, कविता, कहानी, एकांकी, समालोचना आदि विभिन्न साहित्यिक विधायें पत्रिका में स्थान प्राप्त करती थीं। इसके अतिरिक्त नवप्रकाशित ग्रन्थों की समीक्षा तथा सामयिक समस्याओं पर विचारोत्तेजक सम्पादकीय टिप्पणियां भी रहती थीं। समय-समय पर पत्रिका ने विभिन्न विषयों पर विशेषांक भी प्रकाशित किये जिनमें विष्णु अंक (भाद्रपद २०२१ वि.) शिक्षा अंक (फाल्गुन चैत्र २०२० वि.), वेदांक (भाद्रपद २०२२) वेद विमर्शांक (भाद्रपद २०२३ वि.) वेदांक (भाद्रपद २०२४ वि.) तथा वेद दर्शनांक (भाद्रपद २०२५ वि.) आदि उल्लेखनीय हैं। इस पत्रिका में डा. मंगलदेव शास्त्री रचित रश्मिमाला, द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री कृत स्वराज्य विजय महाकाव्य, इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखित भारतैतिह्यम्, पं. जयदत्त शास्त्री कृत सिद्धान्तशतकम् तथा श्री चैतन्य रचित चैतन्यनीतिशतकम् आदि अनेक उत्कृष्ट संस्कृत ग्रन्थ धारावाही रूप से छपे हैं।

भारतोदय—गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का मासिक मुखपत्र भारतोदय १९६१ से संस्कृत तथा हिन्दी के द्विभाषी पत्र के रूप में छपने लगा। इसका सम्पादन डा. हरिदत्त शास्त्री करते थे। भारतोदय में महाविद्यालय के छात्रों की संस्कृत

रचनाओं के अतिरिक्त अन्य संस्कृत विद्वानों के महत्त्वपूर्ण लेख कवितायें तथा अन्य रचनायें छपती रही हैं।

विद्वत्कला (हस्तलिखित)—ज्वालापुर

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के उच्च श्रेणी के छात्रों ने विद्वत्कला परिषद् की स्थापना की थी। यह पत्रिका उक्त परिषद् की हस्तलिखित मासिक पत्रिका थी। इसमें छात्रों की रचनाओं को स्थान मिलता था। ब्रह्मचारी शिवदत्त शर्मा और ब्रह्मचारी सच्चिदानन्द शर्मा इसके सम्पादक थे।

अमृतलता—पारड़ी (गुजरात)

स्वाध्याय मण्डल से पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर के प्रधान सम्पादन में संस्कृत की त्रैमासिक पत्रिका अमृतलता का प्रकाशन २०२१ वि. (१९६४) में आरम्भ हुआ। पत्रिका के परामर्शदातृमण्डल में डा. वासुदेव शरण अग्रवाल, डा. मंगलदेव शास्त्री तथा डा. सुधीरकुमार गुप्त जैसे उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् थे। सम्पादन कार्य पं. श्रुतिशील शर्मा करते थे। अमृतलता में गम्भीर शास्त्रीय विवेचनात्मक निबन्धों के अतिरिक्त ललित निबन्ध, एकांकी नाटक तथा लघु कवितायें भी प्रकाशित होती थीं। पं. भगवद्दत्त वेदालंकार लिखित ऋषि विवेचनम्, जनमेजय विद्यालंकार लिखित श्वेताश्वतरोपनिषद्, प्रा. भवानीलाल भारतीय लिखित संस्कृत-भाषा-साहित्य-क्षेत्रे आर्यसमाजस्य दातृत्वम् आदि लेख उल्लेखनीय हैं। पं. जवाहरलाल नेहरू के निधन पर अमृतलता ने कार्तिक २०२१ का अंक श्री नेहरू विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया। सातवलेकर जी के निधन के उपरान्त पत्रिका बंद हो गई।

गुजराती पत्र

आर्यप्रकाश—बम्बई

पृथ्वी लोक की प्रथम आर्यसमाज बम्बई की थी। इसका मासिक मुखपत्र आर्यप्रकाश लगभग १९४१ वि. में प्रकाशित हुआ। इसके प्रथम सम्पादक डा. तुलजाराम चुन्नीलाल खांडवाला थे। उनके पश्चात् आर्यसमाज बम्बई के प्रथम मंत्री श्री सेवकलाल कृष्णदास सम्पादक बने। काफी समय तक ये सम्पादन करते रहे। स्वल्पकाल के लिये पं. कृष्णाराम इच्छाराम भी सम्पादक बने। पत्र में प्रमुख रूप से पं. सेवकलाल कृष्णदास, सेठ लीलाधर हरि, मास्तर प्राणजीवनदास, पं. अन्ना मार्तण्ड जोशी, डा. तुलजाराम खांडवाला, पं. मंछाशंकर जयशंकर द्विवेदी तथा पं. कृष्णाराम इच्छाराम आदि लेखकों के लेख छपते थे। १९४७ वि. में पत्र का प्रकाशन बन्द हो गया। इसी अवधि में मास्तर प्राणजीवनदास तथा पं. मंछाशंकर जयशंकर द्विवेदी ने भी सम्पादन कार्य किया।

आर्य—बम्बई

बम्बई की वेदधर्म प्रचारिणी सभा की ओर से 'आर्य' नामक मासिक पत्र रा. प्राणजीवनदास विट्ठलदास गुप्त वसाईवाला के सम्पादन में १९५५-५६

वि. में प्रकाशित हुआ। एक दो वर्ष पश्चात् यह साप्ताहिक रूप में निकलने लगा। अब इसका सम्पादन कार्य रा. मोतीलाल त्रि. दलाल ने किया। साप्ताहिक बनने पर पत्र का नाम 'आर्यप्रकाश' कर दिया गया था। कालान्तर में इसे आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने मुखपत्र के रूप में आणंद से प्रकाशित करना आरम्भ किया। पत्र को स्थायित्व प्रदान करने की दृष्टि से सेठ शिवजी पूंजा कोठारी ने अपने स्वर्गीय भ्राता रामजीपूंजा कोठारी की स्मृति में ६००० रु. प्रदान किये। इस धनराशि से सेठ रामजी पूंजा आर्यप्रकाश मुद्रणालय की स्थापना हुई। पत्र इसी में छपता था।

आर्यप्रकाश के सम्पादकों में श्री दिनेश नर्मदाशंकर त्रिवेदी का नाम उल्लेखनीय है। पं० सत्यव्रत स्नानक भी समय-समय पर तीन बार सम्पादक रहे। वर्तमान में यह पत्र दयानन्द भवन बड़ौदा से मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक मुखपत्र के रूप में श्री नटवरलाल दवे के सम्पादन में प्रकाशित हो रहा है।

ऋषिविद्या—बम्बई

यह मासिक पत्र था।

आर्य ज्योति—बम्बई

इस साप्ताहिक पत्र को श्री वल्लभदास रतनसिंह मेहता ने निकाला।

आर्य सुधारक—बम्बई

गुजराती पाक्षिक आर्य सुधारक माटुंगा बम्बई से १९१३ में प्रकाशित हुआ। इसके संचालक श्री मगनलाल थे।

आर्य जीवन

पं० महाराणी शंकर शर्मा इस मासिक पत्र के सम्पादक थे।

आर्य सेवक

१९१४ में प्रकाशित हुआ।

आर्य सन्देश—बड़ौदा

आर्य कन्यामहाविद्यालय बड़ौदा के संस्थापक तथा संचालक पं० आनंदप्रिय के द्वारा आर्य संदेश साप्ताहिक १९३५ में निकाला गया। वर्तमान में अशोककुमार पण्डित इसके सम्पादक एवं प्रकाशक हैं। पं. आनंदप्रियजी नियमित रूप से अग्रलेख लिखते हैं। पं० नरेन्द्र दवे के विचारोत्तेजक लेख भी प्रायः छपते रहते हैं। कन्या महाविद्यालय की गतिविधियों तथा प्रवृत्तियों का विवरण भी छपता है।

वैदिक संदेश—राजकोट

पं० श्रीकृष्ण शर्मा आर्य मिश्नरी ने वैदिक संदेश मासिक का प्रकाशन राजकोट से किया था। इसमें वैदिक विषयों पर विचारोत्तेजक लेख प्रकाशित होते थे। अनेक विशेषांक भी निकले। दयानन्द दर्शन के क्रान्तिकारी प्रस्तोता

श्री नरेन्द्र दवे का भी सम्पादन में सहयोग शर्मा जी को प्राप्त था।

आर्य गर्जना—

पं० भूलाशंकर ने यह पत्र प्रकाशित किया। इसमें प्रायः विरोधियों द्वारा किये गये आक्षेपों के उत्तर रहते थे।

संघदर्शन—सूरत

श्री श्रीकान्त भगतजी ने दक्षिण अफ्रीका के आर्यों की सहायता से संघ-दर्शन मासिक रूप में प्रकाशित किया।

आर्यदर्शन—सूपा

गुरुकुल सूपा का यह मासिक मुखपत्र है जो इस शिक्षण संस्था के प्रचार की दृष्टि से प्रकाशित होता है।

सुधारक, प्रचारक और हिन्दूधर्म पत्रिका

ये तीन पत्र पं० आनन्दप्रियजी द्वारा उस समय प्रकाशित किये गये जब वे शुद्धि, संगठन तथा हरिजनोत्थान के काम में लगे हुए थे।

मराठी पत्र

आर्यभानु—अहमदनगर

आर्यसमाज अहमदनगर द्वारा आर्यभानु सप्ताहिक का प्रकाशन १९१९ई. में किया गया। श्री हरि सखाराम तुंगार इसके अवैतनिक सम्पादक थे। पत्र बड़ा लोकप्रिय हुआ। परन्तु कुछ समय पश्चात् आर्यभानु को सरकारी कोप का पात्र होना पड़ा। अहमदनगर जिले के रादुरी तालुके में सैंकड़ों अछूत समझे जाने वाले हिंदुओं के ईसाई बनाये जाने का समाचार आर्य-भानु ने प्रमुखता से छापा तथा पूछा 'यह महाराष्ट्र है या मरे राष्ट्र ? (मरा हुआ राष्ट्र) इस पर बम्बई से प्रकाशित होने वाला ईसाई धर्म प्रचारक पत्र 'ज्ञानोदय' बौखला उठा। उसने आर्यभानु की कटु आलोचना की। दुर्भाग्य से अहमदनगर का दण्डाधिकारी भी उस समय ईसाई था। उसने आर्यभानु से पांच सौ रुपये की जमानत मांगी। पत्र ऐसी स्थिति में नहीं था कि जमानत दे सकता। अतः १९२५ में पत्र को बंद करना पड़ा।

आर्य भास्कर—नांदेड़

आर्यसमाज नांदेड़ द्वारा आर्यभास्कर नामक मराठी हिन्दी द्विभाषी पाक्षिक पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ। पत्र के सम्पादक पं० हरि सखाराम तुंगार थे। १९६५ में पत्र बंद हो गया।

जनज्ञान—दिल्ली

हिन्दी जनज्ञान (दयानन्द संस्थान नई दिल्ली का मराठी संस्करण मासिक रूप में फरवरी १९७७ (माघ २०३३ वि.) में निकला। श्रीमती राकेशरानी पत्र की सम्पादिका थीं। यह दयानन्द संस्थान महाराष्ट्र का मुखपत्र था। पत्र दीर्घजीवी नहीं हो सका।

वैदिक धर्म—इन्दौर[1]

वैदिक धर्म मासिक पत्र था जो १९०२ में इन्दौर से निकला।

आर्य—नागपुर[2]

यह साप्ताहिक पत्र था। अधिक विवरण उपलब्ध नहीं है।

उड़िया पत्र

आर्य[3]

उड़ीसा के आर्य प्रचारक पं० श्रीवत्स पण्डा ने यह पत्र उड़िया भाषा में निकाला।

आश्रम ज्योति—राउर केला

यह मासिक पत्र गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास राउर केला जिला सुन्दरगढ़ से प्रकाशित होता है। इसके सम्पादक श्री शचीन्द्रकुमार स्वांई हैं।

तेलुगु पत्र

परिव्राट्—सिकन्दराबाद

साप्ताहिक परिव्राट् सिकन्दराबाद से १९५८ में निकला। श्री वेंकटेश्वर शास्त्री इसके सम्पादक थे।

मलयालम पत्र

आर्षनादम् चेंगनूर—केरल

मलयालम भाषा के मासिक पत्र आर्षनादम् का प्रकाशन वैदिक साहित्य परिषद् (आर्यन यूथ लीग की साहित्य शाखा) द्वारा १९७१ में हुआ। इसके सम्पादक पं० नरेन्द्र भूषण हैं जो विगत ९ वर्षों से पत्र को सफलतापूर्वक निकाल रहे हैं।

आर्य भारती—चैंगनूर

पं० नरेन्द्रभूषण के सम्पादन में मलयालयम, हिंदी तथा अंग्रेजी की त्रिभाषी मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई।

वेदनादम्—मासिक पत्र

कन्नड़ पत्र

वेद संदेश—मेंगलोर

पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति ने १९२९-३० में वेदसंदेश मासिक निकाला।

---

१. हिन्दी पत्रकारिता' विविध आयाम पृ. १४४

२. भारत आर्य दर्शयित्री पृ.

३. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा का २७ वर्षीय इतिहास पृ. २३९

बंग भास्कर—बेलूर (हुगली)

सिद्धेश्वर शर्मा के सम्पादन में १९०७ में यह मासिक पत्र प्रकाशित हुआ।

बंगला भाषा के पत्र

आर्य गौरव—कलकत्ता

आर्यसमाज कलकत्ता की यह मासिक पत्रिका वैशाख १३३८ बंगाब्द (अप्रैल १९३१) में प्रकाशित हुई तथा १३४१ बंगाब्द तक निकलती रही। इसके सम्पादक श्री दीनबंधु वेदशास्त्री तथा प्रकाशक श्री फणीन्द्रनाथ सेठ थे। पत्र में धार्मिक तथा सामाजिक विषयों पर लेख तथा आर्यसमाज विषयक समाचार छपते थे।

शास्त्र सिंधु—

पं० दीनबंधु वेदशास्त्री ने सिंधु नामक की स्थापना की तथा इसी के तत्त्वावधान में शास्त्रसिंधु नामक मासिक पत्रिका १३४२ बंगाब्द में प्रकाशित हुई। सम्पादक वेदशास्त्री जी ही थे। चार मास निकल कर पत्रिका बंद हो गई।

आर्य—कलकत्ता

श्री रामकृष्ण राय के द्वारा संचालित तथा पं० दीनबंधु वेदशास्त्री द्वारा सम्पादित यह पत्र कार्तिक १३४४ बंगाब्द से प्रकाशित होने लगा। पत्र का कार्यालय २०/सी कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता था। कुछ काल तक पं० प्रियदर्शन सिद्धान्तभूषण ने भी पत्र का सम्पादन किया। पत्र चार वर्ष तक निकला।

आर्य रत्न—कलकत्ता

वैदिक साहित्य परिषद् का यह मासिक मुखपत्र १३५६ बंगाब्द में २४/२ कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। पत्र के सम्पादक पं० अतुलकृष्ण चौधरी तथा पं० प्रियदर्शन सिद्धान्तभूषण थे। पत्र की व्यवस्था श्री बटकृष्ण वर्मन के पास थी। यह पत्र दो वर्ष तक निकलता रहा।

वेद माता—कलकत्ता

वैदिक साहित्य पीठ का मासिक मुखपत्र वैशाख १३७३ बंगाब्द (१९६७ ई.) में प्रकाशित हुआ। पत्र के सम्पादक तथा प्रकाशक पं. प्रियदर्शन सिद्धान्त-भूषण हैं। ८३।१ विवेकानन्द रोड कलकत्ता से पत्र आज भी निकलता है।

शुद्धि समाचार—कलकत्ता

यह पत्र मासिक रूप में स्वामी सदानन्द संन्यासी के सम्पादन में निकला। केवल ८ अंक ही प्रकाशित हुए।

सिंधी भाषा के पत्र

सत्यवादी—शिकारपुर (सिंध)

आर्यप्रतिनिधि सभा सिंध का यह साप्ताहिक मुखपत्र शिकारपुर से प्रकाशित होता था।

आर्य प्रेमी—अजमेर

हकीम वीरूमल आर्यप्रेमी ने १९५३ में अजमेर सिंधी भाषा के मासिक पत्र आर्य प्रेमी का प्रकाशन आरम्भ किया।

सदाचार—बम्बई

श्री गंगाराम एम. के द्वारा यह मासिक पत्र १९६९ में उल्हास नगर (बम्बई) से निकाला गया। वे ही इसके सम्पादक थे।

आर्यवीर—अजमेर

जनवरी १९७७ से मासिक आर्यवीर का सम्पादन एवं प्रकाशन श्री दीपचंद त्रिलोकचंद ने प्रारम्भ किया।

□□

परिशिष्ट २

आर्यसमाज के उर्दू पत्र

उन्नीसवीं शताब्दी से अन्तिम दो दशकों में आर्यसमाज ने उत्तर भारत के जिन विभिन्न प्रान्तों में अपने सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार किया था, उस समय उर्दू ही उन प्रदेशों के पठित समुदाय की प्रमुख भाषा समझी जाती थी। पंजाब में तो उर्दू का बोलबाला था ही, पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के राजकाज की भी भाषा उर्दू थी तथा मुसलमान काश्मीरी पण्डित तथा कायस्थ आदि जातियों में उर्दू का सर्वत्र प्रचलन था। ऐसे समय में आर्यसमाज को भी यदि अपनी विचारधारा के प्रचार के लिए उर्दू का सहारा लेना पड़ा तो कोई आश्चर्य नहीं। आर्यसमाज के प्रारम्भिक युग के सदस्य प्रायः उर्दू फारसी पठित ही होते थे। अतः आर्यसमाज की कार्यवाहियों के रजिस्टर उर्दू में ही लिखे जाते थे तथा पत्र व्यवहार भी उर्दू में ही होता था। परन्तु इसके साथ ही आर्य, भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के निर्विवाद अधिकार को न केवल स्वीकार ही करता था अपि तु उसके निर्बाध प्रचार एवं प्रसार का भी इच्छुक था। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन काल में ही भारत सरकार द्वारा नियुक्त शिक्षा सम्बन्धी आयोग हण्टर कमीशन के समक्ष उपस्थित होकर हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने तथा उसके राजकाज में प्रयुक्त करने के पक्ष में साक्षियें प्रस्तुत करने का आदेश तत्कालीन आर्यसमाजों और आर्यसमाजियों को दिया था। तदनुसार पंजाब के आर्य नेता लाला मूलराज ने अपनी गवाही में दृढ़ता के साथ शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी को महत्त्व प्रदान करने तथा पंजाब में हिन्दी को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयुक्त किये जाने पर जोर दिया।

प्रारम्भिक काल में चाहे आर्यसमाज की सभा-समितियों तथा बैठकों का कार्यविवरण उर्दू में ही लिखा जाता था किन्तु आर्य पुरुष निरन्तर यह अनुभव करते थे कि उन्हें शीघ्र ही आर्य भाषा के माध्यम से ही अपने दैनन्दिन कार्यों का निर्वाह करने जैसी योग्यता प्राप्त कर लेनी चाहिए। फलतः आर्य-समाजों के कामकाज में हिन्दी को अपना उचित स्थान ग्रहण करने में अधिक समय नहीं लगा। आर्यसमाजों की विवरण पंजिकाओं में उस समय जो कार्यवाही उर्दू में लिखी जाती थी, वह भी संस्कृत-हिन्दी शब्द बहुला होती थी।

ऐसी परिस्थिति में यदि आर्यसमाज ने उर्दू पत्रों के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार करना श्रेयस्कर समझा तो वह सर्वथा उचित ही था। स्वामी दयानन्द के जीवनकाल में ही मेरठ से उर्दू साप्ताहिक आर्यसमाचार तथा पेशावर से उर्दू मासिक धर्मोपदेश निकलने लगे थे। कालान्तर में पंजाब तथा

उत्तर प्रदेश से अनेक उर्दू पत्र निकले। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा प्रवर्तित सद्धर्म-प्रचारक ने आर्यसमाज के उर्दू पत्रों में विशेष ख्याति अर्जित की क्योंकि महात्माजी आर्यसमाज के सर्वमान्य नेता थे और सद्धर्मप्रचारक आर्यसमाज की नीति-रीति का प्रमुख प्रवक्ता समझा जाता था।

आर्यसमाज ने उर्दू पत्रकारिता को विशिष्ट दिशा प्रदान की है। उसने उर्दू की एक ऐसी शैली का निर्माण किया जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग करने में कोई संकोच नहीं किया जाता था। आर्यसमाज के उर्दू पत्रों में छपने वाले लेख प्रायः धार्मिक, दार्शनिक अथवा आध्यात्मिक विषयों से ही सम्बन्धित होते थे। इसलिए इन पत्रों में लिखी जाने वाली उर्दू में संस्कृत के अनेक शब्दों का निर्बाध प्रयोग होता था। इसी प्रकार धार्मिक शास्त्रार्थों एवं वाद-विवादों का विवरण भी उर्दू में प्रकाशित होता था। अतः न्याय तथा दर्शन जैसे विषयों से सम्बन्धित संस्कृत शब्दावली का भी उर्दू में प्रविष्ट हो जाना स्वाभाविक ही था। आगे हम आर्यसमाज के उर्दू पत्रों का यथोपलब्ध विवरण दे रहे हैं।

आर्य समाचार—मेरठ

यह आर्यसमाज का प्रथम उर्दू अखबार था। १८७८ ई. (१९३५ वि.) में आर्य समाचार उर्दू साप्ताहिक मेरठ से प्रकाशित हुआ। पत्रकारिता के उस प्रारम्भिक युग में पत्रों पर सम्पादक का नाम छपने की प्रथा नहीं थी, इसलिये यह ज्ञात नहीं होता कि इस पत्र का आदि सम्पादक कौन था ? कुछ अंकों पर कल्याणराय का नाम सम्पादक के रूप में अंकित मिलता है। आर्यसमाज मेरठ के मन्त्री श्री आनन्दीलाल भी पत्र के सम्पादक रहे थे। आर्यसमाज का प्रारम्भिक इतिहास जानने की दृष्टि से आर्यसमाज के शुरु के अंक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

धर्मोपदेश—पेशावर

प्रसिद्ध आर्यसमाजी उपदेशक पं. लेखराम ने १८८० ई. में आर्यसमाज पेशावर के तत्त्वावधान में धर्मोपदेश मासिक निकाला। वे स्वयं ही इसके सम्पादक थे। उस समय पं. लेखराम पुलिस विभाग के कर्मचारी थे। आर्थिक कठिनाइयों के कारण लोकप्रिय होने पर भी पत्र चिरकाल तक जीवित नहीं रह सका। जब आर्यसमाज पेशावर ने पत्र को बन्द करने का निश्चय किया तो पं. लेखराम को बहुत दुःख हुआ और १२ मार्च १८८३ को अपने चाचा पं. गण्डाराम को लिखे अपने पत्र में उन्होंने यह सुझाव रक्खा कि अल्प आय वाले होने पर भी वे स्वयं पत्र का कुछ आर्थिक भार उठा सकते हैं। परन्तु आर्यसमाज पेशावर उनके इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हो सका। फलतः मार्च १८८३ में पत्र बन्द हो गया। पत्र में आर्यसमाज की भीतरी परिस्थितियों का चित्रण तो होता ही था, विरोधियों द्वारा किये जाने वाले प्रहारों और

आक्रमणों का भी उत्तर इस पत्र में सतर्कतापूर्वक दिया जाता था। कुछ काल तक वजीरचन्द विद्यार्थी भी इसके सम्पादक रहे थे। सद्धर्मप्रचारक यद्यपि उर्दू का पत्र था, किन्तु प्रारम्भ से ही इसकी नीति हिन्दी और संस्कृत के शब्दों के प्रचार की ओर थी। पत्र की भाषा में हिन्दी-संस्कृत शब्दावली का बाहुल्य रहता था।

मुर्हरिक—मुरादाबाद

१८९६ में आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर प्रदेश (उत्तर प्रदेश) के मुर्हरिक साप्ताहिक मुन्शी नारायणप्रसाद (नारायण स्वामी) के सम्पादन में निकला। दो वर्ष बाद इसे आर्यमित्र का नाम देकर हिन्दी में निकाला गया।

आर्य मुसाफिर—जालंधर

यह उर्दू मासिक अप्रैल १८९७ में सद्धर्मप्रचारक के परिशिष्ट रूप में प्रकाशित हुआ। सम्पादक लाला बद्रीदास थे। अक्टूबर १८९८ में लाला मुन्शीराम सम्पादक बने। १९०१ में वजीरचन्द विद्यार्थी सम्पादक थे। कालान्तर में यह पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुखपत्र बना तथा श्री चिरंजीलाल प्रेम के सम्पादन में निकलने लगा। १९०४ में इसके हरद्वार स्थित गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित होने का उल्लेख मिलता है।

वैदिक धर्म—मुरादाबाद

पं. कृपाराम शर्मा ने मुरादाबाद में वैदिक धर्म प्रेस की स्थापना की तथा वैदिक धर्म साप्ताहिक का प्रकाशन १८९७ में किया। पत्र का आदर्श वाक्य था—

आर्य पत्र—बरेली

१८९५ में पं. पूरणमल साहब के सम्पादन में बरेली से उर्दू मासिक आर्य पत्र निकला। पत्र के आवरण पृष्ठ पर निम्न पंक्तियाँ परिचय रूप में छपती थीं—"सम्पादक तथा पब्लिशर पं. पूरणमल साहब, अनाथालय प्रेस, यतीमखाना, आर्यसमाज बरेली में प्रकाशित। "महमूदखां कापी नवीस प्रेसमैन डालचन्द।" १९०४ में इसके साप्ताहिक रूप में छपने का उल्लेख मिलता है। इसमें कुछ लेख हिन्दी के भी रहते थे। कालान्तर में पं. शिवव्रतलाल वर्मन् तथा डा. श्यामस्वरूप सत्यव्रत भी सम्पादक रहे थे।

सद्धर्मप्रचारक—जालंधर

आर्यसमाज की उर्दू पत्रकारिता के इतिहास में सद्धर्मप्रचारक का विशिष्ट स्थान है। लाला मुन्शीराम ने प्रथम वैशाख १९४६ वि. (१८ फरवरी १८८९) को जालंधर से सद्धर्मप्रचारक साप्ताहिक का प्रकाशन आरम्भ किया। उस समय लालाजी का कार्य क्षेत्र जालंधर ही था। प्रारम्भ में लाला मुन्शीराम तथा लाला देवराज संयुक्त रूप से सम्पादन कार्य करते रहे, किन्तु कुछ काल पश्चात् पत्र का सम्पूर्ण भार-व्यवस्था और सम्पादन मुन्शीराम जी

पर ही आ गया। पत्र की नीति-रीति तथा उसकी निर्भीक विचारधारा को देख कर आर्यसमाज लाहौर के प्रथम मन्त्री और वयोवृद्ध नेता लाला सांईदास ने कहा था—"यह पत्र समाज में नया युग लायगा, यद्यपि यह कहना कठिन है कि वह युग हितकर होगा, या अहितकर।" जो हो, पत्र का प्रभाव आर्य-समाज पर व्यापक रूप से पड़ा। इसके लेख साप्ताहिक सत्संगों में पढ़े जाते थे। सद्धर्म प्रचारक आर्यसमाज की सार्वभौम नीतियों का नियामक समझा जाता था। महात्मा मुन्शीराम और उनके दल के विचारों और कार्यों का सम्पूर्ण प्रतिफलन इस पत्र में रहता था।

देशोपकारक—लाहौर

यह पत्र लाला लाजपतराय द्वारा जनवरी १८८३ में प्रारम्भ किया गया।

आर्य गजट—फीरोजपुर—लाहौर

उर्दू मासिक आर्य गजट १८८५ में फीरोजपुर से निकला। १८८७ ई. में उसका सम्पादन भार पं. लेखराम ने सम्भाला। १८९१ में लाला चण्डीप्रसाद सम्पादक थे। कालान्तर में यह पत्र आर्यप्रादेशिक सभा के साप्ताहिक मुखपत्र के रूप में निकलने लगा। लाला दीवानचन्द ने कुछ काल तक सम्पादन किया। १९२४ में लाला खुशहालचन्द खुर्सन्द सम्पादक थे। सुप्रसिद्ध हिन्दी कहानीकार सुदर्शन ने भी पत्र का सम्पादन किया था।

तोहफे हिन्द—बिजनौर

आर्यसमाज बिजनौर के मन्त्री श्री जीराजसिंह ने १८८८ में तोहफे हिन्द साप्ताहिक निकाला। बिजनौर जिले से निकलने वाला आर्यसमाज का यह प्रथम पत्र था।

वैदिक विजय—अजमेर

पं. लेखराम की प्रेरणा से वैदिक विजय पत्र मासिक रूप में जुलाई १८८९ से अजमेर से निकला। पत्र का मुद्रण "आर्यन सोसाइटीज प्रेस केसरगंज अजमेर में होता था। पत्र का सिद्धान्त-वाक्य था—

"नगारा धर्म का बजता है आये जिसका जी चाहे।"

इसी पत्र में पं. लेखराम के 'जिहाद' विषयक लेख छपे थे जो कालान्तर में 'रिसाला जिहाद' शीर्षक से पृथक् रूप से छपे।

कानपुर गजट—कानपुर

१८८९ में कानपुर से साप्ताहिक रूप में निकला। (प्रो. जिज्ञासु)

ख्वाहिशे दुनिया नहीं वैदिक धर्म मंजूर है।
धर्म पर देने को जां यह दूसरा मंसूर है॥

अक्टूबर १८९७ से यह पत्र हिन्दी में भी निकलने लगा।

वैदिक धर्म—दिल्ली

पं. कृपाराम शर्मा ने यह पत्र १८९८ में दिल्ली से निकाला।

वैदिक मैगजीन—

पं. कृपाराम द्वारा वैदिक मैगज़ीन नामक मासिक पत्र के १८९८ में निकाले जाने का उल्लेख मिलता है।

तालिबे इल्म—आगरा

स्वामी दर्शनानन्द ने 'मखजनुल उलूम' नामक एक विद्यालय १९०० में आगरा में स्थापित किया। इस विद्यालय के तत्त्वाधान में यह उर्दू साप्ताहिक इसी वर्ष में निकाला गया।

हितैषी—पीलीभीत

साप्ताहिक हितैषी १९०० में निकला।

अखबार मुबाहिसा—बदायूं

स्वामी दर्शनानन्द ने यह साप्ताहिक पत्र १९०४ में गुरुकुल बदायूं से निकाला। पत्र गुरुकुल के लीथो प्रेस में छपता था।

मुसाफिर—आगरा

आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा के संस्थापक आचार्य पं. भोजदत्त शर्मा के सम्पादन में साप्ताहिक मुसाफिर १९०४ में निकला। शर्माजी के निधन के पश्चात् उनके पुत्र डा० लक्ष्मीदत्त शर्मा इसे निकालते रहे। इसमें इस्लाम की तीखी आलोचना छपती थी। पं. कालीचरण शर्मा ने भी इसका सम्पादन किया था।

प्रकाश—लाहौर

उर्दू के प्रसिद्ध साप्ताहिक प्रकाश का आरम्भ १९०६ में हुआ। महाशय कृष्ण इसके सम्पादक तथा प्रकाशक थे। आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार में इस पत्र का योगदान निर्विवादरूप से स्वीकार किया जायगा। विरोधियों द्वारा किये जाने वाले आक्षेपों का सटीक उत्तर देना प्रकाश की विशेषता थी। १९०९ में जब ब्रिटिश शासन के उकसाने से पटियाला राज्य में आर्यसमाजियों पर झूठे अभियोग चलाये गये तो प्रकाश ने आर्य नेताओं की पुरज़ोर वकालत की। १९१० में जब मास्टर रौनकराम 'शाद' तथा विश्वम्भरदत्त लिखित 'खालसा पन्थ की हकीकत' नामक पुस्तक को लेकर पंजाब आर्यसमाज ने धारा १५३ (अ) के अन्तर्गत लेखकों पर मुकदमा चलाया तो प्रकाश ने अनेक लेख लिखकर आर्यसमाज का पक्ष समर्थन किया। हितैषी अलावल पुरी वर्षों तक इसके सम्पादक रहे। १९२५ से यह हिन्दी में भी निकलने लगा।

भारत—जालन्धर

आर्य कन्या महाविद्यालय जालंधर का का यह उर्दू मासिक १९०६ में निकला। प्रो. जिज्ञासु के अनुसार यह साप्ताहिक था और १९११ में निकला। श्री सुदर्शन ने भी कुछ काल तक सम्पादन किया।

महाविद्यालयसमाचार—ज्वालापुर

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर का यह साप्ताहिक मुख-पत्र १९०६ में मुन्शी कन्हैयालाल के सम्पादन में निकला।

इन्द्र—लाहौर

महाशय धर्मपाल बी. ए. (मुन्शी अब्दुलगफूर) ने लाहौर से १९०६ में इन्द्र नामक उर्दू मासिक स्वसम्पादन में प्रकाशित किया। १९१२ में यह साप्ताहिक हो गया। सेवक प्रेस लाहौर में छपता था। इसमें अनेक विवादास्पद विषय छपते थे।

आर्यसमाचार—कानपुर

मेरठ से १८७८ में प्रकाशिक होने वाला पत्र आर्यसमाचार १९०७ में कानपुर से डी. ए. वी. कालेज सोसाइटी के मासिक मुख-पत्र के रूप में प्रकाशित होने लगा। पं. बद्रीदत्त जोशी ने लगभग ८ वर्ष तक पत्र का सम्पादन किया।

वैदिक फिलासफी—रावलपिंडी

स्वामी दर्शनानन्द ने १९०९ में रावलपिंडी के निकट चोहा भक्तां नामक स्थान में गुरुकुल खोला और यहीं से 'वैदिक फिलासफी' नामक उर्दू मासिक निकाला।

अर्जुन—लाहौर

म. धर्मपाल ने १९१० में अर्जुन साप्ताहिक स्वसम्पादन में निकाला।

गुरुकुल समाचार—सिकन्दराबाद

गुरुकुल सिकन्दराबाद का मासिक मुखपत्र १९१०-११ के आसपास लाला कूडेमल के सम्पादन में निकला। कालान्तर में यह पत्र हिन्दी में भी पं. श्यामलाल शर्मा के सम्पादन में निकलने लगा।

अमृत—लाहौर

साप्ताहिक अमृत १९१४ में श्यामलाल आर्यसेवक के सम्पादन में निकला।

धर्मवीर—लाहौर

१९१४ में यह पत्र सन्तराम आशुफ़ता के सम्पादन में निकला।

जार्ज—लाहौर

१९१५ में श्री आनन्द के सम्पादन में निकला।

मिलाप—लाहौर

लाला खुशहालचन्द के मिलाप से भिन्न यह मासिक मिलाप श्री रामलाल वर्मा के सम्पादन में निकलता था।

सक्यूलर—लाहौर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का यह उर्दू मासिक मुखपत्र था।

दर्शनानन्द—लाहौर

स्वामी दर्शनानन्द के पुत्र पं. नृसिंह शर्मा ने १९१८ में अपने यशस्वी पिता की स्मृति में यह साप्तहिक पत्र निकाला।

हितकारी—अमृतसर

मास्टर आत्माराम अमृतसरी के सम्पादन में यह साप्ताहिक पत्र निकला।

सुधारक—

मेहता जैमिनि द्वारा सम्पादित उर्दू पत्र। अधिक विवरण नहीं मिला।

स्वराज्य—लाहौर

आर्य स्वराज्य सभा का मासिक पत्र १९२१ में निकला।

आर्य मुसाफिर—दिल्ली

मास्टर लक्ष्मण आर्योपदेशक के सम्पादन में यह मासिक पत्र वैशाख १९७९ (१९२२) में निकला।

रिफार्मर—दिल्ली

यह उर्दू साप्ताहिक श्री सन्तराम विद्यार्थी के सम्पादन में निकलता था।

वैदिक धर्म—जालंधर छावनी

श्री रामचन्द्र जावेद के सम्पादन में यह उर्दू साप्ताहिक १९६४ से प्रकाशित हो रहा है।

आर्य केसरी—करनाल

श्री मेलाराम बर्क के सम्पादन में उर्दू हिन्दी का यह द्विभाषी पाक्षिक पत्र १ जुलाई १९६७ से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। श्री बर्क उर्दू के कुशल पत्रकार हैं। पत्र ने १६ जुलाई १९६८ को गायत्री अंक तथा अक्टूबर १९६८ को ऋषि निर्वाण अंक प्रकाशित किया।

अज्ञात तिथि के उर्दू पत्र

सहायक—जालंधर

यह सप्ताहिक पत्र था।

देश सेवक

श्री भक्तराम सहगल ने प्रकाशित किया।

रहबर—मुरादाबाद

बाबू बनवारी लाल सम्पादक थे।

विद्या प्रकाश—मेरठ

पं. तुलसीराम स्वामी सम्पादक थे।

दयानन्द दिग्विजय

मेहता जैमिनि सम्पादक थे।

आर्य वीर—रावलपिंडी, लाहौर, जालंधर

पं. मेहरचंद शर्मा के सम्पादन में साप्ताहिक रूप में निकला। कालान्तर में हिन्दी मासिक के रूप में जालंधर से निकलता रहा।

वर्तमान—अमृतसर

डा. ज्ञानचंद (स्वामी ज्ञानेश्वरानन्द) ने यह पत्र निकाला।

शुभ चिंतक—कादियां (गुरदासपुर)

इस मासिक का प्रकाशन सोमराज शर्मा ने किया।

आर्य सेवक—दिल्ली

लाला ज्ञानचंद बी. ए. इस पत्र के सम्पादक थे।

हैदराबाद (दक्षिण) के उर्दू पत्र

मसावात—हैदराबाद

हैदराबाद के आर्यजनों ने उर्दू साप्ताहिक मसावात का प्रकाशन किया, किन्तु निजाम सरकार के असहिष्णुता पूर्ण रवैये के कारण बंद करना पड़ा।

वैदिक आदर्श—हैदराबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद का उर्दू साप्तहिक मुखपत्र ७ दिसम्बर १९३४ को निकला। पत्र के सम्पादक श्री चन्दूलाल थे, परन्तु सारा कार्य पं. नरेन्द्र के जिम्मे थे। पं. विनायकराव विद्यालंकार के दक्कन लारिपोर्टर प्रेस में इसका मुद्रण होता था। पत्र के द्वारा हैदराबाद (निजाम) राज्य में पर्याप्त धार्मिक और सामाजिक चेतना उत्पन्न की गई परन्तु मुस्लिम पत्रों को यह असह्य था। निजामशाही भी आर्यसमाजी पत्रों को फलता फूलता नहीं देखना चाहती थी, अत: १९३५ में राजाज्ञा से इसे बंद कर दिया गया।

आर्य वीर—हैदराबाद

१९५४ में यह साप्ताहिक रूप में निकला। श्री ज्ञानचंद वर्मा इसके सम्पादक हैं। पत्र ५-५-८६५ हिन्दी नगर हैदराबाद से निकलता है।

परिशिष्ट—३

आर्यसमाज के अंग्रेजी पत्र

अपनी विचाराभिव्यक्ति के लिये लोक भाषा को प्रधानता देने तथा राष्ट्र की आवाज को उसी की भाषा में प्रकट करने की उत्कट इच्छा रखने वाले आर्यसमाज के लिये यह स्वाभाविक ही था कि वह अपने पत्रों को भी मुख्यतया हिन्दी में ही प्रकाशित करता। उसने ऐसा किया भी। किन्तु अंग्रेजी के महत्त्व को नकारना भी सम्भव नहीं था। जिस समय आर्यसमाज की स्थापना हुई उस समय अंग्रेज भारत के शासक थे। जब तक अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त नहीं कर लिया जाता, तब तक किसी भारतवासी को सभ्य और शिक्षित होने का प्रमाण पत्र नहीं मिलता था। आर्यसमाज का प्रचार भी मुख्य रूप से उन्हीं लोगों में हुआ जो साधारणतया सुपठित तथा मध्य एवं उच्च मध्य वर्ग के थे। अतः अंग्रेजी में पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशित किया जाना भी आवश्यक था।

हम देखते हैं कि १०५ वर्ष की लम्बी अवधि में आर्यसमाज की अंग्रेजी पत्रिकाओं की संख्या एक दर्जन से अधिक नहीं है। इनमें भी आधा दर्जन पत्र वे हैं जो विगत शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में प्रकाशित हुए, जब कि अवशिष्ट ६ पत्र इस शताब्दी के चार दशकों में निकले। इस तथ्य से यह बात स्पष्ट होती है कि विगत शताब्दी के आर्यों ने अंग्रेजी पठित उच्च वर्ग को आर्यसमाज का संदेश देने में अधिक रुचि तथा तत्परता प्रदर्शित की थी। यह बात नहीं कि इस शताब्दी में अंग्रेजी के प्रभाव या प्रचार में कोई न्यूनता आई है, तथापि बीसवीं सदी के प्रारम्भिक काल में राष्ट्रीयता के विचारों ने सामान्य जन समाज को अधिक प्रभावित किया था। फलतः स्वदेश, स्वभाषा, स्वधर्म तथा स्वसंस्कृति के प्रति लोगों में जो उत्कट अनुराग उत्पन्न हुआ उसके परिणाम स्वरूप आर्यसमाज के लिये भी यह आवश्यक था कि उसके पत्रों का प्रकाशन राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही होता।

एक बात और द्रष्टव्य है। उन्नीसवीं शताब्दी के आर्यसमाजी अंग्रेजी पत्र कथ्य और प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से जितने समृद्ध थे, उतने इस शताब्दी के पत्र नहीं हैं। The Arya Magazine, The Arya Patrika तथा The Vedic Magazine ने जो उच्च कोटि की पठनीय तथा संग्रहणीय सामग्री उन दिनों में प्रदान की, उसकी तुलना में इन वर्षों में निकले अंग्रेजी पत्र सर्वथा दरिद्र ही कहे जायेंगे। अधिक से अधिक आर्यसमाज के पुराने अंग्रेजी लेखकों की एक समय में छपी कालजयी रचनाओं को धारावाही मुद्रित करने में ही हमारे अंग्रेजी पत्रकारों ने अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर ली है। उनमें न तो मौलिक लेखन की क्षमता ही दृष्टिगोचर होती है और

न सम्पादक सुलभ योग्यता, जिससे कि वे अन्य योग्य लेखकों से सम्पर्क साध कर आंग्ल भाषा में उच्च कोटि की रचनायें लिखा सकें। फल स्वरूप Vedic Digest, Vedic Light तथा अंग्रेजी जनज्ञान आदि पत्रों ने हरविलास शारदा, गंगा प्रसाद जज, गंगाप्रसाद उपाध्याय, धर्मदेव विद्यावाचस्पति आदि की पुरानी अंग्रेजी कृतियों से अपने पत्रों के कलेवर को पूरित करने में ही अपनी कृतार्थता समझी है।

यह विडम्बना ही है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुप्रतिष्ठित अंग्रेजी भाषा के महत्त्व तथा देश के वर्तमान संदर्भों में उसकी उपयोगिता को जानते हुए भी आर्यसमाज इस समय कोई अच्छा अंग्रेजी पत्र निकालने में सफल नहीं हो सका है। शायद इसके दो कारण हैं—आर्यसमाज का वर्तमान नेतृत्व प्रभावशाली अंग्रेजी पत्र के महत्त्व को पूर्णतया हृदयंगम नहीं कर सका है। साथ ही आर्यसमाज के प्रबुद्ध वर्ग में ऐसे व्यक्तियों का अभाव हो गया है जो ऐसे पत्र के सम्पादन एवं संचालन की क्षमता रखते हों। आगे की पंक्तियों में आर्यसमाज के अंग्रेजी पत्रों का परिचयात्मक विवरण उपस्थित है।

The Arya Magazine—लाहौर

आर्यसमाज का प्रथम अंग्रेजी मासिक पत्र 'दि आर्य' स्वामी दयानन्द के जीवन काल में ही प्रकाशित होना आरम्भ हो गया था। पत्र का प्रथम अंक १ मार्च १८८२ को श्री रतनचन्द बेरी (R. C. Bary) के सम्पादन में सैदमिट्ठा बाजार लाहौर से निकला। श्री बेरी इसके प्रकाशक भी थे। पत्र के प्रारम्भिक अंकों पर दृष्टिपात करने से आर्यसमाज के प्राचीन इतिवृत्त की महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है। प्रथम अंक में लेखक ने अंग्रेजी में मासिक पत्र निकालने का प्रयोजन स्पष्ट करते हुए पत्र की नीति की उद्घोषणा की है। तत्पश्चात् आर्यसमाज के नियमों का अंग्रेजी में अनुवाद दिया गया है। एक अन्य लेख में सम्पादक ने आर्यसमाज का परिचय देते हुए उसके सिद्धान्तों का सुबोध एवं सारगर्भित शैली में परिचय दिया है।

पाठकों को यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि ऋषि के जीवन काल में ही उनके ऋग्वेद भाषा का अंग्रेजी अनुवाद इस पत्र में प्रकाशित होने लगा था। फलतः आर्य के प्रथम अंक में ही 'अग्नीमीड़े पुरोहितं' ऋग्वेद के इस प्रथम मंत्र का दयानन्द कृत अर्थ छपा है। स्वामी जी को उनके जीवन काल में ही 'ऋषि' पदवी से सम्बोधित किया जाने लगा था, यह इस बात से स्पष्ट होता है कि ऋग्वेद के इस आंग्ल भाषानुवाद को प्रस्तुत करते हुए लिखा गया है "Its theological sense is explained above as interpreted to us by Rishi Swami Dayanand Saraswati in his invaluable Veda Bashya." अर्थात् मन्त्र का आध्यात्मिक अर्थ ऊपर उसी शैली में व्याख्यात किया गया है जैसा ऋषि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने

अपने बहुमूल्य वेद भाष्य में किया है ।

आर्य पत्र में विभिन्न विषयों पर उच्च कोटि के मौलिक लेख प्रकाशित होते थे । यदा कदा इसमें हास्य और व्यंग्य प्रधान किन्तु शिक्षाप्रद लेख भी छपते थे । इसी प्रकार का एक लेख प्रथम अंक में लाला शोभाराम लिखित छपा है जिसमें शीर्षक है—'एक चौबे और उसके यजमान ।' लेख संवादात्मक शैली में है, जिसमें तीर्थों के पण्डों की करतूतों का पर्दाफाश किया गया है । यजमान इस संवाद के अन्त में हिन्दू धर्म और समाज का संशोधन करने वाले स्वामी दयानन्द तथा थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापकों का स्मरण करते हुए कहता है—"Your religion is being revived and your society improving by the indefeatible labour of the revered swami Dayanand Saraswati and the renowned Founders of the Theosophical Society Madame H. P. Blavatsky and Colonel H. S. Olcott." अर्थात् आपके धर्म एवं समाज का पुनरुत्थान तथा सुधार आदरणीय स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापकों—श्रीमती एच. पी. ब्लैवेट्स्की तथा कर्नल एच. एस. ऑल्काट के अथक प्रयत्नों द्वारा किया जा रहा है ।

उस युग के आर्यसमाजियों का अध्ययन तथा स्वाध्याय कितना व्यापक एवं गम्भीर होता था, यह इसी बात से ज्ञात होता है कि आर्य पत्र के कई अंकों में आर्यसमाज मुलतान के मंत्री श्री दयाराम वर्मा का एक लेख A Guide to Greek Nomendature शीर्षक कई अंकों में धारावाही छपता रहा । इस लेख को तैयार करने में लेखक ने प्रो. मैक्समूलर के Lectures on philology, कर्नल जेम्स टॉड रचित The Annals and Antiquities of Rajasthan, पिकाक की Early History of Rome and Great Britain, जैकालियट की The Bible in India जैसे ग्रन्थों तथा Asiatic Researches जैसी शोध पत्रिकाओं का अध्ययन किया था ।

पत्र के अन्त में जो सम्पादकीय टिप्पणियाँ प्रकाशित होती थीं, उनका भी ऐतिहासिक महत्त्व था । A 'Padri' शीर्षक टिप्पणी में अमेरिका के ईसाई प्रचारक रेवरेण्ड जोसफ कुक के भारत आकर बम्बई में अपने मत का प्रचार करने का उल्लेख करते हुए लिखा गया है कि स्वामी दयानन्द तथा थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापकों ने रेवरेण्ड कुक से ईसाई मत की सत्यता तथा उसके ईश्वरप्रदत्त होने को सिद्ध करने का आह्वान किया है । पादरी साहब ने स्वामीजी से उपर्युक्त विषय में चर्चा करने की अपेक्षा चुपचाप बम्बई से पूना चले जाने में ही अपना हित समझा ।

आर्यसमाज ने अपनी शिक्षा विषयक महत्त्वपूर्ण योजना स्वामी दयानन्द के जीवनकाल में ही आरम्भ कर दी थी, इस बात का पता इसी तथ्य से

लगता है कि आर्यसमाज लाहौर ने उसी समय एक पाठशाला प्रौढ़ वय के लोगों के लिये चालू की थी जिसमें हिन्दी एवं संस्कृत का शिक्षण होता था। इसी अंक में उक्त आर्यसमाज द्वारा एक कन्या विद्यालय स्थापित करने का भी समाचार प्रकाशित हुआ है। १८८२ में जब नारी शिक्षण स्वप्न ही था, आर्यसमाज द्वारा कन्या पाठशाला की स्थापना एक शुभारम्भ ही माना जायगा।

विधवा विवाह का प्रचलन भी धीरे धीरे हो रहा था। २२ फरवरी १८८२ को आर्यसमाज गुरदासपुर के तत्वावधान में एक क्षत्रिय युवक से विधवा के विवाह होने का उल्लेख मिलता है। आर्यसमाज ने अपने स्थापना-काल से हिन्दी को अखिल भारत देश की एक सामान्य भाषा के रूप में प्रयुक्त किये जाने का प्रबल समर्थन किया था। सामान्य लोगों की धारणा थी कि पंजाब में उर्दू का एक छत्र साम्राज्य बहुत पहले से ही चला आ रहा है, परन्तु आर्यसमाज ने इसे स्वीकार नहीं किया। Hindi Versus Urdu इस शीर्षक एक टिप्पणी में बड़ी दृढ़ता के साथ कहा गया है कि उर्दू पंजाब की स्थानीय भाषा नहीं है—It is not the Vernacular of the Province. सुखद आश्चर्य होता है जब लाहौर से प्रकाशित होने वाले ९७ वर्ष पुराने इस अंग्रेजी पत्र को हम हिन्दी और देवनागरी का समर्थन करते पाते हैं। उस समय भारत की अंग्रेजी सरकार ने शिक्षा और भाषा विषयक नीति पर विचार करने के लिये हण्टर कमीशन की नियुक्ति की थी। आर्य पत्र में यह सूचना प्रकाशित हुई कि हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के समर्थन में आर्यसमाज की ओर से एक स्मरणपत्र उक्त आयोग के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

आर्य पत्र के अन्य अंकों में आर्यसमाज के विस्तार, स्थायी दयानन्द के देशाटन तथा उनके कार्य, अन्य मतावलम्बियों से होने वाली स्वामीजी की शास्त्र चर्चाओं का विस्तार पूर्वक उल्लेख रहता था। इस प्रकार आर्य-समाज के इतिहास की संरचना करने वाले किसी भी इतिहासकार के लिये इस पत्र की पुरानी फाइलों का अध्ययन और निरीक्षण आवश्यक है। नवम्बर १८८३ के अंक में ऋषि दयानन्द के परलोकगमन का समाचार काला बार्डर देकर छापा गया है। उनके दिवंगत होने के दु:ख में एक शोक गीतिका (Elegy) Swami Dayanand Sararwati शीर्षक इसी अंक में प्रकाशित हुई है। इसकी प्रारम्भिक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

Weep loud O Aryavarta, the glorious sun.
That rose so hopeful on the sable night.
And shed around thee life reviving light,
Has sunk. Too soon his noble course was run.
Ere half that holy life's great task was done.

दिसम्बर १८८३ के अंक में स्वामी जी के निधन के पश्चात् उनकी स्मृति

को स्थायी बनाने हेतु लाहौर में डी. ए. वी. कॉलेज की स्थापना करने तथा तद्विषयक किये जाने वाले प्रयत्नों का उल्लेख मिलता है। इसी अंक में कॉलेज के लिये प्रदत्त दान की सूची भी छपी है। स्वामीजी की स्मृति में स्थापित किये जाने वाले इस कालेज के लिये चन्दा देने वालों में जहाँ बहुसंख्यक वर्ग हिन्दुओं का ही था, वहाँ मुसलमान भी पीछे नहीं थे। मियां पीरबख्श, मियाँ वजीर खाँ तथा मियां हुसेन बख्श का चन्दा भी इसी सूची में अंकित है।

आर्य पत्र में आर्यसमाजों के समाचार, सम्पादन के नाम पत्र, नवीन पुस्तकों की समीक्षा आदि के स्थायी स्तम्भ भी रहते थे। विभिन्न रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेखों से पूरित यह पत्र वस्तुतः वैसा ही था जैसा कि पत्र के शीर्षक के साथ निम्न वाक्य छपता था—A monthly Periodical devoted to Aryan philosophy, Art, Literature, Science and Religion, embracing the views and opinions of the modern Aryans on social, religious and scientific subjects. पत्र का वार्षिक मूल्य स्वदेश में ४ रुपये तथा विदेशों में १० शिलिंग था। १८८५ के अन्त तक इस पत्र के प्रकाशित होने का अनुमान होता है।

Regenerator of Aryavarta—लाहौर

यह पत्र १८८२ ई. में पं. गुरुदत्त द्वारा लाहौर से प्रकाशित किया गया। इतिहासकार ने इसे पं गुरुदत्त, लाला हंसराज तथा लाला लाजपतराय के सम्मिलित उत्साह का परिणाम कहा है। पत्र का स्तर काफी ऊंचा था, किन्तु चार मास चल कर ही यह बन्द हो गया। उपर्युक्त नेतात्रय ही इसके सम्पादक थे।

The Arya Patrika (आर्य पत्रिका)—लाहौर

लाहौर में डी. ए. वी. कालेज की स्थापना का निश्चय महर्षि दयानन्द की पावन स्मृति को चिरस्थायी बनाने की दृष्टि से किया गया था। कालेज आन्दोलन को तीव्रता प्रदान करने की दृष्टि से आर्यसमाज लाहौर ने आर्य पत्रिका नामक एक अंग्रेजी साप्ताहिक का प्रकाशन जुलाई १८८५ से प्रारम्भ किया। पत्रिका में आर्यसमाज आन्दोलन की अनवरत प्रगति के समाचारों को प्रमुखता से छापा जाता था। जब पंजाब की आर्यसमाजों का विभाजन हो गया तो पत्रिका महात्मा दल के हाथों में चली गई। १८८५ से सितम्बर १८९५ तक आर्यपत्रिका आर्यसमाज लाहौर द्वारा ही प्रकाशित होती रही। तत्पश्चात् आर्यसमाज लाहौर के मंत्री श्री परमानन्द ने २७ सितम्बर १८९५ को आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री को पत्र लिख कर तथा अपनी समाज की अन्तरंगसभा द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव की प्रतिलिपि भेज कर सूचित किया कि यदि पत्रिका को सभा अपने संरक्षण में लेना चाहे तो ऐसा कर सकती है। इस पर आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने १३ अक्टूबर १८९५ के अपने अन्तरंग

अधिवेशन में निश्चय किया कि २० अक्टूबर १८९५ से आर्यपत्रिका का प्रकाशन सभा के तत्वावधान में हो तथा बावा अर्जुनसिंह को चालीस रुपया मासिक पर सम्पादक नियत किया जाय। फलत: १ नवम्बर १८९५ से पत्रिका बावा अर्जुनसिंह के सम्पादन में प्रकाशित हुई। अब यह आर्य-प्रतिनिधिसभा पंजाब का अंग्रेजी साप्ताहिक मुखपत्र हो गया। पत्रिका का लक्ष्य इस प्रकार निर्धारित किया गया था—"Devoted to religious, moral, social and economic matters, containing information regarding the Veda Prachar and Gurukula movements and news of general interest to the AryaSamaj and General Public."

पत्रिका के प्रथम सम्पादक लाला संगमलाल थे जैसा कि 'आर्य' में छपी समीक्षा से ज्ञात होता है। बाद के वर्षों में बावा अर्जुनसिंह सम्पादक रहे। उनके पश्चात् लाला रलाराम सम्पादक रहे। राय ठाकुरदत्त धवन इस पत्रिका में 'सत्यार्थी' नाम से लिखते थे। बाद में महाशय कृष्ण ने भी कुछ समय तक सम्पादन किया। आर्य पत्रिका की १९०३ की फाइल हमारे संग्रह में है। पत्रिका का प्रत्येक अंक १६ पृष्ठों का होता था। प्रथम पृष्ठ पर आर्यसमाज के नियमों का अंग्रेजी अनुवाद तथा व्यवस्था सम्बन्धी सूचनायें रहती थीं। धार्मिक, सैद्धान्तिक, तथा दार्शनिक लेखों के अतिरिक्त Notes and News, Samajic Intelligence (आर्यसमाजों की सूचनायें तथा समाचार), Letters to the Editor, Review (नव प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा) आदि स्तम्भ नियमित रूप से रहते थे। आर्यपत्रिका की ये फाइलें आर्यसमाज के प्रारम्भिक इतिहास तथा आन्दोलन की तत्कालीन प्रवृत्तियों को जानने के लिये महत्त्वपूर्ण उपादान हैं।

वैदिक मैगजीन—लाहौर

आर्यसमाज के महामनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ने वैदिक मैगजीन का प्रकाशन १८८९ से किया। वे स्वयं ही इसके सम्पादक भी थे। प्रथम अंक में ही पत्र के उद्देश्य निम्न प्रकार बताए गये हैं—"वैदिक साहित्य के विविध भागों का अनुवाद, सार, समालोचना और विवेचना करके वेदों में बढ़ती हुई रुचि को पूरा करना, वैदिक तत्त्वज्ञान की आन्तरिक सच्चाइयों को, जो जड़वाद के इस युग के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं प्रकट करना, संसार के साम्प्रदायिक या जातीय किन्तु करुणाविहीन मतों की तुलना में वेदों का परोपकारी व दयामय धर्म प्रस्तुत करना, अविद्याजन्य प्राचीन मूढ़ विश्वासों पर कुल्हाड़ी चलाना; कालानुवर्ती एवं लोकप्रिय नीतियों के विपरीत सच्चे सुधार के नियमों की शिक्षा देना, विवादास्पद लेख और आलोचनायें प्रकाशित करके वेदों की पवित्र एवं सरल सच्चाइयों को ताजा

करना, स्वार्थी पुरोहितों, कपटी पाण्डित्यदर्शी भाषा तत्त्वविदों तथा खोखले जड़वादियों के हठपूर्ण मिथ्या प्रचार अथवा वास्तविक भ्रान्तियों को दूर करना।"

पं. गुरुदत्त स्वयं इस पत्र में वैदिक सिद्धान्तों पर शोधपूर्ण लेख लिखते थे। इन लेखों ने देश विदेश के विद्वानों में एक अपूर्व हलचल मचा दी थी। विदेशी पत्रों ने भी वैदिक मैगजीन की भूरि भूरि प्रशंसा की। इस पत्र के द्वितीय एवं तृतीय अंक (अगस्त तथा सितम्बर १८८९ ई.) में Evidences of Human Spirit (जीवात्मा के प्रमाण) शीर्षक पं. गुरुदत्त का लेख छपा था। पत्र दीर्घजीवी नहीं हुआ। सम्पादक के जीवन के साथ उसका भी अन्त हो गया।

आर्य मैसेन्जर (Arya Messanger)—लाहौर

डी. ए. वी. कालेज, लाहौर की ओर से यह पत्र बावा अर्जुनसिंह के सम्पादन में प्रकाशित होता था।

The Harbinger or Health—लाहौर

पं. दुर्गाप्रसाद ने लाहौर से इस पाक्षिक पत्र को प्रकाशित किया। इसमें स्वास्थ्य एवं सदाचार विषयक लेखों को स्थान मिलता था। कुछ वर्ष चल कर बन्द हो गया। विरजानन्द प्रेस लाहौर से मुद्रित होता था।

The D. A. V. College Magazine—लाहौर

डी. ए. वी. कालेज छात्र संघ की यह मासिक पत्रिका जुलाई १९०४ से निकलनी प्रारम्भ हुई। पत्रिका के सम्पादक थे बाबू यज्ञेश्वर घोष तथा लाला गोकुलचन्द। पत्रिका में शिक्षा से सम्बन्धित उच्च कोटि के सारगर्भित लेख होते थे।

The Virjanand Magazine—प्रतापगढ़

यह अंग्रेजी मासिक पत्र जुलाई १९०५ से प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। डा. एस. एस. टग (Tug) एम. डी इसके सम्पादक थे। हमारे संग्रह में पत्र के द्वितीय वर्ष का एक संयुक्तांक (जुलाई से अक्टूबर १९०६) है जिसमें आर. बी. पनवेलकर का थियोसोफी पर तथा पं. विष्णुलाल शर्मा का The Theology of the Arya Samaj शीर्षक लेख छपा है।

The Gurukula Magazine गुजरांवाला—(पंजाब)

आर्य मैगजीन के बाद जो अंग्रेजी मासिक पत्र दीर्घ अवधि तक आर्यसमाज के संदेश को प्रसारित करता रहा वह था 'दि गुरुकुल मैगजीन।' महात्मा मुन्शीराम ने शिक्षा प्रणाली में एक नवीन प्रयोग किया था। प्रथम गुरुकुल गुजरांवाला (पंजाब) में स्थापित हुआ। गुरुकुल मैगजीन इसी गुरुकुल गुजरांवाला का अंग्रेजी मासिक मुख पत्र था। पत्र का प्रकाशन

जनवरी १९०७ से प्रारंभ हुआ। मैगजीन का सिद्धांत वाक्य मनुस्मृति की यह उक्ति था—

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।

इसका अंग्रेजी अनुवाद 'of all charities verily the gift of Knowledge divine is the noblest' मूल पंक्ति के साथ पत्र के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित होता था। पत्र के सम्पादक लाला रलाराम थे। सम्पादकीय कार्यालय गुरुकुल गुजरांवाला में था जबकि प्रकाशकीय कार्यालय बंगाली टोला (अनार कली) लाहौर में था। मैगजीन में विभिन्न लेखों के अतिरिक्त गुरुकुल की प्रवृत्तियों के समाचार भी छपते थे।

Vedic Magazine and Gurukula Samachar—कांगड़ी

गुरुकुल मैगजीन तीन वर्ष तक इसी नाम से गुजरांवाला गुरुकुल के तत्त्वावधान में लाला रलाराम के सम्पादकत्व में प्रकाशित होती रही। तत्पश्चात् १९१० में इसे 'वैदिक मैगजीन एण्ड गुरुकुल समाचार' के नाम से गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित किया जाने लगा। पत्र का मुद्रण गुरुकुल के निजी प्रेस सद्धर्म प्रचारक प्रेस में होता था। अब इसके सम्पादक आचार्य रामदेव बने। प्रो. रामदेव महान् विद्वान्, उत्तम लेखक, विचारक, वक्ता तथा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के कट्टर समर्थक थे। रामदेवजी के सम्पादन में वैदिक मैगजीन आर्यसमाज के सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी पत्र के रूप में उभरा। उत्तमोत्तम लेख, कविता, समाचार तथा नव प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा से पत्र के कालम भरे रहते थे। आर्यसमाजी लेखकों के अतिरिक्त अन्य लेखकों की रचनायें भी प्रकाशित होती थीं। ऐसे लेखकों में योगी अरविंद, साधु टी. एल. वास्वानी, जी. ए. चन्दावरकर, पं. भगवानदास, शरत्चन्द्र दत्त, डी. पी. सर्वाधिकारी, मोहिनी रंजन सेन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। आर्यसमाजी लेखक जो नियमित रूप से मैगजीन में लिखते थे उनके नाम हैं—बैरिस्टर रोशनलाल, प्रो ताराचंद गाजरा, पं घासीराम, प्रो. बालकृष्ण, शिवनन्दन प्रसाद कुल्यार, प्रो. महेशचरण सिन्हा, पं. बालकृष्णसहाय आदि। १९१६ के आसपास यह पत्र लाहौर से मुद्रित होता था। १९२६ में पत्र का प्रकाशकीय कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का मुख्यालय गुरुदत्त भवन लाहौर में था।

मैगजीन के प्रारम्भिक युग में उसका वार्षिक शुल्क १ रुपया था, चौथे वर्ष में इसे बढ़ा कर चार रुपये कर दिया गया और आठवें वर्ष में यह पांच रुपये हो गया। लगभग चौथाई शताब्दी तक अनवरत रूप से प्रकाशित होने वाले इस पत्र ने जो सामग्री पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की, शोधार्थियों के किये उसका निर्विवाद महत्त्व है। आर्यसमाज के निरन्तर विकासमान रूप, उसकी उन्नति एवं प्रगति, उसके आन्तरिक विग्रहों तथा बाह्य संघर्षों की साक्षी वैदिक मैगजीन के पृष्ठों पर अंकित है।

वैदिक मैगजीन—हैदराबाद से

जब गुरुकुल कांगड़ी से वैदिक मैगजीन का प्रकाशन बंद हो गया तो हैदराबाद (दक्षिण) के पं. धारेश्वर (प्राध्यापक, संस्कृत विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय) इस पत्र को जीवन पर्यन्त निकालते रहे।

The Satyavadi—शिकारपुर

हरिसुन्दर साहित्य सदन शिकारपुर (सिंध) से प्रकाशित होने वाला सत्यवादी मासिक अंग्रेजी तथा सिंधी भाषा में निकलने वाला द्विभाषी पत्र था। इसमें आर्य सभ्यता, वैदिक धर्म, नशा निवारण, मांसाहार विरोध जैसे विषयों पर लेख छपते थे। श्री जीवतराम होतचंद पत्र के प्रकाशक थे। १९३०-३२ के आसपास इसके प्रकाशित होने का पता चलता है।

Vedic Digest—बड़ौदा

आत्माराम सांस्कृतिक प्रतिष्ठान (Atma Ram Cultural Foundation) के मासिक मुखपत्र के रूप में अंग्रेजी वैदिक डाइजेस्ट का प्रकाशन जनवरी १९५५ से होने लगा। इसके प्रधान सम्पादक थे पं. वैद्यनाथ शास्त्री तथा सम्पादक द्वय पं. आनन्दप्रिय तथा श्री राजेन्द्र पण्डित। अंग्रेजी में मौलिक लेखों के लिखने वाले लेखक आर्यसमाज में प्रायः दुर्लभ ही हैं। अतः डाइजेस्ट में पं. ठाकुरदत्त धवन, दीवान बहादुर हरविलास शारदा, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय आदि की अंग्रेजी पुस्तकों के अंशों को धारावाही रूप से छापा जाता था।

Cultural India—बड़ौदा

आत्माराम कल्चरल फाउण्डेशन की ओर से निकलने वाला यह पत्र श्री राजेन्द्र पण्डित द्वारा सम्पादित होकर प्रकाशित होता था।

वैदिक मैगजीन—बैंगलोर

वैदिक आदर्शों को प्रचारित करने हेतु त्रैमासिक वैदिक मैगजीन का प्रकाशन १९६२ में बैंगलोर से हुआ। पत्र के प्रधान सम्पादक पं. सुधाकर आर्य सेवक थे। अंग्रेजी जानने वाले जन समुदाय में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारार्थ पत्र की स्थापना हुई थी परन्तु संरक्षण एवं प्रोत्साहन के अभाव में सम्भवतः २-३ अंकों के पश्चात् ही यह काल कवलित हो गया।

Vedic Light—दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने १९६७ में वैदिक लाइट का मासिक प्रकाशन प्रारम्भ किया। भारतेतर देशों में रहने वाले आर्य मतावलम्बियों के लिए एक ऐसे पत्र की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी जो अंग्रेजी के माध्यम से वैदिक धर्म का संदेश प्रसारित कर सके। फलतः आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन ने इस पत्र को पं. वैद्यनाथ शास्त्री के सम्पादन में जारी किया। यह हम देख चुके हैं कि आर्यसमाज में मौलिक रूप से

अंग्रेजी में लिखने वालों की संख्या नगण्य है। वैदिक लाइट में भी पुराने अंग्रेजी ग्रन्थों को ही पुन: प्रकाशित करने की प्रथा दृष्टिगोचर हुई। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय की अंग्रेजी कृतियों को इसमें नियमित रूप से पुन: प्रकाशित किया जाता रहा। पं. रघुनाथ प्रसाद पाठक जैसे एकाध लेखक को छोड़कर शायद ही किसी अन्य लेखक ने अपनी रचना प्रकाशनार्थ भेजी हो।

पं. वैद्यनाथ शास्त्री के सार्वदेशिक सभा की सेवा से पृथक् हो जाने पर सभा के मंत्री श्री ओमप्रकाश त्यागी (पुरुषार्थी) का नाम सम्पादक के स्थान पर छपने लगा। कुछ समय सभा के कार्यालय सचिव श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने सम्पादन कार्य किया। वैदिक लाइट ने आर्यसमाज स्थापना शताब्दी (नवम्बर-दिसम्बर १९७५) तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसम्मेलन के नैरोबी अधिवेशन (नवम्बर-दिसम्वर १९७८) के अवसरों पर विशेषांक प्रकाशित किये। सम्प्रति पं. ब्रह्मदत्त भी सम्पादन कार्य से निवृत्त हो गये हैं तथा पुन: श्री त्यागी ने सम्पादन भार संभाल लिया है।

जनज्ञान (अंग्रेजी संस्करण)—दिल्ली

दयानन्द संस्थान नई दिल्ली ने अपने मुख पत्र जनज्ञान का अंग्रेजी संस्करण जनवरी १९७३ से प्रकाशित करना आरम्भ किया। श्री भारतेन्द्रनाथ तथा कु. ज्योत्स्ना इसके सम्पादक थे। पत्र में डा. (स्वामी) सत्यप्रकाश, प्रो. रतनसिंह, पं. वैद्यनाथ शास्त्री, पं. धर्मदेव विद्या मार्तण्ड एवं डा. भवानीलाल भारतीय आदि लेखकों के लेख प्रकाशित हुए। प्राय: पांच वर्ष तक नियमित रूप से निकलने के पश्चात् इसका प्रकाशन बन्द हो गया। प्रकाशन के अन्तिम वर्ष में डा. (स्वामी) सत्यप्रकाश का नाम सम्पादक के रूप में जाता था।

The Vedic Path—कांगड़ी

हम यह देख चुके हैं कि गुरुकुल कांगड़ी का अंग्रेजी मासिक पत्र वैदिक मैगजीन ३० वर्षों तक सफलता पूर्वक निकलने के पश्चात् १९३६ के आसपास बन्द हो गया था। इसी पत्र को The Vedic Path के नाम से जनवरी १९७७ में त्रैमासिक शोधपत्र के रूप में पुनरुज्जीवित करने का प्रयास किया गया। इस पत्र को श्रद्धानन्द शोध संस्थान का मुखपत्र बताया गया है। पत्र के प्रधान सम्पादक डा. सत्यकेतु विद्यालंकार तथा रेजिडेन्ट एडीटर डा. एच. जी. सिंह थे। पत्र के प्रथम अंक में, जो अप्रैल १९७७ में प्रकाशित हुआ, वेद और वैदिक संस्कृति विषयक लेखों के अतिरिक्त प्राणि विज्ञान, आयुर्वेद, कृषि जैसे विषयों से सम्बन्धित लेख भी छपे हैं।

Vedic Heritage—चेंगनूर (केरल)

आर्यन यूथ लीग तथा आर्य प्रतिनिधि सभा केरल के साहित्यिक मंच वैदिक साहित्य परिषद् के मासिक प्रकाशन के रूप में वैदिक हैरिटेज का प्रकाशन चेंगनूर (केरल) से नवम्बर १९७७ में प्रारम्भ हुआ। पत्र के मुख्य सम्पादक पं. नरेन्द्र भूषण हैं। वैदिक धर्म तथा संस्कृति विषयक उच्च कोटि के लेख प्रकाशित होते हैं। □□

परिशिष्ट—४

अज्ञात तिथि के पत्र

यहाँ कुछ ऐसे पत्रों का यथा सम्भव उपलब्ध विवरण दिया जा रहा है, जिनके प्रकाशन काल का ज्ञान नहीं हो सका।

अंगद—शोलापुर

आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद (निजाम राज्य) का यह साप्ताहिक मुख पत्र शोलापुर से निकलता था। इसके सम्पादक पं. रामदेव शास्त्री थे।

आर्य धर्म रक्षक—लाहौर

पत्र का अधिक विवरण उपलब्ध नहीं है।

बृहस्पति—लाहौर

वैदिक पुस्तकालय लाहौर के संचालक पं. वजीरचन्द्र शर्मा ने बृहस्पति मासिक पत्र का प्रकाशन मोहनलाल रोड़ से किया।

पोल प्रकाशक—काशी

यह साप्ताहिक पत्र था।

आर्य मैगजीन—ईडर (गुजरात)

पत्र का अधिक विवरण प्राप्त नहीं हो सका।

राजपाल—लाहौर

शहीदे धर्म महाशय राजपाल की स्मृति में यह पत्र भीमसेन विद्यालंकार के सम्पादन में निकला। कालान्तर में इसका नाम बलिदान कर दिया गया।

विधवा हितैषी—लाहौर

लाला सुनामराय के सम्पादन में यह पत्र निकला।

प्रभात—लाहौर

यह साप्ताहिक पत्र लाहौर से महाशय कृष्ण ने प्रारम्भ किया। सम्भवतः यह पत्र महाशय जी द्वारा १९३६ में प्रारम्भ किये गये दैनिक प्रभात का हिन्दी संस्करण था।

धर्म दिवाकर—आगरा

यह साप्ताहिक पत्र था।

धर्म दिवाकर—काशी

यह पत्र पं. सत्यदेव (भूतपूर्व मौलाना गुलाम हैदर) ने प्रकाशित किया था।

वैदिक सन्देश—

आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद का यह साप्ताहिक मुख पत्र था।

विवृत्ति—हैदराबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण के मुख पत्र के रूप में यह पत्रिका

सुलतान बाजार हैदराबाद से प्रकाशित हुई थी।

संजय—दिल्ली

श्री भद्रसेन गुप्त इस मासिक पत्र के सम्पादक थे।

शान्ति—

यह मासिक पत्रिका शीतलप्रसाद विद्यार्थी तथा प्रियरत्न आर्ष के संयुक्त प्रयत्नों से प्रकाशित हुई।

विराट्—सिकन्दराबाद (आन्ध्रप्रदेश)

यह साप्ताहिक पत्र पं. वेंकटेश्वर शास्त्री के सम्पादन में निकला।

आर्य संस्कार—लुधियाना

यह साप्ताहिक पत्र था।

महात्मा—जालंधर

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब का साप्ताहिक विचारपत्र श्री त्रिलोकचन्द्र शास्त्री के सम्पादन में निकला।

ऋषि बिजनौर

जगन्नाथ शास्त्री वकील के सम्पादन में यह साप्ताहिक पत्र निकला।

वैदिक संदेश अजमेर

वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा राजपूताना मालवा का साप्ताहिक मुख पत्र श्री द्वारकाप्रसाद सेवक के सम्पादन में प्रकाशित हुआ।

आर्य पञ्च

इस पत्र का उल्लेख पं. नरदेव शास्त्री ने स्वलिखित आर्यसमाज के इतिहास में किया है। उनके अनुसार यह साप्ताहिक पत्र था तथा इसे पं. रुद्रदत्त ने निकाला था। आर्य पञ्च पांच छः सप्ताह तक ही निकल सका था।

शंकर—मुरादाबाद

पं. शंकरदत्त शर्मा मुरादाबाद निवासी थे तथा आर्य साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक थे। उनके शर्मा मशीन प्रेस से शंकर मासिक पत्र प्रकाशित हुआ। इसका सम्पादन पं. बदरीदत्त जोशी (१९२४ ई.) तथा पं. नरदेव शास्त्री ने किया।

ब्राह्मण समाचार—मेरठ

स्वामी प्रेस मेरठ से पं. छुट्टनलाल स्वामी ने प्रकाशित किया।

शुद्धि पत्रिका—दिल्ली

भारतीय शुद्धि सभा दिल्ली की मासिक मुखपत्रिका गौरीशंकर बी. ए. के सम्पादन में प्रकाशित हुई।

वेद विज्ञान—भटिण्डा

यह एक मासिक पत्र था।

□□

परिशिष्ट—५

विदेशों से प्रकाशित आर्यसमाजी पत्र पत्रिकायें

विदेशों से प्रकाशित आर्यसमाजी पत्र पत्रिकायें

आर्यसमाज अपने जन्म काल से ही एक सार्वभौम मानव आन्दोलन के रूप में विकसित हुआ। अतः यह स्वाभाविक ही था कि भारत से इतर देशों में भी उसके उपदेशक, प्रचारक जाते तथा वहां निवास करने वाले प्रवासी भारतीयों के साथ साथ अन्य जाति समूहों में वैदिक धर्म का प्रचार करते। आर्यसमाज के संदेश को भारत से भिन्न देशों में प्रचारित करने वाले ऐसे प्रचारकों की संख्या पर्याप्त रही है जिन्होंने समय समय पर अफ्रीका महाद्वीप, मारिशस, फिजी, गायना, सुरीनाम आदि के अतिरिक्त ब्रिटेन, कनाडा, अमेरिका आदि पश्चिमी देशों में जाकर धर्म का संदेश दिया।

प्रवासी भारतीयों को आर्यसमाज की विचार धारा से परिचित कराने तथा उनमें वैदिक धर्म एवं संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न करने की दृष्टि से विदेशों से भी अनेक आर्यसामाजिक पत्र प्रकाशित हुए। दक्षिण अफ्रीका में स्वामी भवानी-दयाल संन्यासी के एतद् विषयक प्रयत्न कालक्रम की दृष्टि से सर्व प्रथम माने जा सकते हैं। भवानीदयाल संन्यासी की हिन्दी भाषा के प्रचार में अत्यधिक रुचि थी। वे मूलतः बिहार निवासी थे और अपने भारत निवास काल में आर्यावर्त जैसी प्रमुख पत्रिका का सम्पादन कर चुके थे। अतः उन्होंने अपने अफ्रीका प्रवास काल में भी हिन्दी पत्रों को प्रकाशित कर आर्यसमाज की विचार धारा के प्रसार में अपना महत्त्वपूर्ण योग दिया। इसी प्रकार मारिशस, फिजी तथा सुरीनाम आदि देशों में भी समय समय पर आर्यसमाज के जो पत्र प्रकाशित हुए उनका यथा लब्ध विवरण यहाँ दिया जा रहा है—

दक्षिण अफ्रीका—

धर्मवीर—डर्बन (दक्षिण अफ्रीका)

डर्बन (दक्षिणी अफ्रीका) से १९१६ ई. के प्रारम्भ में श्री रल्लाराम गंधीलामल भल्ला ने अमर धर्मवीर पं. लेखराम की स्मृति में धर्मवीर नामक साप्ताहिक पत्र हिन्दी में निकालना प्रारम्भ किया। भल्लाजी उर्दू भाषाविज्ञ होने के कारण उर्दू में ही लिखते, जिसे उनके सहायक श्री मेहरचंद भल्ला हिन्दी में अनूदित कर देते और तब वह पत्र में प्रकाशित होता। इस उर्दू-मयी हिन्दी से पाठकों की तृप्ति नहीं होती थी। तब भल्लाजी के आग्रह से दक्षिण अफ्रीका में आर्यसमाज के प्रचार हेतु प्रबल प्रयत्नशील पं. भवानीदयाल (बाद में स्वामी भवानीदयाल संन्यासी) ने १९१७ में धर्मवीर का सम्पादन

आरम्भ किया। दो वर्षों तक सफलता पूर्वक धर्मवीर का सम्पादन करने के पश्चात् पत्र के संचालक भल्लाजी से मतभेद हो जाने के कारण भवानीदयाल जी ने सम्पादन कार्य छोड़ दिया। इसमें कुछ लेख अंग्रेजी के भी रहते थे।

हिन्दी

पं. भवानीदयाल ने अपनी पत्नी श्रीमती जगरानी के विशेष आग्रह पर मई १९२२ ई. में 'हिन्दी' मासिक पत्रिका प्रकाशित की। लगभग साढ़े तीन वर्ष तक यह पत्रिका सफलतापूर्वक चलती रही। प्रवासी भारतीयों में इस पत्रिका की लोकप्रियता बढ़ी और अन्य भारतीय उपनिवेशों में भी वह पर्याप्त संख्या में जाने लगी। १९२५ में आयोजित महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी के समारोहों की सफलता के लिये पत्रिका ने अनुकूल वातावरण बनाया। जब नवम्बर १९२५ में पं. भवानीदयाल दक्षिण अफ्रीका के आर्य-समाजियों के एक समूह के साथ शताब्दी समारोह में भाग लेने के लिये भारत गये तो हिन्दी का प्रकाशन उन्हें स्थागित करना पड़ा। हिन्दी में आर्यसमाज विषयक चर्चा के अतिरिक्त प्रवासी भारतवासियों के प्रश्नों तथा समस्याओं की प्रमुखत: विवेचना रहती थी, अतः पत्रिका लोकप्रियता के उच्च क्षितिज पर पहुंच गई। साधु एण्ड्रूज, पं. बनारसीदास चतुर्वेदी, राजा महेन्द्रप्रताप, डा. तारकनाथ दास श्री हेनरी पोलक, डा. सुधीन्द्र बोस आदि प्रवासी भारतीयों की समस्याओं में रुचि लेने वाले लेखक प्रायः 'हिन्दी' में अपने लेख प्रकाशनार्थ भेजते थे।

आर्य मित्र—

दक्षिण अफ्रीका की आर्यप्रतिनिधि सभा का का मुख पत्र था।[1]

ट्रिनिडाड—

आर्यसंदेश—एल. शिवप्रसाद के सम्पादन में प्रकाशित हुआ। (प्रवासी फरवरी १९५०)।

पूर्वी अफ्रीका

१. प्रतिनिधि—

आर्य प्रतिनिधि सभा केन्या (पूर्वी अफ्रीका) का मुख पत्र 'प्रतिनिधि' मासिक रूप में निकलता था।[2]

आर्यवीर—नैरोबी

आर्यसमाज नेरोवी (केन्या) को ओर से १९२१ में आर्यवीर नामक पत्र निकला। दो वर्ष तक प्रकाशित होने के अनन्तर यह बंद हो गया।

---

१. दक्षिण अफ्रीका की यात्रा तथा वैदिक धर्म प्रचार—ले. मेहता जैमिनि प्र. प्रेमी प्रेस मेरठ—१९३३ ई.

२. प्रवासी दिसम्बर १९४९ के अंक में कु. जोरावरसिंह का लेख 'ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका में वैदिक धर्म'।

मारिशस के हिन्दी पत्र

आर्य पत्रिका—मारिशस से प्रकाशित होने वाली आर्यसमाज की यह प्रथम पत्रिका १ जून १९१२ से प्रकाशित होनी आरम्भ हुई। श्री तोतालाल इसके सम्पादक थे। जनवरी १९११ में इसे साप्ताहिक का रूप दे दिया गया। १७ अगस्त १९२४ से पत्रिका का सम्पादन श्री काशीनाथ ने किया। १९४० से यह जागृति नाम से प्रकाशित होने लगी और इस समय पं. आत्माराम ने इसका सम्पादन किया। इसमें हिन्दी तथा अंग्रेजी के लेख रहते थे।

आर्य वीर—आर्य परोपकारिणी सभा मारिशस का साप्तहिक मुखपत्र ३ मई १९२९ से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। पं. काशीनाथ इसके सम्पादक थे। इसमें हिन्दी, अंग्रेजी तथा फ्रैंच भाषा में लेख रहते थे।

आर्योदय—इस साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन १९५० से प्रारम्भ हुआ। पत्र श्रद्धानन्द प्रेस में मुद्रित होता हैं। कालान्तर में यह मासिक रूप में प्रकाशित होने लगा। पत्र का कार्यालय मारिशस की राजधानी पोर्ट लुइस में है।

बर्मा के आर्य पत्र

प्राची प्रकाश और न्यू प्राची प्रकाश—

हैदराबाद सत्याग्रह के दिनों में ब्रह्मदेश वासी आर्यों को सत्याग्रह की जानकारी देने के लिये उपर्युक्त दो पत्र क्रमशः हिन्दी और अंग्रेजी में निकले।

वैदिक संदेश—फिजी

पं. श्रीकृष्ण शर्मा तथा पं. विष्णुदत्त के सहयोग से फिजी द्वीप से वैदिक संदेश का प्रकाशन आरम्भ हुआ परन्तु स्वल्प काल पश्चात् पत्र बंद हो गया।

वैदिक संदेश—सुरीनाम

सुरीनाम देश की आर्य दिवाकर सभा ने वैदिक संदेश नामक मासिक पत्र का प्रकाशन नवम्बर १९७५ से प्रारम्भ किया। पत्र के सम्पादक हैं पं. आर. शिवरतन शास्त्री। वैदिक संदेश में हिन्दी के लेख तो प्रमुख रूप से रहते ही हैं, कुछ समाचार एवं सूचनायें आदि डच भाषा में भी छपती हैं।

□□

परिशिष्ट—६

आर्यसमाजी विचारधारा से प्रभावित पत्र

इस शीर्षक के अन्तर्गत हम उन पत्रों का परिचयात्मक विवरण उपस्थित करना चाहते हैं जो विशुद्ध रूप से आर्यसमाज के अधिकृत पत्र न होकर आर्यसमाज की रीति नीति, विचार धारा तथा कार्यक्रम से प्रभावित कहे जा सकते हैं। इन पत्रों के संचालक या सम्पादक आर्यसमाजी थे अतः उनके द्वारा संचालित सम्पादित पत्रों पर आर्यसमाज की विचार पद्धति का प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव देखा जा सकता है।

सज्जन कीर्ति सुधाकर—उदयपुर

मेवाड़ के उदारमना, हिन्दी प्रेमी शासक महाराणा सज्जनसिंह के राजत्व काल में सज्जनकीर्तिसुधाकर (साप्ताहिक) १९३६ वि. (१८७९ ई.) में उदयपुर से राजकीय गजट के रूप में प्रकाशित हुआ। आगरा निवासी पं. वंशीधर वाजपेयी इसके प्रथम सम्पादक थे जो उदयपुर आने से पूर्व 'भारत खण्डामृत' का सम्पादन कर चुके थे। पत्र का नामकरण महर्षि दयानन्द ने किया था। सज्जन कीर्ति सुधाकर में राजाज्ञायें और शासकीय सूचनायें तो छपती ही थीं, सामाजिक, ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक विषयों पर विचारोत्तेजक लेख भी छपते थे।

शुभचिन्तक—शाहजहांपुर

श्री सीताराम के सम्पादन में यह मासिक पत्र १८८३ में निकला।

गोधर्म प्रकाश—फर्रूखाबाद

गो रक्षिणी सभा, हरिद्वार का यह मासिक मुख पत्र अगस्त १८८५ से फर्रूखाबाद से पं. हरदयालु शर्मा के सम्पादन में निकला। १८८८ में यही पत्र कानपुर से पं. देवीप्रसाद शर्मा के सम्पादन में निकला। फर्रूखाबाद से निकलते समय यह इण्डियन सर्विस प्रेस में छपता था।

शुभचिन्तक—जबलपुर

पं. रामगुलाम अवस्थी के सम्पादन में यह साप्ताहिक पत्र १८८८ ई. में निकला।

राजस्थान समाचार—अजमेर

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित वैदिक यंत्रालय के प्रबंधकर्ता मुन्शी (मनीषी) समर्थदान ने यंत्रालय की सेवा से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् १८८९ ई. में अजमेर से राजस्थान समाचार नामक साप्ताहिक का प्रकाशन किया। १८९४ ई. में 'हिन्दी समाचार पत्रों का इतिहास' लिखते समय बाबू राधाकृष्णदास ने इसे आर्यसमाज का पत्र लिखा था। इस पत्र में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित रोचक लेख रहते थे। राजस्थान के देशी राज्यों से जुड़े

प्रश्नों और समस्याओं की भी चर्चा होती थी। थोड़े समय पश्चात् यह पत्र अर्द्ध साप्ताहिक के रूप में छपने लगा। १९०४ ई. में जब रूस जापान युद्ध छिड़ा तो मुन्शीजी इस पत्र को दैनिक के रूप में छापने लगा। बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने राजस्थान समाचार के सम्पादक मुन्शी समर्थदान के आर्यसमाज सम्बन्धी विचारों में परिवर्तन होने का जो उल्लेख किया है, वह विश्वसनीय प्रतीत नहीं होता, क्योंकि आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के प्रति उनकी श्रद्धा अक्षुण्ण रही। मुन्शी समर्थदान स्वामीजी के परम विश्वास पात्र तथा कृपापात्र थे, यह उनके महर्षि से हुए पत्र व्यवहार से विदित होता है। सत्यार्थप्रकाश जैसा महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त ग्रन्थ स्वामीजी ने मुन्शीजी की देखरेख में ही छपाया था तथा उन्होंने अपने ग्रन्थों में यत्र तत्र संशोधन, परिवर्तन आदि का अधिकार भी उन्हें दे रक्खा था। यह सम्भव है कि अपनी व्यक्तिगत कठिनाइयों और मानसिक परेशानियों के कारण मुन्शीजी ने आर्यसमाज की तत्कालीन गति-विधियों में पूर्ण उत्साह से भाग न लिया हो, किन्तु इतने मात्र से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि उनके धार्मिक विश्वासों में कोई परिवर्तन हो गया था।

गो सेवक—प्रयाग

साप्ताहिक गोसेवक का श्री जगत्नारायण द्वारा १८९२ में प्रयाग से प्रकाशन किया गया। यह गोसेवक प्रेस में छपता था।

स्वदेशी वस्तुप्रचारक—काशी

१८९४ ई. में पं. शंकरनाथ (कालान्तर में स्वामी शंकरानन्द) ने स्वदेशी वस्तु प्रचारक मासिक पत्र हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित किया। अधिक विवरण उपलब्ध नहीं है।

विजय—दिल्ली

विजय नामक पत्र की कहानी रोचक एवं मनोरञ्जक है। यह पत्र साप्ताहिक के रूप में १९१९ ई. में दिल्ली से प्रकाशित हुआ। पत्र के सम्पादक स्वामी श्रद्धानन्द के वरिष्ठ पुत्र पं. हरिश्चन्द्र विद्यालंकार थे, परन्तु नाम छपता था वीरभद्र विद्यालंकार का, जो छद्म नाम ही था। श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार ने इसे विशुद्ध राजनीतिक पत्र कहा है। पत्र के दो अंक ही निकल सके थे कि यह राजकीय कोप का भाजन होकर बंद हो गया।

इसी वर्ष पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति ने स्वामी श्रद्धानन्द का आशीर्वाद लेकर दैनिक विजय का प्रकाशन किया। रौलेट एक्ट के विरोध के कारण उन दिनों का राजनीतिक वातावरण गरम था। साधनाभाव में १९२० में विजय का प्रकाशन बंद हो गया। इन्द्रजी गुरुकुल कांगड़ी चले गये और विजय के सम्पादक पं. सत्यदेव विद्यालंकार के लिये पत्र को जारी रखना सम्भव नहीं हुआ।

अर्जुन—दिल्ली

स्वामी श्रद्धानन्द ने २३ अप्रैल १९२३ ई. को दिल्ली से अर्जुन दैनिक का प्रकाशन आरम्भ किया। पत्र के सम्पादक स्वामीजी के कनिष्ठ पुत्र पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति बनाये गये। अर्जुन राष्ट्रीय विचारधारा का प्रबल पोषक था। आर्यसमाज की विचारधारा की ओर तो उसका झुकाव था ही। कालान्तर में पत्र के जीवन में अनेक उतार चढ़ाव आये। १९३४ में जब पत्र की उग्र राष्ट्रीय विचारधारा के कारण उससे ६०० रु. की जमानत मांगी गई तो पत्र के संचालकों ने उसे एक बारगी बंद कर 'वीर अर्जुन' के नाम से पुनः प्रकाशित किया। पत्र का साप्ताहिक संस्करण १९२५ से ही प्रकाशित होने लगा था।

वीर अर्जुन का प्रतिज्ञा वाक्य था—'अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्' साप्ताहिक वीर अर्जुन के आद्य सम्पादक पं. कृष्णचन्द्र विद्यालंकार थे। इन्द्र जी के पुत्र जयन्त वाचस्पति तथा पं. लेखराम[1] ने भी इसका सम्पादन किया था। १९४२ में सरकारी प्रकोप का पात्र बनने के कारण वीर अर्जुन का प्रकाशन बंद हो गया। १९४५ में इसका पुनः प्रकाशन हुआ। साप्ताहिक वीर अर्जुन उस युग का सर्वश्रेष्ठ हिन्दी साप्ताहिक था। पं. कृष्णचन्द्र विद्यालंकार, पं. रामगोपाल विद्यालंकार तथा श्री क्षितीश वेदालंकार के सम्पादन में पत्र ने पर्याप्त प्रगति की। इस इतिहास लेखक के आरम्भिक साहित्यिक और सांस्कृतिक लेख वीर अर्जुन में छपते रहे।

कालान्तर में वीर अर्जुन का प्रकाशनाधिकार इन्द्र जी के हाथ से निकल गया। अब श्री श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स लि. की स्थापना हुई और वीर अर्जुन साप्ताहिक रूप में इसी संस्था के तत्त्वावधान में छपने लगा। श्रद्धानन्द पब्लिकेशन्स पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विचारधारा के लोगों का प्रभुत्व था, अतः पत्र आर्यसमाज की अपेक्षा हिन्दुत्ववाद के निकट होता चला गया। जब इस संस्था ने भी पत्र का प्रकाशन बंद कर दिया तो आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता और पत्रकार महाशय कृष्ण ने इसे दिल्ली से ही दैनिक रूप में निकालना आरम्भ किया। महाशय कृष्ण के ओजस्वी सम्पादकीय लेखों से वीर अर्जुन की प्रतिष्ठा बढ़ी। पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन के दौरान वीर अर्जुन के लेखों की धूम रही। वीर अर्जुन के वर्तमान सम्पादक महाशय जी के कनिष्ठ पुत्र के. नरेन्द्र हैं, जो अपने यशस्वी पिता के पद चिह्नों पर चलते हुए पत्र का संचालन कर रहे हैं। आर्यसमाज के प्रति पत्र की सहानुभूति पूर्ववत् ही है।

प्रभात—मेरठ

प्रो. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्कशिरोमणि के सम्पादन में यह साप्ताहिक पत्र १९२६ में निकला।

---

१. अमर शहीद पं. लेखराम से भिन्न

हिन्दी मिलाप—लाहौर

११ सितम्बर १९२७ को श्री खुशहालचन्द खुर्सन्द (बाद में महात्मा आनन्द स्वामी) ने लाहौर से हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार सुदर्शन (वास्तविक नाम-बद्रीनाथ वर्मा) के सम्पादन में हिन्दी मिलाप का आरम्भ किया।[1] कालांतर में इसके प्रधान सम्पादक श्री रणवीर (महात्मा आनन्द स्वामी के बड़े पुत्र) तथा सम्पादक श्री यश (महात्मा जी के अन्य पुत्र) रहे। नारी जागरण तथा विशेषत: पंजाब के महिला वर्ग में जागृति उत्पन्न करने का श्रेय हिन्दी मिलाप को है। इस पत्र ने स्त्रियों में हिन्दी के प्रति प्रेम उत्पन्न किया। मिलाप के सम्पादकीय विभाग में सर्व श्री हरिकृष्ण प्रेमी, जयनाथ नलिन, सन्तराम आदि गण्यमान्य हिन्दी साहित्यकार समय समय पर रहे थे। देश विभाजन के समय मिलाप के सम्पादक श्री आत्मस्वरूप शर्मा थे जिन्होंने साम्प्रदायिक विभीषिका का डट कर सामना किया। १५ अगस्त १९४७ को वे लाहौर के कृष्णनगर स्थित अपने निवास स्थान पर ही डटे रहे और धार्मिक मदान्धता की ज्वाला में अपने आपको झोंक कर बलिदान का ज्वलन्त आदर्श उपस्थित किया।

विभाजन के पश्चात् हिन्दी मिलाप का पुन: प्रकाशन २३ सितम्बर १९४९ को जालंधर से श्री यश के सम्पादन में हुआ। दिल्ली से मिलाप का उर्दू संस्करण श्री रणवीर के सम्पादकत्व में प्रकाशित होता है। मिलाप का एक अन्य संस्करण हैदराबाद से श्री युद्धवीर के सम्पादन में तथा एक अन्य संस्करण लंदन से भी प्रकाशित होता है।

जागृति—कलकत्ता

कलकत्ता की आर्यसामाजिक प्रवृत्तियों के सूत्रधार श्री मिहिरचन्द्र धीमान् 'कुसुमाकर' हिन्दी भूषण ने १९३७ ई. में जागृति नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन बंगदेश की राजधानी से किया। धार्मिक और सामाजिक विचारों की दृष्टि से पत्र आर्यसमाज की नीति का समर्थन था। पत्र के सम्पादक प्रसिद्ध हिन्दी पत्रकार मुन्शी नवजादिकलाल श्रीवास्तव तथा श्री वीरेन्द्र विद्यावाचस्पति थे। कालान्तर में यह पत्र दैनिक के रूप में भी निकला। इस समय इसका सम्पादन श्री जगदीशचन्द्र हिमकर ने किया था।

प्रवासी—अजमेर

प्रवासी भारतीयों के नेता स्वामी भवानी दयाल संन्यासी ने प्रवासीभवन, आदर्शनगर, अजमेर से मार्च १९४८ में प्रवासी मासिक का प्रकाशन द्विभाषी पत्र (हिन्दी तथा अंग्रेजी) के रूप में किया। प्रवासी में मुख्यत: उपनिवेशों में बसे भारतवासियों की समस्याओं की चर्चा रहती थी। ९ मई १९५० को स्वामीजी के निधन के पश्चात् पत्र बंद हो गया।

---

१. उर्दू मिलाप १९२३ में ही निकाला जा चुका था।

संजय—झालावाड़ (राजस्थान)

इन्दौर के प्रसिद्ध आर्य नेता और कार्यकर्ता पं० लालाराम आर्य ने १९४९ में दैनिक संजय का प्रकाशन इन्दौर से किया। कालान्तर में जब पं० लालाराम झालावाड़ आ गये तो संजय का प्रकाशन १९५७ से साप्ताहिक रूप में यहाँ से होने लगा। आर्य जी के निधन के पश्चात् भी संजय का प्रकाशन यथापूर्व हो रहा है।

वीर प्रताप—जालंधर

महाशय कृष्ण के पुत्र श्री वीरेन्द्र एम. ए. द्वारा संचालित वीर प्रताप दैनिक पंजाब का सशक्त हिन्दी दैनिक है जो १९५९ से प्रकाशित हो रहा है।

अभय घोष—अजमेर

अजमेर के आर्य कार्यकर्ता श्री मूलचन्द आर्य ने यह साप्ताहिक पत्र १९६३ में निकाला।

न्याय—अजमेर

श्री विश्वदेव शर्मा के सम्पादन में दैनिक न्याय का प्रकाशन १९६६ से होने लगा। इससे पूर्व यह साप्ताहिक रूप में निकलता था। श्री शर्मा वेद संस्थान के संस्थापक स्वामी विद्यानन्द विदेह के पुत्र हैं। न्याय आर्यसमाज की विचारधारा को महत्त्व देता है।

□□

आर्यसमाज के पत्रकार

मुन्शी बख्तावरसिंह

आर्यसमाज के आद्य सम्पादक मुन्शी बख्तावरसिंह शाहजहाँपुर के निवासी थे। ये हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी भाषाओं के अच्छे जानकार थे। मुन्शीजी ने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित वैदिक यंत्रालय का प्रबंधक पद स्वीकार किया था। कालान्तर में हिसाब में गड़बड़ करने तथा यंत्रालय के प्रबंध में अन्य अनियमिततायें बरतने के कारण स्वामीजी ने इन्हें प्रबंधक पद्र से पृथक् कर दिया था। जनवरी १८७८ में मुन्शीजी ने काशी से 'आर्य दर्पण' शीर्षक हिन्दी उर्दू का द्विभाषी पत्र प्रकाशित किया। इसमें स्वामी दयानन्द की यात्रायें और प्रचार विवरण, विभिन्न शास्त्रार्थों के समाचार तथा आर्यसमाजों की गतिविधियां प्रकाशित होती थीं। जब मुन्शीजी यंत्रालय के प्रबंधक पद से मुक्त कर दिये गये तो उन्होंने इस पत्र को शाहजहाँपुर से प्रकाशित करना आरम्भ किया। अब आर्य दर्पण में आर्यसमाज का समर्थन नहीं तो विरोध भी नहीं रहता था। मुन्शीजी द्वारा प्रकाशित किये गये आर्यभूषण तथा अजाव नामक दो अन्य पत्रों का भी उल्लेख मिलता है।

पं. गणेशप्रसाद शर्मा

आर्यसमाज फर्रुखाबाद द्वारा प्रकाशित भारतसुदशाप्रवर्तक का आर्य सामाजिक पत्रों में विशिष्ट स्थान है। यह पत्र स्वामी दयानन्द के जीवनकाल में ही प्रकाशित हुआ था तथा स्वामीजी ने पत्र को अपना आशीर्वाद प्रदान किया था। पं. गणेशप्रसाद शर्मा इसके सम्पादक थे। शर्माजी फर्रुखाबाद निवासी औदीच्य ब्राह्मण थे। उनका जन्म १८६० ई. में हुआ था। स्वामी दयानन्द का फर्रुखाबाद नगर में आगमन एकाधिक बार हुआ था और शर्माजी को उनके उपदेश श्रवण करने का सुयोग बहुत बार मिला था।

औदीच्य वंशोद्भव होने के कारण शर्माजी भी अपने पूर्वजों की परिपाटी का अनुसरण करते हुए शैव मतावलम्बी थे, परन्तु स्वामी दयानन्द के उपदेशों का अनुसरण कर उन्होंने शैव मत का परित्याग कर दिया और दृढ़ आर्य मतावलम्बी बन गये। शर्माजी का हस्तलेख सुन्दर और सुडौल होता था। स्वामीजी इससे बड़े प्रभावित हुए। वे शर्माजी को अपने पास आशु लिपिक के रूप में रखने के इच्छुक थे। स्वामीजी ने उनसे अनुरोध भी किया कि वे देशाटन में उनके साथ रहा करें। और ग्रन्थ लेखन तथा पाण्डु लिपि तैयार करने में उनकी सहायता करें परन्तु पारिवारिक बन्धनों के कारण शर्माजी के लिये यह संभव नहीं हो सका था। भारत सुदशा प्रवर्तक का सम्पादन करने के अतिरिक्त शर्माजी ने अनेक छोटे बड़े ग्रन्थों की भी रचना की थी। फर्रुखाबाद का इतिहास उनकी श्रेष्ठ ऐतिहासिक कृति है जिसमें इस जिले के ऐतिहासिक और भौगोलिक विवरण के साथ साथ महर्षि के फर्रुखाबाद नगर तथा जिले के अन्य स्थानों में आने का विवरण पूर्ण विस्तार के साथ दिया गया है। शर्माजी का निधन ७२ वर्ष की आयु में मार्च १९३२ में हुआ।

पं. मुन्नालाल शर्मा

आर्यसमाज अजमेर के मासिक मुख पत्र देश हितैषी के सम्पादक पं. मुन्नालाल शर्मा राजस्थान के प्रथम आर्यसमाजी पत्रकार थे। इनका पूरा नाम पं. मुन्नालाल उप्रैती शर्मा था और ये मूलत: आगरा के निवासी थे। अजमेर में इनकी नियुक्ति राजपूताना मालवा रेलवे में ड्राफ्ट्समैन के पद पर हुई थी। १८८१ में आर्यसमाज अजमेर की स्थापना हुई तो मुन्नालाल जी उसके मंत्री चुने गये। शर्माजी हिन्दी और नागरी के अत्यन्त प्रेमी तथा पोषक थे। फलत: आपने आर्यसमाज की सारी कार्यवाही हिन्दी में ही करना आरम्भ किया। जब आर्यसमाज अजमेर ने अपना मासिक पत्र देश हितैषी निकालने का निश्चय किया तो मुन्नालाल जी को उसका सम्पादक नियुक्त किया गया। पत्र का प्रथम अंक वैशाख सं. १९३९ वि. में प्रकाशित हुआ। देशदितैषी के प्रारम्भिक १४ अंकों का सम्पादन शर्माजी ने किया। तत्पश्चात् पत्र का सम्पादन आर्यसमाज द्वारा नियुक्त एक समिति के द्वारा होने लगा। शर्माजी का इस सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द से पत्र व्यवहार भी हुआ था। जब भारत सरकार ने श्री हण्टर की अध्यक्षता में शिक्षा कमीशन का गठन किया तो आर्यसमाज अजमेर की ओर से श्री मुन्नालाल शर्मा ने हिन्दी भाषा तथा नागरी लिपि के समर्थन में एक स्मरण पत्र तैयार किया जो उक्त कमीशन को दिया गया। कालान्तर में शर्माजी ने भारतोद्धारक नामक एक अन्य पत्र भी निकाला। खेद है कि इस पत्र का विस्तृत विवरण हमें प्राप्त नहीं हो सका। कालान्तर में उनका स्थानान्तरण लाहौर हो गया। अपने निधन से

पूर्व उन्होंने अजमेर के बाबू मुहल्ले में स्थित अपनी हवेली आर्यसमाज अजमेर को देने की वसीयत कर दी थी। २० नवम्बर १८८९ को लाहौर में पं. मुन्नालाल शर्मा का निधन हुआ।

सम्पादकाचार्य पं. रुद्रदत्त शर्मा

हिन्दी के प्रसिद्ध समालोचक पं. पद्मसिंह शर्मा ने आर्यसमाज के विख्यात लेखक, विद्वान् तथा हिन्दी पत्रकारिता को अपना उल्लेखनीय योगदान करने वाले पं. रुद्रदत्त शर्मा के निधन पर संयुक्त प्रान्तीय षष्ठ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए निम्नलिखित मर्मस्पर्शी उद्‌गार व्यक्त किये थे—"हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध वृद्ध महारथी पं. रुद्रदत्त जी सम्पादकाचार्य की मृत्यु एक बड़ी ही दुखप्रद और करुणाजनक घटना है। इनकी मृत्यु से हिन्दी को जो हानि पहुंची है, उसकी पूर्ति होनी कठिन हैं। आपकी सारी आयु हिन्दी सेवा में बीती। एक लगन से इस प्रकार हिन्दी सेवा का सौभाग्य बहुत कम लेखकों को प्राप्त हुआ है।

आप हिन्दी के सुलेखक ही नहीं, सुवक्ता भी थे। सम्पादन कला के तो सचमुच वे आचार्य थे। उनके सत्संग से कई आदमी अच्छे सम्पादक बन गये। उनकी साहित्य सेवा पत्र सम्पादन से ही आरम्भ हुई और सम्पादन में ही शरीर के साथ उसकी समाप्ति—

लिखे जब तक जिये खबर नामे।
चल दिये हाथ में कलम थामे॥

यह प्रान्त पं. रुद्रदत्त जी जैसे बहुगुण सम्पन्न साहित्य सेवी की जन्मभूमि होने पर उचित गर्व कर सकता है। साहित्य सेवा में सारी आयु खपाने वाले इन वृद्ध साहित्य सेवी का अन्तिम समय जिस दयनीयावस्था में बीता, वह बड़ा ही करुणाजनक और शोचनीय रहा। यह हिन्दी के लिये दुर्भाग्य और हमारे लिये लज्जा और कलंक की बात है।"[1]

जिन वयोवृद्ध पत्रकार शिरोमणि को हिन्दी के एक अन्य मूर्धन्य लेखक और सम्पादक ने उपर्युक्त शब्दों में भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की, उन पं. रुद्रदत्त का जन्म धामपुर (ज़िला बिजनौर) में मार्गशीर्ष त्रयोदशी सं. १९११ वि. (१८५४ ई.) में हुआ था। उनके पिता पं. काशीनाथ संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् तथा ज्योतिष एवं तन्त्रशास्त्र के उद्‌भट ज्ञाता थे। रुद्रदत्त की

१. पद्मपराग

प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। पश्चात् वे अपने चाचा के साथ अध्ययन के लिये मथुरा, वृन्दावन, काशी आदि स्थानों में रहे। इक्कीस वर्ष की आयु में अध्ययन समाप्त कर घर लौटे। अब उन्होंने मुरादाबाद तथा बाद में सहारनपुर में आर्यसमाज के उपदेशक के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया। पं. रुद्रदत्त का सम्पूर्ण जीवन वृत्त उपलब्ध नहीं है। उनके घनिष्ठ मित्र पं. पद्मसिंह शर्मा ने पत्रकार प्रवर पं. बनारसीदास चतुर्वेदी के नाम एक पत्र में लिखा था—"सम्पादकाचार्य पं. रुद्रदत्तजी की जीवनी के लिये भारतमित्र आदि पत्रों की फाइलें टटोलनी पड़ेंगी।" स्वयं शर्माजी ने ही सम्पादकाचार्य के जीवनवृत्त के सम्बन्ध में जो सामग्री चतुर्वेदी जी को भेजी, उसके आधार पर उन्होंने एक संस्मरण लिखा था[1] जिससे पं. रुद्रदत्त शर्मा के जीवन का किञ्चित् वृत्त प्रकाश में आ सका है।

पं. रुद्रदत्त आर्यसमाज के उपदेशक और प्रचारक बने तथा उनका कार्य क्षेत्र शीघ्र ही व्यापक हो गया। अब वे संयुक्त प्रान्त, बिहार और बंगाल में आर्यसमाज की विचारधारा का प्रचार करने के लिये भ्रमण करने लगे। सफल लेखक, उत्तम वक्ता, अनुभवी पत्रकार तथा तेजस्वी शास्त्रार्थकर्ता के रूप में उनका व्यक्तित्व चतुर्मुखी था। आर्यसमाजों के उत्सवों पर वे सर्वत्र व्याख्यानों के लिये आमंत्रित किये जाते थे। पौराणिक विद्वानों से शास्त्रार्थ के लिये उन्हें सदा सन्नद्ध देखा गया। संस्कृत के सफल गद्यकार और सनातनधर्मी विद्वान् पं. अम्बिकादत्त व्यास से उनके अनेक शास्त्रार्थ हुए।

हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में रुद्रदत्त शर्मा का योगदान ऐतिहासिक और अनुपमेय है। आर्यसमाजी पत्रकार के रूप में उन्होंने अपने जीवन का आरम्भ १ मई १८८५ से किया जब वे आर्यसमाज मुरादाबाद के मुख पत्र आर्य विनय पाक्षिक के सम्पादक बने। इस पत्र के १६ अंकों का सम्पादन (१५ जनवरी १८८६) ही वे कर सके। पश्चात् वे कलकत्ता चले गये। यहाँ वे बंगाल बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र आर्यावर्त के सम्पादक बने और लगभग १ दशक तक इस पत्र का सम्पादन किया। १८९७ के आस-पास जब आर्यावर्त का प्रकाशन कलकत्ता से हट कर दानापुर से होने लगा तो पं. रुद्रदत्त सम्पादक पद से मुक्त होकर स्वयं का प्रेस खोलने के विचार से कानपुर चले आये। अपने जीवन में विभिन्न पत्रों का जिस प्रकार क्रमशः सम्पादन किया उसका विवरण निम्न प्रकार है—

इन्द्रप्रस्थ प्रकाश दिल्ली	१ वर्ष
भारतमित्र कलकत्ता (साप्ताहिक व दैनिक)	१० वर्ष
आर्यावर्त कलकत्ता	१० वर्ष
हिन्दी बंगवासी कलकत्ता	२ वर्ष
भारत रत्न पटना	२ वर्ष

१. 'संस्मरण और रेखाचित्र' में प्रकाशित

श्री वेंकटेश्वर समाचार बम्बई	१ वर्ष
आर्यमित्र आगरा	६ वर्ष
सत्यवादी हरिद्वार	१ वर्ष
हितवार्ता कलकत्ता	२ वर्ष
प्रेम वृन्दावन	२ वर्ष[1]
मारवाड़ी नागपुर	२ वर्ष

इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन को पत्रकारिता के लिये समर्पित करने वाले इस महारथी को अपने दैनिक जीवन में जिन आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उसका विवरण यहाँ दे देना अनुपयुक्त नहीं होगा। पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने अपने संस्मरणों में लिखा है—"एक दिन शाम के वक्त मैं उनके स्थान पर पहुंचा। नीचे किसी सुनार की दुकान थी और उसके ऊपर एक छोटी सी कोठरी में, जिसका किराया डेढ़ रुपये मासिक था, पण्डित जी विद्यमान थे और दो पैसे की एक टीन की लैम्प के धुंधले प्रकाश में कुछ लिख रहे थे। चालीस वर्ष की हिन्दी साहित्य सेवा के बाद किसी विद्वान् की यह दुर्गति हो सकती है, इसकी कल्पना मैंने स्वप्न में भी नहीं की थी।"

शर्माजी के अन्तिम दिन नाना कष्टों में व्यतीत हुए। १७ नवम्बर, १९१८ को जब उनका निधन हो गया तो आगरा से प्रकाशित होने वाले उर्दू पत्र मुसाफिर ने उनकी अन्तिम काल की दैन्यावस्था का चित्रण करते हुए लिखा—"हमें पं. रुद्रदत्त जी को उनकी अन्तिम बीमारी के कयाम में पैसे-पैसे को मोहताज देखकर बड़ा दुःख हुआ। ....पण्डित जी मरने के पहले तकरीबन दो तीन माह बुखार और पेचिश के मर्ज में मुब्तिला रहे और इस लाजमी बेकारी के अयाम में उनकी आर्थिक दशा यह रही कि हकीम, डाक्टरों की फीस तो दरकिनार, दवा खरीदने के लिये उन्हें पैसा मयस्सर न था।"

पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने इस करुणोत्पादक प्रसंग का चित्रण करते हुए लिखा है—"सन् १८७५ से १९१८ तक ४४-४५ वर्ष तक साहित्य सेवा तथा सम्पादन कार्य करने का यह पुरस्कार था। चालीस, पैंतालीस वर्ष तक साहित्य सेवा और हिन्दी पत्रों का सम्पादन करने के बाद औषध, पथ्य तथा भोजन के लिये तरस तरस कर प्राण गंवाना, यह अकथनीय दुर्भाग्य था संस्कृत के उस महान् विद्वान्, आर्यसमाज के महोपदेशक तथा शास्त्रार्थकर्ता और हिन्दी के उच्चकोटि के लेखक तथा पत्रकार का, जिसका सम्पूर्ण जीवन

१. पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के अनुसार आगरे से रायबहादुर शालिगराम ने इस पत्र को १८७२ में प्रकाशित किया था। यह पाक्षिक पत्र था और इसके सम्पादन से ही रुद्रदत्त शर्मा का पत्रकार जीवन प्रारम्भ हुआ था। —समाचार पत्रों का इतिहास, पृ. १४३

ही जनता को शिक्षित करने में बीता था। जैसे कष्ट सम्पादकाचार्य रुद्रदत्त जी को अपने अन्तिम दिनों में भोगने पड़े वैसे शायद ही किसी अन्य हिन्दी पत्रकार को भागने पड़े हों। वे सचमुच भूखों मर गये और उनकी इस दुर्दशामय मृत्यु के लिये आर्यसमाज तथा हिन्दी जगत् समान रूप से दोषी है।''

इस प्रकार आर्यसमाज का यह वयोवृद्ध पत्रकार और साहित्य सेवी, वक्ता और उपदेशक अपनी सारस्वत साधना द्वारा धर्म, भाषा, साहित्य और संस्कृति की सेवा करते हुए स्वयं शोषण का शिकार होता रहा। कहते हैं कि आर्यसमाज आगरा ने उनसे सेवा तो ली परन्तु उनकी सेवा नहीं कर सका। अन्तिम बार उनकी गरीबी अनुचित का लाभ उठाकर उन्हें न्यूनातिन्यून वेतन दिया गया। जब वे बीमार पड़े तो उनके पास न तो डाक्टर को देने के लिये फीस थी और न दवा के लिये पैसे। यह और भी खेद का विषय है कि ऐसे समर्पित पत्रकार की सेवाओं का गौरवपूर्ण शब्दों में उल्लेख करने में भी साहित्य के इतिहास लेखकों ने कोताही बरती। वस्तुतः पत्रकार शिरोमणि पं. बनारसीदास चतुर्वेदी तथा स्व. पं. हरिशंकर शर्मा ने ही सम्पादकाचार्य जी की प्रतिभा एवं गुणों को पहचाना था और उन्होंने ही रुद्रदत्त शर्मा की कीर्ति को चिरस्थायिनी बनाने हेतु प्रयास भी किये। चतुर्वेदी जी तो यदा कदा अपने लेखों और पुस्तकों में सम्पदकाचार्य जी के कृतित्व का मूल्यांकन करते ही रहते हैं। पं. हरिशंकर शर्मा के प्रयत्न से ही नागरी प्रचारिणी सभा आगरा के भवन में सम्पादकाचार्य का तैल चित्र लगाया गया।

पं भीमसेन शर्मा

स्वामी दयानन्द के प्रधान शिष्य और आर्यसमाजी पत्रकारों की प्रथम पीढ़ी के अग्रणी सदस्य पं. भीमसेन शर्मा का जन्म कार्तिक शुक्ला पंचमी सं. १९११ वि. को एटा जिले के लालपुर ग्राम में पं. नेकराम मिश्र के यहाँ हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू और हिन्दी के माध्यम से हुई। १२ वें वर्ष में यज्ञोपवीत हुआ और सत्रहवें वर्ष में स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित फर्रुखाबाद की संस्कृत पाठशाला में इन्हें शास्त्रीय अध्ययन के लिये प्रविष्ट कराया गया। यह सं. १९२९ वि. की घटना है। लगभग सवा चार वर्ष तक भीमसेन जी ने इस पाठशाला में अध्ययन किया। स्वामी जी के मथुरा-

कालीन सहपाठी पं. युगलकिशोर और पं. उदयप्रकाश इस पाठशाला में अध्यापन कार्य करते थे। इन्हीं से भीमसेन जी ने अष्टाध्यायी और महाभाष्य सहित संस्कृत व्याकरण का अध्ययन किया।

अध्ययन समाप्ति के पश्चात् पं. भीमसेन स्वामी दयानन्द के निकट रह कर ग्रन्थ लेखन कार्य में लेखक (लिपिक) के रूप में उनका सहयोग करने लगे। फलत: वे स्वामी जी के साथ उनके भ्रमण और देशाटन में भी साथ रहते और यथा आवश्यकता लेखन कार्य (Dictation) करते। अयोध्या निवासकाल में स्वामी जी ने उनसे ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका की पाण्डुलिपि तैयार कराई। वेदाङ्गप्रकाश के कुछ भाग भी स्वामी जी के निर्देश पर पं. भीमसेन ने तैयार किए। इस प्रकार लगभग साढ़े तीन वर्ष तक वे स्वामी जी के प्रवासकालीन साथी रहे। जब स्वामी जी ने अपने ग्रन्थों के मुद्रण और प्रकाशन के लिये वैदिक यन्त्रालय की काशी में स्थापना की तो पं. भीमसेन को वहाँ ग्रन्थ संशोधक (प्रूफ रीडर) के रूप में नियुक्त किया। स्वामी जी के राजस्थान के अन्तिम दौरे में वे स्वामी जी के साथ ही थे और उनके निधन को भीमसेन जी ने अपने चर्म चक्षुओं से देखा था।

वैदिक यंत्रालय के प्रंवधक पद से मुन्शी समर्थदान के हट जाने पर प्रो. भीमसेन इस पर नियुक्त किय गये। उस समय यंत्रालय प्रयाग में था। यहीं से उन्होंने आषाढ़ १९४४ वि. में आर्य सिद्धान्त मासिक का प्रकाशन आरम्भ किया। स्वामी दयानन्द के एक अन्य शिष्य और लेखक पं. ज्वालादत्त शर्मा आरम्भ में इस पत्र के सहयोगी सम्पादक के रूप में पं. भीमसेन के साथ रहे। आर्यसिद्धान्त ने अपने शास्त्रीय, सैद्धान्तिक तथा धार्मिक प्रश्नों से सम्बन्धित विवेचनापूर्ण लेखों के कारण पर्याप्त ख्याति अर्जित की थी। सुदीर्घ काल तक आर्यसिद्धान्त का सफलतापूर्वक सम्पादन कर भीमसेन शर्मा ने आर्यसमाज की पत्रकारिता को सुदृढ़ बनाया, परन्तु कालान्तर में जब कतिपय मौलिक प्रश्नों को लेकर उनका आर्यसमाज के सिद्धान्तों से मतभेद हुआ तो वे अविलम्ब आर्यसमाज को त्याग कर सनातन धर्म के शिविर में चले गये। अब १९०२-०३ में उन्होंने इटावा से ब्राह्मण सर्वस्व नामक मासिक पत्र निकाला और आर्यसमाज कें सिद्धान्तों का तीव्र एवं कठोर खण्डन करना आरम्भ किया।[1]

शर्माजी के जीवन की यह विडम्बना ही थी कि जिस व्यक्ति ने अपने विस्तृत अध्ययन और शास्त्रज्ञान के बल पर स्वामी दयानन्द की मान्यताओं और धारणाओं का आर्यसिद्धान्त के माध्यम से वलपूर्वक समर्थन किया, अब वही उनके विरोध में एक अन्य पत्र निकाल कर अपने मान्य आचार्य और गुरु

---

१. पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के इस कथन से सहमत होना कठिन है कि ब्राह्मण सर्वस्व में सनातनधर्म का मण्डन तो होता ही था पर आर्य समाज का खण्डन बहुधा नहीं होता था।

के मत का खण्डन करने में तत्पर होता है। जीवन के अन्तिम दौर में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय में वेदव्याख्याता के पद पर नियुक्त हुए। लगभग पांच वर्ष तक इस पद पर कार्य करने के पश्चात् उन्होंने अवकाश ग्रहण किया। चैत्र कृष्णा द्वादशी सं. १९७४ वि. को उनका निधन हुआ।

पं. भीमसेन शर्मा का हिन्दी के प्रारम्भिक पत्रकारों में महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे संस्कृतनिष्ठ हिन्दी लिखने के समर्थक थे तथा प्राय: फारसी, अरबी के शब्दों के संस्कृत रूप दे दिया करते थे। आर्य सिद्धान्त की फाइलें आर्यसमाज के धार्मिक एवं दार्शनिक सिद्धान्तों का सप्रमाण विवेचन प्रस्तुत करती हैं तथा उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों में हुई प्रगति का लेखा उपस्थित करती हैं।

पं. लेखराम आर्यमुसाफिर

आर्य समाज की उर्दू पत्रकारिता के पितामह पं. लेखराम आर्यमुसाफिर का जन्म ८ चैत्र १९१५ वि. को जिला जेहलम के अप्रसिद्ध ग्राम सैयदपुर के
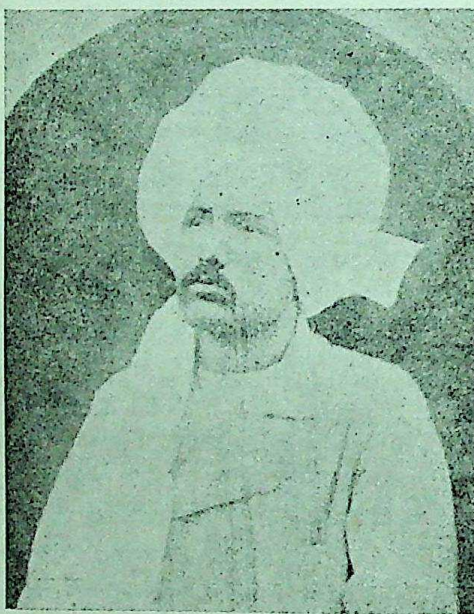
एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। प्रारम्भ में पं. लेखराम ने पुलिस विभाग में कार्य किया परन्तु शीघ्र ही वे आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर वैदिक धर्म के उपदेशक बन गये। १८८० में पं. लेखराम ने आर्यसमाज पेशावर को उर्दू मासिक धर्मोपदेश निकालने की प्रेरणा की और स्वयं पत्र का सम्पादन कार्य करने लगे। १८८३ में आर्थिक कठिनाइयों के

कारण पत्र बंद हो गया। जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपना मुख पत्र आर्य गजट निकालना आरम्भ किया तो पं. लेखराम को १८८७ में इसका सम्पादक नियुक्त किया गया। पं. लेखराम ने अत्यन्त सफलतापूर्वक पत्र का सम्पादन किया। लेखराम की ही प्रेरणा से अजमेर में उर्दू का एक अन्य पत्र वैदिक विजय मासिक १८८९ में निकलने लगा था।

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

आर्यसमाज के प्रसिद्ध तार्किक, शास्त्रार्थ महारथी, लेखक तथा पत्रकार स्वामी दर्शनानन्द का जन्म माघ कृष्णा दशमी सं. १९१८ वि. को लुधियाना जिले के जगरांवा ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पं. रामप्रताप था। स्वामीजी का बाल्यकाल का नाम कृपाराम था। प्रारम्भ कालीन शिक्षा कृपाराम की संस्कृत और फारसी में हुई। मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उन्हें व्यापार में लगने के लिए कहा गया। वे दूकान पर बैठने भी लगे परन्तु उनका मन व्यापार, व्यवसाय एवं गृहस्थ संचालन के लिए नहीं बना था। कृपाराम को बाल्यकाल में ही वैवाहिक बंधन में बांध दिया गया था, परन्तु वे यकायक घर से निकले गये और वैराग्य धारण कर यत्र तत्र भ्रमण करने लगे। उन्हें एक बार अपने घर लौट चलने के लिए आग्रह भी किया गया। वे घर लौट आये परन्तु अपना सारा समय शास्त्राभ्यास और स्वामी दयानन्द रचित ग्रन्थों के अध्ययन में लगाने लगे।
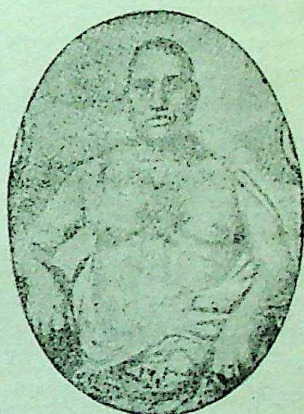
चैत्र पूर्णिमा १९४५ वि. को पं. कृपा राम काशी आ गये और १० दिसम्बर १८८२ को तिमिरनाशक प्रेस की स्थापना कर तिमिरनाशक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। पत्रप्रकाशन और सम्पादन का उनका यह प्रथम प्रयास था। इसके पश्चात् तो उनके जीवन के तीन ही लक्ष्य रह गये-(१) प्रेस और प्लैट फार्म के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार करना (२) गुरुकुलों की स्थापना कर पुरातन शिक्षा प्रणाली को पुनरुज्जीवित करना (३) अन्य मतावलम्बियों से शास्त्रार्थ कर आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों की श्रेष्ठता सिद्ध करना। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पं. कृपाराम ने १९०१ ई. वसन्तपंचमी के दिन राजघाट पर स्वामी अनुभवानन्द से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की और दर्शनानन्द सरस्वती नाम स्वीकार किया। अब वे सभी प्रकार के बंधनों और लौकिक दायित्वों से मुक्त होकर धर्म प्रचार में लग गये।

स्वामी दर्शनानन्द कार्य को प्रारम्भ करने में विश्वास रखते थे। उनकी यह धारणा बन गई थी कि प्रारम्भ किये हुए किसी लोकोपकारी कार्य को संचालित करने और उसमें सहयोग देने के लिये व्यक्ति और साधन अनायास ही सुलभ हो जाते हैं। इसी विश्वास के आधार पर उन्होंने अपने जीवन काल में अनेक गुरुकुलों की स्थापना की, अनेक पत्र निकाले तथा अन्य मतावलम्बियों से सैंकड़ों शास्त्रार्थ किये। ग्रन्थलेखन में भी उनका परिश्रम अपूर्व था। वे उर्दू के प्रभावशाली लेखक थे। सैंकड़ों ट्रैक्टों की रचना करने के साथ साथ उन्होंने उपनिषदों, दर्शनों आदि शास्त्र ग्रन्थों की टीका भी की। उनके द्वारा प्रकाशित एवं सम्पादित हिन्दी पत्रों में तिमिरनाशक, वैदिक धर्म, गुरुकुल समाचार, आर्य सिद्धान्त, ऋषि दयानन्द, वेदप्रचारक, वैदिक फिलासफी तथा वैदिक मैगजीन आदि नाम उल्लेखनीय हैं। उर्दू में उन्होंने वैदिक धर्म, तालिबे इल्म तथा मुबाहिसा पत्र निकाले। इस प्रकार अपने जीवन में लगभग एक दर्जन पत्रों को संचालित करना और उनके सम्पादन-प्रकाशन का आयोजन करना स्वामी दर्शनानन्द जैसे पुरुषार्थप्रवण पुरुष का ही काम था। स्वीमी जी का निधन ७ अप्रैल १९१३ के दिन हाथरस में हुआ।

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

आर्य समाज के युवा विद्वान् तथा अंग्रेजी के प्रगल्भ लेखक पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म वैशाख शुक्ला प्रतिपदा १९२१ वि. तदनुसार २६ अप्रैल १८६४ को मुलतान में हुआ। उनके पिता लाला रामकृष्ण अध्यापक थे विद्यार्थी अवस्था में ही उन्होंने स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन किया और २० जून १८८० को आर्यसमाज के विधिवत् सदस्य बन गये। उन्होंने विज्ञान विषय लेकर एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा गवर्नमेंट कालेज, लाहौर में विज्ञान के प्राध्यापक बन गये। डी. ए. वी. कालेज लाहौर की स्थापना में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था।

पं. गुरुदत्त के लेख पहले आर. सी. बेरी सम्पादित आर्य-मैगजीन में छपे। बाद में उन्होंने महात्मा हंसराज तथा लाला लाजपतराय के साथ 'रीजेनेरेटर ऑफ आर्यावर्त' अंग्रेजी में निकाला। आर्य पत्रिका में भी वे नियमित रूप में लिखते थे उनके वैदिक संज्ञाविज्ञान तथा यूरोपीय विद्वान् (The Termi-

nology of the Vedas and European Scholars), जीवात्मा का प्रमाण (Evidences or Human Spirit), A Reply to Mr. T. williams' Letter on Idolatory in the Vedas .आदि अनेक लेख लाहौर से प्रकाशित होने वाली आर्यसामाजिक पत्रिकाओं में छपे थे। १८८९ में उन्होंने वैदिक मैगजीन का प्रकाशन किया। वस्तुत: पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ने आर्यसमाज में अंग्रेजी पत्रकारिता को पल्लवित करने का सुदृढ़ प्रयास किया था। खेद है कि १९ मार्च १८८९ को पच्चीस वर्ष की अल्पायु में ही दिवंगत हो जाने के कारण पं. गुरुदत्त की प्रतिमा एवं शक्ति का पूर्ण लाभ आर्यसमाज को नहीं मिला।

पं. तुलसीराम स्वामी

अपने युग के अद्वितीय शास्त्रज्ञ, शास्त्रार्थमहारथी तथा वर्षों तक वेदप्रकाश जैसे उच्चकोटि के मासिकपत्र का सम्पादन करने वाले पं. तुलसीराम स्वामी का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला ३ सं. १९२४ वि. को परीक्षितगढ़ (मेरठ) में पं. हजारीलाल स्वामी के यहाँ हुआ। पिता के सान्निध्य में बाल्यकालीन प्रारम्भिक शिक्षा हुई। नौ वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। ११ वर्ष की अल्पायु में बालक पर शीतला का आक्रमण हुआ जिसके कारण उनके एक नेत्र की ज्योति जाती रही। पं. तुलसीराम का संस्कृत शिक्षण गढ़मुक्तेश्वर में पं. लज्जाराम के समीप हुआ। यहाँ रहकर उन्होंने व्याकरण आदि शास्त्रों का अध्ययन किया।

१९४० वि. के आस पास स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थ-प्रकाश, ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका तथा वेदाङ्गप्रकाश आदि ग्रन्थों के अध्ययन के फलस्वरूप पं. तुलसीराम का झुकाव आर्य-समाज की ओर हुआ। १९४१ वि. में देहरादून जाकर उन्होंने पं. युगलकिशोर से अष्टाध्यायी और महाभाष्य का अध्ययन किया। पं. दिनेशराम (स्वामी दयानन्द के लेखक और लिपिक) से भी कुछ समय तक पढ़े। मेरठ के पं. घासीराम के सम्पर्क में आकर पं. तुलसीराम ने आर्य-समाज की विधिवत् सदस्यता ग्रहण की। १८८७ में उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर प्रदेश (वर्तमान उत्तरप्रदेश) के संगठन में योग दिया। देवनागरी विद्यालय मेरठ में भी कुछ समय तक संस्कृत शिक्षण का कार्य किया।

कालान्तर में अध्यापन कार्य छोड़कर पं. तुलसीराम स्वामी सर्वात्मना आर्यसमाज के प्रचार कार्य में कूद पड़े। वह युग शास्त्रार्थों का था। शास्त्रों के गम्भीर अध्येता तथा अपूर्व तार्किक होने के कारण पं. तुलसीराम ने अपने जीवन में प्रतिद्वन्द्वी पण्डितों से सैंकड़ों शास्त्रार्थ किया। इनमें उन्हें विजय और ख्याति पर्याप्त मात्रा में मिली। १९४८ वि. में आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के उपदेशक पद पर पं. तुलसीराम की नियुक्ति हुई। दो वर्ष पश्चात् पं. भीमसेन शर्मा ने पं. तुलसीराम को प्रयाग से संचालित होने वाले अपने सरस्वती प्रेस के प्रबन्धक पद पर नियुक्त किया। अब वे शर्माजी के सहयोगी बनकर आर्यसिद्धान्त में सैद्धान्तिक लेख नियमित रूप से लिखने लगे।

स्वामी प्रेस की स्थापना और वेद प्रकाश का सम्पादन—

पं. तुलसीराम ने १९५५ वि. में मेरठ में स्वामी प्रेस की स्थापना की। यह प्रेस अपने युग का प्रसिद्ध प्रकाशन संस्थान था, जिससे स्वामी द्वय (पं. तुलसीराम तथा उनके अनुज पं. छुट्टनलाल) लिखित अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ छपे। जनवरी १८९७ में स्वामी प्रेस से ही पं. तुलसीराम के सम्पादन में वेदप्रकाश मासिक का प्रकाशन आरम्भ हुआ। वेदप्रकाश को आर्यसमाजी क्षेत्रों में भारी लोकप्रियता प्राप्त हुई। इस पत्र में आर्य सिद्धान्तों के समर्थक लेखों के साथ साथ विरोधियों द्वारा किये गये आक्षेपों का सटीक खण्डन भी छपता था। पं. तुलसीराम का निधन १७ जुलाई, १९१५ को विशूचिका रोग से हुआ। उनके दिवंगत होने पर पत्र का सम्पादन उनके अनुज पं. छुट्टनलाल स्वामी ने सफलतापूर्वक किया।

महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द)

आर्यसमाज के वरिष्ठ नेता और सद्धर्म प्रचारक के माध्यम से वैदिक धर्म और आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार करने वाले महात्मा मुन्शीराम का

जन्म फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी १९१३ वि. (१८५६ ई.) को जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में हुआ। पिता लाला नानकचन्द उत्तरप्रदेश में पुलिस इन्सपैक्टर के पद पर कार्य करते थे अतः बालक मुन्शीराम का शैशव और कैशोर्य वाराणसी, बरेली आदि नगरों में व्यतीत हुआ। १९३६ वि. में उन्हें बरेली में स्वामी दयानन्द का व्याख्यान सुनने और उनसे धर्म चर्चा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। परिणामस्वरूप मुन्शीराम अपनी नास्तिक विचारधारा से विमुख होकर वास्तविक अर्थ में

कल्याण मार्ग के पथिक बन गये।

लाहौर में आकर वकालत का अध्ययन करते समय मुन्शीराम प्रथम ब्रह्मसमाज के सम्पर्क में आये, परन्तु पुनर्जन्म विषयक शंका का संतोषप्रद समाधान उन्हें आर्यसमाज के सभासद बनने से हुआ। आर्यसमाज लाहौर के तत्कालीन नेता लाला सांईदास ने मुन्शीराम के आर्यसमाज प्रवेश को एक युगान्तरकारी घटना बताया था। वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण कर मुन्शीराम जालन्धर आ गये और मुख्तार बन गये। यहीं से आर्यसमाज के माध्यम से उनके सार्वजनिक जीवन का आरम्भ हुआ। महाशय मुन्शीराम जिज्ञासु शीघ्र ही पंजाब आर्यसमाज के स्तम्भों में गिने जाने लगे और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का नेतृत्व उन्हें प्राप्त हुआ। शिक्षाविषयक नीति तथा मांसभक्षण विषयक मतभेदों के कारण जब पंजाब का आर्यसमाज विभाजन और दलबन्दी का शिकार हो गया तो महात्मा मुन्शीराम गुरुकुल दल (महात्मा पार्टी) के नेता के रूप में उभरे।

१८८९ ई० में उन्होंने सद्धर्म प्रचारक नामक उर्दू साप्ताहिक का प्रकाशन जालंधर से किया। लाला देवराज का उन्हें इस कार्य में पूर्ण सहयोग मिला। कालान्तर में सद्धर्म प्रचारक का प्रकाशन गुरुकुल कांगड़ी से होने लगा। वर्षों तक सद्धर्म प्रचारक के माध्यम से लाला मुन्शीराम ने आर्यसमाज की अखिल भारतीय प्रवृत्तियों का नेतृत्व किया और आर्यजनता का उपयुक्त मार्गदर्शन किया। उन्होंने समय समय पर गुरुकुल कांगड़ी से ही श्रद्धा (मासिक) तथा सत्यवादी (साप्ताहिक) पत्र भी निकाले। पाठकों की रुचि और आग्रह को ध्यान में रखकर उन्होंने सद्धर्मप्रचारक को हिन्दी में प्रकाशित करने का अविलम्ब निश्चय कर लिया और उसे निस्संकोच क्रियान्वित भी कर दिया। महात्मा मुन्शीराम की हिन्दी सेवाओं को ध्यान में रखकर उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भागलपुर अधिवेशन का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। राष्ट्रीय कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन (१९१९ ई.) में स्वागताध्यक्ष के पद से हिन्दी में भाषण दिया जो राष्ट्रीय महासभा के इतिहास में दिया गया प्रथम हिन्दी भाषण था। स्वामीजी ने दिल्ली से विजय तथा अर्जुन जैसे राष्ट्रीय पत्रों को निकालने की प्रेरणा दी तथा हिन्दी पत्रकारिता में राष्ट्रीयता के स्वर को गुंजाया। सद्धर्मप्रचारक में लिखे गये उनके लेखों और टिप्पणियों में आर्य-समाज के तत्कालीन इतिहास की जीवन्त झलक मिलती है। २३ दिसम्बर १९२६ को दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द एक कट्टरपंथी की गोली के शिकार हुए।

लाला देवराज

आर्यसमाज में नारी शिक्षा के अग्रदूत लाला देवराज स्त्रियोपयोगी पत्र पत्रिकाओं के भी ध्वजवाहक कहे जा सकते हैं। इनका जन्म ३ मार्च १८६०

ई. में जालंधर में एक सम्पन्न गृहस्थ लाला शालिग्राम के घर हुआ। इनकी बड़ी बहिन शिवदेवी लाला मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) को व्याही गई थी। लाला देवराज लाला मुन्शीराम के न केवल निकट के रिश्तेदार अपितु धार्मिक सामाजिक कार्यों में उनके सहयोगी एवं सहायक थे। उन्होंने महात्मा मुन्शीराम के सहयोग से जालंधर में कन्या महाविद्यालय की स्थापना की जो सम्भवत: नारी शिक्षा का प्रथम उच्चस्तरीय प्रयास था। लालाजी ने अपना सम्पूर्ण जीवन ही इस संस्था की उन्नति एवं प्रगति में अर्पित कर दिया था। १८९७ ई. में उन्होंने उक्त महाविद्यालय की मासिक मुखपत्रिका के रूप में 'पाञ्चाल पण्डिता' का प्रकाशन किया। तदनन्तर १९०६ में उर्दू में मासिकपत्र भारत तथा १९२१ में भारती मासिक पत्रिका प्रकाशित की। १९२२ में जलविद्सखा (जालंधर महाविद्यालय का संक्षिप्त रूपान्तर) प्रकाशित की। लाला देवराज ने अनेक पाठ्यपुस्तकों का लेखन एवं सम्पादन किया। १७ अप्रैल १९३५ को उनका देहान्त हुआ।

पं. पद्मसिंह शर्मा

हिन्दी साहित्य में तुलनात्मक समालोचना शैली के प्रवर्तक, तेजस्वी पत्रकार तथा काव्य मर्मज्ञ पं. पद्मसिंह शर्मा का जन्म फाल्गुन शुक्ला १२ सं. १९३३ वि. रविवार को ग्राम नायकनगला (जिला बिजनौर) में हुआ। इनके पिता का नाम श्री उमरावसिंह था जो व्यवसाय से कृषक थे। इनके यहाँ जमींदारी और लेनदेन भी होता था। वाल्यकाल में पद्मसिंह जी का अध्ययन पिता के निकट हुआ, पुन: संस्कृत पण्डितों को घर पर रखकर उन्होंने सारस्वत, कौमुदी आदि संस्कृत व्याकरण ग्रन्थ तथा रघुवंश आदि काव्य पढ़े। १८९४ ई. में शर्माजी प्रयाग आये। उन दिनों स्वामी दयानन्द के शिष्य पं. भीमसेन शर्मा प्रयाग में संस्कृत विद्यालय चलाते थे। पद्मसिंह ने यहाँ रहकर अष्टाध्यायी का अध्ययन किया, पुन: काशी, मुरादाबाद, लाहौर, जालंधर, ताजपुर (बिजनौर) आदि स्थानों पर भी पढ़ते रहे। उनकी उर्दू, फारसी की शिक्षा घर पर ही मौलवी लोगों से हुई।
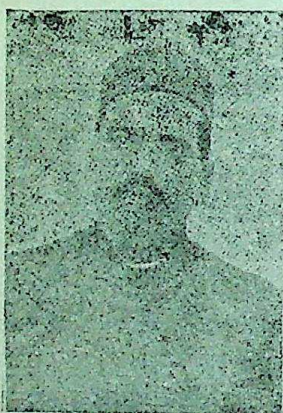
१९०४ ई. में वे गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापक बने। गुरुकुल के संस्थापक महात्मा मुन्शीराम ने हरिद्वार से सत्यवादी नामक साप्ताहिक पत्र निकाला

था जिसका संपादन पं. रुद्रदत्त शर्मा करते थे। पं. पद्मसिंह शर्मा को भी इस पत्र के सम्पादकीय विभाग में कार्य करने का अवसर मिला। यहाँ से शर्माजी के पत्रकार जीवन का आरम्भ हुआ। परोपकारिणी सभा अजमेर ने अपने मुखपत्र परोपकारी का प्रकाशन (द्वितीय बार) १९६४ वि. में किया। एक वर्ष पश्चात् वैशाख १९६५ वि. में शर्माजी को इस पत्र का सम्पादक नियुक्त किया। फलतः वे अजमेर आये और पूर्ण तत्परता के साथ परोपकारी का सम्पादन करने लगे। साहित्यिक लेखन और पत्रकारिता में शर्माजी को अपूर्व व्युत्पन्नता प्राप्त थी। इसलिये उन्होंने परोपकारी को शीघ्र ही एक उच्च-स्तरीय पत्र बना दिया। परोपकारी में नियमित रूप से लिखने के लिये उन्होंने हिन्दी के अनेक जाने माने लेखकों और कवियों को प्रेरित किया। पं. नाथूराम शर्मा शंकर की कवितायें तो शर्माजी के सम्पादन काल में नियमित रूप से परोपकारी में छपती थीं। इसी प्रकार पं. भीमसेन शर्मा आगरा वाले, पं. गंगाप्रसाद एम. ए., मास्टर आत्माराम अमृतसरी तथा पं. नरदेव शास्त्री आदि आर्यसमाज के गण्यमान्य विद्वान् भी इस पत्र में प्रायः लिखते रहते थे। परन्तु शर्माजी अधिक काल तक परोपकारी के सम्पादक नहीं रह सके। १० मास के पश्चात् वे अजमेर छोड़कर १९०९ के आरम्भ में महाविद्यालय ज्वालापुर चले गये। इसी बीच उन्होंने दयानन्द अनाथालय अजमेर के मुख-पत्र 'अनाथरक्षक' का भी सम्पादन किया था।

गुरुकुल ज्वालापुर के साथ पं. पद्मसिंह शर्मा का दीर्घकालीन घनिष्ट सम्बन्ध रहा। यहाँ रहकर अध्यापन कार्य के अतिरिक्त उन्होंने ज्येष्ठ (शुक्ल पक्ष) १९६६ से प्रकाशित होने वाले महाविद्यालय के मुखपत्र भारतोदय का सम्पादन भी आरम्भ किया। उनके सहयोगी सम्पादक पं. नरदेव शास्त्री थे। परोपकारी की ही भांति भारतोदय को भी समुन्नत करने तथा उसे आर्यसमाज के एक गणनीय पत्र के रूप में विकसित करने का कार्य शर्माजी ने किया। १९१५ में श्री शिवप्रसाद गुप्त का अनुरोध स्वीकार कर शर्माजी ने ज्ञानमण्डल काशी के प्रकाशनों का काम संभाला। उनके सम्पादन और निर्देशन में मण्डल के अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हुए। महाविद्यालय से शर्माजी का सम्पर्क १९१७ तक बना रहा। अब वे हिन्दी समालोचना लेखन के कार्य में प्रवृत्त हुए। संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मुरादाबाद अधिवेशन की अध्यक्षता १९७७ वि. में उन्होंने की। इस अवसर पर उन्होंने महत्त्वपूर्ण अध्यक्षीय भाषण दिया। १९८० वि. में बिहारी सतसई पर लिखे गये उनके संजीवन भाष्य पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें मंगलाप्रसाद पारितोषिक से पुरस्कृत किया। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मुजफ्फरपुर अधिवेशन की अध्यक्षता उन्होंने १९२८ में की। इस अवसर पर दिये गये उनके भाषण में विभिन्न महत्त्पूर्ण साहित्यिक समस्याओं पर विवेचना पूर्ण

दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया था।

यद्यपि शर्माजी का अवशिष्ट जीवन हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में ही व्यतीत हुआ, किन्तु उन्होंने आर्यसमाज के कतिपय विशिष्ट महापुरुषों—स्वामी दयानन्द, पं. गणपति शर्मा, स्वामी शुद्धबोध तीर्थ तथा पं. भीमसेन शर्मा (आगरा) पर मार्मिक निबन्ध भी लिखे जो उनके पद्मपराग शीर्षक निबन्ध संग्रह में संगृहीत हुए हैं। ७ अप्रैल १९३२ को विशूचिका रोग से शर्माजी का अपने ग्राम नायक नगला में ही देहान्त हो गया। पत्रकार जगत तथा मित्र मण्डल में वे 'सम्पादकजी' के नाम से प्रसिद्ध थे। पं. नाथूराम शर्मा शंकर, पं. बनारसीदास चतुर्वेदी आदि से उनके प्रगाढ़ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। चतुर्वेदी जी ने उनकी स्मृति में विशालभारत (कलकत्ता) का एक विशेषांक भी प्रकाशित किया।

पं. नरदेव शास्त्री 'वेदतीर्थ'

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के मुखपत्र भारतोदय के सहायक सम्पादक तथा आर्यसमाज के विख्यात विद्वान्, लेखक तथा पत्रकार पं. नरदेव शास्त्री का जन्म २१ अक्टूबर १८८० को हैदराबाद दक्षिण के शेडम नामक

ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्रीनिवास राव तथा माता का नाम कृष्णा बाई था। पं. लेखराम के व्याख्यानों को सुन कर इनके पिता आर्य-समाजी बने थे। आर्यसमाज में प्रविष्ट होने पर नरसिंह राव (यही इनका

बचपन का नाम था) ने अपना नाम 'नरदेव' रख लिया। नरदेव जी की प्रारम्भिक शिक्षा लाहौर में हुई। पश्चात् वे कलकत्ता गये और वहां पं. सत्यव्रत सामश्रमी से ऋग्वेद का अध्ययन किया। कलकत्ता से लौट कर पं. नरदेव शास्त्री ने स्वल्पकाल तक गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापन कार्य किया। तत्पश्चात् वे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आगये और आजीवन इसी संस्था से सम्बन्धित रहे।

पं. नरदेव शास्त्री ने पं. पद्मसिंह शर्मा के साथ महाविद्यालय के पत्र भारतोदय का सम्पादन किया। वे एक कुशल लेखक, शिक्षा शास्त्री तथा शास्त्रज्ञ विद्वान् थे। शास्त्री जी ने आर्यसमाज का इतिहास, ऋग्वेदालोचन, गीताविमर्श आदि अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। 'आप बीती जग बीती' शीर्षक आपकी आत्मकथा अनेक प्राचीन संस्मरणों से परिपूर्ण हैं। उन्होंने मुरादाबाद से प्रकाशित होने वाले एक अन्य पत्र शंकर का भी सम्पादन किया था। आर्यसमाज की विभिन्न पत्रपत्रिकाओं में उन्होंने सैंकड़ों विचारपूर्ण लेख लिखे। २४ सितम्बर १९६१ में आपका निधन हो गया।

महाशय कृष्ण

आर्यसमाज की उर्दू पत्रकारिता के जाज्वल्यमान नक्षत्र महाशय कृष्ण का जन्म १८८० ई. में वजीराबाद (पाकिस्तान) में हुआ। इनके पिता का नाम लाला ताराचन्द जी था। महाशय का जन्म का नाम 'राधाकृष्ण' था, जिसे इन्होंने स्वयं ही बदल कर कृष्ण कर लिया। जिस समय कृष्ण जी नवीं कक्षा के विद्यार्थी थे, उसी वर्ष पं. लेखराम का बलिदान हुआ। अमर हुतात्मा के इस आत्मत्याग का कृष्ण जी पर अमिट प्रभाव पड़ा और वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये। बी. ए. तक की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् महाशय जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की साप्ताहिक मुखपत्रिका 'आर्यपत्रिका' का कुछ काल तक १९०३ ई. में सम्पादन किया, किन्तु सभा के नेताओं से मतभेद हो जाने के कारण उन्हें यह कार्य छोड़ देना पड़ा।

१९०६ ई. में महाशय जी उर्दू साप्ताहिक 'प्रकाश' निकाला। इस पत्र के माध्यम से लोगों ने महाशय जी की लेखनी के जौहर देखे। प्रकाश में

आर्यसमाज की रीति नीति, कार्य पद्धति, संगठन तथा अन्य समस्याओं पर अधिकृत विचार प्रस्तुत किये जाते थे। उसके ऋष्यंकों की धूम रहती थी। इधर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यों में भी महाशय जी का पूर्ण योगदान रहा तथा वे इस संस्था के वर्षों मन्त्री रहे। १९१८ में जब महात्मा गांधी जी ने रौलेट एक्ट का विरोध करते हुये देशवासियों को सत्याग्रह का आह्वान किया तो महाशय जी ने राष्ट्रीय आन्दोलन के उद्देश्यों का प्रचार करने की दृष्टि से ३० मार्च १९१९ से दैनिक प्रताप का प्रकाशन आरम्भ किया। प्रताप में प्रकाशित होने वाले राजनीतिक विचारों के कारण तत्कालीन अंग्रेजी सरकार ने उसका प्रकाशन बन्द करा दिया। पत्र सम्पादक महाशय कृष्ण को कारागार का दण्ड भी दिया गया। कारागार से मुक्त होने पर फरवरी १९२० में उन्होंने प्रताप का प्रकाशन पुनः आरम्भ किया। १९२५ में 'प्रकाश' का हिन्दी सस्करण भी प्रकाशित होने लगा। १९३६ में लाहौर से दैनिक प्रभात का प्रकाशन शुरू किया।

देश विभाजन के पश्चात् महाशय जी ने दिल्ली को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। अक्टूबर १९४७ से उन्होंने दैनिक प्रताप को पुनः प्रारम्भ किया और अप्रैल १९५४ में वीर अर्जुन की व्यवस्था अपने अधिकार में लेकर उसे दैनिक समाचार पत्र का रूप दिया। प्रताप (उर्दू) तथा वीर अर्जुन में महाशय जी के सम्पादकीय लेख अत्यन्त प्रभावशाली तथा पठनीय होते थे। हिन्दुत्व की रक्षा में सन्नद्ध सभी आन्दोलनों को महाशय जी का आशीर्वाद प्राप्त होता था और वे अपनी लौह लेखनी द्वारा उनका समर्थन करते थे। गोरक्षा आन्दोलन तथा हिन्दी रक्षा आन्दोलन के संदेश को सर्वत्र प्रसारित करने में कृष्ण जी की टिप्पणियों और अग्रलेखों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। महाशय जी परोपकारिणी सभा के प्रधान रहे तथा सभा के मुखपत्र परोपकारी को प्रकाशित करने की प्रेरणा दी। २४ फरवरी १९६३ को आर्यसमाज के इस तेजस्वी लेखक और निर्भीक पत्रकार का दिल्ली में निधन हो गया।

आचार्य रामदेव

आर्यसमाज के अप्रतिम विद्वान्, अद्वितीय वक्ता एवं शिक्षा शास्त्री आचार्य रामदेव उत्कृष्ट लेखक तथा पत्रकार भी थे। उनका जन्म ३१ जुलाई १८८१ को हुआ। इनके पिता श्री चन्दूलाल स्वयं अध्यापक थे। १४ वर्ष की अवस्था अवस्था में मेट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर रामदेव जी ने डी. ए. वी. कालेज लाहौर में प्रवेश लिया। वहां एफ. ए. तक इनकी शिक्षा हुई। महात्मा मुन्शीराम जी के सहयोग से रामदेव जी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में जनता के समक्ष आये। प्रारम्भ में इन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की साप्ताहिक अंग्रेजी पत्रिका 'आर्य पत्रिका' का उप सम्पादक बनाया

गया। कालान्तर में गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के पद को सुशोभित किया। आचार्य रामदेव के कार्यकाल में गुरुकुल कांगड़ी ने अपूर्व उन्नति की। गुरुकुल का एक विश्वविद्यालय के रूप में विकास आचार्य रामदेव की सूझ बूझ तथा कार्यदक्षता के कारण ही हो सका। जब गुरुकुल ने अपना अंग्रेजी मासिक मुखपत्र दि वैदिक मैगजीन एण्ड गुरुकुल समाचार आरम्भ किया तो आचार्य रामदेव कुछ काल के पश्चात् इसके सम्पादक बने। वैदिक मैगजीन अपने युग की सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी आर्य पत्रिका थी। आचार्य रामदेव के अनुरोध और प्रेरणा से अनेक प्रतिष्ठित नेता, लेखक एवं साहित्यकार अपनी रचनायें इसमें प्रकाशनार्थ भेजते थे। योगी अरविंद के स्वामी दयानन्द विषयक दो प्रसिद्ध लेख सर्वप्रथम वैदिक मैगजीन में ही छपे थे। ९ दिसम्बर १९३९ को आचार्य रामदेव का देहरादून में निधन हुआ।

मारिशस के आर्य पत्रकार—पं. काशीनाथ किष्टो

पं. काशीनाथ का जन्म १८८४ ई. में पूर्व मारिशस में हुआ। इनके पूर्वज बंगाली थे जो वर्षों पूर्व इस ब्रिटिश उपनिवेश में जाकर बस गये थे। किष्टो जी की शिक्षा लाहौर में हुई। १९२४ में इन्होंने आर्यसमाज के मुखपत्र 'आर्य पत्रिका' का सम्पादन आरम्भ किया। १९२८ में मारिशस से ही निकलने वाले एक अन्य पत्र आर्यवीर के प्रधान सम्पादक बने। श्री किष्टो आर्यसमाज के अग्रणी उपदेशक तथा प्रचारक थे। इस देश में आर्यन वैदिक स्कूल की स्थापना तथा संचालन भी उन्होंने किया। १९४७ में इस प्रवासी आर्य पत्रकार का निधन हुआ।

डा. केशवदेव शास्त्री—

काशी से नवजीवन जैसे उत्कृष्ट मासिक पत्र का सम्पादन एवं प्रकाशन करने वाले डा. केशवदेव शास्त्री आर्यसमाज के पत्रकारों की अग्रिम पंक्ति में सुशोभित हैं। शास्त्री जी का जन्म अविभाजित पंजाब के मॉण्टगुमरी जिले के कमालिया नामक कस्बे में हुआ था। इनके पिता का नाम चौधरी सुखानन्द था। प्रारम्भिक अध्ययन के पश्चात् ये डी. ए. वी. कालेज लाहौर में पढ़ने के लिये चले गये। अध्ययन समाप्ति के उपरान्त शास्त्री जी ने कुछ समय तक वैदिक यन्त्रालय, अजमेर के प्रवन्धकर्ता के पद पर का कार्य किया। महात्मा मुन्शीराम जी के सद्धर्म प्रचारक यन्त्रालय के अधिष्ठाता पद पर भी रहे।

इसी बीच उन्हें संस्कृत अध्ययन में रुचि उत्पन्न हुई और वे रावलपिण्डी जाकर पं. सीताराम शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन करने लगे। यहीं से उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की और आयुर्वेद सीखने हेतु कलकत्ता चले गये। पं. द्वारिकानाथ सेन कविराज से आयुर्वेद पढ़ कर भिषगाचार्य की उपाधि ग्रहण की।

१९०८ के अन्त में शास्त्री जी ने काशी को अपना कार्यक्षेत्र बनाया तथा १५ जून १९०९ से नवजीवन मासिक का प्रकाशन आरम्भ किया। नवजीवन की गणना आर्यसमाज के श्रेष्ठ पत्रों में होती थी। हिन्दी जगत् में भी इस पत्र को प्रतिष्ठा प्राप्त थी। कालान्तर में जब शास्त्री जी एम. डी. के अध्ययन के लिये अमेरिका चले गये तो श्री द्वारिकाप्रसाद सेवक ने इन्दौर से नवजीवन का प्रकाशन पुनः आरम्भ किया। हिन्दी के प्रख्यात पत्रकार पं. बनारसीदास चतुर्वेदी की प्रथम रचना नवजीवन में ही छपी थी। आर्यसमाज में युवकों के प्रवेश हेतु शास्त्री जी ने अथक प्रयास किये। उन्होंने आर्यकुमार आन्दोलन की नींव डाली तथा भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की स्थापना की। परिषद् का मुख पत्र 'आर्यकुमार' शास्त्री जी के सम्पादन में ही दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। डा. केशवदेव शास्त्री आर्यसमाज के मूर्धन्य नेताओं में गिने जाते हैं। १९२३ से १९२८ तक वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री भी रहे।

पं रामसहाय शर्मा (स्वामी ओम् भक्त वानप्रस्थ)

राजस्थान में आर्यसमाज के अद्वितीय कार्यकर्ता, प्रचारक तथा पत्रकार पं. रामसहाय शर्मा जयपुर जिले के निवासी थे। १९१८ में काशी में अध्ययन किया। तत्पश्चात् अजमेर आये और आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपदेशक बन गये। तब से लेकर १९७४ ई. पर्यन्त पं. रामसहाय शर्मा ने इस प्रान्त को अपना कार्यक्षेत्र बना कर प्रत्येक नगर, ग्राम तथा कस्बे में आर्यसमाज की अलख जगाई। १९२३ में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र सप्ताहिक आर्य मार्तण्ड प्रकाशित हुआ, तो वे उसके सम्पादक नियुक्त किये गये। तब से लेकर १९७० तक (बीच में कुछ काल को छोड़ कर) वे इस प्रान्त के प्रतिनिधि आर्य-पत्र आर्यमार्तण्ड के सम्पादक पद का गुरुतर पद निर्वाह
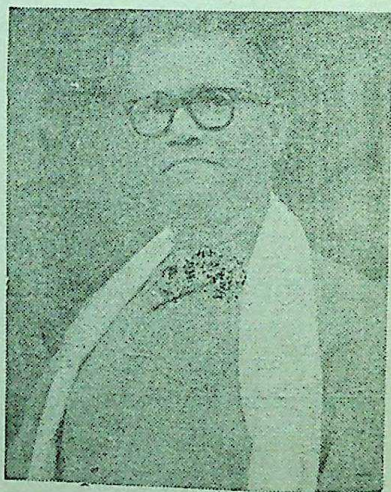
करते रहे। यद्यपि प्रान्त में सदा प्रचार यात्राओं में लगे रहने के कारण शर्मा जी को आर्यमार्तण्ड के कार्य के लिये समय निकालना, यदा कदा कठिन हो जाता था, तथापि वे निष्ठापूर्वक इस कार्य को करते रहे। समय समय पर उनके सम्पादकीय लेख, यात्रा वृत्तान्त, संस्मरण आदि आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित होते रहते थे। जनवरी ९१७४ में राजस्थान के इस अद्भुत आर्य प्रचारक का जोधपुर में स्वल्पकालीन रुग्णता के पश्चात् निधन हो गया।

पं. द्वारिकाप्रसाद सेवक

आर्यसमाज के वयोवृद्ध पत्रकार एवं विचारशील लेखक द्वारिकाप्रसाद सेवक का जन्म १४ फरवरी १८८८ को फिरोजाबाद (उत्तरप्रदेश) में हुआ।

सेवक जी की शिक्षा शाहजहाँपुर, बुलन्द शहर तथा नैनीताल में हुई। स्नातक बनने से पूर्व ही ये समाज सेवा के क्षेत्र में कूद पड़े। 'नवजीवन' सम्पादक डा. केशवदेव शास्त्री के अमेरिका चले जाने पर उस पत्र का सम्पादन और प्रकाशन सेवक जी ने इन्दौर से किया। वे सरस्वती सदन नामक हिन्दी ग्रन्थ प्रकाशन संस्था का संचालन भी करते थे।

सेवक जी ने भारतीय आदर्श नामक एक अन्य पत्र का प्रकाशन किया तथा उसके सम्पादक भी रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मुखपत्र आर्यमार्तण्ड तथा अजमेर से प्रकाशित होने वाले वैदिक संदेश का भी कुछ काल तक सम्पादन किया। उन्होंने अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं। अपने जीवन के संध्याकाल में उन्होंने आर्यसमाज की आन्तरिक स्थिति तथा उसके समक्ष प्रस्तुत अनेक जटिल समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करने के लिये विभिन्न ट्रैक्ट लिखे हैं जिन्हें पढ़ कर हम यह सोचने के लिये विवश हो जाते हैं कि जो आर्यसमाज एक समय में भारत की सामाजिक और राष्ट्रीय क्रान्ति का सूत्रधार बना हुआ था, वह सम्प्रति इतना दुर्बल, हताश और मुमुर्षु क्यों है? सेवक जी का निधन ९२ वर्ष की आयु में बम्बई में हुआ।

पं. हरिशंकर शर्मा

हिन्दी के महाकवि पं. नाथूराम शर्मा शंकर के सुपुत्र हरिशंकर शर्मा का नाम आर्यसमाज के प्रमुख पत्रकारों में लिया जाता है। शर्माजी का जन्म ७ सितम्बर १८९० को हरदुआगंज (अलीगढ़) में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। स्वाध्याय के बल पर हरिशंकरजी ने हिन्दी भाषा और उसके

साहित्य का विशद अध्ययन किया। हरिशंकरजी के पत्रकार जीवन का आरम्भ गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के मुखपत्र भारतोदय के सम्पादक पं. पद्मसिंह शर्मा के सहकारी के रूप में हुआ। कालान्तर में वे इस पत्र के मुख्य सम्पादक भी बने।

आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के मुखपत्र आर्यमित्र के सम्पादक के रूप में शर्माजी की सेवायें चिरस्मरणीय रहेंगी। आर्यसमाज के इस प्राचीन और लोकप्रिय पत्र का सम्पादन उन्होंने एकाधिक बार किया। मित्र में सुरुचिपूर्ण तथा साहित्यिक दृष्टि से उच्चकोटि की सामग्री का संग्रह करना, हिन्दी के प्रख्यात कवियों और लेखकों से व्यक्तिगत सम्पर्क साध कर उनकी रचनायें आर्यमित्र में छापना, तथा दीपावली, एवं ऋषि बोधोत्सव जैसे पर्वों पर विशिष्ट पाठ्य सामग्री युक्त विशेषांकों को प्रकाशित करने की परम्परा स्थापित करना शर्माजी के पत्रकार काल की उपलब्धियाँ रहीं। आर्यमित्र के अतिरिक्त उन्होंने प्रभाकर, आर्यसंदेश, साधना, कर्मयोग, निराला, ज्ञानगंगा, तथा दैनिक दिग्विजय का भी समय समय पर सम्पादन किया। श्री कृष्णदत्त पालीवाल द्वारा संचालित साप्ताहिक सैनिक के सम्पादन पद पर स्वल्प काल तक कार्य करने का अवसर भी उन्हें मिला।
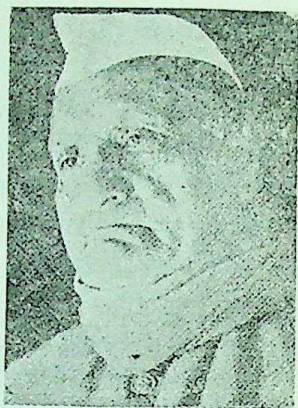
हरिशंकर शर्मा सफल पत्रकार तो थे ही, हिन्दी के कुशल लेखक तथा हास्य व्यंग्यकार के रूप में भी उनका नाम अमर रहेगा। उनकी चिड़ियाघर, पिंजरापोल, मन की मौज, गड़बड़ गोष्ठी आदि पुस्तकें हास्य साहित्य की चिर निधि रहेंगी। शर्माजी ने उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पद को सुशोभित किया तथा उत्तरप्रदेशीय हिन्दी पत्रकार सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर भी रहे। जिस समय हरिशंकर जी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान थे, उस समय उन्होंने मथुरा में दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह का भव्य आयोजन किया और उसी अवसर पर आर्यमित्र की हीरक जयन्ती भी मनाई गई। आर्यमित्र का बृहद् विशेषांक इस अवसर पर छापा गया और इस प्रकार आर्यसमाज के सर्वाधिक प्राचीन पत्र को प्रतिष्ठित एवं गौरवान्वित किया गया। जब भारतीय संसद ने पं. जवाहर लाल नेहरू के आग्रह पर राज्य भाषा विषयक संशोधन को स्वीकार कर हिन्दी के साथ अंग्रेजी को चिरकाल तक (अथवा तब तक, जब तक कि देश के सभी राज्य सर्व सम्मत होकर अंग्रेजी को हटाने का निश्चय न करलें) सह भाषा के रूप में चलाने का निश्चय किया, तो लोकसभा के इस अन्यायपूर्ण कृत्य के प्रतिवाद रूप पं. हरिशंकर शर्मा ने

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पद्मश्री की उपाधि लौटा दी और राष्ट्रभाषा के प्रति किये गये अपमान के प्रति रोष व्यक्त किया। ८ मार्च १९६८ को आगरा में शर्माजी का निधन हो गया।

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

अफ्रीका महाद्वीप के प्रवासी भारतीयों की दुर्दशा को देखकर उनके जीवन को समुन्नत बनाने के लिए अपने को समर्पित करने वाले स्वामी भवानीदयाल संन्यासी स्वयं प्रवासी भारतीय थे। उनका जन्म १० सितम्बर १८९२ को अफ्रीका के नगर जोहान्सबर्ग में हुआ था। इनके पिता का नाम बाबू जयरामसिंह था जो असहनीय आर्थिक दुरवस्था के कारण कुली के रूप में अफ्रीका आये थे। १९०४ में श्रीमती जगरानी देवी से उनका विवाह हुआ। दक्षिण अफ्रीका के प्रसिद्ध सत्याग्रह में भवानीदयाल ने महात्मा गांधी के सहयोगी के रूप में कार्य किया तथा १९१३ में जेल की कठोरतम यातनायें सहन की।
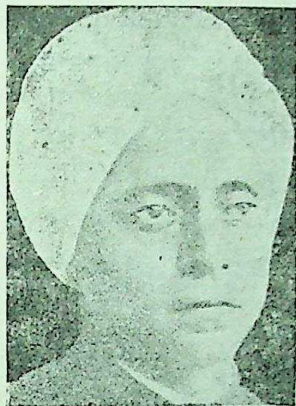
कारगार से मुक्त होने पर महात्माजी के आदेशानुसार फिनिक्स आश्रम में रहते हुए आपने इन्डियन ओपीनियन के हिन्दी विभाग का सम्पादन किया। १९१९ में वे भारत आये तथा कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन में सम्मिलित हुए। भारत की राष्ट्रीय महासभा को प्रवासी भारतीयों की दुर्दशा से अवगत कराया। पत्नी का निधन हो जाने पर भवानीदयाल ने ३५ वर्ष की आयु में संन्यास दीक्षा ली और स्वामी भवानीदयाल संन्यासी के नाम से कर्मक्षेत्र में प्रसिद्ध हुए। प्रवासी भारतीयों में चतुर्थाश्रम की दीक्षा ग्रहण करने वाले वे प्रथम व्यक्ति थे।

दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों में हिन्दी का प्रचार करने के लिए स्वामीजी ने जो प्रयत्न किये वे अत्यन्त प्रशंसनीय हैं। राष्ट्रभाषा के प्रति की गई उनकी सेवाओं को ध्यान में रखकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने अपने कलकत्ता अधि-वेशन में उन्हें सभापति पद पर विभूषित किया। बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के देवघर अधिवेशन की अध्यक्षता भी उन्होंने की। १९३१ में अखिल भारतीय हिन्दी सम्पादक सम्मेलन के कलकत्ता अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गये। काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का अध्यक्ष पद संन्यासी जी को देकर उनकी हिन्दी सेवाओं को सम्मानित किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें साहित्य वाचस्पति की उपाधि प्रदान की।

आर्यसमाज के प्रति स्वामी भवानीदयाल की अनन्य आस्था थी तथा वे इस आन्दोलन की गतिविधियों में पूर्ण निष्ठापूर्वक भाग लेते थे। प्रवासी भारतीयों में वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए उनके प्रयत्न चिरस्मरणीय रहेंगे। संन्यासी जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल बिहार के मुखपत्र आर्यावर्त का सम्पादन किया। अफ्रीका में रहते हुए उन्होंने विभिन्न पत्रों का सम्पादन तथा प्रकाशन किया। साप्ताहिक धर्मवीर १९१७ में निकाला गया तथा १९२२ में नेटाल से साप्ताहिक हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किया गया। जीवन के अन्तिम दिनों में स्वामी भवानीदयाल ने अजमेर में प्रवासी भवन की स्थापना की तथा यहीं स्थायी रूप से रहने लगे। यहाँ से उन्होंने प्रवासी नामक पत्र निकाला और उसके माध्यम से प्रवासी भारतीयों की समस्याओं को जनता के समक्ष उपस्थित किया। ९ मई १९५० को संन्यासी जी का अजमेर में ही निधन हो गया।

पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

वेदवाणी जैसे वैदिक विषयों के विवेचन से सम्बन्धित शोध पूर्ण मासिक पत्र का वर्षों तक सम्पादन करने वाले पदवाक्यप्रमाणज्ञ पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु का जन्म १४ अक्टूबर १८९२ को जालंधर जिले के एक ग्राम मल्लूपोता में सारस्वत ब्राह्मण कुल में हुआ। स्वामी पूर्णानन्द से जिज्ञासु जी ने संस्कृत का गम्भीर अध्ययन किया। तत्पश्चात् स्वामी सर्वदानन्द जी द्वारा स्थापित साधु आश्रम में आर्ष पाठविधि से संस्कृत व्याकरण तथा अन्य शास्त्रों का अध्यापन कार्य करने लगे। कालान्तर में जिज्ञासुजी ने गण्डासिंह-वाला अमृतसर में विरजानन्द आश्रम की स्थापना की तथा संस्कृत के अध्यापन में प्रवृत्त हुए।
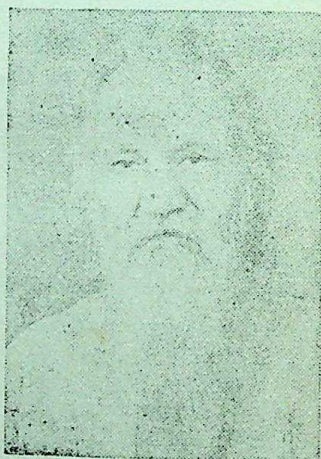
९९३५ में वे स्वयं मीमांसा, वेद, तथा अन्य शास्त्रों का गम्भीर और व्यापक अध्ययन करने के लिए काशी चले आये और महामहोपाध्याय चिन्न स्वामी शास्त्री से मीमांसा दर्शन का अध्ययन किया। १९३५ में काशी से वह लाहौर लौटे और रावी नदी के तट पर संस्कृत के आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन कराने में संलग्न हो गये। देश विभाजन के पश्चात् जिज्ञासुजी ने काशी को अपना कर्मक्षेत्र बनाया और मोतीझील के निकट अजमत गढ़ पैलेस में निवास

कर आर्ष व्याकरण का विद्यालय स्थापित किया। वेदवाणी पत्रिका का सम्पादन उन्होंने आरम्भ किया और मृत्यु पर्यन्त इस दायित्व का निर्वाह किया। उनके सम्पादन काल में अनेक वैदिक विद्वान् अपनी उत्कृष्ट रचनायें वेदवाणी में प्रकाशनार्थ भेजते थे। वेदवाणी का नववर्षांक वेदाङ्क के रूप में प्रकाशित होता था जिसमें वेद विषयक विभिन्न आलोचनात्मक लेखों का संग्रह रहता था। वेदवाणी को वैदिक अध्ययन की एक श्रेष्ठ शोध पत्रिका बनाने का श्रेय जिज्ञासुजी को ही है। २२ दिसम्बर १९६४ को ब्रह्मदत्त जिज्ञासु का निधन हुआ।

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति

आर्यसमाज के जिन व्यक्तियों ने हिन्दी पत्रकारिता के विकास तथा उत्थान में अपना उल्लेखनीय योगदान किया उनमें पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति का नाम नितान्त महत्त्वपूर्ण हैं। इन्द्रजी का जन्म ९ नवम्बर १८८९ को नवांशहर (जिला जालंधर) में हुआ। इनके पिता महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) आर्यसमाज के जाने माने नेता तथा कार्यकर्ता थे। इन्द्रजी को अपने अग्रज हरिश्चन्द्र जी के साथ गुरुकुल कांगड़ी में प्रथम विद्यार्थी के रूप में प्रविष्ट होने तथा अध्ययन करने का अवसर मिला। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से उन्होंने वेदालंकार तथा विद्यावाचस्पति की उपाधियाँ ग्रहण कीं।
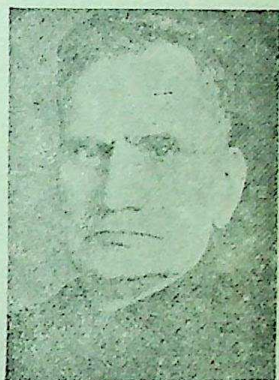
महात्मा मुन्शीराम द्वारा सम्पादित सद्धर्म प्रचारक में सहायक सम्पादक के रूप में कार्य करने का अवसर तो इन्द्रजी को उसी समय मिल गया, जब वे गुरुकुल में अभी अध्ययन ही कर रहे थे। कालान्तर में जब यह पत्र दिल्ली से निकलने लगा तो इन्द्र जी ही उसके संचालक थे। दिल्ली से ही उन्होंने राजधानी से प्रकाशित होने वाला प्रथम हिन्दी समाचार पत्र विजय निकाला। १९२३ में स्वामी श्रद्धानन्द ने जब दिल्ली से वीर अर्जुन का प्रकाशन आरम्भ किया तो इस पत्र को भी इन्द्र जी की कुशल सम्पादन कला तथा लेखन प्रतिभा का लाभ मिला। वीर अर्जुन की धार्मिक एवं सांस्कृतिक नीति आर्यसमाज के विचारों का ही अनुसरण करती थी। लगभग २५ वर्षों तक वीर अर्जुन का सफलतापूर्वक सम्पादन करने के पश्चात् इन्द्र जी ने १९५३ में दैनिक जनसत्ता के सम्पादक का पद ग्रहण किया। सामयिक, राजनीति, धर्म, संस्कृति तथा अन्य सामाजिक प्रश्नों पर इन्द्र जी एक जागरूक पत्रकार के रूप में निर्भीकतापूर्वक अपने विचार व्यक्त करते थे। वे स्वयं

देश के स्वाधीनता संग्राम के एक कर्मठ सैनिक रह चुके थे अतः उनका पत्रकार जीवन भी देश और समाज की ज्वलन्त समस्याओं को उभारने तथा उनके समुचित समाधान का दिशा निर्देश करने में ही व्यतीत हुआ। 'मेरे पत्रकारिता सम्बन्धी अनुभव' तथा 'आत्मचरित' उनके दो ऐसे अप्रकाशित ग्रन्थ हैं, जिन्हें यदि प्रकाशित किया जाय तो हिन्दी पत्रकारिता के अनेक रोचक तथा महत्त्वपूर्ण संस्मरण पाठकों के समक्ष आ सकते हैं। २३ अगस्त १९६० को आर्यसमाज के इस मूर्धन्य पत्रकार का दिल्ली में निधन हुआ।

श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी

मेरठ के प्रसिद्ध आर्यसमाजी लेखक तथा पत्रकार विश्वम्भरसहाय प्रेमी का जन्म १९ जुलाई १८९९ को फरीद नगर (उ. प्र.) में हुआ। इन्होंने मेरठ में प्रेमी प्रेस की स्थापना की तथा मातृभूमि (१९२३) एवं तपोभूमि (१९३३) का सम्पादन किया। प्रेमी जी ने दैनिक हिन्दुस्तान तथा नवभारत टाइम्स जैसे पत्रों के संवाददाता का भी कार्य किया। पंचायती राज नामक साप्ताहिक प्रेमी जी ने १९४७ में निकाला तथा मृत्यु पर्यन्त उसका सम्पादन किया। प्रेमी जी ने उत्तराखण्ड की अनेक बार यात्रायें की थीं तथा वहाँ के धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व का निरूपण करने वाले 'हिमालय में भारतीय संस्कृति' नामक ग्रन्थ की रचना की। आपकी अन्य कृतियों में 'उत्तराखण्ड में ऋषि दयानन्द' तथा 'मेरठ और ऋषि दयानन्द' उल्लेखनीय हैं। २२ जनवरी १९७४ को आपका निधन हुआ।

पं. धर्मदेव विद्यावाचस्पति

उच्च कोटि के वैदिक विद्वान् तथा आर्यसमाज के तपस्वी साधक पं. धर्मदेव विद्यावाचस्पति का जन्म १ नवम्बर १८९९ को ग्राम दुनियापुर (जिला मुलतान) में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुस मुलतान में हुई, तत्पश्चात् उच्च शिक्षा के लिये वे गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट हुए तथा स्वामी श्रद्धानन्द के चरणों में बैठकर विद्या ग्रहण की। २३ मार्च १९२१ को सिद्धान्तालंकार की उपाधि धारण की। तदनन्तर 'भारतीय समाज शास्त्र' विषय पर महाप्रबंध लिखकर विद्यावाचस्पति' की शोध उपाधि प्राप्त की। १९५४ में पं. धर्मदेव जी को उनके अगाध वैदुष्य, वैदिक अध्ययन में विशिष्ट योगदान, तथा उनकी सारस्वत साधना के कारण गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी ने 'विद्यामार्तण्ड' उपाधि से अलंकृत किया।

पं. धर्मदेव जी हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी के मर्मज्ञ विद्वान् होने के साथ साथ कन्नड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम आदि दक्षिण भारतीय भाषाओं के भी अच्छे जानकार थे। स्वामी श्रद्धानन्द के आदेशानुसार उन्होंने १९२१ से १९४१ तक दक्षिण भारत में वेदप्रचार का कार्य किया। तत् पश्चात् १९४२ में वे दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहायक मंत्री बने और

१९४२ से १९५३ पर्यन्त सार्वदेशिक सभा के मासिक मुखपत्र सार्वदेशिक का सफलतापूर्वक सम्पादन किया। पं. धर्मदेव जी के सम्पादन काल में पत्र ने आशातीत उन्नति की। १९४३-४४ में जब सिंध में सत्यार्थप्रकाश की जब्ती का आन्दोलन चलाया गया तो पं. धर्मदेव जी के विद्वत्तापूर्ण सम्पादन में सार्वदेशिक में सत्यार्थप्रकाश में की गई इस्लाम की आलोचना के औचित्य को सिद्ध करने वाले अनेक विद्वत्तापूर्ण, शोधपरक लेख प्रकाशित हुए। धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन पर लिखने में पं. धर्मदेव को वैशिष्ट्य प्राप्त था।

कालान्तर में पं. धर्मदेव जी गुरुकुल कांगड़ी की मुखपत्रिका गुरुकुल पत्रिका के सम्पादन बने। उनके सम्पादन काल में पत्रिका ने बहुमुखी उन्नति की तथा संस्कृत की प्रमुख पत्रिकाओं में उसकी गणना होने लगी। पत्रिका में वे नियमित रूप से सम्पादकीय वक्तव्य, साहित्य समीक्षा आदि स्तम्भ लिखते थे। नवम्बर १९७८ को उनका ज्वालापुर में निधन हुआ।

गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक पत्रकार

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विभिन्न उपाधि धारी स्नातकों (यथा-वेदालंकार, विद्यालंकार, सिद्धान्तालंकार, विद्यावाचस्पति) ने आर्यसमाज तथा हिन्दी की पत्रकारिता को जिस प्रकार समुन्नत एवं प्रगतिपथ पर आरूढ़ किया है, उसका अपना इतिहास है। यहाँ हम कुछ प्रमुख स्नातक पत्रकारों का जीवन परिचय तथा पत्रकारिता को उनके योगदान का विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं—

पं. दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

पं. दीनानाथ का जन्म ८ अप्रैल १८९४ को गुजरांवाला जिला (पाकिस्तान) के पिण्डी महियाँ ग्राम में हुआ। गुरुकुल कांगड़ी से सिद्धान्तालंकार की उपाधि ग्रहण कर आप स्नातक बने। १९२० में गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित होने वाली पत्रिका साप्ताहिक श्रद्धा के उपसम्पादक के रूप में आपने अपने पत्रकार जीवन का प्रारम्भ किया। कालान्तर में दिल्ली से प्रकाशित वीर अर्जुन के सहायक सम्पादक (१९२३-२४) रहे। १९२६-२७ में लाहौर से प्रकाशित होने वाले मासिक विधवाबंधु का भी सम्पादन किया। पुनः राष्ट्रदूत

(बम्बई), दैनिक आकाशवाणी (जालंधर), दैनिक आज (वाराणसी), दैनिक

जनसत्ता (दिल्ली), मासिक सफलजीवन (दिल्ली), मासिक भारतसेवक (दिल्ली), ग्राम सहयोगी (दिल्ली), सम्पदा (दिल्ली) आदि पत्रों में सहायक अथवा मुख्य सम्पादक के रूप में कार्य किया। आर्यसमाज की पत्रकारिता से भी सिद्धान्तालंकार जी का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। आपने साप्ताहिक आर्य (जालंधर) तथा साप्ताहिक आर्यजगत् (दिल्ली) का सम्पादन किया। विभिन्न ग्रन्थों की रचना भी आपके द्वारा हुई है। सम्प्रति दिल्ली में निवास कर रहे हैं।

पं. विनायकराव विद्यालंकार

हैदराबाद (आंध्रप्रदेश) के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री केशवराव कोरटकर के पुत्र पं. विनायकराव का जन्म १८९५ में हुआ। पिता निजाम हैदराबाद के उच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे। विनायकराव जी की शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहाँ से आपने विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण कर इंग्लैण्ड से बैरिस्टर की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के साप्ताहिक मुखपत्र आर्यभानु का सम्पादन विनायकराव जी ने १९४६ से १९५२ तक किया। इससे पूर्व १९३८-३९ में आर्यसमाज द्वारा संचालित आर्य सत्याग्रह में वे प्रमुख रूप में भाग ले चुके थे। पं. विनायकराव ने स्वाधीनता संग्राम के एक तेजस्वी नेता के रूप में भाग लिया तथा समय समय पर हैदरावाद रियासत में चलाये गये राजनीतिक आन्दोलनों का नेतृत्व किया। भारत में हैदराबाद राज्य के विलय के पक्ष में आर्यभानु के माध्यम से उन्होंने प्रबल आन्दोलन चलाया। जब हैदराबाद में लोकप्रिय कांग्रेसी मंत्रिमंडल की स्थापना हुई तो वे मंत्री भी बने। १९६२ में हैदराबाद में ही पं. विनायकराव का स्वर्गवास हो गया।

पं सत्यदेव विद्यालंकार

हिन्दी पत्रकारिता के प्रति अनन्य समर्पण भाव रखने वाले पं. सत्यदेव विद्यालंकार का जन्म ९ अक्टूबर १८९७ को नाभा (पंजाब) में हुआ। शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहाँ से उन्होंने विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। अपने छात्र काल में ही सत्यदेव जी ने अनेक हस्तलिखित पत्रिकाओं का सम्पादन कर पत्रकार कला के प्रारम्भिक सूत्रों को समझने का यत्न किया। उनका पत्रकार जीवन स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा संचालित सद्धर्म-प्रचारक तथा श्रद्धा पत्रों के सम्पादन

से आरम्भ हुआ। १९२० में दिल्ली से प्रकाशित होने वाले दैनिक विजय के सम्पादकीय विभाग में भी उन्होंने कार्य किया था। तत्पश्चात् राजस्थान केसरी, प्रणवीर, मारवाड़ी, नवयुग, स्वतंत्र, दैनिक विश्वमित्र, दैनिक हिन्दुस्तान तथा दैनिक अमर भारत आदि पत्रों का दीर्घकाल तक सम्पादन किया। सत्यदेव विद्यालंकार एक कुशल लेखक भी थे। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द तथा लाला देवराज की विस्तृत जीवनियाँ लिखी हैं तथा 'आर्यसमाज किस ओर' शीर्षक एक विचारोत्तेजक पुस्तक लिखकर आर्यसमाज के भीतर व्याप्त गतानुगतिकता की आलोचना की है। इनकी एक अन्य पुस्तक 'राष्ट्रवादी दयानन्द' ने स्वामी दयानन्द के राष्ट्रीय स्वरुप को उभारने का सर्वप्रथम प्रयत्न किया। पं. सत्यदेव स्वाधीनता संग्राम के सक्रिय सैनिक भी रहे थे। २५ जून १९६३ को दिल्ली में उनका निधन हुआ।

पं. भीमसेन विद्यालंकार

पं० भीमसेन का जन्म २२ अक्टूबर १९०० को जम्मू में हुआ। शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहां से इन्होंने विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। कुछ दिनों तक गुरुकुल में शिक्षक पद पर भी कार्य किया। पुनः दैनिक वीर अर्जुन में प्रधान सम्पादक के रूप में १९२४-२५ में कार्य किया। लाहौर से १९२५-२६ में साप्ताहिक सत्यवादी का सम्पादन एवं प्रकाशन किया। १९३३ से १९३७ तक अलंकार मासिक का सम्पादन किया जो बाद में हिन्दी संदेश के नाम से प्रकाशित होने लगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुखपत्र आर्य का सम्पादन १९३४ से १९५१ तक किया।

पं० भीमसेन हिन्दी के प्रौढ़ लेखक थे। उनके द्वारा रचित वीर मराठे, वीर पंजाबी तथा वीर शिवाजी आदि पुस्तकों की गणना हिन्दी के मौलिक इतिहास ग्रन्थों में होती है। दयानन्दो-परिषद् का संकलन तथा लाला लाजपतराय की आत्मकथा का हिन्दी अनुवाद उनके अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य थे। वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन पंजाब के मंत्री रहे। १८ जुलाई १९६२ को उनका निधन दिल्ली में हुआ।
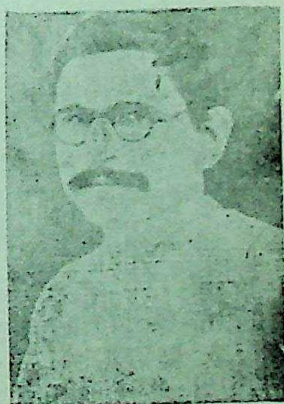
पं. रामगोपाल विद्यालंकार

पं. रामगोपाल का जन्म बिजनौर जिले के हल्दौर कस्बे में १९०० ई. में हुआ। इसके पिता पं. भवानीप्रसाद गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापक रहे थे और उन्होंने आर्यपर्व पद्धति पुस्तक का निर्णय किया था। रामगोपाल जी की शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहां से उन्होंने विधालंकार की उपाधि ग्रहण की। इनके पत्रकार जीवन का प्रारम्भ नागपुर से प्रकाशित प्रणवीर दैनिक के सम्पादन से हुआ। पुनः वे दिल्ली आ गये, जहां से उन्होंने दैनिक वीर अर्जुन तथा दैनिक नवभारत टाइम्स का सम्पादन किया। पं रामगोपाल हिन्दी के कुशल लेखक भी थे। उन्होंने संस्कार प्रकाश नामक ग्रन्थ स्वामी दयानन्द कृत संस्कार विधि की व्याख्या रूप में लिखा। उनके द्वारा रचित अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय हुई। १९६३ में दिल्ली में उनका निधन हुआ।

पं. कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

हिन्दी के वरिष्ठ पत्रकार तथा राष्ट्रभाषा में आर्थिक विषयों से सम्बन्धित पत्र के प्रथम प्रवर्तक पं. कृष्णचन्द्र विद्यालंकार का जन्म १९०४ में ग्राम बसीड़ा (जिला मुजफ्फरगढ़) में हुआ था। इनकी शिक्षा गुरुकुल मुलतान तथा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहां से उन्होंने १९२६ में विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। कृष्णचन्द्रजी के पत्रकार जीवन का प्रारम्भ अजमेर से प्रकाशित होने वाली मासिक त्यागभूमि के सहायक सम्पादक के रूप में हुआ। बाद में वे दिल्ली के वीर अर्जुन साप्ताहिक के सम्पादकीय विभाग में चले गये। इस पद पर अनेक वर्षों तक उन्होंने कार्य किया। उन दिनों इस पत्र की गणना हिन्दी के प्रमुख साहित्यिक पत्रों में होती थी। वीर अर्जुन से पृथक् होने पर उन्होंने हिन्दी में आर्थिक विषयों से सम्बन्धित प्रथम मासिक पत्र सम्पदा का प्रकाशन १९५२ में आरम्भ किया। तब से यह पत्र निरन्तर प्रकाशित हो रहा है।

पं. अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

अवनीन्द्रकुमार जी का जन्म बिहार के दानापुर नगर में २२ मार्च १९०७ को हुआ। गुरुकुल कांगड़ी से विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् ये उसी शिक्षण संस्थान में प्राध्यापक का कार्य करने लगे। इनका पत्रकार जीवन १९२८ से आरम्भ हुआ जब इन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साप्ताहिक मुखपत्र आर्य का सम्पादन स्वीकार किया। १९३४ तक

लाहौर में रहनेके पश्चात् वे दिल्ली आ गये और विभिन्न पत्रों में कार्य किया। दैनिक नवयुग (१९३४-३६) दैनिक हिन्दुस्तान (१९३६-४४) साप्ताहिक नवयुग (१९४४-४६) नवभारत (१९४६-५०) आदि पत्रों के सम्पादन कार्य में अवनीन्द्र जी ने सहयोग दिया। १९५३ से स्वतंत्र पत्रकार के रूप में कार्य कर रहे हैं। विभिन्न विषयों पर आपने अनेक पुस्तकें भी लिखी हैं। आर्यसामाजिक पत्रों में भी यदा कदा आपके विचार-पूर्ण लेख निकलते रहते हैं।

पं. आनन्द विद्यालंकार

७ सितम्बर १९१७ को मुरादाबाद में जन्मे आनन्दजी ने गुरुकुल कांगड़ी से विद्यालंकार उपाधि ग्रहण की तथा पत्रकार बने। नवराष्ट्र (बम्बई १९३९-४०) विश्वमित्र (बम्बई १९३९-४१) वीर अर्जुन (१९३९-४६) तथा नवभारत टाइम्स (१९४७ से अब तक) में कार्य किया। सम्प्रति दैनिक नवभारत टाइम्स के वरिष्ठ सह सम्पादक हैं।

पं. क्षितीश वेदालंकार

प्रबुद्ध पत्रकार, श्रेष्ठ वक्ता तथा सफल लेखक क्षितीश जी का जन्म १० अक्टूबर १९१७ को दिल्ली में हुआ। आपके कांगड़ी से वेदालंकार तथा आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इनका पत्रकार जीवन वीर अर्जुन से आरम्भ हुआ जिसके साप्ताहिक संस्करण का आपने सफल सम्पादन १९४७ से १९५२ तक किया। वीर अर्जुन का प्रकाशन बन्द होने पर वे दैनिक हिन्दुस्तान में आ गये। निरन्तर २७ वर्षों तक इस पत्र के सम्पादकीय विभाग में रह कर आपने १९७९ में अवकाश ग्रहण किया। सामयिक तथा सांस्कृतिक विषयों पर क्षितीशजी ने प्रचुर मात्रा में लिखा है। वे एक सफल पर्यटक तथा यात्रा साहित्य के लेखक भी हैं। सम्प्रति आर्य प्रादेशिक सभा के मुख पत्र आर्यजगत् का सम्पादन कर रहे हैं।

पं. सत्यकाम विद्यालंकार

स्वामी श्रद्धानन्द के दौहित्र प्रसिद्ध पत्रकार पं. सत्यकाम का जन्म १९०५ में लाहौर में हुआ। गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक बनने के अनन्तर वे पत्रकारिता के क्षेत्र में आये। दैनिक वीर अर्जुन (१९२४) तथा दैनिक नवयुग (१९३१) में सम्पादन कार्य करने के पश्चात् १९५० में वे हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक धर्मयुग के सम्पादक बने। लगभग १० वर्षों तक इस पत्र का सम्पादन कार्य करने के अनन्तर उन्होंने एक अन्य लोक प्रिय मासिक नवनीत (हिन्दी डाइजेस्ट) का सम्पादन (१९६१-७१) भी किया। पं. सत्यकाम जी ने विभिन्न विषयों पर अनेक उच्च कोटि के ग्रन्थ लिखे हैं। स्वामी श्रद्धानन्द विषयक उनका संस्मरणात्मक ग्रन्थ तथा वेद मन्त्रों का काव्यानुवाद पं. सत्यकाम की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। सम्प्रति वे चारों वेदों के अंग्रेजी अनुवाद के कार्य में संलग्न हैं।

पं. युधिष्ठिर मीमांसक

राजस्थान प्रदेश के अजमेर जिलान्तर्गत बिडक्च्यावास ग्राम में आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान् पं. युधिष्ठिर मीमांसक का जन्म भाद्रपद शुक्ला नवमी १९६६ वि. तदनुसार २२ सितम्बर १९०९ को हुआ। इनके पिता पं. गौरीलाल जी आर्यसमाज के निष्ठावान अनुयायी तथा कार्यकर्त्ता थे। वे मध्यप्रदेश में शिक्षक का कार्य करते थे। मीमांसकजी की शिक्षा साधु आश्रम पुल काली नदी (जिला अलीगढ़) में पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु तथा पं. शंकरदेव जी के सान्निध्य में हुई। वे अपने गुरु जिज्ञासुजी के साथ अमृतसर, काशी, लाहौर आदि स्थानों में रहे। अन्ततः जब काशी में जिज्ञासुजी ने अपना विद्यालय स्थापित किया तो मीमांसक जी भी कुछ काल तक वहां रह कर गुरुजी को सहयोग देते रहे। जब ऋषि दयानन्द के जन्मस्थान टंकारा में दयानन्द महालय ट्रस्ट की ओर से शोध संस्थान की स्थापना हुई तो युधिष्ठिर जो को इस कार्य का अधिष्ठाता नियुक्त किया गया। इस शोध संस्थान की मुख पत्रिका टंकारापत्रिका का सम्पादन भी उन्होंने किया। मीमांसक जी के सम्पादन काल में टंकारा पत्रिका एक उच्चस्तरीय मासिक पत्रिका के रूप में निकलती रही, जिसमें वैदिक विषयों से सम्बन्धित शोध एवं अनुसंधानपरक लेख रहते थे। जब जिज्ञासु जी का दिसम्बर १९६४ में निधन हो गया तो वेद-

वाणी के सम्पादन एवं संचालन का भार भी मीमांसक जी पर आ गया जिसे वे सफलतापूर्वक निभा रहे हैं। वेदवाणी ने इस अवधि में अनेक विशेषांक प्रकाशित किये हैं तथा वह आर्यसमाज की वैदिक विषयों के विवेचन से सम्बन्धित पत्रिकाओं में अग्रगण्य है।

श्री वीरेन्द्र

महाशय कृष्ण के वरिष्ठ पुत्र श्री वीरेन्द्र का जन्म १५ जनवरी १९११ को लाहौर में हुआ। पत्रकारिता में रुचि आपको पितृदाय के रूप में मिली। १९३३ में आपने प्रताप (लाहौर) के सम्पादकीय विभाग में कार्य आरम्भ किया। दैनिक प्रताप के प्रधान सम्पादक पद पर १९४७ में आरूढ़ हुए। १९५७ में जालंधर से दैनिक वीरप्रताप का प्रकाशन आरम्भ किया जो पंजाब के हिन्दी दैनिकों में प्रमुख स्थान रखता है। वीरेन्द्र जी को देश के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण अनेक वार जेल यात्रायें भी करनी पड़ीं। वे पंजाब के प्रथम मंत्रिमण्डल में संसदीय सचिव (१९४७-४९) रहे तथा विधान परिषद् के सदस्य (१९५८-६४) पद पर निर्वाचित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री व प्रधान पद से उन्होंने आर्यसमाज की सेवा की है। वे विभिन्न देशों की यात्रायें कर चुके हैं तथा अखिल भारतीय समाचारपत्र सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर कार्य कर चुके हैं।

श्री के. नरेन्द्र

महाशय कृष्ण के कनिष्ठ पुत्र श्री नरेन्द्र अपने अग्रज के ही तुल्य सफल पत्रकार हैं। उनका जन्म २४ अप्रैल १९१४ को लाहौर में हुआ। आपने एम. ए. (राजनीतिक विज्ञान) तथा विधि की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लेने के कारण नरेन्द्रजी को १९४२ में कारावास का दण्ड दिया गया। सम्प्रति आप उर्दू प्रताप तथा वीर अर्जुन दैनिक के सम्पादक हैं। पत्रकार के रूप में आपने विभिन्न देशों का भ्रमण किया है। भारतीय समाचारपत्र

सोसाइटी के आप संचालक रहे तथा अखिल भारतीय समाचारपत्र सम्मेलन के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया। वीर अर्जुन में आपकी विभिन्न सामयिक, राजनीतिक तथा अन्य प्रश्नों पर लिखी गई मार्मिक टिप्पणियाँ पाठकों के बृहत् समुदाय में रुचिपूर्वक पढ़ी जाती हैं। वे एक प्रगल्भ वक्ता तथा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय भाग लेने वाले कार्यकर्ता हैं।

श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

प्रसिद्ध साहित्यकार, कवि और पत्रकार श्री क्षेमचन्द्र सुमन का जन्म १६ सितम्बर १९१६ को बाबूगढ़ (मेरठ) में हुआ। सुमन जी का शिक्षण गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुआ शिक्षा समाप्ति के पश्चात् वे शीघ्र ही पत्रकारिता के क्षेत्र में आ गये। १९३६-३७ में सहारनपुर से प्रकाशित आर्य साप्ताहिक का सम्पादन सुमन जी का इस क्षेत्र में प्रथम अनुभव था। इस सम्बन्ध में वे स्वयं लिखते हैं—"मेरे सम्पादन में १९३६-३७ में सहारनपुर से प्रकाशित होने वाला साप्ताहिक आर्य भी अपनी अल्प-कालीन जीवन यात्रा में आर्यजगत् में समादृत हुआ था। इसके संचालक और आदि सम्पादक श्री शीतलप्रसाद विद्यार्थी थे।" १९३९ में स्वामी परमानन्द द्वारा संरक्षित साप्ताहिक आर्यसंदेश में सुमनजी ने श्री हरिशंकर शर्मा के सहयोगी सम्पादक के रूप में कार्य किया। इस प्रकार हरिशंकर शर्मा जैसे कुशल पत्रकार के सान्निध्य में रहकर पत्रकारिता की विधिवत् दीक्षा ली। सुमनजी के ही शब्दों में—"गुरुवर पद्मसिंह शर्मा के पवित्र सान्निध्य और आचार्य नरदेव शास्त्री वेद तीर्थ के आचार्यत्व में पत्रकारिता की जो वर्णमाला मैंने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में सीखी थी उसका अभ्यास सहारनपुर में किया और डा. हरिशंकर शर्मा के पुण्य पुनीत निरीक्षण में मैं वहां विधिवत् पत्रकार बना।"

आर्यसमाज के विख्यात पत्र आर्यमित्र का स्वल्पकाल (१९३८ ई.) के लिये सम्पादन करने का अवसर भी उन्हें मिला। अमेठी के आर्य राजपरिवार द्वारा प्रकाशित मनस्वी मासिक के सम्पादक वे १९३९ में बने तथा लगभग ८ मास तक इस पत्र का सम्पादन किया। पुनः शिक्षा सुधा (धनौरा १९४०) तथा दैनिक मिलाप (लाहौर-सहसम्पादन १९४१-४२) में कार्य किया। सुमनजी हिन्दी के जाने माने कवि, लेखक, सम्पादक तथा समर्थ समालोचक

हैं। विविध विषयों पर लिखी गई उनकी पुस्तकों की संख्या ५० से भी अधिक है। सम्प्रति वे साहित्य अकादमी दिल्ली के सहमंत्री पद से अवकाश ग्रहण कर १८०० ई. के बाद के दिवंगत हिन्दी सेवियों का एक विस्तृत विवरण प्रधान ग्रन्थ तैयार कर रहे हैं।

डा. भवानीलाल 'भारतीय'

आर्यसमाज में शोध एवं अनुसंधान की वैज्ञानिक पद्धति पर कार्य करने वाले डा. भवानीलाल भारतीय ने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अपना विशिष्ट योगदान किया है। डा. भारतीय का जन्म आषाढ़ कृ. तृतीया सं. १९८५ को राजस्थान राज्यान्तर्गत नागौर जिले के परबतसर नामक ग्राम में हुआ। देहात में प्राइमरी तथा मिडिल की शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त उच्च अध्ययन के लिये जोधपुर गये। १९४९ में बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९५३ में प्रथम श्रेणी में एम. ए. हिन्दी, १९६१ में एम. ए. संस्कृत तथा १९६८ में आर्यसमाज की संस्कृत भाषा एवं साहित्य को देन विषय पर राजस्थान विश्व विद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। अब तक आपके आर्यसमाज, ऋषि दयानन्द तथा तद्विषयक अन्यान्य विषयों पर शोधपूर्ण लगभग २५ छोटे बड़े ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। कुछ अंग्रेजी तथा गुजराती ग्रन्थों का आपने अनुवाद भी किया है।

१९७० में डा. भारतीय ने आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मुखपत्र 'आर्यमार्तण्ड' पाक्षिक का सम्पादन आरम्भ किया। १९७३ से परोपकारिणी सभा के मुखपत्र परोपकारी मासिक का सम्पादन कर रहे हैं। आपके सम्पादन काल के परोपकारी आर्यसमाज की सर्वश्रेष्ठ शोध पत्रिका के रूप में उभरी है। परोपकारी के विभिन्न विशेषांकों को अपूर्व सजधज के साथ प्रकाशित करने का श्रेय भी डा. भारतीय को ही है। सम्पादकीय, पुस्तक समीक्षा, उपनिषद् कथा आदि स्तम्भों को धारावाही रूप से परिश्रमपूर्वक लिखते हैं जिससे पत्रिका का उच्च स्तर निरन्तर बना रहता है। आर्यसमाज की लगभग सभी पत्र पत्रिकाओं में भारतीय जी के अब तक सैकड़ों उच्चकोटि के लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

(परिचय लेखक—सतीश शुक्ल)

डा. वेदप्रताप वैदिक

इन्दौर के आर्य नेता श्री जगदीशप्रसाद वैदिक के सुपुत्र डा. वेदप्रताप वैदिक आर्यसमाज के युवा पत्रकारों में प्रमुख हैं। डा. वैदिक का जन्म ३० दिसम्बर १९४४ को हुआ। राजनीति विज्ञान में एम ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के पश्चात् आपने अन्तर राष्ट्रीय राजनीति में पी-एच. डी. उपाधि ग्रहण की। विदेशों में जाकर अध्ययन करने का अवसर भी मिला। उच्च शिक्षण संस्थाओं तथा शोध केन्द्रों में अध्ययन, अध्यापन, अन्वेषण तथा शोध के माध्यम के रूप में हिन्दी को उसका समुचित स्थान दिलाये जाने हेतु किये गये आन्दोलनों में डा. वैदिक ने प्रमुख रूप में भाग लिया। पंजाब में हिन्दी के स्वत्वों की रक्षा के लिये किये गये सत्याग्रह में भी आपने भाग लिया था। १९७४ में डा. वैदिक की नियुक्ति नवभारत टाइम्स के सम्पादकीय विभाग में हुई। डा. वैदिक ने आर्यसमाज की प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों पर लेख लिखे हैं। अन्तर राष्ट्रीय राजनीतिक समस्याओं का आपने विशद अध्ययन किया है। नवभारत टाइम्स के भूतपूर्व सम्पादक श्री अक्षयकुमार जैन की षष्टि पूर्ति के अवसर पर प्रकाशित ग्रन्थ 'हिन्दी पत्रकारिता: विविध आयाम' का सम्पादन आपने ही किया था।

□□

सहायक ग्रन्थों की सूची

१. हिन्दी समाचार पत्रों का इतिहास
लेखक—श्री राधाकृष्णदास

२. समाचार पत्रों का इतिहास
लेखक—पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी
प्रकाशक—ज्ञान मण्डल काशी, प्रथम संस्करण २०१० वि.

३. हिन्दी की पत्र पत्रिकायें
सम्पादक—अखिल विनय
प्रकाशक—हिन्दी साहित्य समिति, पिलानी

४. हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम
सम्पादक—डा० वेदप्रताप वैदिक
प्रकाशक—नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

५. The Rise and Growth of Hindi Journalism.
By Dr. Ram Ratan Bhatnagar, Kitab Mahal, Allahabad.

६. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित
लेखक—पं. घासीराम
प्रकाशक—आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर

७. ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन
सम्पादक—पं. भगवद्दत्त
प्रकाशक—श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर

८. आर्यसमाज का इतिहास भाग-२
लेखक—पं. नरदेव शास्त्री
प्रकाशक—पी. सी. द्वादशश्रेणी एण्ड कं. अलीगढ़

९. आर्यसमाज का इतिहास—२ भाग
लेखक—पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति
प्रकाशक—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

१०. दयानन्द-शास्त्रार्थ-संग्रह
सम्पादक—डा. भवानीलाल भारतीय
प्रकाशक—श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत

११. **फर्रुखाबाद का इतिहास**
लेखक—पं. गणेशप्रसाद शर्मा
प्रकाशक—आर्यसमाज फर्रुखाबाद

१२, **ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार प्रथम भाग**
सम्पादक—मुन्शीराम जिज्ञासु

१३. **परोपकारिणी सभा का इतिहास**
लेखक—डा. भवानीलाल भारतीय
प्रकाशक—परोपकारिणी सभा, अजमेर

१४. **ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की संस्कृत-साहित्य को देन**
लेखक—डा. भवानीलाल भारतीय
प्रकाशक—श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत

१५. **हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में आर्यसमाज की पत्र-पत्रिकाओं का योगदान**
डा० मदनमोहन जावलिया का शोध प्रबन्ध (टंकित प्रति)

□□

पत्र-पत्रिकाओं की वर्णानुक्रमणिका

नाम	पृष्ठ
अंगद	१४१
अखबार मुबाहिसा	१२७
अजय	८९
अनाथ रक्षक	६०
अनुपम	८५
अभय घोष	१५०
अमृत	१२८
अमृतलता	११७
अर्जुन (उर्दू)	१२८
अर्जुन—वीर अर्जुन (दिल्ली)	१४८
अलंकार तथा गुरुकुल समाचार	८३
आत्म शुद्धिपथ	१०९
आर्य (सहारनपुर)	८९
आर्य (गुजराती)	११७
आर्य—आर्योदय-आर्य मर्यादा	७४
आर्य (मराठी)	१२०
आर्य (उड़िया)	१२०
आर्य (बंगला)	१२१
आर्य आत्मा	१०३
आर्यादर्श	७८
आर्यावर्त (कलकत्ता)	३९
आर्यावर्त (इन्दौर)	९१
आर्योदय	१४५
आर्यों का त्रैतवाद	१०८
आर्यकुमार	७७
आर्य केसरी	१२९
आर्य ग़जट (हिन्दी)	११०
आर्य ग़जट (उर्दू)	१२६
आर्य गर्जना	११९

नाम	पृष्ठ
आर्य गौरव	१२१
आर्य जगत्	८२
आर्य जीवन (लाहौर)	५८
आर्य जीवन (कलकत्ता)	८३
आर्य जीवन (हैदराबाद)	१०७
आर्य जीवन (गुजराती)	११८
आर्य ज्योति (जालंधर)	१०२
आर्य ज्योति (बम्बई)	११८
आर्य दर्पण	१९
आर्य दर्शन	११९
आर्यधन	१११
आर्यधर्म रक्षक	१४१
आर्य पञ्च	१४२
आर्य पत्र	१२५
आर्य पत्रिका (मारिशस)	१४५
आर्य पथ	११४
आर्य परिवार	९६
आर्य प्रकाश	११७
आर्य प्रभा	७४
आर्य प्राण	१०४
आर्य प्रेमी	९८
आर्य प्रेमी (सिन्धी)	१२२
आर्य बन्धु	५३
आर्य भानु	९१
आर्य भानु (मराठी)	११९
आर्य भारती	१२०
आर्य भास्कर (खीरी)	४९
आर्य भास्कर (मराठी)	११९
आर्य भूमि	११०

आर्य भूषण २४
आर्य महिला ७७
आर्य मार्तण्ड ७९
आर्य मित्र ५३
आर्य मित्र (दक्षिण अफ्रिका) १४४
आर्य मुसाफिर १२५
आर्य मुसाफिर (उर्दू-दिल्ली) १२९
आर्य मैगजीन १४१
आर्य मैसेंजर १३७
आर्य रत्न १११
आलोक ९४
आर्य वनिता ५८
आर्य विजय १०८
आर्य विनय ३७
आर्य वीर (जालंधर) ९०
आर्य वीर (ब्यावर) ९६
आर्य वीर (बम्बई) १०८
आर्य वीर (सिन्धी) १२२
आर्य वीर (उर्दू-रावलपिण्डी) १३०
आर्य वीर (उर्दू-हैदराबाद) १३०
आर्य वीर (नैरोबी) १४४
आर्य वीर (मारिशस) १४५
आर्य व्यवहार ११०
आर्य शक्ति ९७
आर्य सन्देश (आगरा) ९०
आर्य सन्देश (दिल्ली) ११३
आर्य सन्देश (गुजराती) ११८
आर्य सन्देश (ट्रिनिडाड) १४४
आर्य संस्कार १४२
आर्य संसार ९९
आर्य समाचार (मेरठ) २४
आर्य समाचार (हिन्दी-मेरठ) ७७
आर्य समाचार (उर्दू) १२४
आर्य समाचार (कानपुर) १२८
आर्यसमाज (कलकत्ता) ९९, १०२
आर्यसमाज (दिल्ली) ९९
आर्य सिद्धान्त (प्रयाग) ४२
आर्य सिद्धान्त (बदायूं) ५८
आर्य सुधारक ११८
आर्य सेवक ५८
आर्य सेवक (गुजराती) ११८
आर्य सेवक (उर्दू) १३०
आर्य सैनिक ११२
आर्य ज्ञानोदय तथा हिन्दू रक्षक ८७
आर्य ज्योति ८५
आर्ष नादम् १२०
आर्ष पथ ९९
आश्रम ज्योति १२०
इन्द्र १२८
उपदेशक ६५
ऊषा
(लाहौर पं. धर्मपाल सम्पादित) ६५
ऊषा (लाहौर पं. सन्तराम सम्पादित) ७४
ऊषा (गुरुकुल कांगड़ी) ११५
ऋषि १४२
ऋषि दयानन्द (लाहौर) ६५
ऋषि दयानन्द (आगरा) ७९
ऋषि विद्या ११८
कल्चरल इण्डिया १३९
कानपुर गजट १२६
क्रान्ति धर्मी १११
कुलभूमि १११
गुरुकुल (नरसिंहपुर) ६५
गुरुकुल (गुरुकुल कांगड़ी) ८९
गुरुकुल पत्रिका (गुरुकुल कांगड़ी) ९४
गुरुकुल पत्रिका (संस्कृत) ११६
गुरुकुल समाचार (सिकन्दराबाद) ६५
गुरुकुल समाचार (उर्दू) १२८
गोधर्मप्रकाश १४६
गोसेवक १४७

जनज्ञान (हिन्दी) १०६
जनज्ञान (मराठी) ११९
जनज्ञान (अंग्रेजी) १४०
जलविद सखा ७९
जागृति १४९
जार्ज १२८
जीवापुर ज्योति १०५
ज्योति ७८
टंकारा पत्रिका १०१
तपोभूमि (मेरठ) ८८
तपोभूमि (मथुरा) ९८
तपोवन पत्रिका ९७
तरणि ९२
तालिबे इल्म १२७
तिमिर नाशक ४७
तोहफेहिन्द १२६
त्रैतवाद १०७
दयानन्द ऐंग्लो
वैदिक कालेज समाचार ४८
दयानन्द दिग्विजय १२९
दयानन्द पत्रिका ६४
दयानन्द संदेश (दिल्ली
—राजेन्द्रनाथ शास्त्री सम्पादित) ९०
दयानन्द संदेश (दिल्ली
—राजवीर शास्त्री सम्पादित) १०६
दर्शनानन्द १२९
दि आर्य १३२
दि आर्य पत्रिका १३५
दिग्विजय ९१
दि गुरुकुल मैगजीन
(गुरुकुल-गुजरांवाला) १३७
दि डी.ए.वी. कालेज मैगजीन १३७
दिवाकर ८८
दि विरजानन्द मैगजीन १३७
दि वैदिक पाथ १४०
दि सत्यवादी १३९
दि हार्बिन्जर ऑफ हैल्थ १३७
देव वाणी ११६
देशोपकारक (लाहौर) ७३
देशोपकारक (लाहौर-उर्दू) १२६
देश सेवक १२९
देश हितैषी ३१
धर्मोपदेश १२४
धर्म दिवाकर (आगरा) १४१
धर्म दिवाकर (काशी) १४१
धर्म बोध १०९
धर्मवीर (उर्दू) १२८
धर्मवीर (डर्बन) १४३
धर्म वृत्तान्त ७२
नवजीवन ६८
न्याय १५०
न्यू प्राची प्रकाश १४५
परिव्राट् (हिन्दी) १०२
परिव्राट् (तेलुगु) १२०
परोपकारी ४६,६२,१००
पाखण्ड खण्डिनी पताका ८८
पाञ्चाल पण्डिता ५२
पुण्यभूमि ९६
पुण्यलोक १०५
पोल प्रकाशक १४१
प्रकाश (हिन्दी) ८५
प्रकाश (उर्दू) १२७
प्रचारक (गुजराती) १११
प्रजाबंधु ९९
प्रतिनिधि १४४
प्रभात (लाहौर
—यज्ञदत्त विद्यालंकार सम्पादित) ८५
प्रभात (लाहौर साप्ताहिक) १४१
प्रभात (मेरठ) १४८
प्रवासी १४९

प्रह्लाद	७६	मिलाप	१२८
प्राची प्रकाश	१४५	मुसाफिर	१२७
वंग भास्कर	१२९	मुर्हरिक	१२५
बनवासी संदेश	१०५	यज्ञयोग ज्योति	१०४
बनिता हितैषी	४८	योग प्रचारक	८३
बलिदान	४९	योग मन्दिर	१११
बलिदान	८८	रहबर	१२९
ब्रह्मावर्त	४७	राजधर्म	१०६
ब्रह्मर्षि	७७	राजपाल	१४१
ब्राह्मण समाचार (मेरठ)	६४	राजस्थान समाचार	१४६
ब्राह्मण समाचार (पुनरुक्ति)	१४२	राष्ट्र जागरण	१०८
ब्राह्मण हितकारी	४८	राष्ट्रवाणी	९३
बृहस्पति	१४१	रिफार्मर	१२९
भारत	१२७	रीजेनेरेटर ऑफ आर्यावर्त	१३५
भारती	७८	वर्तमान	१३०
भारतोदय	६५	विद्या प्रकाश	१२९
भारत उद्धार	४८	विद्वत्कला	११७
भारतोद्धारक (अजमेर)	३७	विजय (अजमेर)	८९
भारतोद्धारक (मेरठ)	५१	विजय (दिल्ली)	१४७
भारतोदय	११६	विधवा बन्धु	८६
भारत भगिनी	४५	विधवा हितैषी	१४१
भारत महिला	७४	विराट्	१४२
भारत सुदशा प्रवर्त्तक	२५	विवृत्ति	१४१
भारत हितैषी	६२	विज्ञापक	८९
भारतीय आदर्श	८२	वीर प्रताप	१५०
भास्कर	७३	वीर संदेश (लाहौर)	८३
मधुर लोक	१०५	वीर संदेश (बहजोई)	९९
मनस्वी	९१	वेदाध्ययन प्रेरक	४८
मसावात	१३०	वेदोदय	८७
महर्षि संदेश	११४	वेद ज्योति	११२
महात्मा	१४२	वेद पथ	९५
महाविद्यालय समाचार	१२८	वेद प्रकाश (कानपुर)	३७
महिला संसार	७३	वेद प्रकाश (मेरठ)	४९
मातृभूमि	७९	वेद प्रकाश (दिल्ली)	९७
मानव पथ	९७	वेद प्रचारक	४८

वेदमाता १२१
वेदमार्ग ११३
वेदवाणी ९३
वेद विद्या प्रकाश ९०
वेद विज्ञान (भड़ौंच) १०३
वेद विज्ञान (भटिण्डा) १४२
वेद संदेश (कन्नड़) १२०
वेद स्वाध्याय १०७
वैदिक अनुसंधान ९८
वैदिक आदर्श (हैदराबाद) ११२
वैदिक आदर्श (उर्दू) १३०
वैदिक ज्योति (वृन्दावन) ८५
वैदिक डाइजेस्ट १३९
वैदिक धर्म (मुरादाबाद) ५२
वैदिक धर्म (औंध) ७८
वैदिक धर्म उर्दू (दिल्ली) १२६
वैदिक धर्म (जालधंर छावनी) ११३
वैदिकधर्म (मराठी) १२०
वैदिक धर्म (उर्दू) १२५
वैदिकधर्म(उर्दू-जालंधर छावनी)१२९
वैदिक फिलासफी १२८
वैदिक मार्तण्ड ७८
वैदिक मैगजीन (उर्दू) १२७
वैदिक मैगजीन (लाहौर) १३६
वैदिक मैगजीन एण्ड गुरुकुल समाचार १३८
वैदिक मैगजीन (बैंगलोर) १३९
वैदिक युग १०३
वैदिक रवि ११२
वैदिक लाइट १३९
वैदिक विजय (हिन्दी-कालवा) १०९
वैदिक विजय (उर्दू-अजमेर) १२६
वैदिक विज्ञान ८८
वैदिक संदेश (गुरुकुल कांगड़ी) ७९
वैदिक संदेश (शोलापुर) ९०
वैदिक संदेश (गुजराती) ११८
वैदिक संदेश (हैदराबाद) १४१
वैदिक संदेश (अजमेर) १४२
वैदिक संदेश (सुरीनाम) १४५
वैदिक संदेश (फिजी) १४५
वैदिक सेवाश्रम १०९
वैदिक हैरिटेज १४०
वैश्वानर १०४
शंकर १४२
शक्ति संदेश ९७
शान्ति १४२
शास्त्र सिन्धु १२१
शुद्धि पत्रिका १४२
शुद्धि समाचार (दिल्ली) ८५
शुद्धि समाचार (बंगला) १२१
शुभचिन्तक (कादियां) १३०
शुभचिन्तक (जबलपुर) १४६
शुभचिन्तक (शाहजहांपुर) १४६
श्रद्धा ७८
श्रद्धानन्द ८८
संघ दर्शन ११९
संजय (दिल्ली) १४२
संजय (झालावाड़) १५०
संन्यासी ७९
संस्कार युग ११४
संस्कृति संदेश १०८
सज्जनकीर्ति सुधारक १४६
सत्य प्रकाश ३७
सत्यवाद्यी (हरिद्वार) ६२
सत्यवादी (दिल्ली) ७९
सत्यवादी (सिंधी) १२२
सत्य सनातनधर्म ७२
सदाचार १२२
सद्धर्म प्रचारक (हिन्दी) ६४
सद्धर्म प्रचारक (काशी) ८७

सद्धर्म प्रचारक (उर्दू) १२५
समाज संदेश १०१
समिधा १०९
समिधाभा १११
सम्राट् ९२
सर्व हितकारी ११०
सविता ९४
सर्क्यूलर १२८
सहायक १२९
स्वदेशी वस्तु प्रचारक १४७
स्वराज्य १२९
सार्वदेशिक ८६
साहित्य प्रचारक ९६
सुधारक (कलकत्ता) ७४
सुधारक (गुरुकुल झज्जर) ९७
सुधारक (गुजराती) ११९
सुधारक (उर्दू) १२९
सेवाश्रम ११०
हितकारी १२९
हितैषी १२७
हिन्दी १४४
हिन्दी मिलाप १४९
हिन्दूधर्म पत्रिका ११९

पत्र-पत्रिकाओं की संचिकायें

पत्र नाम	प्राप्ति स्थान
१. आर्य दर्पण	दयानन्द पुस्तकालय, अजमेर
२, भारत सुदशा प्रवर्त्तक	दयानन्द पुस्तकालय, अजमेर
३. देश हितैषी	दयानन्द पुस्तकालय, अजमेर
४. भारतोद्धारक	लेखक का निजी पुस्तकालय
५. आर्य विनय	दयानन्द पुस्तकालय, अजमेर
६. आर्य सिद्धान्त	दयानन्द पुस्तकालय, अजमेर
७. परोपकारी	दयानन्द पुस्तकालय, अजमेर
८. वेद प्रकाश	दयानन्द पुस्तकालय, अजमेर
९. भारतोदय	लेखक का निजी पुस्तकालय
१०. नवजीवन	लेखक का निजी पुस्तकालय
११. भास्कर	लेखक का निजी पुस्तकालय
१२. आर्य मार्तण्ड	दयानन्द पुस्तकालय, अजमेर
१३. विजय	आर्यसमाज अजमेर का मुन्नालाल नागरी प्रचारिणी सभा पुस्तकालय
१४. The Vedic Magazine	लेखक का निजी पुस्तकालय
१५. Arya Patrika	लेखक का निजी पुस्तकालय
१६. The Arya	लेखक का निजी पुस्तकालय
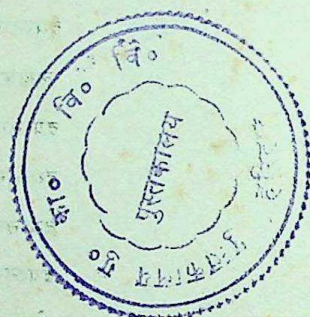
स्वराज्य और सुराज्य के सूत्रधार
जगद्गुरु महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती
के १०० वें निर्वाण दिवस पर आयोजित
महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह
दीपावली सन् १९८३

स्वामी दयानन्द द्वारा संस्थापित श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर के १६-११-८० को सम्पन्न हुए साधारण अधिवेशन में महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव

"परोपकारिणी सभा १९८३ में अजमेर में दयानन्द निर्वाण शताब्दी का आयोजन करे जिसमें सभी आर्य पुरुषों, महर्षि भक्तों व आर्य सामाजिक सभाओं एवं संस्थाओं के सहयोग से यह समारोह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जावे।"

इस अवसर पर लाखों नर-नारी गुरुदेव को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने अजमेर पधारेंगे। अतः आर्य-शिक्षण-संस्थाएं, आर्यसमाजें, आर्य प्रतिनिधि सभाएँ, व्यायाम शालाएँ आदि इस समारोह को सफल बनाने के लिए अपनी सेवाएँ सहर्ष समर्पित करने हेतु अपने नाम अंकित कराएँ।

महर्षि दयानन्द की स्मृति स्थायी बनाने हेतु इस अवसर पर ऋषि-उद्यान, अजमेर में

एक भव्य यज्ञशाला

जिस पर दस लाख रुपये व्यय होगा, बनाने की योजना है।

एक विशाल लाइब्रेरी कक्ष

जिसमें वेद व वैदिक साहित्य के प्राचीन एवम् अर्वाचीन प्रकाशित ग्रन्थों का संकलन किया जायगा ताकि देश-विदेश के वेद-शोधार्थी इसका भरपूर लाभ उठा सकें। इस पर लगभग पांच लाख रुपया व्यय होगा।

दयानन्द-वेदशोध-संस्थान

जिसमें वेद, वैदिक साहित्य के शोध की व्यवस्था रहेगी। जहां महर्षि दयानन्दकृत ग्रन्थों के हस्तलेखों एवम् अन्य ग्रन्थों का संकलन किया जायेगा तथा माइक्रोफिलम व फोटोस्टेट तैयार करने के यन्त्र आदि भी रखे जायेंगे, जिस पर करीब दस लाख रुपया व्यय होगा।

अतिथिशाला – आनासागर के तट पर ऋषि उद्यान, अजमेर में एक अतिथिशाला यात्रियों के ठहरने हेतु बनाने का आयोजन है जिस पर आरम्भ में दो लाख रुपया व्यय होगा। दान-दाता इसमें अपने व्यय से कमरे बनवा सकते हैं।

इन समस्त कार्यों हेतु धन की नितान्त आवश्यकता है ताकि निर्माण-कार्य १९८३ से पूर्व सम्पन्न हो सके। देश के समृद्ध धनी-मानी आर्यजनों से निवेदन है कि इस अवसर पर मुक्त-हस्त से दान देकर अपनी कीर्ति अक्षुण्ण बनाएँ, एवं इन भवनों पर लगाए जाने वाले नाम-पट्ट पर अपना नाम अंकित करा कर गौरवान्वित हों।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रधान, परोपकारिणी सभा, अजमेर

श्रीकरण शारदा
मंत्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

प्रकाशक : श्रीकरण शारदा, मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर
मुद्रक : सतीशचन्द्र शुक्ल, प्रबन्धकर्त्ता, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर